ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

भाग दो



कथा-प्रस्तुति

हरिकृष्ण देवसरे

जैकोब लुडविग कार्ल ग्रिम (1785-1863) और **विलहेम कार्ल ग्रिम** (1786-1859) आधुनिक आख्यान-शास्त्र एवं लोक-साहित्य-विज्ञान के जनक और भाषा-विज्ञानी थे। उनका मुख्य उद्देश्य साहित्य के पारम्परिक स्वर एवं स्वरूप का अध्ययन करना था। जैकोब को जर्मन भाषा और व्याकरण के प्रति रुचि थी तो विलहेम को लोककथाएँ संगृहित करने में विशेष आनंद मिलता था। इन कहानियों के संकलन का उद्देश्य परंपरागत कहानियों के विपुल समुच्चय को समेटते हुए भाषा, मुहावरों, दंतकथाओं, कविताओं, बालसुलभ खेलों और गीतों के माध्यम से जर्मन भाषा एवं संस्कृति के स्रोतों और ऐतिह्य का क्रमिक विकास के साथ अध्ययन करना था। ग्रिम बंधुओं ने जर्मनी के चप्पे-चप्पे पहुँचकर बुजुर्गों और क़िस्सागों से कहानियाँ सुनकर लिपिबद्ध कीं। ये वही कहानियाँ थीं, जिन्हें लोग सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनते-सुनाते रहे थे। किसान, मज़दूर, दादी, नानी जैसे विभिन्न स्रोतों से ग्रिम बंधुओं ने ये कहानियाँ सुनकर इकट्ठा कीं।

ग्रिम बंधुओं का वृहद कथा संकलन (1812) *नर्सरी एण्ड हाउसहोल्ड टेल्स* (नर्सरी और घरेलू कहानियाँ) छपते ही जर्मनी के घर-घर की ज़रूरत बन गया। कहानियों का दूसरा खण्ड 1815 में प्रकाशित हुआ। ग्रिम बंधुओं को 1829 में गार्टिगेन यूनिवर्सिटी का प्रोफेसर और पुस्तकाध्यक्ष बनाया गया और वे 1841 में बर्लिन विश्वविद्यालय में 'एकेडमी ऑफ़ साइन्सेस' के लिए चुने गये।

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ केवल जर्मन साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व बाल साहित्य की अमर धरोहर हैं। तमाम दुनिया के बाल पाठक इन्हें पढ़ते आ रहे हैं और कोई दो सौ वर्षों से ये बच्चों के साथ-साथ बड़ों का भी मनोरंजन कर रही हैं। इन कहानियों को बच्चों ने जिस उत्साह से स्वीकार किया उसका सीधा और सुखद परिणाम यह हुआ कि उनकी कल्पनाजन्य लालसा को मिटाने की ज़रूरत पर अन्य लेखकों और बुद्धिजीवियों का ध्यान गया।

यूरोप में ग्रिम बंधुओं की कहानियों की लोकप्रियता से उनके अनुवाद में तेज़ी आई और इनके अनुवाद क्रमशः डेनिश, स्विस एवं फ्रांसीसी और फिर अंग्रेज़ी, इतालवी, स्पानी, चेक और पोलिश भाषाओं में हुए।

आवरण एवं रेखांकन
सुरेन्द्रपाल सिंह

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

भाग दो

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ

भाग दो

कथा-प्रस्तुति
हरिकृष्ण देवसरे

साहित्य अकादेमी

Grimm Bandhuon Ki Kahaniyan, (part-II) : Hindi translation by Harikrishna Devsare of Grimm Brothers (Jacob Ludwig Carl Grimm, Wilhelm Carl Grimm). Sahitya Akademi, New Delhi (2015), Rs.125/-

प्रथम संस्करण : 2000
पुनर्मुद्रण: 2004, 2007, 2008, 2009, 2011, 2012 एवं 2015

साहित्य अकादेमी
मुख्य कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in
ई-मेल : sahityaakademisale@yahoo.com

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
4 डी. एल. खान मार्ग, कोलकाता 700 025

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ISBN: 978-81-260-2041-5
मूल्य: 125 रुप्ये (प्रति भाग)

मुद्रक: सीता फाइन आर्ट (प्रा.) लिमिटेड़, दिल्ली–110028

अनुक्रम

भूमिका

ग्रिम बंधुओं की कहानियों के प्रकाशन और उनके अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनुवाद के बाद, उन्हें यूरोप में जो लोकप्रियता मिली, उससे ग्रिम बंधुओं ने प्रसन्न होने की बजाय, अपनी एक सामाजिक ज़िम्मेदारी को बड़ी गम्भीरता से समझा। उन्हें लगा कि चूँकि उनकी कहानियाँ बड़ी संख्या में बच्चों द्वारा पढ़ी जा रही हैं और विश्व बाल साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनने जा रही हैं तो वे इन कहानियों को एक बार फिर से देखें कि कहीं उनमें कोई ऐसी बात तो नहीं है, जो बच्चों के लिए उपयुक्त न हो। यह भी कि इनमें कहीं कुछ ऐसा तो नहीं है, जो आज के जीवन और समाज के विपरीत हो और वह बच्चों पर ग़लत प्रभाव डाले, इसलिए ग्रिम बंधुओं ने सोचा कि यह उनका कर्त्तव्य है कि वे इन कहानियों को समकालीन बालसाहित्य के अनुरूप परिमार्जित और संशोधित कर दें, ताकि उनमें निहित धार्मिक, नैतिक, सामाजिक मूल्यों के सन्देश सही रूप में बच्चों तक पहुँचें। यूरोप में अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल का बालसाहित्य किसी न किसी नैतिक उद्देश्य की दृष्टि से लिखा जा रहा था। इन कहानियों के अंत में यही सन्देश होता था कि 'सदा सच बोलो' या 'कभी किसी का बुरा न करो' 'भलाई का बदला भलाई ही मिलता है' आदि। ग्रिम बंधुओं ने अपनी कहानियों से इस प्रकार नैतिक उपदेशवाले सूत्र वाक्य हटा दिए। उन्होंने कहानियों के अंत इस प्रकार लिखे कि वे स्वयं वांछित सन्देश दें और पाठक उसका निष्कर्ष समझ लें। इसके अलावा उन्होंने कहानियों के कथानकों में कई परिवर्तन किये और उन्हें समकालीन बालसाहित्य के अनुरूप प्रस्तुत किया। दरअसल उन्होंने लगभग हर संस्करण में कुछ न कुछ संशोधन-परिवर्तन किए। उन्होंनें पहले लोक कथाओं को उनके मूल रूप (जैसा उन्होंने सुना था) में रखा था और इसके प्रति उनका आग्रह भी था। किन्तु बाद में उनकी कथा-पुस्तक की लोकप्रियता और बाल पाठकों के प्रति उत्तरदायित्व की उनकी चेतना ने बहुत-सी कहानियों का पुनर्लेखन कराया। अपनी कहानियों के सामाजिक प्रभाव के प्रति ग्रिम बंधु कितने गम्भीर थे, इसका अनुमान इस घटना से लगा सकते हैं कि एक दिन उन्हें लन्दन से एडगर टेलर का पत्र मिला, जिसे उन्होंने जून 1823 में लिखा था। टेलर ने पत्र में

लिखा था कि मैंने आपके कथा-संग्रह का अंग्रेज़ी अनुवाद किया है और वह यहाँ के बच्चों में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। मैं यह पत्र बच्चों के लिए ऐसी मज़ेदार और मनोरंजक कहानियाँ लिखने के लिए, आपके प्रति अपना आदर भाव और कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए लिख रहा हूँ। ग्रिम बंधुओं ने टेलर को उत्तर में जो पत्र लिखा, उसमें उन्होंने कहानियों के 'मज़ेदार' और 'मनोरंजक' होने की टिप्पणी के प्रति अपना क्षोभ व्यक्ति किया और लिखा कि हम तो इन कहानियों के उस सामाजिक प्रभाव के प्रति अधिक गम्भीर हैं, जो भावी पीढ़ी इन कहानियों से ग्रहण करनेवाली है। उनकी यह चिन्ता भी उनके कथा-संग्रह के परवर्ती संस्करणों में संशोधित कहानियों के रूप में व्यक्त हुई है।

इस दूसरे खण्ड की अधिकांश कहानियों में ग्रिम बंधुओं के सामाजिक दायित्व बोध को देखा जा सकता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि पहले खण्ड की कहानियों में यह बात नहीं है, किन्तु इस खण्ड की कुछ कहानियाँ बड़े स्पष्ट रूप से अपना सन्देश अभिव्यक्त करती हैं।

ग्रिम बंधु समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की के भेदभाव को मिटाना चाहते थे। वे दोनों को समान रूप में प्रकृति की समान-संतान मानते थे—यानी एक के बिना दूसरा अधूरा है। इसलिए उन्होंने कहानियों के स्त्री-पुरुष पात्रों को समान शक्ति, अधिकार और सम्मान का अधिकारी बनाकर प्रस्तुत किया। उनके नारी-पात्र किसी भी पुरुष पात्र से कमज़ोर नहीं हैं। यदि पुरुष-पात्र किसी नारी-पात्र को कमज़ोर समझकर सताता है या दुखी करता है तो कहानी के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते नारी-पात्र संघर्ष करके अन्त में विजयी होता है। 'कुत्ता और गौरैया' कहानी में गौरैया एक ऐसा ही नारी-पात्र है, जिसकी उपेक्षा होती है और उसकी बात नहीं सुनी जाती। एक गाड़ीवान जब गौरैया की उपेक्षा करके उसके मित्र एक कुत्ते को कुचलकर मार डालता है, तो वह छोटी-सी गौरैया अपनी शक्ति के बल पर अंततः गाड़ीवान से बदला लेकर ही रहती है। 'हिमानी' अपनी सौतेली माँ से सतायी जाकर भी अंत में विजयी होती है। 'भेड़िया और सात छोटी बकरियाँ' भी एक ऐसी ही प्रतीकात्मक कहानी है, जिसमें माँ के घर पर न होने के समय एक भेड़िया आकर उसके बच्चों को खा जाता है। माँ बकरी लौटकर आती है। भेड़िये से बदला लेती है। उसके पेट से बच्चों को निकालकर पत्थर भर देती है और भेड़िया जब नदी में पानी पीने जाता है तो पत्थरों के बोझ से लड़खड़ाकर नदी में डूबकर मर जाता है। नारी-शक्ति भेड़िये पर विजयी होती है। (पहले के संस्करणों में, इस कहानी में भेड़िया कुएँ में पानी पीने जाता है और गिरकर मर जाता है। किन्तु बाद में संशोधन हुआ, क्योंकि कुएँ में गिरकर मरना तो ठीक है, किन्तु भेड़िये का कुएँ पर पानी पीने जानेवाली बात ठीक नहीं थी। इसलिए उसे नदी के किनारे भेजा गया—जिससे पानी पीने और डूबकर मरनेवाली दोनों बातें ठीक हो गईं)। 'तीन औरतें' कहानी में भी एक ग़रीब लड़की कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी विजयी होती है।

नारी-पात्र की विजय और एक ही कथानक की भिन्न-भिन्न कहानियों में भी नारी-पात्र को अनेक बाधाओं पर विजयी होकर अपना लक्ष्य पाते हुए दिखाया गया है। इस खण्ड में संकलित 'बारह भाई' और 'सात कौवे' दो ऐसी ही कहानियाँ हैं, जिनके कथानक तो एक-जैसे हैं, फिर भी ये कहानियाँ स्वतंत्र रूप से पठनीय हैं। इसका कारण शायद यही है कि इनके पात्र, परिस्थितियों और वर्णन-शैली में भिन्नता है। यह भिन्नता इसलिए भी हो सकती है कि इन्हें सुनानेवाले अलग-अलग लोग रहे होंगे या इन्हें अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग लोगों ने सुना होगा। फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि दोनों कहानियों में एक लड़की (बहन) के लिए भाइयों को कष्ट भोगना पड़ता है। दोनों में से एक कहानी 'बारह भाई' की माँ दयालु है और वह वक़्त रहते बेटों को बचा लेती है। 'सात कौवे' की माँ निष्क्रिय है, क्योंकि वह अपने पति को रोक नहीं पाती, जब वह बेटों को कौवा बनने का शाप देता है। इस कहानी में भी भाइयों को शाप बहन के कारण मिलता है। लेकिन जब दोनों कहानियों की बहनें बड़ी होती हैं और उन्हें यह मालूम होता है कि भाइयों से जुदाई का कारण वे स्वयं हैं तो वे उन्हें बचाने और वापस लाने के लिए निकल पड़ती हैं। अन्त में वे सफल होती हैं। यहाँ उल्लेखनीय बात यह भी है कि एक लड़की बारह भाइयों के मुकाबले या एक लड़की सात भाइयों के मुक़ाबले अधिक शक्तिशाली और साहसी रूप में प्रस्तुत होती है। इन कहानियों में भाई-बहन के प्यार, भाई के लिए बहन का कष्ट सहना और समाज में 'लड़की' के महत्त्व को रेखांकित किया गया है।

ग्रिम बंधुओं के समय में समाज की स्थिरता वहाँ के स्थायी पारिवारिक ढाँचे पर निर्भर करती थी। परिवार के सदस्यों में प्रेम हो और एक-दूसरे के लिए जान न्योछावर करने को वे तैयार रहें—यही मानवीय मूल्य परिवार का आधार बनते हैं। ग्रिम बंधुओं की कई कहानियों में पति-पत्नी के सम्बन्धों की मधुरता और प्राणोत्सर्ग की बात कही गई है। 'मुर्गे़ की मौत' पर मुर्ग़ी का प्राणोत्सर्ग, उसकी प्रेम-भावना की चरम स्थिति को दर्शाता है। 'गौरैया और उसके चार बच्चे' में माँ गौरैया द्वारा बच्चों को इस दुनिया और समाज के प्रति सचेत करना, एक माँ के दायित्व-निर्वाह का सुन्दर उदाहरण है।

ग्रिम बंधुओं की इन कहानियों की एक अन्य विशेषता यह है कि इनमें समाज के छोटे-छोटे वर्गों के पात्रों को भी महत्त्वपूर्ण मानकर चित्रित किया गया है। वह चाहे 'छोटा बहादुर दर्ज़ी' हो, 'मोचीराम' हो, सात सफ़ाई करनेवाले' हों 'आलसी जुलाहिन' हो या 'अँगूठाराम' हो। सभी पात्र अपने विशिष्ट चरित्र के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। इसी के साथ समाज के अन्य चरित्र जैसे 'चालाक ग्रेथल' जैसी चतुर नौकरानी, 'भाई लस्टिग' जैसा चतुर इन्सान, 'सयाना चोर' जैसा चौर्यकला-प्रवीण व्यक्ति—इन कहानियों में तत्कालीन समाज से पाठकों को परिचित कराते हैं।

ग्रिम बंधुओं की कहानियों पर हुए हाल के एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्ष भी महत्त्वपूर्ण हैं। विज्ञान के युग में, विशेष रूप से इक्कीसवीं शताब्दी के समाज की

दृष्टि से, बच्चों के लिए ग्रिम की कहानियाँ मनोवैज्ञानिक रूप से कितनी महत्त्वपूर्ण हैं—यही इस अध्ययन का विषय था। हैंस पीटर ब्लूएल ने अपनी 'जर्मनी के बच्चे' शीर्षक रिपोर्ट में लिखा है कि आधुनिक छोटे परिवारों में दादी का अभाव हो गया है। उनका स्थान टी.वी और वी.सी.आर ने ले लिया है। अब तो रात को सोने से पहले थका हुआ पिता या थकी हुई माँ ही बच्चों को बहलाने के लिए कभी-कभार कोई कहानी सुना देती है। ब्लूएल का कहना है कि आज बच्चे स्कूल, बस्ता, सामाजिक नियमों आदि के बोझ से दबे हुए हैं। उन्हें उनका बचपन नहीं मिल रहा है। ब्लूएल यथार्थवाद और आधुनिकतावाद के समर्थक हैं और इस कारण वह यह ज़रूरी समझते हैं कि बच्चों को अपने विकास काल में एक ऐसा सामाजिक क्षेत्र मिलना चाहिए, जो उन्हें व्यावहारिक ज्ञान का अनुभव करा सके। इसे पाकर बालक, फ़ैंटेसी की तुलना में कहीं ज़्यादा ख़ुश होता है। ब्लूएल के लिए फ़ैंटेसी कथाएँ (परीकथाएँ) समाज-विरोधी हैं। उनके इस कथन का सीधा अर्थ वह रहा है कि वह आज का बालसाहित्य पहले से कहीं श्रेष्ठ स्तर का चाहते हैं और इस सम्बन्ध में उन्होंने अपना पक्ष बहुत मज़बूती से रखा भी। उन्होंने कहा कि अब ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ कालजयी साहित्य के रूप में पठनीय तो हैं, किन्तु इनके अलावा मौलिक और आधुनिक बाल साहित्य को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए और उसकी रचना पर बल दिया जाए।

निस्सन्देह, ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ आज विश्व के कालजयी बालसाहित्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनकी पठनीयता आज भी बराबर बनी हुई है। अपनी बात का समापन करने से पहले मैं इतना ज़रूर कहना चाहूँगा कि जर्मनी तथा अन्य देशों में ग्रिम बंधुओं की कहानियों पर विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारंपरिक, भाषा आदि दृष्टियों से जितना अध्ययन-अनुसंधान हुआ है, उसका शतांश भी भारत की किसी भाषा के बालसाहित्य का नहीं हुआ। जर्मन साहित्य में ग्रिम बंधुओं को और डैनिश साहित्य में हैंस एण्डरसन को जो गरिमापूर्ण स्थान मिला है, वैसा भारत की किसी भाषा के बालसाहित्यकार या बालसाहित्य को नहीं मिला। इसे भारतीय बालसाहित्य का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि वह आज विपुल और श्रेष्ठ रूप में प्रकाशित होकर भी साहित्य जगत में वैसा मान नहीं पा सका है, जैसा विश्व की अन्य भाषाओं में उनके बालसाहित्य को प्राप्त है। आशा है ग्रिम बंधुओं की कहानियों का यह संकलन भारतीय बालसाहित्य के महत्त्व और उसकी उपलब्धियों को रेखांकित करने की प्रेरणा देगा।

—हरिकृष्ण देवसरे

1

बौने के उपहार

एक दर्ज़ी और एक सुनार एक बार साथ-साथ यात्रा कर रहे थे। एक शाम जब सूरज पहाड़ियों के पीछे डूब गया तो उन्हें कुछ दूर से संगीत की आवाज़ सुनाई दी, जो पास आती जा रही थी। संगीत के सुर कुछ नये-से थे, लेकिन इतने मधुर थे कि वे दोनों उन्हें सुनकर अपनी थकान भूल गए और बातें करते गए। चाँद निकल आया था और वे एक पहाड़ी पर आ गए थे। वहाँ उन्हें कई बौनी औरतें और बौने आदमी दिखाई दिये जो हाथ पकड़कर गोल-गोल घूमते हुए उत्साह से नाच रहे थे। वे बहुत ही मधुर स्वरों में गा रहे थे। यही संगीत इन दोनों यात्रियों को सुनाई दे रहा था। बीच में एक बूढ़े आदमी ने उन्हें भी शामिल होने का आग्रह किया। नर्तकी ने उन्हें शामिल करने के लिए घेरा तोड़कर हाथ बढ़ा दिए। सुनार जो कि कुबड़ा था तेज़ी से उनमें शामिल हो गया, लेकिन दर्ज़ी पहले थोड़ा झिझककर पीछे रुका। फिर उन लोगों का उत्साह देखकर, हिम्मत करके उनमें शामिल हो गया। घेरा बन्द हो गया और बौने फिर पूरे जोश में नाचने-गाने लगे।

बूढ़े आदमी ने अपनी कमरबन्द से बँधा उस्तरा तेज़ किया और फिर अजनबियों की ओर देखा। वे डर गए, लेकिन उनके पास सोचने के लिए समय नहीं था, क्योंकि बूढ़े आदमी ने पहले सुनार को और फिर दर्ज़ी को पकड़ लिया और तेज़ी से उनकी दाढ़ियाँ और बाल उस उस्तरे से साफ़ कर दिये। बूढ़े आदमी ने अपना काम पूरा करके बिना किसी विरोध के यह करवाने के लिए, दोस्ताना तरीक़े से उनकी पीठ थपथपायी। इससे उन दोनों का डर चला गया। फिर उसने एक तरफ़ पड़े कोयले के ढेर की तरफ़ इशारा किया और इशारे से ही उनसे कहा कि वे उससे अपनी जेबें भर लें।

हालाँकि दोनों को उसकी वजह समझ में नही आई, लेकिन उन्होंने वैसा ही किया। फिर वे रात में रुकने की जगह की तलाश में चल पड़े। जैसे ही वे पास की घाटी में पहुँचे, पास के गिरजे की घड़ी ने बारह बजाये और उसी समय संगीत रुक

गया। सभी ग़ायब हो गए और पहाड़ी चाँद की रोशनी में सुनसान खड़ी रही।

दोनों यात्रियों को रात में रहने की जगह मिल गई। पुआल का बिस्तर बनाकर दोनों ने अपना कोट ओढ़ लिया। लेकिन थकान के कारण कोट की जेब से कोयले निकालना भूल गए। जब वे सुबह उठे तो उन्होंने अपनी जेबें ख़ाली कीं। लेकिन वे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सके। उन्हें कोयले की जगह सोने के टुकड़े दिखाई दिये। उनके बाल और दाढ़ी भी रात भर में पहले की तरह उग आए थे। वे अब बहुत अमीर हो गए थे। लेकिन सुनार के पास दर्ज़ी से दुगुना सोना था, क्योंकि अपने लालची स्वभाव के कारण उसने अपनी जेबें ज़्यादा भर ली थीं।

कंजूस व्यक्ति के पास जितनी अधिक सम्पत्ति आती है, वह उतनी ही इच्छा करता जाता है। सुनार ने एक-दो दिन बाद दर्ज़ी के सामने दोबारा पहाड़ पर जाकर बूढ़े आदमी से सोना लाने का प्रस्ताव रखा। दर्ज़ी ने मना कर दिया और बोला, "मेरे पास बहुत है। मैं सन्तुष्ट हूँ, मैं बड़ा दर्ज़ी बन गया हूँ। अब मैं अपनी प्रेमिका से शादी करूँगा और सुख से रहूँगा।" फिर भी वह अपने साथी को ख़ुश करने के लिए एक दिन रुक गया। शाम को सुनार ने अपने कन्धे पर कई थैले लटकाये और पूरी तैयारी से पहाड़ी को जानेवाले रास्ते पर चल पड़ा। उसे पहली रात की तरह बौने नाचते-गाते मिले, बूढ़ा उसकी ओर देखकर मुस्कराया और उसके साथ पहले की ही तरह किया और फिर कोने में पड़े कोयले के ढेर की ओर इशारा किया। सुनार ने जरा-सी भी देर नहीं की और तुरन्त अपनी जेबें भर लीं। वह बहुत प्रसन्न होकर घर आया और अपना कोट ओढ़कर सो गया। उसने अपने आपसे कहा, "हालाँकि सोने का वज़न बहुत होता है फिर भी मैं उसे सहन कर ही लूँगा।" वह यह सोचकर इस विश्वास के साथ सो गया कि अगली सुबह वह बहुत अमीर होगा। लेकिन जब सुबह वह उठा तो उसकी जेबों से कोयले के अलावा कुछ न निकला। यह देखकर वह भौंचक्का रह गया। उसने अपने आपको यह सोचकर धीरज बँधाया कि उसके पास कम से कम कल रातवाला सोना तो है। लेकिन जब उसने देखा कि वह सोना भी कोयले में बदल गया है तो वह ग़ुस्से से भर गया और कोयले से सने हाथों से अपना सिर पीटने लगा। तभी उसने पाया कि उसके बाल और दाढ़ी भी ग़ायब हैं। अभी उसकी विपत्ति का अन्त नहीं हुआ था, क्योंकि उसने देखा कि रात में उसकी छाती पर भी उसकी पीठ की तरह कूबड़ निकल आया था। यह देखकर वह बुरी तरह रोने लगा, क्योंकि उसकी समझ में आ गया था कि यह उसके लालच के कारण हुआ है। दर्ज़ी जब उठा तो उसने दुखी सुनार को ढाँढ़स बँधाया। उसने उससे कहा कि चूँकि वह उसकी यात्रा में



उसके साथ रहा है तो वह अपना सोना भी आधा बाँटेगा।

दर्ज़ी ने अपना वचन निभाया, लेकिन बेचारे सुनार को पूरा जीवन उन कूबड़ों के साथ बिताना पड़ा और अपने गंजे सिर को ढँकने के लिए नक़ली बाल लगाने पड़े।

2

चालाक ग्रेथल

किसी समय की बात है। एक लड़की, जो रसोइये का काम करती थी, लाल गाँठों वाले जूते पहनती। इन्हें पहनकर वह जब भी बाहर निकलती तो अपने पाँव इधर-उधर दिखाती हुई चलती, ताकि सब उसके जूते देख सकें। वह आत्मसन्तुष्ट होकर अपने आप से कहती, "तुम तो अभी भी बहुत सुन्दर लड़की हो !" जब वह घर पहुँचती तो ख़ुश होने के लिए एक गिलास फलों का रस पी लेती। फिर जब उसे खाने की इच्छा होती तो वह अपने लिए सबसे अच्छी चीज़ ढूँढ़ती और यह कहते हुए उसे खा लेती कि, "रसोइये को पता होना चाहिए कि उसके पकाए हुए खाने का स्वाद कैसा है।"

एक दिन उसके मालिक ने उससे कहा, "ग्रेथल, आज शाम कोई मेहमान आ रहा है, इसलिए दो मुर्ग़े पका लेना।" ग्रेथल बोली, "मैं तुरन्त पका दूँगी मालिक !" उसने जाकर दो मुर्ग़ों को मारा, उनमें मसाले भरे और उन्हें सींक में पिरो दिया। शाम होने पर उसने उन्हें भूनने के लिए आग के ऊपर रख दिया। थोड़ी ही देर में उनका रंग भूरा होने लगा और वे लगभग तैयार हो गए। मेहमान अभी तक आया नहीं था, इसलिए ग्रेथल ने अपने मालिक से कहा, "अगर आपके मेहमान जल्दी ही नहीं आ जाते तो उन मुर्ग़ों को आग पर से हटाना होगा। लेकिन अभी ये गर्म हैं और इनमें ताज़ापन है। यदि इन्हें जल्दी ही नहीं खाया गया तो यह कोई अच्छी बात नहीं होगी।"

मालिक बाहर जाने के लिए तैयार हो गया, ताकि अपने मेहमान को ला सके। जैसे ही मालिक बाहर निकला, लड़की ने दोनों मुर्ग़ेवाले सींक आग से हटा दिये और बैठकर सोचने लगी, "मैं इतनी देर से आग के सामने खड़ी थी, इसलिए मुझे इतनी गर्मी लग रही है और प्यास भी लगी है। कौन जाने वे कब तक आएँगे ? क्यों न इस बीच थोड़ा पानी और फलों का रस पी लूँ !"

ग्रेथल दौड़कर सीढ़ियों से नीचे उतर गई और एक जग में फलों का रस भर लिया। "भगवान की कृपा तुम पर बनी रहे, ग्रेथल" कहते हुए उसने रस से भरा लम्बा घूँट भरा। उसे गले से उतारकर उसने एक और घूँट भर रस पिया। इसके बाद वह ऊपर आ गई और मुर्ग़ोंवाली सींक को उसने आग के ऊपर रख दिया। उन पर थोड़ा-सा मक्खन फैलाकर वह ख़ुशी से सींक को घुमाने लगी। भुन रहे मुर्ग़ों से इतनी बढ़िया सुगन्ध आ रही थी कि ग्रेथल ने सोचा कि क्यों न इन्हें चखकर देखा जाए।

उसने अपनी उंगली माँस के रस में डुबोई और उसे चखा तो वह ख़ुश होकर बोली, "वाह ! ये मुर्ग़े कितने स्वादिष्ट हैं ! यदि इन्हें तुरन्त नहीं खाया गया तो यह पाप होगा और इससे बढ़कर दुखदायी बात और क्या हो सकती है।" वह खिड़की पर जाकर देखने लगी कि उसका मालिक मेहमान के साथ आ रहा है या नहीं। लेकिन वहाँ किसी का पता नहीं था। उसने अपना ध्यान फिर से मुर्ग़ों के ऊपर लगाया और बोली, "अरे ! एक पंख जल गया। अच्छा होगा कि मैं इसे खा लूँ।" उस पंख को काट कर उसने खा लिया तो फिर वह सोचने लगी, "मालिक देखेंगे कि एक पंख ग़ायब है, इसलिए मैं दूसरा भी खा लेती हूँ।" इस तरह दोनों पंख खाकर वह खिड़की पर दोबारा देखने पहुँची कि उसका मालिक आ रहा है या नहीं। इस बार भी जब उसे कोई नहीं दिखा तो उसने सोचा, "क्या पता वे लोग आएँगे भी या नहीं ? हो सकता है वे जहाँ हों, वहीं रुक जाएँ। ग्रेथल, थोड़ी हिम्मत और करो ! ये बचा हुआ मुर्ग़ा सारा खा जाओ ! जब ये सारा ख़त्म हो जाएगा तो तुम आराम से बैठ सकोगी। इसके अलावा, अच्छी चीज़ को बासी करके क्यों बर्बाद किया जाए ?" ऐसा सोचते हुए ग्रेथल बड़ी ख़ुशी से एक मुर्ग़ा खा गई। बहुत देर बाद भी मालिक के न आने पर ग्रेथल ने दूसरे मुर्ग़े को देखा और बोली, "जहाँ एक है, वहीं दूसरे को भी होना चाहिए, क्योंकि दोनों एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। जो एक के लिए सही है," वही दूसरे के लिए भी सही है।" यह कहते हुए उसने दूसरे मुर्ग़े पर भी हाथ साफ़ कर दिया।

अभी ग्रेथल खा-पीकर उठी ही थी कि उसका मालिक दौड़ता हुआ ऊपर आया और बोला, "जल्दी करो ग्रेथल, हमारे मेहमान बस आने ही वाले हैं।" "जी हाँ मालिक ! खाना बस तैयार ही है।" मालिक अन्दर यह देखने के लिए चला गया कि मेज़ पर सब ठीक से लगा है या नहीं। बड़े चाकू को पत्थर पर घिसने के लिए वह साथ ले गया, क्योंकि इससे ही उसे मुर्ग़े का मांस काटना था। इसी बीच मेहमान ने आकर दरवाज़े को धीरे-से खटखटाया। ग्रेथल दौड़कर यह देखने गई कि कौन आया है ?



जब उसने मेहमान को देखा तो उसने अपने होंठों पर उँगली रखते हुए उसे चुप रहने का इशारा किया और उससे बोली, "जल्दी से यहाँ से भाग जाइए ! अगर मेरे मालिक आपको यहाँ देख लेते हैं तो आपकी ख़ैर नहीं। उन्होंने आपको खाने पर ज़रूर बुलाया, लेकिन असल में वो आपके कान काटना चाहते हैं। ध्यान से सुनिए, किस तरह वे अपने चाकू की धार तेज़ कर रहे हैं।"

मेहमान ने धार तेज़ करने की आवाज़ सुनी और जितनी तेज़ी से वहाँ से जा सकता था, उतनी तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरने लगा। उधर ग्रेथल भी चिल्लाते हुए अपने मालिक के पास दौड़कर गई और उससे बोली, "आपने भी कैसे मेहमान को बुलाया था !" मालिक ने पूछा, "क्यों ? क्या हुआ ? आख़िर तुम्हारा क्या मतलब है ?" ग्रेथल ने उसे बताया, "जैसे ही मैं दोनों मुर्ग़ों को थाली में लेकर मेज़ पर रखने जा रही थी कि आपके मेहमान ने उन्हें झपटकर उठा लिया और उन्हें लेकर भाग गया।"

अपने दो अच्छे मुर्ग़े खोने के कारण दुखी मालिक बोला, "सचमुच ये तो बहुत अशिष्ट आचरण रहा। काश, वह कम-से-कम एक तो मेरे लिए छोड़ जाता। मेरे पास खाने के लिए कुछ तो बचा रहता।" मालिक अपने मेहमान का नाम लेता हुआ दौड़कर उसके पीछे गया। लेकिन उसने उसकी पुकार पर कोई ध्यान न दिया। चाकू अपने हाथ में लिये ही मालिक उसका पीछा करने लगा। वह "केवल एक ! केवल एक !" चिल्लाता हुआ जा रहा था, जिससे उसका मतलब था कि मेहमान एक मुर्ग़ा तो उसके लिए छोड़कर जाए। लेकिन मेहमान ने सोचा कि वह केवल एक कान काटने की बात कर रहा है और इसलिए वह सिर पर पाँव रखकर तेज़ी से भागने लगा, ताकि जल्दी-से-जल्दी सुरक्षित और सकुशल अपने घर पहुँच जाए।

3

ख़रगोश और साही

तुम्हें यह कहानी झूठी लग सकती है, लेकिन फिर भी यह सच भी हो सकती है—क्योंकि मेरे दादाजी जब इसे सुनाते थे तो वह यह कहकर कहानी समाप्त करते थे—"यह सब सच है, मेरे बेटे ! ऐसा न होता तो मैं तुम्हें कभी न सुनाता।" तो वह कहानी इस तरह है—

फ़सलों के मौसम की वह एक ख़ूबसूरत सुबह थी। कुटू की फ़सल में फूल आ गए थे। ऊपर सूरज चमक रहा था। शान्त हवा खेतों में बह रही थी। लार्क पक्षी गा रहे थे और रास्तों पर सुन्दर पोशाकें पहने लोग चर्च की ओर जा रहे थे। हर प्राणी प्रसन्न था, यहाँ तक कि साही भी जो अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा उस ख़ूबसूरत सुबह का गीत गा रहा था। घर के अन्दर साही की पत्नी रसोईघर को धो-सुखा रही थी। इसके बाद उसे खेतों पर जाकर देखना था कि फ़सल कैसी तैयार हो रही है। लेकिन उसे इतनी देर हो रही थी कि उसका साही पति ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं कर सकता था—इसलिए वह अकेला ही चल दिया।

थोड़ी दूर चलने के बाद ही उसे बन्दगोभी के खेत के पास एक ख़रगोश दिखाई दिया। उसने अनुमान लगाया कि वह भी यहाँ उसी की तरह खाने की तलाश में आया है। जैसे ही श्रीमान साही ने ख़रगोश को देखा, उन्होंने उसे नमस्ते कहा। लेकिन ख़रगोश तो बड़ा घमण्डी था। उसने अहंकार भरी नज़र साही पर डाली और उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। इसके विपरीत ख़रगोश ने अकड़कर साही से पूछा कि वह इतनी सुबह-सुबह कहाँ घूमने निकला है। साही बोला, "मैं टहलने निकला हूँ।" ख़रगोश ने ताना मारते हुए कहा, "टहलने ! मुझे तो लगता है कि इन पैरों के साथ तुम्हें कुछ बेहतर काम करना चाहिए।"

इस उत्तर से साही को बेहद ग़ुस्सा आया, क्योंकि उसे अपने पैरों के बारे में बात करना बिलकुल पसन्द नहीं था। उसके पैर बहुत छोटे थे और इसमें उसका

कोई दोष भी नहीं था। फिर भी उसने ख़रगोश से कहा, "तुम्हें इतना घमण्ड करने की ज़रूरत नहीं है। तुम अपने पैरों से क्या कर सकते हो ?" ख़रगोश बोला, "यह मेरा व्यक्तिगत मामला है।" इस पर साही बोला, "मुझे लगता है कि यदि हम दौड़ लगाएँ तो मैं तुम्हें हरा सकता हूँ।" ख़रगोश तिरस्कार से बोला, "मज़ाक़ करते हो ! अरे छोटे पैरवाले जानवर ! यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन इनाम क्या होगा ?"

साही बोला, "एक सोने की ज़ंजीर और शराब की एक बोतल।"

ख़रगोश बोला, "तो बात पक्की रही, लेकिन दौड़ अभी ही होनी चाहिए।"

साही ने जवाब दिया, "नहीं, इतनी जल्दी मत करो। मैं अभी ठीक से तैयार नहीं हूँ ! मैं घर जाकर तरोताज़ा होकर आधे घण्टे में लौटता हूँ।"

साही जल्दी से गया और ख़रगोश ख़ुशी-ख़ुशी उसका वहीं इन्तज़ार करता रहा। घर जाते समय रास्ते में साही ने सोचा, 'ख़रगोश बहुत घमण्डी है, साथ ही एकदम मूर्ख भी। वह सोचता है कि वह मुझे अपने लम्बे पैरों से हरा देगा, लेकिन मैं उसे हराने की कोई तरक़ीब ज़रूर निकाल लूँगा।' साही ने घर पहुँचकर अपनी पत्नी को तुरन्त तैयार होकर अपने साथ चलने को कहा।

पत्नी ने पूछा, "क्या बात है ?" वह बोला, "मैंने ख़रगोश के साथ दौड़ में जीतने के लिए सोने की जंज़ीर और शराब की बोतल की शर्त लगायी है। तुम्हें इसकी गवाही देनी होगी।"

पत्नी बोली, "हे ईश्वर ! तुम होश में तो हो ? तुम जानते हो तुम क्या कर रहे हो ? तुम ख़रगोश से दौड़ कैसे जीत सकते हो ?"

"चुप रहो। यह मेरा अपना मामला है। मर्दों के काम में दख़ल मत दो। जल्दी जाओ और तैयार होकर मेरे साथ चलो।" जैसे ही उसकी पत्नी तैयार होकर आई, वे चल पड़े। रास्ते में वह बोला, "अब मेरी बात सुनो। उस मैदान में हम दौड़ लगाएँगे। ख़रगोश बाड़ की एक तरफ़ दौड़ेगा और मैं दूसरी तरफ़। तुम बाड़ के एक सिरे पर खड़ी रहना और जब ख़रगोश वहाँ पहुँचे तो तुम चिल्ला पड़ना, "मैं तो यहाँ पहले से हूँ।"

थोड़ी ही देर में वे मैदान में आ गए। साही बाड़ के एक सिरे पर रुक गया और उसकी पत्नी दूसरे सिरे पर चली गई। उन्होंने अपनी जगह ली ही थी कि ख़रगोश आया और उसने पूछा, "क्या तुम तैयार हो ?" साही बोला, "हाँ !" दोनों अपनी जगह आ गए और ख़रगोश चिल्लाया, "एक, दो, तीन !" और मैदान में तूफ़ान की तरह दौड़ने लगा। जबकि साही केवल तीन क़दम चला और अपनी



जगह वापस आ गया।

ख़रगोश तुरन्त दौड़ ख़त्म होने के निशान तक पहुँच गया, क्योंकि वह बहुत तेज़ दौड़ा था। लेकिन उसके पहुँचने के एकदम पहले ही साही की पत्नी वहाँ से चिल्लाई, "मैं तो यहाँ पहले से हूँ।"

ख़रगोश यह सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने सोचा यह सचमुच साही ही है, क्योंकि साही और उसकी पत्नी में देखने में कोई अन्तर नहीं था। ख़रगोश ने सोचा,

"यह नहीं चलेगा," और बोला, "एक, दो, तीन फिर से।" फिर वह और भी तेज़ी से दौड़ा और साही की पत्नी चुपचाप अपनी जगह बैठी रही। ख़रगोश जैसे ही दूसरी तरफ़ पहुँचने को था, श्रीमान साही वहाँ से चिल्लाए, "मैं पहले पहुँच गया।" ख़रगोश ग़ुस्से में चिल्लाया, "क्या ? फिर से ?" और बोला, "क्या एक और दौड़ लगाएँ ?" साही विनम्रता से बोला, "हाँ ठीक है, जितनी बार चाहो उतनी बार, मुझे कोई परेशानी नहीं है।"

और इस तरह ख़रगोश आगे और पीछे कुल तिहत्तर बार दौड़ा, लेकिन हर बार साहियों ने उसे बेवक़ूफ़ बनाया। हर बार उसके आख़िर तक पहुँचने के पहले श्रीमान या श्रीमती साही चिल्ला पड़ते, "मैं यहाँ पहले से हूँ।" चौहत्तरवीं बार ख़रगोश नहीं दौड़ सका। वह बीच में ही थक कर गिर पड़ा और कुछ देर वहीं पड़ा रहा। लेकिन साही अपनी जीती हुई सोने की ज़ंजीर और शराब की बोतल लेकर ख़ुशी-ख़ुशी अपनी पत्नी के साथ घर चला गया।

4

हिमानी

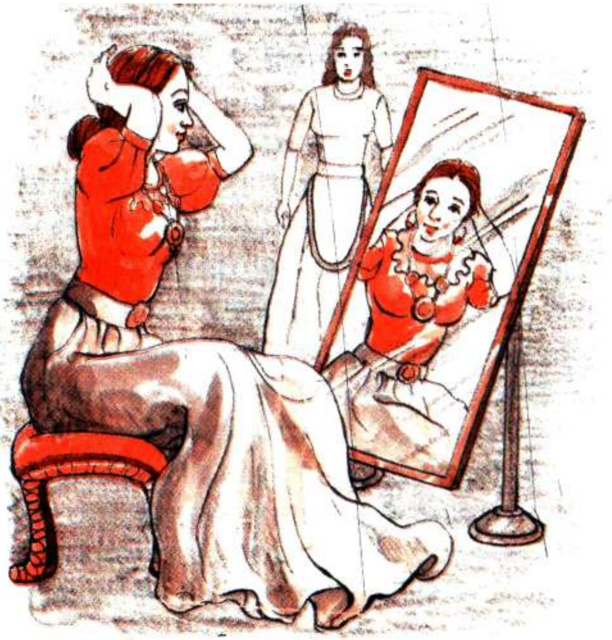
एक बार कड़ाके की ठंड के दिनों में, जब बर्फ़ के कतरे बादलों से पंखों की तरह झर रहे थे, एक रानी अपने महल की आबनूस की काली खिड़की में बैठी थी। वह अपने पति की क़मीज़ सिल रही थी। वह यह काम करते हुए खिड़की से बाहर देख रही थी कि तभी अचानक उसकी उँगली में सुई चुभ गई और तीन बूँद ख़ून बर्फ़ पर गिर गया। ख़ून का लाल रंग सफ़ेद बर्फ़ पर बहुत सुन्दर लग रहा था। उसने सोचा "यदि मेरा बच्चा इस बर्फ़ की तरह सफ़ेद होता, इस ख़ून की तरह लाल होता और इस खिड़की की चौखठ की तरह काला होता !" जल्दी ही उसे एक बेटी पैदा हुई जो बर्फ़ की तरह सफ़ेद थी, ख़ून की तरह लाल थी और उसके बाल आबनूस की तरह काले थे और इसीलिए उसका नाम स्नोह्वाइट यानी हिमानी रखा गया। जब वह पैदा हुई तो उसकी माँ मर गई।

एक वर्ष के बाद राजा ने दूसरी शादी कर ली। वह रानी बहुत सुन्दर थी, लेकिन उसे इतना घमण्ड था कि वह किसी को अपने सामने कुछ समझती ही नहीं थी। उसके पास एक अद्‌भुत आईना था। जब वह उसके सामने जाती और कहती—

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"
दर्पण कहता—
"रानी तुम ही हो, सबसे सुन्दर रानी"

वह बेहद ख़ुश हो जाती, क्योंकि उसे मालूम था कि दर्पण सच कह रहा है।

नन्हीं हिमानी बड़ी हो गई थी और सुन्दर भी। जब वह सात वर्ष की थी तो उसका रंग दोपहर की धूप की तरह साफ़ था और वह रानी से भी सुन्दर थी।



अब जब रानी ने दर्पण से पूछा—

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"

दर्पण बोला—

"रानी पहले आप थीं सबसे सुन्दर,
अब है हिमानी सबसे सुन्दर।"

इससे रानी बहुत डर गई और ईर्ष्या से पीली पड़ गई। उस दिन से जब भी वह हिमानी को देखती तो उसका मन खट्टा हो जाता। वह उससे पहले से भी ज़्यादा घृणा करने लगी। उसकी घृणा इतनी बढ़ गई कि उसे दिन-रात चैन नहीं

था। तब उसने एक दिन एक शिकारी से कहा, "बच्ची को जंगल में ले जाओ। मैं उसे देखना नहीं चाहती। इसे मार डालना और सबूत के लिए मेरे पास उसका दिल और जीभ लेकर आओ।"

शिकारी ने सुना और लड़की को तो ले गया, लेकिन जब उसने उसे मारने के लिए चाकू निकाला, वह रोने लगी और बोली, "ओह, मेरी जान बख़्श दो ! मैं जंगल चली जाऊँगी और फिर यहाँ कभी नहीं आऊँगी।"

यह सुनकर शिकारी का दिल पिघल गया और वह उसकी सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसे उस पर दया आ गई। वह बोला, "ठीक है, भाग जाओ बच्ची," लेकिन उसने सोचा, "जंगली जानवर तो तुम्हें खा जाएँगे।" फिर भी उसे लगा जैसे उसके दिल से एक भारी पत्थर हट गया हो। दरअसल वह उस लड़की को मारना नहीं चाहता था और वास्तव में उसने यही किया। उसी समय वहाँ एक सुअर घूमता हुआ आ गया। जैसे ही शिकारी ने उसे देखा, उसे पकड़ लिया और मारकर उसकी जीभ और दिल निकाल लिया और रानी के पास सबूत के रूप में ले गया।

बेचारी हिमानी बिना माँ की अकेली रह गई थी। जब उसका दुख थोड़ा कम हुआ तो वह अपने आसपास इतने सारे पेड़ों को देखकर दंग रह गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस ओर देखे। वह दौड़ने लगी और पत्थरों और काँटों पर दौड़ती गई। जब वह जंगली जानवरों के पास से गुज़रती तो वे उछल पड़ते। लेकिन उन्होंने उसे कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया। जब तक उसके पैर नहीं थक गए वह दौड़ती रही। जब अँधेरा हो गया तो उसे एक छोटा-सा घर दिखाई पड़ा। वह आराम करने के लिए उसमें चली गई। इस घर में सब कुछ बेहद छोटा था, लेकिन वहाँ सब कुछ साफ़-सुथरा और सुन्दर था। बीच में एक छोटी मेज़ रखी थी, जिस पर सफ़ेद मेज़पोश बिछा हुआ था और सात थालियाँ रखी थीं। हर प्लेट में चम्मच भी था और साथ ही सात छोटे प्याले भी रखे थे। दीवार से लगे हुए सात नन्हें बिस्तर एक क़तार में बिछे थे, जिन पर झक्क सफ़ेद चादरें बिछी थीं। नन्हीं हिमानी भूखी-प्यासी थी। उसने हर थाली से थोड़ा-थोड़ा दलिया खाया और हर गिलास से एक-एक बूँद शर्बत पिया, क्योंकि वह किसी और का खाना ख़त्म नहीं करना चाहती थी। वह बेहद थकी हुई थी, इसलिए वह वहाँ बिछे एक बिस्तर पर लेट गई।

लेकिन वह उस बिस्तर पर ठीक से नहीं सो पायी। वह दूसरे बिस्तर पर लेटी, लेकिन वह बहुत लम्बा था। चौथा बहुत छोटा था, पाँचवाँ बहुत सख़्त था और आख़िरकार सातवाँ उसे सही लगा और वह चादर ओढ़कर ईश्वर का धन्यवाद करते हुए सो गई।

अँधेरा होने पर उस घर के मालिक सात बौने घर वापस लौटे। वे पहाड़ों में धातुओं की खुदाई करके लौटे थे। उन्होंने सबसे पहले छोटे-छोटे सात दिये जलाये और रोशनी होते ही उन्हें समझ में आ गया कि घर में कोई है, क्योंकि वे घर को जैसा छोड़कर गए थे, घर वैसा नहीं था। पहले ने पूछा, "मेरी कुर्सी पर कौन बैठा था ?" दूसरे ने पूछा, "मेरी थाली में से किसने खाना खाया ?" छठे ने पूछा, "मेरी छुरी से किसने काटा ?" और सातवें ने पूछा, "मेरे गिलास में से किसने पिया ?" पहले ने अपने आसपास देखा, "मेरे बिस्तर पर कौन सोया ?" क्योंकि उसने देखा कि चादरें मुड़ी हुई थीं। यह सुनकर बाक़ी भी आए और उन्होंने अपने बिस्तर को देखा और चिल्लाये, "हमारे बिस्तरों पर भी कोई लेटा था।" सातवाँ बौना अपने बिस्तर तक दौड़कर गया और उसने अपने बिस्तर पर सोई हिमानी को देखा। उसने अपने साथियों को बुलाया। वे चिल्लाते हुए आए और उन्होंने अपनी मशालें उठाकर देखा। रोशनी हिमानी के ऊपरी पड़ी तो वे चिल्लाये, "हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! कितनी सुन्दर है यह !" वे इतने ख़ुश हुए कि उन्होंने उसे जगाया नहीं और सातवें बौने ने, जिसके बिस्तर वह लेटी थी, थोड़ी-थोड़ी देर बाद सबके बिस्तर पर सोकर रात काट ली।

जैसे ही सुबह हुई हिमानी जागी तो वह उन सात बौनों को देखकर बेहद डर गई। लेकिन उन्होंने बहुत प्यार से उसका नाम पूछा। वह बोली, "मेरा नाम हिमानी है।" उन्होंने फिर पूछा, "तुम इस घर में कैसे घुसीं ?" उसने उन्हें बताया कि कैसे उसकी सौतेली माँ उसे मरवानेवाली थी और एक शिकारी ने उसकी जान बचाई। फिर पूरा दिन भटकने के बाद उसे यह घर मिला। जब उसकी बात पूरी हुई तो बौने बोले, "क्या तुम हमारे घर की देखभाल करोगी, हमारे लिए खाना बनाओगी हमारे बिस्तर लगाओगी, कपड़े धोओगी-सिलोगी और सब कुछ ठीक-ठाक रखोगी ? अगर तुम ऐसा करने के लिए तैयार हो तो हम तुम्हें यहाँ रख लेंगे और तुम्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।"

हिमानी ने उत्तर दिया, "ठीक है, मैं ऐसा करूँगी।" और वह उनके साथ रहकर उनके घर की देखभाल करने लगी। सुबह बौने जंगल में चले जाते और सोना तथा दूसरी धातुएँ तलाश करते। शाम को वे घर लौटते तो उन्हें भोजन तैयार मिलता। दिन में चूँकि लड़की अकेली रह जाती थी, इसलिए बौनों ने उसे सावधान किया और बोले, "अपनी सौतेली माँ से सावधान रहो। उसे तुम्हारे यहाँ होने का जल्दी ही पता चल जाएगा। किसी को भी भीतर मत आने देना।"

इस बीच रानी ने मान लिया था कि उसने अपनी सौतेली बेटी की जीभ

और दिल खा लिया है और अब उससे सुन्दर दुनिया में कोई भी नहीं है। एक दिन वह फिर दर्पण के सामने आई और बोली–

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"

दर्पण बोला–

"रानी, पहले आप थीं सबसे सुन्दर
अब है हिमानी सबसे सुन्दर।
रहती है वह बौनों के संग।
हरे-भरे जंगल के अन्दर।"

यह सुनकर रानी डर गई, क्योंकि वह समझ गई कि शिकारी ने उसे धोखा दिया था और हिमानी जीवित है। अब वह लगातार सोचने लगी कि उसे अपना काम कैसे पूरा करना चाहिए। जब तक वह देश में सबसे सुन्दर नहीं कहलाती, उसे चैन नहीं मिलनेवाला था। अचानक उसके मन में एक विचार आया। उसने अपना मुँह रँग लिया और फेरीवाली का वेश बना लिया, जिससे कि कोई भी उसे पहचान न सके। इस वेश में वह बौनों के घर तक पहुँची और दरवाज़ा खटखटाकर बोली, "बढ़िया-बढ़िया चीज़ें ! सुन्दर चीज़ें ले लो !"

हिमानी ने खिड़की से झाँका और बोली, "नमस्ते, तुम क्या बेच रही हो ?" वह बोली, "बढ़िया चीज़ें, सुन्दर चीज़ें, रंगीन कपड़े," और यह कहकर उसने रंगीन रेशम का एक जोड़ा दिखाया। हिमानी ने सोचा, "इस ईमानदार औरत को मुझे भीतर बुला लेना चाहिए।" और दरवाज़ा खोलकर एक अंगरखे का दाम तय करने लगी। बूढ़ी औरत बोली, "लाओ, मैं तुम्हें यह पहना दूँ।" हिमानी को ज़रा भी शक नहीं हुआ और उस औरत ने उसको वह अंगरखा पहना दिया। लेकिन उसे तेज़ी से इतनी कसकर बाँध दिया कि हिमानी की तो साँस ही रुक गई और वह अधमरी-सी होकर गिर पड़ी। बूढ़ी औरत ने फ़ुर्ती से भागते हुए सोचा, "अब मैं सबसे सुन्दर हूँ।"

उसके जाने के तुरन्त बाद सातों बौने शाम को घर लौटे और अपनी नन्हीं नौकरानी को ज़मीन पर पड़ा देखकर बेहद डर गए। वह न तो साँस ले रही थी और न ही हिल-डुल रही थी जैसे कि मर गई हो। उन्होंने उसे उठाया और उसका अंगरखा एकदम कसकर बाँधा हुआ देखकर उसे काटा, जिससे वह फिर से साँस लेने लगी। धीरे-धीरे उसे होश आ गया। जब बौनों ने पूरी बात सुनी तो वे बोले, "वह बूढ़ी फेरीवाली और कोई नहीं, तुम्हारी सौतेली माँ थी। अपना ध्यान ठीक

से रखो और जब हम न हों तो किसी को भी भीतर मत आने दो।"

इस बीच रानी घर पहुँची और उसने दर्पण के सामने जाकर अपनी बात दोहरायी–

"दर्पण, दर्पण बोले दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"

और उसने हमेशा की तरह जवाब दिया–

"रानी, पहले आप थी सबसे सुन्दर
हिमानी अब है सबसे सुन्दर,
रहती है वह बौनों के संग
हरे-भरे जंगल के अन्दर।"

जैसे ही उसने यह सुना, उसका दिल जल उठा। वह यह सोचकर बेहद डर गई कि हिमानी जीवित है। उसने सोचा, "अब मैं कुछ ऐसा करूँगी, जिससे वह ख़त्म हो जाए।" यह सोचकर उसने अपने ही ज़हर का प्रयोग करके एक ज़हरीली कंघी बनायी और वेश बदलकर एक बूढ़ी विधवा का रूप बना लिया। फिर वह पहाड़ी पर सातों बौनों के घर गई और दरवाज़ा खटखटाकर बोली, "अच्छी-अच्छी चीज़ें ख़रीदो !" हिमानी ने झाँका और बोली, "आगे जाओ, मैं तुम्हें भीतर नहीं आने दूँगी।"

बूढ़ी औरत ने अपनी ज़हरीली कंघी हाथ में ली और बोली, "लेकिन तुम देख तो सकती हो।" यह कंघी हिमानी को बेहद पसन्द आई और उसका दिल डोल गया। उसने दरवाज़ा खोल दिया। जब उसने कंघी ख़रीद ली तो बूढ़ी औरत बोली, "आओ, मैं तुम्हें कंघी कर दूँ।" हिमानी ने उसे कंघी करने की अनुमति दे दी। उसने बालों में कंघी करना शुरू ही किया था कि ज़हर ने असर करना शुरू कर दिया और हिमानी बेहोश होकर गिर पड़ी। दुष्ट बूढ़ी रानी चिल्लायी, "अरे सुन्दरता की मूरत ! तुम्हारा अन्त आ गया।" और वहाँ से चली गई।

संयोग से जल्दी ही शाम हो गई और सातों बौने लौट आए। जैसे हिमानी को बेहोश पड़े हुए देखा, उन्हें बूढ़ी रानी पर शक हुआ। जल्दी ही उन्हें ज़हरीली कंघी मिल गई। उन्होंने उसे हिमानी के बालों से बाहर निकाला। हिमानी तुरन्त उठ बैठी और उसने पूरा क़िस्सा सुनाया। उन्होंने उसे उसकी सौतेली माँ के लिए फिर से चेतावनी दी और कहा कि वह फिर कभी किसी के लिए दरवाज़ा न खोले।

इस बीच रानी ने घर लौटकर फिर दर्पण से बात की और उसे फिर से वही जवाब मिला। वह ग़ुस्से और ईर्ष्या से काँपने लगी और उसने क़सम खायी कि

हिमानी को मरना ही होगा, भले ही उसकी जान क्यों न चली जाए। वह भीतर एक गुप्त कक्ष में गई और ख़तरनाक घातक विष से भरा एक सेब ले आई। बाहर से वह एकदम सुन्दर दिखाई पड़ रहा था और एकदम लाल था। उसे देखकर किसी के भी मुँह में पानी आ सकता था। लेकिन जो भी उसका एक टुकड़ा भी खा लेता, उसकी मौत निश्चित थी। जैसे ही सेब तैयार हुआ, रानी ने फिर अपना वेश बदल डाला और किसान की पत्नी की तरह रूप बना लिया। फिर वह सातों बौनों के घर पहुँची और दरवाज़ा खटखटाया। हिमानी ने सिर बाहर निकाला और बोली, "मैं किसी को भी भीतर नहीं आने दूँगी। मुझे सातों बौनों ने मना किया है।"

बूढ़ी औरत बोली, "मुश्किल है तो मैं अपने सेब वापस ले जाती हूँ। लेकिन एक सेब तुम रख लो।"

हिमानी बोली, "नहीं, मैं नहीं ले सकती।"

बूढ़ी औरत बोली, "तुम किस बात से डरती हो ? सेब काटो, मैं भीतर का हिस्सा खाऊँगी और तुम बाहर का लाल हिस्सा खाना। (सेब इतनी चतुराई से बनाया गया था कि केवल बाहरी हिस्से में ही ज़हर था) हिमानी को सेब खाने की बेहद इच्छा हुई। जब उसने बूढ़ी औरत को भीतर का हिस्सा खाते देखा तो वह रुक नहीं सकी और हाथ बढ़ाकर ज़हरीला हिस्सा ले लिया। उसने एक टुकड़ा अपने मुँह में रखा ही था कि वह गिरकर मर गई। रानी ने चमकती हुई आँखों से उसे देखा और दुष्टता से हँसते हुए बोली, "बर्फ़ जैसी सफ़ेद, रक्त जैसी लाल, आबनूस जैसी काली ! अब की बार बौने तुम्हें फिर से नहीं ज़िन्दा कर पाएँगे।"

उसने घर लौटकर दर्पण से पूछा–

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"

दर्पण बोला–

"रानी तुम ही हो सबसे सुन्दर"

यह सुनकर उसके दिल की ईर्ष्या की आग ठण्डी हुई, वैसे ही जैसे किसी ईर्ष्यावान व्यक्ति को शान्ति मिल सकती हो।

जब शाम को बौने घर लौटे तो उन्होंने हिमानी को ज़मीन पर पड़ा पाया। उसके शरीर में प्राण नहीं दिखाई दे रहे थे। वह मरी हुई लग रही थी। उन्होंने उसे उठाया और वहाँ किसी ज़हरीली वस्तु की तलाश की। उसका अंगरखा खोला और उसके बालों की भी तलाशी ली। उसे पानी और शराब से नहलाया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। नन्हीं बच्ची सचमुच मर गई थी। उन्होंने उसे अरथी पर

लिटाया और उसे घेरकर बैठ गए और तीन दिन तक बिना रुके लगातार रोते रहे। इसके बाद वे उसे दफ़नाने वाले थे, लेकिन वह तो अभी तरोताज़ा लग रही थी और उसके गाल भी अभी तक लाल थे। यह देखकर उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "हम इसे ख़ाली ज़मीन पर ऐसे ही नहीं दफ़ना सकते।" और उन्होंने उसके लिए काँच का एक ताबूत बनवाने का आदेश दिया।

इस ताबूत में उसे चारों तरफ़ से देखा जा सकता था। बौनों ने ताबूत पर सुनहरे अक्षरों में उसका नाम भी खुदवा दिया और यह भी लिखवा दिया कि वह राजा की बेटी थी। उन्होंने वह काँच का ताबूत एक पत्थर पर रखा। वहाँ कोई न कोई बौना पूरे समय मौजूद रहा। यहाँ तक कि जानवर भी हिमानी की मृत्यु से दुखी थे। सबसे पहले एक उल्लू आया, फिर आया मुर्ग़ा और सबसे अन्त में एक बत्तख़ आई।

बहुत समय तक हिमानी अपने ताबूत में पड़ी रही, लेकिन उसका रंग नहीं बदला। उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे कि वह सो रही है। वह अभी भी बर्फ़-जैसी सफ़ेद, रक्त-जैसी लाल थी और उसके बाल आबनूस-जैसे काले थे। इसी समय एक राजा का बेटा, जो वहाँ से गुज़र रहा था, बौनों के घर रात बिताने आया। उसने पत्थर पर रखा हुआ काँच का ताबूत देखा, हिमानी को भी देखा और उस ताबूत पर लिखी सुनहरी इबारत भी पढ़ी।

उसने ताबूत को पास से देखा और बौनों से कहा, "मुझे यह ताबूत दे दो, मैं तुम्हें मुँहमाँगा दाम दूँगा।"

बौनों ने कहा, "हम इसे किसी भी क़ीमत पर नहीं बेचेंगे।"

राजकुमार बोला, "तब तुम मुझे यह ऐसे ही दे दो, क्योंकि मैं हिमानी के बिना नहीं रह सकता। मैं इसका पूरी ज़िन्दगी सम्मान करूँगा और इसे सम्भाल कर रखूँगा।"

जब बौनों ने देखा कि वह बहुत ईमानदार है तो उन्हें उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे वह ताबूत दे दिया। राजकुमार उसे अपने सेवकों के कन्धों पर लदवाकर चल पड़ा। रास्ते में उनके पैर एक गड्ढे में पड़े और उनके लड़खड़ाने से लगे झटके से हिमानी के मुँह से ज़हरीले सेब का टुकड़ा निकलकर बाहर गिर पड़ा। जल्दी ही उसने अपनी आँखें खोलीं और ताबूत का ढक्कन उठाकर वह उठी और बोली, "मैं कहाँ हूँ ?"

ख़ुशी से भरकर राजकुमार बोला, "तुम मेरे साथ एकदम सुरक्षित हो," और फ़िर उसने उसे पूरी कहानी सुनाई। उसने यह भी कहा कि वह उससे विवाह करेगा

और वह उसे अपने पिता के महल में ले जा रहा है। हिमानी ने हाँ कर दी और जब वे राजा के महल में पहुँचे तो बेहद धूमधाम से उनका तुरन्त विवाह हुआ।

संयोग से उस विवाह में हिमानी की बूढ़ी सौतेली माँ को भी निमन्त्रित किया गया था। जब वह विवाह में जाने के लिए अच्छी तरह तैयार हो गई तो वह दर्पण के सामने जाकर बोली—

"दर्पण, दर्पण बोलो दर्पण,
कौन है सबसे सुन्दर ?"

दर्पण बोला—

"रानी, पहले आप थीं सबसे सुन्दर
राजा की पत्नी है अब आपसे सुन्दर।"

ये शब्द सुनकर रानी गुस्से से तिलमिला गई और इतनी बेचैन हो गई कि उसे समझ ही नहीं आया कि वह क्या करे ! पहले-पहल तो उसे लगा कि वह विवाह में न जाए, लेकिन राजा की पत्नी को देखने की इच्छा वह दबा नहीं पायी। जैसे ही वह विवाह समारोह में पहुँची, उसने हिमानी को पहचान लिया। वह ग़ुस्से और बदले की भावना से इस तरह भर गई कि उसके पैर ज़मीन में ही गड़ गए। इसी समय सौतेली माँ के सामने लाल जलते लोहे के जूते लाकर रखे गए और उसे उन्हें पहनकर तब तक नाचना पड़ा, जब तक वह गिरकर मर नहीं गई।

5

गौरैया और उसके चार बच्चे

एक गौरैया के चार बच्चे एक अबाबील के घोंसले में थे। जैसे ही वे बड़े हुए तो कुछ शरारती लड़कों ने घोंसला देख लिया और बच्चों को बाहर निकाल लिया। लेकिन तभी हल्की हवा चली और उन्हें उड़ा ले गई। गौरैया यह सोचकर दुखी थी कि उसके बच्चे इस दुनिया में ख़तरों के बारे में जाने बिना और अच्छी आदतों को सीखे बिना ही बाहर निकल गए।

बसन्त ऋतु में बहुत-सी गौरैयाँ मक्के के खेत में इकट्ठा हुईं। इस समय गौरैया की भी अपने बच्चों से मुलाक़ात हुई। वह बेहद प्रसन्न हुई और उन्हें अपने साथ घर ले गई। वह बोली, 'ओह, मेरे बच्चो, मैं गर्मियों में तुम्हारे बारे में सोचकर कितना परेशान हुई। तुम लोग मेरी सलाह लिये बिना बाहर चले गए थे। अब मेरी बात सुनो और अपनी माँ का ध्यान रखो, अपना भी ध्यान रखो, क्योंकि छोटे बच्चों पर बड़े-बड़े ख़तरे आते हैं।''

इसके बाद उसने अपने सबसे बड़े बच्चे से पूछा कि वह गर्मियों में कहाँ और किस तरह था। वह बोला, ''मैं एक बग़ीचे में था और सेबों के पकने तक कीड़े और केंचुए खा रहा था।''

''गौरैया बोली, ''मेरे प्यारे बच्चे, चोंच से खोदकर खाना इतनी बुरी बात नहीं है, लेकिन इसमें ख़तरा बहुत है। अपने आसपास नज़र रखो, ख़ासतौर से तब, जबकि लोग बग़ीचे में लम्बे हरे डंडे लेकर आएँ, जो खोखले होते हैं और उनके एक सिरे पर छेद होता है।''

बच्चा बोला, ''ठीक है माँ, लेकिन यदि उस छेद पर मोम से हरी पत्ती चिपकी हो तो क्या करना चाहिए ?

माँ ने पूछा, ''तुमने ऐसा कहाँ देखा ?'' बच्चा बोला, ''एक व्यापारी के बग़ीचे में।'' गौरैया चिल्लायी, ''अरे मेरे बेटे ! व्यापारी बहुत चालाक होते हैं। तुम अब



दुनिया में बाहर जा चुके हो और तुमने लोगों की चालाकी भी देख ली है। जो कुछ तुमने सीखा है, उसका उपयोग करो और दूसरों पर बहुत ज़्यादा विश्वास मत करो।"

फिर उसने दूसरे बच्चे से पूछा कि वह कहाँ था। वह बोला, "दरबार में।" गौरैया बोली, "वास्तव में गौरैया और इस तरह के पक्षी ऐसी जगहों पर नहीं जाते। दरबार में ख़ूब सारा सोना, मख़मल, रेशम, हथियार, घोड़े, बाज़, गिद्ध और उल्लू जैसे पक्षी होते हैं। क्या तुममें जई के गोदामों में जाने की इच्छा को रोकने की ताक़त है ? या मक्के के भुट्टों से दाने तोड़कर खाने की शक्ति है ? यदि ऐसा है, तभी तुम अपनी रोज़ की भूख मिटा सकते हो। क्या तुम वहाँ गए थे ?"

बेटा बोला, ''हाँ, लेकिन यदि लड़के घास को बुन लें तो उनमें से कइयों को उनसे लटकाया जा सकता है।''

गौरैया ने पूछा, ''तुमने यह कहाँ देखा ?''

''दरबार में। अस्तबल के लड़कों के साथ।''

''मेरे बेटे, अस्तबल के लड़के बुरे हैं। यदि तुम दरबार में भद्र सामन्तों के साथ रहे हो और तुमने कहीं पंख भी नहीं गिराये हैं, तब तुमने सब कुछ ध्यान से सीख लिया है और तुम्हें सही तरह व्यवहार करना आता है। लेकिन फिर भी अपनी नज़र चौकन्नी रखो, क्योंकि भेड़िये अक्सर सबसे चतुर कुत्तों को भी खा जाते हैं।''

गौरैया ने अपने तीसरे बच्चे से पूछा, ''तुमने अपनी जीविका कहाँ से कमाई ?'' वह बोला, ''सड़कों और गलियों पर मैं डिब्बों और रस्सियों पर घूमता रहा, जिससे मुझे जब-तब मक्के और जौ खाने को मिलते रहते थे।''

गौरैया बोली, ''यह तो सचमुच बड़ा अच्छा था, लेकिन बाड़ों का ध्यान रखना। जब कोई पत्थर उठाने झुके तो ध्यान रखना और तुरन्त वहाँ से फुर्र हो जाना।''

बच्चा बोला, ''यह सही है, लेकिन यदि कोई पत्थरों की दीवार के सामने अपनी जेबों में छोटे कंकड़ छिपाये हो तो क्या करना चाहिए ?''

''तुमने यह कहाँ देखा ?''

वह बोला, ''खदान-मज़दूरों के पास। जब वे कहीं जाते हैं तो दूसरों पर फेंकने के लिए पत्थर छिपाकर ले जाते हैं।''

''खदान-मज़दूर कामकाजी और उत्साही होते हैं। यदि तुम उनके बीच रहे हो तो तुमने उन्हें अच्छी तरह देखा होगा।''

सबसे आख़िर में गौरैया सबसे छोटे बच्चे के पास गई। वह बोली, ''ओह मेरे दुलारे, तुम हमेशा से ही सबसे कमज़ोर और सबसे बेवक़ूफ़ रहे हो। तुम मेरे पास रह जाओ। दुनिया में बाहर बड़े-बड़े पंजों और तेज़ चोंचोंवाले दुष्ट पक्षी भरे हैं, जो कि छोटे पक्षियों को मारकर खा जाते हैं। मेरे साथ रहो और ज़मीन के कीड़े और मकड़ियाँ खाकर अपना पेट भरो।''

''मेरी प्यारी माँ, जो किसी को बिना कोई हानि पहुँचाए अपनी जीविका कमाता है, वही अच्छी तरह रहता है। कोई गिद्ध, बाज़, उल्लू या गरुड़ उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता है, क्योंकि हर सुबह-शाम वह ईश्वर से अपना भोजन माँगता है। ईश्वर जो कि सभी जंगल और गाँव के पक्षियों को बनाने और बचाने वाला है। जो छोटे कीड़ों को भी पालता है, उनकी पुकार सुनता है। उसकी इच्छा के बिना

न कोई गौरैया और न ही कोई बच्चा ज़मीन पर गिर सकता है।" सबसे छोटा बच्चा बोला।"

गौरैया चकित होकर बोली, "तुमने यह सब कहाँ से सीखा ?"

बच्चा बोला, "जब हवा मुझे उड़ा ले गई तो मैं एक गिरजाघर में पहुँचा, जहाँ मैंने खिड़की की मक्खियाँ और मकड़ियाँ खाकर गर्मियाँ बितायीं। वहाँ मैंने उपदेश सुना और परमपिता ने मेरी, दुर्भाग्य और दुष्ट पक्षियों से रक्षा की।"

गौरैया बोली, "सही है बेटे, गिरजाघर वापस जाओ और खिड़कियों से मक्खियाँ और मकड़ियाँ खाकर पेट पालो। रोज़ ईश्वर की प्रार्थना करना मत भूलना ! इसी तरह तुम अच्छे बनकर रहोगे और दुष्ट जंगली पक्षियों के बीच सुरक्षित रहोगे, क्योंकि जो अपने आपको ईश्वर को समर्पित कर देता है, सब कुछ सहन करता है, प्रार्थना करता है, नम्र रहता है, अपने विश्वासों पर दृढ़ रहता है, उसकी अन्तरात्मा शुद्ध रहती है और ईश्वर हमेशा उसकी रक्षा करता है।

6

छोटा बहादुर दर्ज़ी

वह गर्मियों की एक सुबह थी। एक छोटे कद का दर्ज़ी अपने पूरे मन से सिलाई करता हुआ खिड़की के पास अपनी बेंच पर प्रसन्न मुद्रा में बैठा था। तभी वहाँ एक किसान औरत चिल्लाती हुई आई, "अचार-चटनियाँ ले लो। अचार-चटनियाँ ले लो !"

दर्ज़ी ने यह सुना तो खिड़की से बाहर सिर निकालकर पुकारा, "इधर आओ !" औरत अपने भारी बर्तन खोलकर दर्ज़ी को दिखाने लगी। उसने उन्हें ऊपर उठाकर देखा, सूँघकर देखा और कहा, "ये मुझे बहुत अच्छे लग रहे हैं। मुझे इसमें से सौ ग्राम या दो सौ ग्राम ही दे दो।" औरत को लगा था कि उसे एक बढ़िया ग्राहक मिला है। उसने उसे थोड़ा मुरब्बा दे दिया और खीझकर बड़बड़ाती हुई चल पड़ी।

"अब !" दर्ज़ी बोला, "ईश्वर मुझे आशीर्वाद देगा और मुझे नयी शक्ति मिलेगी," कहते हुए उसने अलमारी से रोटी उठाई और और उस पर मुरब्बा लगा लिया।" यह ज़रूर बेस्वाद होगा। लेकिन इसे चखने से पहले मुझे यह वेस्टकोट ख़त्म कर लेना चाहिए।" यह सोचकर उसने रोटी वहीं पास में रख दी और सिलाई करने लगा और ख़ुशी में और बड़े-बड़े टांके लगाने लगा। इसी बीच मुरब्बे की ख़ुशबू छत तक पहुँची और वहाँ बैठी मक्खियाँ मँडराते हुए नीचे आईं और रोटी पर बैठ गईं।

"हुश्श ! तुम्हें किसने बुलाया ?" दर्ज़ी चिल्लाया और उन्हें मार भगाने लगा। लेकिन मक्खियाँ तो उसकी भाषा नहीं समझती थी, इसलिए वे भागी नहीं, वे बार-बार और ज़्यादा संख्या में आने लगीं। उससे नन्हे दर्ज़ी को बेहद ग़ुस्सा आया और उसने कपड़ों का एक झोला उठाकर उसे मक्खियों के बीच दे मारा। जब उसने झोला उठाया तो उसके नीचे कम-से-कम सात मक्खियाँ पैर फैलाये पड़ी थीं। "क्या बात है ?" उसने अपनी बहादुरी की तारीफ़ की। "पूरे शहर में यह ख़बर फैलनी

चाहिए।" जल्दी से उसने कपड़े की एक पट्टी काटी और उसमें तुरपाई की फिर उस पर बड़े अक्षरों में लिखा, "एक बार में सातों ख़त्म !" वह बोला, "आह, केवल शहर ही नहीं, पूरे देश में यह बात फैलनी चाहिए !" उसका दिल ख़ुशी से मेमने की पूँछ-जैसा फड़क उठा।

छोटे क़दवाले दर्ज़ी ने वह पट्टी अपने ऊपर लपेट ली और दुनिया की सैर पर निकलने की तैयारी करने लगा। उसे लगा कि उसकी दुकान उसके बहादुरी भरे कारनामों के लिए बहुत ही छोटी है। निकलने से पहले उसने पूरे घर में देखा कि सफ़र पर ले जाने लायक़ कोई चीज़ है या नहीं। लेकिन उसे केवल पुराना पनीर का टुकड़ा मिला, जिसे उसने जेब में रख लिया। दरवाज़े के सामने उसे झाड़ियों में फँसी एक चिड़िया दिखाई दी। उसे भी उसने निकालकर जेब में रख लिया। इसके बाद वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह फुर्तीला और तरोताज़ा था। उसे थकान नहीं महसूस हो रही थी। छड़ी के सहारे वह पहाड़ी पर चढ़ा और जब वह सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा तो उसे एक बहुत बड़ा राक्षस वहाँ बैठा हुआ दिखाई दिया। वह राक्षस बड़ी तसल्ली से बैठा उसे देख रहा था।

छोटा दर्ज़ी उसके पास आया और बोला, "नमस्कार दोस्त, तुम अपने विश्वास के सहारे यहीं बैठकर नीचे फैली समूची दुनिया देखो और मैं अपनी क़िस्मत आज़माने अपनी राह पर चलता हूँ। क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगे ?"

राक्षस ने उसकी ओर तिरस्कार से देखा और बोला, "अभागे छोकरे !" "ठीक है," दर्ज़ी बोला, "लेकिन तुम यहाँ पढ़ सकते हो कि मैं कैसा आदमी हूँ।" और अपना कोट खोलकर राक्षस को अपनी कमर पर बँधी पट्टी दिखाई। राक्षस ने पढ़ा, "एक बार में सातों ख़त्म"।

राक्षस को लगा कि इस दर्ज़ी ने सात आदमियों को मारा है। उसके मन में दर्ज़ी के लिए थोड़ा आदर पैदा हुआ। फिर भी वह उससे अपनी ताक़त का लोहा मनवाना चाहता था। उसने एक पत्थर उठाकर अपनी मुट्ठी में कसकर दबाया और उससे पानी टपकाने लगा। "यदि तुममें ताक़त हो तो तुम भी ऐसा ही करके दिखाओ।" उसने दर्ज़ी से कहा।

दर्ज़ी बोला, "यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है।" और अपनी जेब में जल्दी से हाथ डालकर उसने पनीर का टुकड़ा बाहर निकाला और उसे निचोड़ डाला जब तक कि उससे मट्ठा नहीं टपकने लगा। फिर बोला, "अब यह बेहतर है।"

राक्षस की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे और न ही वह इस बात पर विश्वास कर पाया कि इतना छोटा व्यक्ति भी ऐसे कर सकता है। उसने एक

और पत्थर लिया और उसे हवा में इतना ऊपर उछाल दिया कि वह दिखाई देना ही बन्द हो गया। फिर वह बोला, "ओ बौने, चलो ऐसा कर दिखाओ।"

"वाह," दर्ज़ी बोला, "लेकिन तुम्हारा पत्थर तो ज़मीन पर वापस आ जाएगा। मैं पत्थर फेंकूगाँ, तो वह वापस ही नहीं आएगा।" और उसने अपनी जेब से चिड़िया निकाली और उसे हवा में उछाल दिया। चिड़िया अपनी स्वतन्त्रता पर ख़ुश होकर उड़ गई और वापस नहीं लौटी। "तुम्हें यह कमाल कैसा लगा दोस्त ?" दर्ज़ी ने पूछा।

"तुम अच्छी तरह पत्थर फेंक सकते हो," राक्षस बोला, "अब देखना यह है कि तुम आम चीज़ें भी कर पाते हो या नहीं ?" यह कहकर वह उसे एक विशाल मदार के पेड़ के पास ले गया, जो धरती पर पड़ा था और बोला, "यदि तुममें इतनी ताक़त है तो जंगल से बाहर यह पेड़ ले जाने में मेरी मदद करो।"

"ज़रूर", दर्ज़ी बोला, "तुम इस पेड़ का तना अपने कन्धों पर रख लो और मैं शाख़ों को उठा लूँगा। वही सबसे भारी हैं।"

राक्षस ने तना उठा लिया और दर्ज़ी उसकी एक शाख़ पर बैठ गया, जिससे राक्षस, जो उसे देख नहीं पा रहा था, दर्ज़ी समेत पूरे पेड़ को उठाकर चलता रहा। पीछे-पीछे होने के कारण वह बहुत ख़ुश था और अपने तरीक़े पर गर्व कर रहा था। वह एक गाने पर सीटी बजाने लगा, "तीन दर्ज़ी जा रहे थे बाहर दरवाज़े के," जैसे कि पेड़ कन्धों पर उठाकर चलना मज़ाक़ हो।

राक्षस कुछ दूर चलने के बाद बहुत थक गया। उससे आगे नहीं चला जा रहा था, वह बोला, "क्या तुम मुझे सुन रहे हो ? मैं पेड़ को नीचे गिरा दूँ।" दर्ज़ी नीचे कूद गया और पेड़ को दोनों बाँहों से पकड़ लिया, जैसे कि वही पेड़ को लेकर चल रहा था और राक्षस से बोला, "तुम इतने लम्बे-चौड़े हो और एक पेड़ उठाकर नहीं चल सकते ?"

वे सफ़र करते रहे और जब वे चेरी के पेड़ के पास आए तो राक्षस ने पेड़ की वह शाख़ पकड़ ली, जिस पर पके हुए ढेर-सारे फल लदे हुए थे। उसे झुकाकर दर्ज़ी को पकड़ने के लिए कहा और फल खाने के लिए मना किया। लेकिन दर्ज़ी इतना कमज़ोर था कि उससे शाख़ पकड़ी ही नहीं गई और जब राक्षस ने वह शाख़ छोड़ दी तो दर्ज़ी भी शाख़ के साथ ऊपर उठ गया। इस तरह वह सही-सलामत पेड़ के दूसरी तरफ़ पहुँच गया। यह देखकर राक्षस बोला, "क्या बात है ? क्या तुममें इतनी भी ताक़त नहीं कि तुम एक शाख़ पकड़ कर रख सको ?" दर्ज़ी बोला, "मेरी ताक़त कम नहीं हुई, जिस आदमी ने एक बार में सात को मारा हो उसके

लिए तो यह बहुत ही आसान काम है। मैं पेड़ पर उछल इसलिए गया कि शिकारी नीचे घने जंगल में शिकार कर रहे थे। यदि तुमसे हो सके तो मेरे पीछे उछल जाओ।" राक्षस ने कोशिश की लेकिन नहीं उछल पाया और शाखों में ही उलझ गया। तो, इस बार भी दर्ज़ी की ही जीत हुई।

इसके बाद राक्षस बोला, "तुम इतने बहादुर हो। तुम मेरे घर आओ और हमारे घर एक रात रुको।" दर्ज़ी ने हामी भर दी और उसके साथ चल दिया। जब वे गुफ़ा में घुसे तो वहाँ उसने आग के पास दो और राक्षसों को बैठे देखा। जो अपने हाथों में एक-एक भुनी भेड़ पकड़कर खा रहे थे।

दर्ज़ी यह सोचते हुए बैठ गया, "आह, यह तो मेरी दुकान से एकदम अलग ही दुनिया है।" थोड़ी ही देर में राक्षस ने उसे सोने के लिए बिस्तर दिखा दिया। बिस्तर उसके लिए बहुत ही बड़ा था। वह उससे फिसलकर एक कोने में दुबक गया। आधी रात बीत गई और राक्षस ने सोचा कि दर्ज़ी गहरी नींद में है। वह उठा, एक बड़ी लोहे की छड़ उठायी और पूरे बिस्तर पर ज़ोर से मारी और सोचा कि उसने दर्ज़ी को मार ही दिया है। सुबह होते ही सभी राक्षस जंगल में चले गए। वह जब उनके सामने आया तो राक्षस बहुत भयभीत हो गए। सोचने लगे कि वह उन सबको मार डालेगा और तेज़ी से वहाँ से भाग निकले।

दर्ज़ी नाक की सीध में आगे बढ़ता गया और बहुत देर चलने के बाद एक शाही महल के आँगन में पहुँचा। वह बहुत ही थक गया था। इसलिए घास पर लेट गया और सो गया। जब वह वहाँ लेटा था तो लोग उसे आकर चारों तरफ़ से देखने लगे और उसकी कमर की पट्टी में पढ़ने लगे "एक बार में बात ख़त्म !" वे बोले, "आह, शान्ति के समय में यह वीर युवक यहाँ क्या कर रहा है ? यह ज़रूर बहुत वीर योद्धा होगा।" उन्हें लगा कि यदि युद्ध शुरू हो जाए तो यह व्यक्ति बहुत काम का है और उन्हें उसे किसी भी क़ीमत पर हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

वे तुरन्त राजा के पास गए और उसे उस व्यक्ति के बारे में बताया। राजा ने अपने एक सिपाही से कहा कि तुम जाकर उससे मिलो। अगर वह जाग गया हो तो उससे पूछो कि क्या वह हमारे लिए लड़ेगा ?

वह सिपाही सोते हुए दर्ज़ी के बग़ल में खड़ा हो गया और उसके जागने का इन्तज़ार करने लगा। जब दर्ज़ी ने उठकर आँखें खोलीं और अंगड़ाई ली तो उसने उसे राजा का सन्देश कह सुनाया। दर्ज़ी ने जवाब दिया, "केवल इसी कारण तो मैं यहाँ आया हूँ, मुझे राजा की नौकरी स्वीकार है।" उसे बहुत सम्मान के साथ ले जाया गया और रहने के लिए एक बढ़िया घर दिया गया।

सिपाही दर्ज़ी से जलने लगे और उनकी इच्छा होती कि वह यहाँ से कहीं चला जाता तो अच्छा होता। "क्या होगा ?" वे एक-दूसरे से पूछते, "यदि हम युद्ध में इसके साथ जाएँगे और यह एक बार में सात को ख़त्म कर देगा तो फिर हमारे करने के लिए क्या बचेगा ? इस बदले की आग में जलते हुए उन्होंने त्यागपत्र देने की ठानी। वे राजा के पास आज्ञा लेने गए और बोले, "हम उस आदमी के साथ रहने को तैयार नहीं हैं, जो एक बार में सात को ख़त्म कर देता हो।" राजा को सिर्फ़ एक व्यक्ति की वजह से अपने सारे वफ़ादार सिपाहियों को खो देने का दुख हुआ और उसे लगा कि काश, वह दर्ज़ी से कभी मिला ही न होता ! उसकी दर्ज़ी को निकाल देने की हिम्मत भी नहीं हुई, क्योंकि उसे डर था कि वह उसके सभी सिपाहियों को मारकर गद्दी पर बैठ जाएगा। वह बहुत समय तक चिन्तन-मनन करता रहा और आख़िरकार उसने फ़ैसला कर ही लिया। उसने दर्ज़ी को बुला भेजा और उसकी बहादुरी देखकर अपने लिए काम करने के लिए बोला, "मेरे राज्य के एक जंगल में दो राक्षस रहते हैं, जिन्होंने ख़ून, लूट-खसोट, आगज़नी, और डकैती करके मेरे राज्य में आतंक फैला रखा है। जो भी उन्हें रोकने जाता है, उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है। यदि तुम दोनों राक्षसों को मार दो तो मैं अपनी इकलौती लड़की का हाथ तुम्हारे हाथ में दे दूँगा और अपना आधा राज्य तुम्हें दहेज़ में दे दूँगा। सौ योद्धा तुम्हारी सहायता करने के लिए तुम्हारे साथ रहेंगे।"

"ओह, यह काम तो मेरे जैसे आदमी के लिए एकदम सही है" दर्ज़ी ने अपने मन में सोचा, 'सुन्दर राजकुमारी और आधा राज्य किसी को रोज़-रोज़ नहीं मिलता।' उसने जवाब दिया, "हाँ, बिलकुल, और मुझे किसी के साथ की ज़रूरत भी नहीं। वह व्यक्ति जो एक बार में सात को ख़त्म कर देता है, किससे डर सकता है ?"

यह कहते हुए नन्हा दर्ज़ी निकल पड़ा। सौ योद्धा उसके पीछे-पीछे थे। जैसे ही वे जंगल की सीमा तक पहुँचे, उसने उनसे कहा, "तुम लोग यहीं रुको, मैं राक्षसों के पास अकेले ही जाऊँगा। वह उछलकर इधर-उधर देखते हुए जंगल में चला गया। थोड़ी देर बाद उसे दोनों राक्षस एक पेड़ के नीचे सोये हुए दिखाई दिये। वे इतनी ज़ोर-से खर्राटे भर रहे थे कि पेड़ की शाख़ाएँ हवा में उड़ रही थीं। दर्ज़ी ने हिम्मत कर अपनी दोनों जेबों में पत्थर भरे और पेड़ पर चढ़ गया। एक शाख़ पर चढ़कर वह राक्षसों के ठीक ऊपर जाकर बैठ गया और एक-एक करके एक राक्षस की छाती पर पत्थर मारने लगा। थोड़ी देर तो राक्षस नहीं हिला, लेकिन



आख़िरकार तंग आकर वह उठा और उसने अपने साथी को झकझोरकर उससे पूछा, "तुम मुझे क्यों मार रहे हो ?"

"तुम सपना देख रहे हो", दूसरा बोला, "मैंने तुम्हें नहीं मारा।" वे फिर सो गए और अब दर्ज़ी ने दूसरे राक्षस को पत्थर मारा। "क्या बात है ?" वह चिल्लाया। "तुम मुझे मार रहे हो ?"

"मैंने तुम्हें छुआ भी नहीं, तुम ज़रूर सपना देख रहे हो, पहला बोला। इस तरह वे थोड़ी देर उलझते रहे, लेकिन थकान के कारण फिर सो गए। दर्ज़ी ने फिर अपना खेल शुरू किया। उसने सबसे बड़ा पत्थर लिया और पहले राक्षस की छाती

पर ज़ोर से मार दिया। वह चिल्लाया, "क्या बेहूदगी है ?" और पागलों की तरह उछलकर अपने साथी पर चढ़ गया। दूसरा राक्षस भी चिढ़ा हुआ था। वे इतने उलझे कि उन्होंने एक-एक पेड़ उखाड़ लिया और एक-दूसरे को पीट-पीटकर मार डाला। दर्ज़ी यह कहते हुए पेड़ से नीचे कूदा, "क्या क़िस्मत है कि उन्होंने यह पेड़ नहीं उखाड़ा जिस पर मैं बैठा था, क्योंकि तब मुझे गिलहरी की तरह दूसरे पेड़ पर कूदना पड़ता। उड़ना तो मैं जानता नहीं।" उसने अपनी तलवार निकाली और दोनों की छाती में एक-एक गहरा घाव किया और फिर बाक़ी योद्धाओं के पास जाकर बोला, "काम हो गया है, मैंने उनका काम तमाम कर दिया। लेकिन यह बहुत मुश्किल काम था, क्योंकि बचने के लिए उन्होंने पेड़ उखाड़ लिए थे। फिर भी मेरे जैसे आदमी के सामने जिसने एक साथ सात को ख़त्म किया हो, यह सब बेकार हो जाता है।"

"तुम्हें चोट तो नहीं लगी ?" उन्होंने पूछा।

"मेरे साथ यह सब नहीं होता, उन्होंने मेरा बाल भी बाँका नहीं किया, दर्ज़ी बोला। योद्धाओं ने उनकी बात पर तब तक भरोसा नहीं किया, जब तक उन्होंने जाकर अपनी आँखों से ख़ून में डूबी राक्षसों की लाशें और उखड़े हुए पेड़ नहीं देख लिए। दर्ज़ी ने राजा से अब अपना इनाम माँगा, जिसका उसने वादा किया था। लेकिन राजा अपने वादे से मुकर गया और इस वीर युवक से पीछा छुड़ाने का उपाय सोचने लगा। "मेरी बेटी से शादी करने और आधा राज्य प्राप्त करने के लिए तुम्हें एक और काम करना होगा। जंगल में एक 'एक-सींग' वाला पशु आतंक फैलाए हुए है। उसे तुम्हें पकड़ना होगा।"

"इससे तो मैं उतना भी नहीं डरता, जितना राक्षसों से डरा था। एक बार में सात ख़त्म ! यही मेरा नारा है," दर्ज़ी बोला। उसने एक रस्सी और कुल्हाड़ी उठायी और जंगल में चला गया। इस बार भी उसने अपने साथ के योद्धाओं को जंगल की सीमा पर ही रोक दिया। उसे ज़्यादा तलाश नहीं करनी पड़ी, क्योंकि एक-सींग वाला पशु सामने से पास आते हुए इस तरह दौड़ने की तैयारी कर रहा था, जैसे वह उसके पेट में सींग भोंक देगा। दर्ज़ी चिल्लाया, "धीरे-धीरे ! यह इतनी आसानी से नहीं होता।"

वह पशु के पास आने का इन्तज़ार करता रहा और जैसे ही वह पास आया दर्ज़ी उछलकर तुरन्त पेड़ के पीछे छिप गया। एक सींग वाले पशु ने तेज़ी से दौड़ते हुए पूरी ताक़त से अपना सींग पेड़ के तने में घुसा दिया और वह वहीं फँस गया और क़ैद हो गया।

"मेरा शिकार फँस गया," दर्ज़ी बोला और पेड़ के पीछे से निकल उसने सबसे पहले उसकी गर्दन में रस्सी डाल दी और फिर सींग को कुल्हाड़ी से काटकर पेड़ से अलग किया और पशु को राजा के सामने ले गया।

राजा ने फिर भी उसे इनाम नहीं दिया और एक तीसरी इच्छा उसके सामने रख दी। उसने दर्ज़ी को विवाह से पहले एक जंगली सुअर को पकड़कर लाने के लिए कहा, जिसने बहुत आतंक फैलाया हुआ था। उसने उसे शिकारियों को भी साथ लेकर जाने के लिए कहा। दर्ज़ी बोला, "ज़रूर ! यह तो बच्चों का खेल है।" उसने शिकारियों को पीछे छोड़ दिया। वे इससे ख़ुश ही हुए, क्योंकि उस सुअर ने पहले ही उन्हें कई बार मारा था और अब वे उसके मारने का आनन्द नहीं उठाना चाहते थे। जैसे ही सुअर ने दर्ज़ी को देखा, वह खुले मुँह दाँत चमचमाते हुए तेज़ी से उसकी ओर दौड़ा और उसे धरती पर पटक देने की कोशिश की। लेकिन दर्ज़ी उछलकर पास के एक छोटे-से गिरजाघर में घुस गया और क्षणभर में खिड़की से दूसरी तरफ़ बाहर निकल गया। सुअर उसके पीछे दौड़ा। लेकिन दर्ज़ी ने जल्दी से सामने आकर उसके पीछे गिरजाघर का दरवाज़ा बन्द कर दिया और वह भयानक सुअर पकड़ा गया, क्योंकि वह खिड़की से बाहर नहीं कूद सकता था। दर्ज़ी ने शिकारियों को वहाँ बुलाया, जिससे वे सुअर को अपनी आँखों से देख सकें। उसके बाद वह राजा के पास गया। राजा को अब निश्चय करना ही पड़ा कि वह अपना वचन पूरा करके इसे राजकुमारी का हाथ और अपना आधा राज्य दे दे।

यदि उसे मालूम होता कि यह कोई योद्धा नहीं, बल्कि केवल एक दर्ज़ी है, जो उसके सामने खड़ा है, तो शायद उसे और भी बुरा लगता।

विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ, हालाँकि उसमें ख़ुशी थोड़ी कम ही थी और दर्ज़ी राजा बन गया।

कुछ दिनों बाद नई रानी ने अपने पति को नींद में बड़बड़ाते हुए सुना। वह कह रहा था, "ओ लड़के, मुझे एक कोट सिल दो और पतलून भी, नहीं तो मैं यह फुट्टा तुम्हारे सिर पर दे मारूँगा।" उसे समझ में आया कि उसका पति क्या था। उसने सुबह अपने पिता को यह बात बताते हुए उसे छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। राजा ने उसे ढाढ़स बँधाया और कहा, "आज रात अपने कमरे का दरवाज़ा खुला छोड़ देना, मेरे नौकर बाहर ही रहेंगे। जब वह सो जाएगा तो वे भीतर घुसकर उसे अन्धा बना देंगे। उसे एक जहाज़ पर बिठा देंगे, जो उसे बहुत दूर ले जाएगा।" पत्नी अपने पिता की बात से राज़ी हो गई, लेकिन राजा के एक दास ने ये सब बातें सुन लीं और युवा राजा को पूरा क़िस्सा कह सुनाया।

वीर दर्ज़ी बोला, "मैं इस बात को हड़प कर जाऊँगा।"

रात में रोज़ के समय जब वे सोने गए और जब उसकी पत्नी को लगा कि वह सो गया है तो वह उठी और दरवाज़ा खोल दिया और वापस आकर लेट गई। दर्ज़ी जो सोने का नाटक कर रहा था, ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा, "ओ लड़के, मुझे एक कोट और पतलून सिलकर दो, नहीं तो मैं यह फुट्टा तुम्हारे सिर पर दे मारूँगा। मैंने एक बार में सात को ख़त्म किया है, दो राक्षसों को मैंने मारा है, एक-सींग वाले पशु को मैंने क़ैद किया है और एक जंगली सुअर को मैंने पकड़ा है। क्या मैं उनसे डरूँगा जो मेरे कमरे के बाहर खड़े हैं ?" जब बाहर खड़े आदमियों ने यह सुना तो वे बुरी तरह डर गए और इस तरह से भागे जैसे उनके पीछे जंगली शिकारी कुत्ते लगे हो।" बाद में भी किसी ने उसका विरोध करने का साहस नहीं किया। इस तरह एक दर्ज़ी राजा बना और अपनी पूरी ज़िन्दगी राजा ही रहा।

7

सात सफ़ाईवाले

सात सफ़ाई कर्मचारी साथ-साथ रहते थे। उनमें से पहले का नाम शुल्ज़, दूसरा जैकी, तीसरा मरली, चौथा जर्गली, पाँचवाँ माइकल, छठा हैंस और सातवाँ वैतली था। वे सभी रोमांच और दैवी कारनामों की तलाश में निकल पड़े थे। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए बहुत लम्बा और मज़बूत डण्डा ले रखा था। उस डण्डे को वे सब मिलकर पकड़े हुए थे। सबसे आगे शुल्ज़ था जो सबसे बलवान और बहादुर था। सबसे आख़िर में वैतली चल रहा था।

जुलाई का महीना था। चलते-चलते वे कुछ दूर आ गए। उन्हें एक गाँव मिला, जहाँ उन्हें रात गुज़ारनी थी। वहाँ एक घास के मैदान तक पहुँचते ही उनके ऊपर एक भौंरा आकर ज़ोर-ज़ोर से मँडराते हुए आवाज़ करने लगा। शुल्ज़ डर गया और उसके हाथ से डण्डा छूटने ही वाला था। उसे बुरी तरह पसीना आ गया था। उसने अपने साथियों से कहा, "सुनो ! सुनो ! मुझे तुरही की आवाज़ सुनाई पड़ रही है।" जैकी जो कि दूसरे क्रम पर खड़ा था और जिसकी नाक में पता नहीं क्या ख़ासियत थी, बोला, "कुछ तो है क्योंकि मुझे गन्धक और बारूद की महक़ आ रही है !" यह सुनकर शुल्ज़ छिपने के लिए एक बाड़ के ऊपर से कूदा और कँटीली झाड़ियों के ढेर पर आ गिरा, जिसे घसियारों ने इकट्ठा कर रखा था। लेकिन ऐसा करने में डण्डा उछलकर उसके माथे पर लगा। वह चिल्लाया, "ओह, मैं कितना दुखी हूँ। मुझे बन्दी बना लो। मैं आत्मसमर्पण करता हूँ।" बाक़ी छह भी बाड़ के ऊपर गिरे और उसकी तरह ही चिल्लाये, "हम भी समर्पण करते हैं, यदि तुम करते हो तो। हम भी समर्पण करते हैं, यदि तुम करते हो तो !"

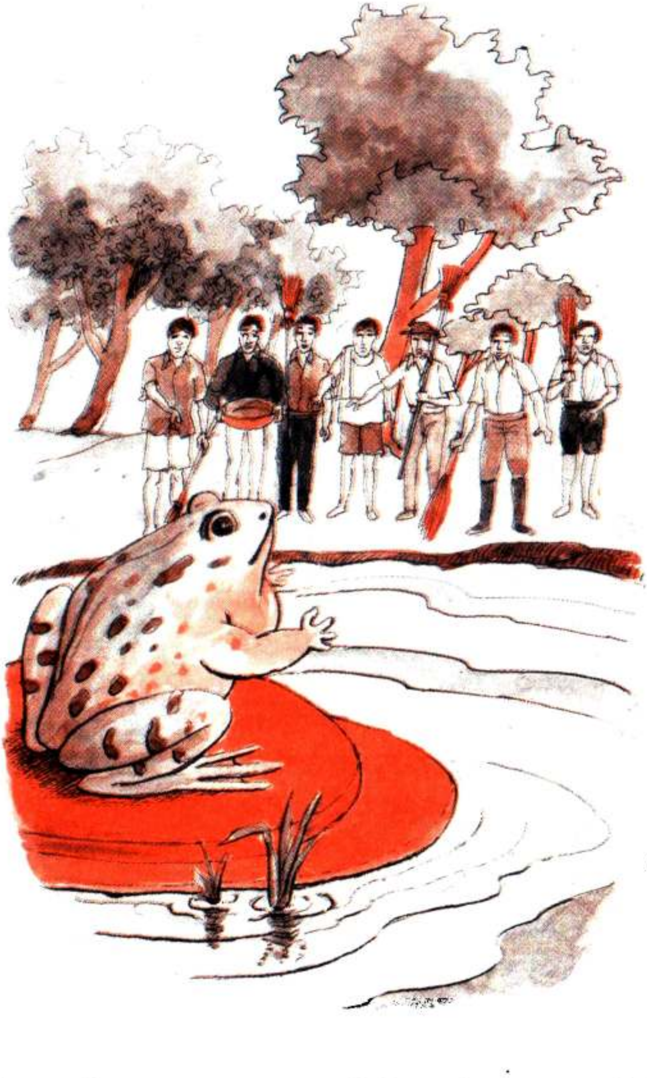
आख़िरकार जब उन्हें पकड़कर ले जाने वाला कोई शत्रु नहीं दिखाई पड़ा तो उन्होंने पाया कि उन्हें धोखा हुआ है। यह क़िस्सा गाँववालों में न फैल जाए और उनका मज़ाक़ न बने और उनकी नक़ल न उतारी जाए, इसके लिए उन्होंने आपस में क़सम ली कि वे किसी को भी इसके बारे में नहीं बताएँगे।

इस रोमांचक क़िस्से के बाद वे आगे बढ़े, लेकिन उनके सामने आया दूसरा ख़तरा पहले से कहीं ज़्यादा बढ़-चढ़कर था। कई दिनों बाद वे एक बिना जुते खेत में आ गए, जहाँ एक ख़रगोश धूप में सो रहा था। उसके कान एकदम खड़े थे और उसकी बड़ी चमकीली आँखें खुली थीं। सातों सफ़ाईवाले उस जानवर को डरावना समझकर बेहद डर गए और उन्होंने आपस में चर्चा की कि उन्हें क्या करना चाहिए। वे यदि भागने लगते तो यह डर था कि वह राक्षस उनका पीछा करता और उनके टुकड़े-टुकड़े कर देता। इसलिए उन्होंने तय किया कि वे वहीं रहकर लड़ाई करेंगे, क्योंकि उनका मानना था, "बहादुरी से सामना करना आधी जीत के बराबर है।" सभी ने अपना डण्डा कसकर पकड़ लिया। शुल्ज़ सबसे आगे था और वैतली सबसे पीछे। लेकिन शुल्ज़ डण्डा अकेले ही लेना चाहता था। इस पर वैतली को ग़ुस्सा आया और उसने डण्डा छोड़ दिया। वह अकेले चलने लगा।

वैतली पीछे रह गया और बाक़ी सब डण्डे के साथ-साथ राक्षस की ओर बढ़े। पहले शुल्ज़ आगे बढ़ा और ईश्वर की मदद माँगी। फिर वह आगे बढ़ता गया और जैसे ही वह दुश्मन के पास पहुँचा, उसे बहुत डर लगा और वह ज़ोर से चिल्लाया, "हान ! दुलेहो ! हान ! होहेल !" ख़रगोश जाग गया और उछलकर डरते हुए दूर चला गया। जब शुल्ज़ ने उसे भागते हुए देखा तो वह ख़ुशी से चिल्लाया–

"कमाल है वैतली ! कितने हैं मूर्ख हम ?
दुश्मन कोई नहीं, बस एक ख़रगोश था।"

उनका डर जब ख़त्म हो गया तो सातों सफ़ाईवाले फिर नये रोमांच की तलाश में चल दिये। आगे बढ़ते-बढ़ते वे मोसेल नदी के पास आ गए। नदी का पानी गहरा और शान्त था जिस पर पुल बने हुए थे और नाव में बैठकर ही नदी पार करनी पड़ती थी। सातों को इस बारे में जानकारी नहीं थी। उन्होंने उस पार काम कर रहे एक आदमी से चिल्लाकर पूछा कि नदी कैसे पार करनी है। लेकिन वह आदमी इतनी दूरी और भाषा न समझ पाने के कारण उनकी बात नहीं समझ पाया और अपनी बोली में पूछने लगा, "का का ?" शुल्ज़ को भी उसकी बात नहीं समझ आई और उसे लगा कि उन्हें नदी में बहकर उस पार जाना है। सबसे आगे होने की वजह से वह नदी में कूद गया और चलने लगा। थोड़ी ही देर में वह गहराई में आ गया और गहरे पानी के बहाव में डूब गया। लेकिन उसकी टोपी पानी से बहकर दूसरी ओर पहुँच गई। जैसे ही टोपी दूसरी ओर पहुँची तो एक मेंढक उसके ऊपर उछलकर बैठ गया और चिल्लाया "का ? का ?" यह आवाज़ बाक़ी सफ़ाईवालों ने भी सुनी जो किनारे पर थे। वे एक-दूसरे से बोले, "सुनो ! शुल्ज़ की आवाज़



लगती है यह। यदि वह उस पार जा सकता है तो हम भी ज़रूर जा सकते हैं।" यह सुनते ही वे सब नदी में कूद गए और वे भी डूब गए। कुल मिलाकर यह हुआ कि मेंढक ने छह सफ़ाईवालों की जान ले ली, क्योंकि उस दिन के बाद से किसी ने उन्हें नहीं देखा।

8

तीन भाई

एक आदमी के तीन बेटे थे। उसके पास सम्पत्ति के नाम पर सिर्फ़ एक घर था, जिसमें वह रहता था। पिता की मृत्यु के बाद तीनों उस पर क़ब्ज़ा करने का विचार बनाये हुए थे। लेकिन वे सब अपने पिता को इतने प्रिय थे कि उसे समझ में ही नहीं आता था कि वह किसका पक्ष ले। वह मकान बेचकर पैसे बाँट देता, लेकिन वह मकान उसके पास इतने सालों से था, इसलिए वह उसे बेचना नहीं चाहता था। अचानक उसके मन में एक बात आई और अपने बेटों से बोला, "बाहर जाओ और कुछ काम सीखो। जो भी सबसे अच्छा काम सीखेगा, उसे ही मेरा घर मिलेगा।"

इस बात से बेटे ख़ुश हुए। सबसे बड़ा बेटा घोड़ों का डॉक्टर, दूसरा नाई और तीसरा पट्टेबाज़ी सिखानेवाला बनना चाहते थे। उन्होंने यह तय किया कि वे सब एक साथ वापस लौटेंगे और इस तरह वे यात्रा पर निकल पड़े। यह संयोग ही था कि तीनों को ही अच्छे गुरु मिले और उनके साथ वे सभी अच्छी तरह अपना काम सीख गए। घोड़ों का चिकित्सक राजा के घोड़ों की नाल बिठाता था, इसीलिए उसे लगता था कि घर उसे ही मिलेगा। नाई कई बड़े सामन्तों की हज़ामत बनाता था, इसीलिए उसे लगा कि उसे ही घर मिलेगा। पट्टेबाज़ी के उस्ताद को बहुत घाव लगे, लेकिन उसने अपना होंठ दबाकर अपना दर्द ज़ाहिर नहीं होने दिया। उसे लगा कि वह अपने कष्ट की बात यदि ज़ाहिर कर देगा तो उसे वह घर नहीं मिलेगा।

आख़िर जल्दी ही वह समय भी आ गया, जब वे अपने पिता के पास आ गए। लेकिन उनमें से किसी को भी यह नहीं मालूम था कि अपनी योग्यता दिखाने के लिए सही अवसर क्या है। इसलिए उन्होंने आपस में चर्चा की। जब वे पिता के साथ एक खेत पर बैठकर बातचीत कर रहे थे, तब एक ख़रगोश भी दौड़ता हुआ उस खेत में आया। नाई ने कहा, "अरे यह तो ऐसे आ गया, जैसे इसे बुलाया

गया हो।" यह कहकर उसने साबुन और कटोरी निकालकर झाग बनाई। जैसे ही ख़रगोश वहाँ आया, उसने उसे पकड़ा और उसके दौड़ते-दौड़ते ही उसकी मूँछे बना दीं, न एक बाल कम कटा और न ही कोई घाव लगा। पिता बोले, "वाह ! क्या बात है। अगर दूसरे भाई इससे अच्छा काम नहीं करते हैं तो उन्हें मकान नहीं मिलेगा।"

थोड़ी ही देर में एक सवारी के साथ एक बग्घी तेज़ी से दौड़ती हुई वहाँ आई। घोड़ों के डाक्टर ने कहा, "अब देखियेगा पिताजी, मैं क्या करता हूँ।" और उसने दौड़ते हुए घोड़े के दोनों पैर पकड़ लिए और उसे बिना रोके उसकी नालें निकालकर दूसरी नालें लगा दीं। पिता चिल्लाए, "तुम तो बहुत चतुर हो ! तुमने तो अपने भाई की तरह ही काम किया है। मुझे सचमुच नहीं मालूम कि मकान किसको मिलने वाला है।" तीसरा भाई बोला," अब मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ, "और तभी क़िस्मत से पानी बरसने लगा। उसने अपनी तलवार निकाली और इतनी फुर्ती से उसे अपने सिर के ऊपर भाँजने लगा कि पानी की एक भी बूँद उसके ऊपर नहीं गिरी। जब बारिश तेज़ हो गई और इतनी तेज़ हो गई कि जैसे किसी ने आसमान उलट दिया हो तो उसने तलवार बेहद तेज़ी से भाँजना शुरू कर दिया। वह इतना सूखा बचा रहा, जैसे किसी छत के नीचे खड़ा रहा हो। जब पिता ने यह देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गया और अपने बेटे से बोला, "तुमने सर्वोत्तम कला का प्रदर्शन किया है। अब यह घर तुम्हारा है।"

दोनों भाई भी इस निर्णय से प्रसन्न थे, क्योंकि वे वास्तव में एक-दूसरे को बेहद चाहते थे। वे सभी एक ही घर में रहकर तरह-तरह के काम करने लगे। वे बहुत चतुर और अपनी कला में पारंगत थे, इसलिए उन्होंने बहुत पैसा कमाया। वे इसी तरह बुढ़ापे तक हँसी-ख़ुशी साथ रहे और जब उनमें से एक बीमार पड़कर मर गया तो उसके भाइयों ने उसका इतना शोक मनाया कि वे भी दुख से बीमार पड़ गए और चल बसे।

वे सभी अपनी-अपनी कलाओं में पारंगत थे और एक-दूसरे को बेहद चाहते थे, इसलिए उन्हें एक ही क़ब्र में दफ़नाया गया।

9

मुर्ग़े की मौत

किसी समय की बात है, एक मुर्ग़ा और मुर्ग़ी बादाम के बग़ीचे में रहते थे। उनके बीच यह समझौता हुआ था कि जिसे भी कोई बादाम मिलेगा, वह उसे दूसरे के साथ मिल-बाँटकर खायेगा। एक बार मुर्ग़े को एक बादाम मिला, जो बहुत बढ़िया था, लेकिन उसने इसके बारे में मुर्ग़ी को कुछ भी नहीं बताया। वह इसे अकेले ही खा लेना चाहता था। लेकिन उसकी गिरी इतनी बड़ी थी कि उसके गले के नीचे नहीं गई, बल्कि बीच में ही इस तरह फँस गई कि मुर्ग़े का दम घुटने लगा और उसकी जान पर बन आई। उसने चिल्लाकर मुर्ग़ी को मदद के लिए पुकारा, ''मेरी प्रार्थना है कि दौड़कर जाओ और जल्दी से पानी ले आओ, वरना मेरा दम घुट जाएगा।'' मुर्ग़ी जितना तेज़ दौड़ सकती थी, दौड़ते हुए झरने के पास गई और बोली, ''प्यारे झरने ! तुम्हें थोड़ा पानी देना होगा। मेरा मुर्ग़ा बादाम के बग़ीचे में पड़ा हुआ है। एक बड़ी गिरी निगल लेने से उसका दम घुट रहा है।'' झरना बोला, ''दौड़कर दुल्हन के पास जाओ और थोड़ा लाल रेशम मेरे पास ले आओ।'' मुर्ग़ी दौड़कर गई और दुल्हन से बोली, ''दुल्हन रानी ! मुझे थोड़ा-सा लाल रंग का रेशम दे दो। मैं लाल रेशम झरने को दूँगी, ताकि झरना मुझे मेरे पति के लिए थोड़ा पानी दे सके। मेरा पति बादाम के बग़ीचे में पड़ा हुआ है। एक बड़ी गिरी निगल लेने के कारण उसका दम घुट रहा है।'' दुल्हन बोली, ''दौड़कर जाओ और पहले मेरी माला ले आओ, जो उधर हरे घास के मैदान में टँगी हुई है।'' मुर्ग़ी दौड़कर गई और टहनी पर टँगी माला उतारकर ले आई। उसने वह माला दुल्हन को दी और दुल्हन ने उसे इसके बदले लाल रंग का रेशम लाकर दिया। मुर्ग़ी ने रेशम ले जाकर झरने को दिया, जिसने उसे पानी दिया। मुर्ग़ी जल्दी से पानी लेकर पति के पास पहुँची। लेकिन इस बीच मुर्ग़े की मृत्यु हो चुकी थी। वह निष्प्राण पड़ा हुआ था। मुर्ग़ी उसे मृत देखकर बहुत उदास हो गई और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर

रोने लगी। उसका रोना-धोना सुनकर जंगल के सभी जानवर इकट्ठा हो गए। सभी जानवर मुर्ग़े के लिए शोक प्रकट करने लगे। छह छोटी चुहियों ने मिलकर एक छोटी-सी गाड़ी बना दी, जिसमें मुर्ग़े को लिटाकर क़ब्र तक ले जाना था। जैसे ही गाड़ी तैयार हुई, वे इसमें जुत गईं और मुर्ग़ी मातम करती हुई पीछे-पीछे चलने लगी। जब वे सड़क पर आए तो उन्हें एक लोमड़ी मिली। लोमड़ी ने उनसे पूछा कि क्या बात है ? मुर्ग़ी बोली, "मैं अपने पति को दफ़नाने जा रही हूँ।" लोमड़ी ने पूछा, "क्या मैं साथ चल सकती हूँ ?" मुर्ग़ी बोली, "ज़रूर चलो। लेकिन गाड़ी के पीछे ही चलना, क्योंकि मेरे घोड़े किसी को भी ख़ुद के आगे नहीं आने देते।" लोमड़ी पीछे जाकर उनके साथ चलने लगी और इस तरह भेड़िया, भालू, बकरी, सिंह और जंगल के दूसरे सभी जानवर एक साथ चलने लगे।

एक काफ़िला अभी अधिक दूर नहीं गया था कि रास्ते में एक नाला आ गया। मुर्ग़ी ने परेशान होकर पूछा, "अब हम इसे कैसे पार करेंगे ? एक तिनका, जो वहीं पास में था, कहने लगा, "मैं नाले के आर-पार लेट जाऊँगा और तुम लोग मेरे ऊपर होते हुए पार उतर जाना।" लेकिन जैसे ही वे छह चुहियाँ उसके ऊपर चढ़ीं, पुल टूट गया और वे सभी नाले में गिरकर डूब गईं। अब एक दूसरे पुल की आवश्यकता थी। इसलिए एक बड़ा जलता हुआ कोयला सामने आया और कहने लगा, "मैं बड़े आकार का हूँ, इसलिए मैं इस नाले के आर-पार लेट जाऊँगा और तुम सब मेरे ऊपर से पार उतर आना।" यह कहता हुआ कोयला पानी में उतर गया। लेकिन दुर्भाग्य से वह गहरे पानी में चला गया। उसकी आग तुरन्त ठण्डी पड़ गई और वह मर गया। तब एक पत्थर को असहाय मुर्ग़ी पर दया आ गई। वह नाले के आर-पार लेट गया। गाड़ी को खींचती हुई मुर्ग़ी सुरक्षित दूसरी ओर पहुँच गई। लेकिन अभी बाक़ी सबको नाला पार करना था, इसलिए गाड़ी को उनके लिए वापस भेज दिया गया। लेकिन पार आनेवालों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनके भार से गाड़ी उलट गई और सभी पानी में गिर गए। वे सब पानी में डूब गए और उनमें से कोई नहीं बचा।

असहाय मुर्ग़ी अब मृत मुर्ग़े के साथ अकेली रह गई। एक क़ब्र खोदकर उसने उसे लिटा दिया और उस पर थोड़ी-सी मिट्टी डाल दी। वह वहीं उस क़ब्र के ऊपर बैठ गई और तब तक शोक मनाती रही, जब तक कि उसकी भी मौत नहीं हो गई।

और इस तरह, उन दोनों ने जीवन त्याग दिया।

10

अँगूठाराम

एक समय में एक ग़रीब किसान था, जो रोज़ शाम को भट्टी के पास आग कुरेदते हुए बैठा रहता था। उसकी पत्नी पास में बैठकर बुनाई करती थी। एक रात वह बोला, "कितने दुख की बात है कि हमारी कोई सन्तान नहीं है। यहाँ एकदम सन्नाटा रहता है, जबकि दूसरे घरों में शोर और किलकारियाँ भरी रहती हैं।"

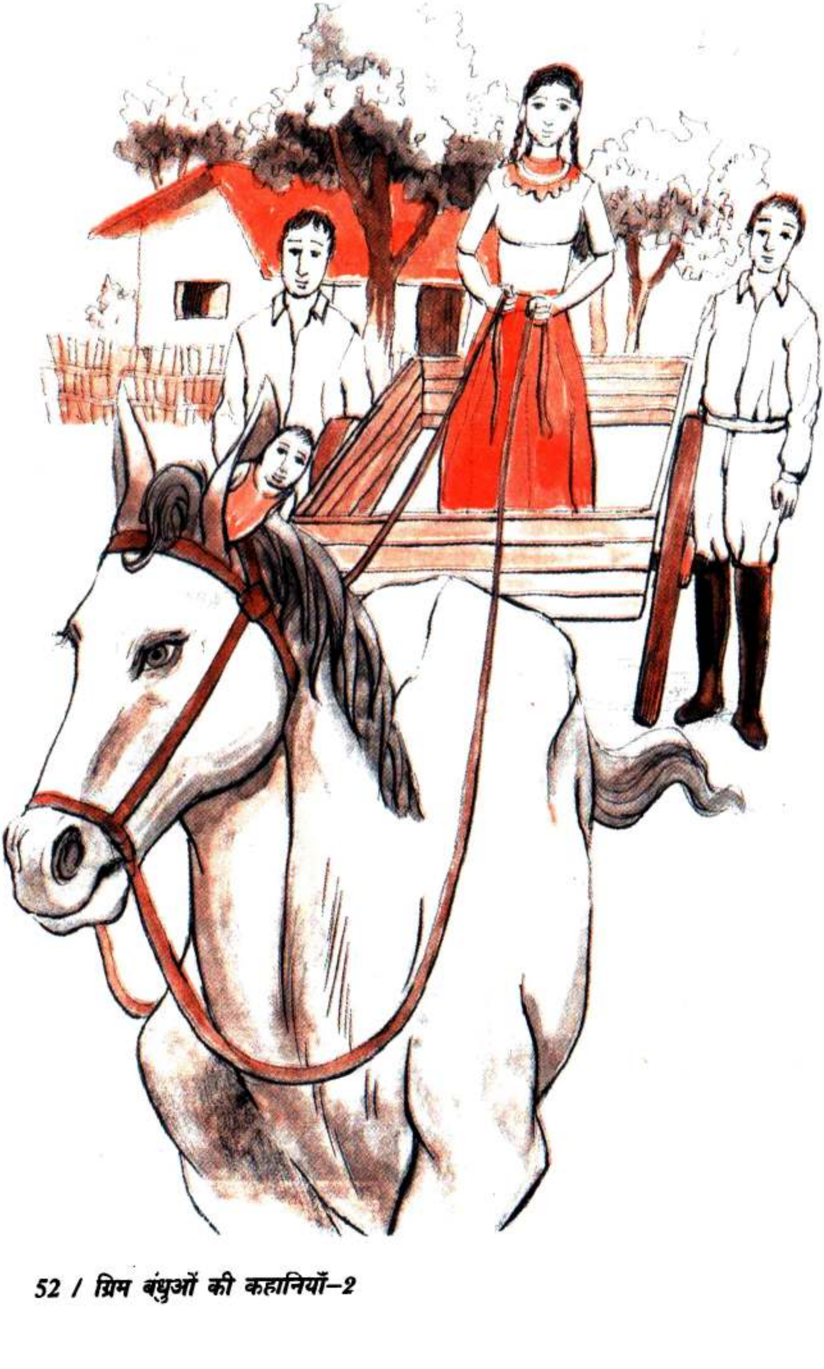
पत्नी ने भी आह भरकर कहा, "आह ! यदि हमारा एक बच्चा ही होता, भले ही अँगूठे के बराबर ही सही, तो भी मैं ख़ुश रहती और उसे बेहद प्यार करती।" थोड़े दिनों बाद उसकी पत्नी की तबीयत ख़राब हुई और सात महीने बाद उसका एक बेटा पैदा हुआ, जिसके हाथ-पैर तो पूरे थे, लेकिन वह अँगूठे के बराबर था। उन्होंने एक-दूसरे से सन्तोष व्यक्त किया कि यह तो उनकी इच्छा के अनुसार ही हुआ था। उन्होंने उसका नाम 'थम्बलिंग' यानी अँगूठाराम रख दिया। रोज़ वे उसे ढेर-सा खाना खिलाते। लेकिन वह थोड़ा-सा भी नहीं बढ़ा। बल्कि उतना ही रहा, जितना वह पैदा हुआ था। लेकिन वह अपने चारों ओर बड़ी समझदारी से इस तरह से देखता जैसे कि वह बेहद चतुर और बहादुर हो और जो भी काम वह करेगा, उसमें उसे सफलता हासिल होगी।

एक दिन किसान जंगल में लकड़ी काटने जाने लगा तो बोला, "मुझे लगता है, मेरे साथ कोई ऐसा हो, जो मेरे साथ पीछे-पीछे गाड़ी लेकर चले।"

अँगूठाराम यह सुनकर बोला, "पिताजी, मैं गाड़ी लेकर चलूँगा। आप मत परेशान होइये। सही समय पर यह होगा।"

पिता यह सुनकर बहुत हँसा और बोला, "यह कैसे हो सकता है ? तुम तो लगाम पकड़कर खींचने के लिए बहुत छोटे हो।"

"इसमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता पिताजी। यदि माँ घोड़े को हाँकेंगी तो मैं उसके कान में बैठ जाऊँगा और रास्ता बताता जाऊँगा।"



"ठीक है, हम कोशिश करके देखते हैं।" पिता ने कहा और जब वे निकले तो माँ ने घोड़े की लगाम सम्भाली और अँगूठाराम को घोड़े के कान में बिठाकर उसे समझा दिया कि घोड़े को रास्ता किस तरह बताना है। वह ठीक तरह से बैठ गया और गाड़ी सीधी जंगल की ओर चल पड़ी। एक जगह जैसे ही गाड़ी मुड़ी, अँगूठाराम चिल्लाया, "सम्भलकर ! सम्भलकर !" दो अजनबियों ने यह देखा और एक ने दूसरे से कहा, "हे ईश्वर ! यह क्या है ? गाड़ीवान घोड़े से बात कर रहा है, लेकिन कोई दिखाई नहीं देता।" दूसरे ने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता, हम इसका पीछा करके देखते हैं कि यह गाड़ी कहाँ जा रही है।"

गाड़ी घने जंगल में चली गई और सीधी वहाँ पहुँच गई, जहाँ लकड़ियाँ कटी थीं। जैसे ही अँगूठाराम ने अपने पिता को देखा वह बोला, "पिताजी, मैं आ गया, मैं गाड़ी लेकर आ गया, मुझे बाहर निकालिए।" किसान ने बायें हाथ से घोड़े की लगाम पकड़ी और दायें हाथ से अपने नन्हे-से बेटे को घोड़े के कान के बाहर निकाला। वह मज़े में एक घास के तिनके पर बैठ गया। जब दोनों अजनबियों ने इस नन्हे लड़के को देखा तो वे इतना आश्चर्यचकित हुए कि कुछ बोल ही न सके। बस उनमें से एक ने अपने साथी को एक तरफ़ ले जाकर कहा, "यह नन्हा लड़का ज़रूर हमारे भाग्य का दरवाज़ा खोल देगा। हम शहरों में जाकर इसका प्रदर्शन कर सकते हैं। हम इसे ख़रीद लेते हैं।" वे किसान के पास गए और उससे पूछा, "क्या तुम अपने बेटे को बेचोगे ? हम उसे अच्छी तरह से रखेंगे।" किसान ने जवाब दिया, "नहीं, वह मेरे दिल का टुकड़ा है। उसे पैसे से नहीं ख़रीदा जा सकता ?"

लेकिन जब अँगूठाराम ने यह सुना तो वह अपने पिता के कुर्ते पर चढ़कर उनके कन्धे पर बैठ गया और उनके कान में फुसफुसाया, "मुझे जाने दो, मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगा।" इस पर उसके पिता ने सोने के एक टुकड़े के बदले उसे उन अजनबियों को बेच दिया। उन्होंने अँगूठाराम से पूछा कि वह कहाँ बैठेगा तो उसने जवाब दिया, "अरे, मुझे अपनी टोपी के किनारे पर बिठा लो, मैं जगह-जगह घूमकर दुनिया देखूँगा। मैं गिरूँगा नहीं। उन्होंने वैसा ही किया। अँगूठाराम ने अपने पिता से विदा ली और वे निकल पड़े। जैसे ही अँधेरा होने को हुआ तो उसने उनसे अपने आपको नीचे उतारने के लिए कहा। थोड़ी हिचकिचाहट के बाद उस आदमी ने उसे अपने कन्धे से उतारकर नीचे रख दिया।

पलक झपकते अँगूठाराम भाग निकला और एक चूहे के बिल में रेंगकर घुस गया। वहाँ वे उसे नहीं देख सकते थे। वह बोला, "शुभरात्रि मालिको, अब

तुम लोग वापस जाओ,'' और यह कहकर हँसते हुए वह बिल में और भीतर चला गया।

दोनों आदमियों ने अपनी छड़ियाँ उस बिल में डालीं। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि अँगूठाराम तो और भीतर चला गया था। जब एकदम अँधेरा हो गया वे दोनों दुखी मन से ख़ाली हाथ वापस लौट गए।

जैसे ही अँगूठाराम को लगा कि वे लोग निकल गए हैं तो वह अपनी छिपने की जगह से वापस निकल आया। उसने कहा, ''रात के अँधेरे में इस खेत में चलना खतरनाक है। हो सकता है कि हाथ-पैर ही टूट जाएँ या सिर ही फूट जाए !'' यह कहते हुए उसने अपने आस-पास देखा और संयोग से उसे एक ख़ाली घोंघे का शंख मिल गया। ''ईश्वर महान है।'' वह बोला, ''यहाँ मैं सुरक्षित रूप से सो सकता हूँ।'' और वह सोने चला गया। वह सोने ही वाला था कि उसे दो आदमियों के पास आने की आवाज़ सुनाई दी। उनमें से एक दूसरे से कह रहा था, ''हम पुरोहित के यहाँ से सोना-चाँदी कैसे लेंगे ?''

अँगूठाराम बीच में ही बोल पड़ा, ''मैं बता सकता हूँ।''

चोर डरकर बोला, ''यह कैसी आवाज़ थी ? मुझे ऐसा लगा कि कोई कुछ बोल रहा है।''

वे चुपचाप खड़े रहे और सुनने लगे। फिर अँगूठाराम बोला, ''मुझे अपने साथ ले चलो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।''

चोरों ने पूछा, ''तुम हो कहाँ ?''

''ज़मीन पर देखो, जहाँ से मेरी आवाज़ आ रही है।'' उसने जवाब दिया। चोरों ने आसपास देखा और उसे तलाश कर ही लिया। उन्होंने उसे हवा में उठा लिया, ''तुम इतने हल्के-फुल्के हो ! तुम हमारी क्या मदद करोगे ?'' उन्होंने पूछा।

''मैं पुरोहित के घर की लोहे की सलाखों के बीच रेंगकर जा सकता हूँ और जो चाहिए वह तुम तक पहुँचा सकता हूँ।''

चोर बोले, ''बहुत अच्छा ! हम देखेंगे कि तुम क्या कर सकते हो।''

जब वे उस घर तक पहुँचे तो अगूँठाराम रेंगकर कमरे में घुस गया और अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाया, ''क्या तुम्हें यहाँ की सारी चीज़ें चाहिए ?''

चोर डर गए और उससे बोले, ''धीरे बोलो नहीं तो कोई जाग जाएगा।''

लेकिन अँगूठाराम उनकी बात कहाँ सुननेवाला था। वह और ज़ोर से चिल्लाया, ''क्या तुम्हें यहाँ की सारी चीज़ें चाहिए ?''

यह सुनकर बावर्चिन जाग गई, जो उसी कमरे में सोयी थी। वह बिस्तर

पर बैठ गई और सुनने लगी। चोर इस बीच डरकर थोड़ी दूर वापस चले गए थे, लेकिन फिर से हिम्मत जुटाकर वे वापस लौट आए। उन्हें लगा कि अँगूठाराम ऐसा उन्हें परेशान करने के लिए कर रहा था। वे फुसफुसाकर उससे जल्दी करने और कुछ सामान देने के लिए कहने लगे। इस पर अँगूठाराम और ज़ोर से चिल्लाया, "मैं तुम्हें सब कुछ दूँगा, लेकिन पहले अपना हाथ भीतर करो।" बावर्चिन ने यह साफ़-साफ़ सुना और बिस्तर से तेज़ी से उछलकर दरवाज़े की ओर गई। चोर ऐसे भाग निकले जैसे कि कोई जंगली शिकारी उनका पीछा कर रहा हो। बावर्चिन बत्ती जलाने गई और जब वह लौटी तब तक अँगूठाराम खलिहान में निकल गया। बावर्चिन ने चारों ओर देखा, एक-एक कोना ढूँढ़ लिया, लेकिन उसे कुछ न मिला और वह वापस सोने चली गई। उसे लगा कि जैसे उसने कोई सपना देखा था। इस बीच अँगूठाराम भूसे के बीच सरक गया था और उसे सोने के लिए बढ़िया जगह मिल गई थी। यहाँ वह सुबह होने तक रहना चाहता था, ताकि बाद में वापस अपने माँ-बाप के पास चला जाए।

लेकिन उसके साथ तो कुछ और ही होना था, क्योंकि यह दुनिया तो परेशानियों से भरी पड़ी है।

नौकरानी सुबह उठी और भैंस को भूसी देने के लिए खलिहान तक गई। वहाँ से उसने गट्ठा भर भूसी ली और वहीं रख दी, जहाँ बेचारा अँगूठाराम सो रहा था। वह बेहद गहरी नींद में सो रहा था। उसकी नींद तभी खुली, जब वह भैंस के मुँह में था। "हे भगवान !" वह चिल्लाया, "मैं इस चक्की में कैसे आ गया।" लेकिन थोड़ी ही देर में उसे समझ में आ गया कि वास्तव में वह कहाँ था। फिर उसने सावधानी बरती कि वह भैंस के दाँतों के बीच न आ जाए। लेकिन वह भैंस के गले तक सरक गया। "इस कमरे में तो कोई खिड़की नहीं है।" उसने अपने, आपसे कहा, "सूरज की रोशनी भी नहीं है और मैं भी कोई रोशनी अपने साथ नहीं लाया।" जैसे-जैसे भैंस भूसा खाती गई, उसके लिए जगह कम होती गई। वह डरकर अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाने लगा, "मेरे लिए और खाना मत लाओ, मुझे और खाना नहीं चाहिए।"

इसी समय नौकरानी भैंस का दूध दुह रही थी। जब उसने बिना किसी को ५खे वह आ[illegible] तो उसे समझ में आ गया कि यह वही आवाज़ है, जो उसने रात में सुनी थी। वह इतना डर गई कि वह लुढ़क गई और दूध भी गिर पड़ा। जल्दी से वह अपने मालिक के पास गई और बोली, "पुरोहित जी, भैंस बोल रही है।"

"तुम तो पागल हो गई हो", पुरोहित बोला। लेकिन वह ख़ुद भैंस के पास आया और उसने भीतर पैर रखा ही था कि अँगूठाराम फिर से चिल्लाने लगा, "मेरे लिए और खाना मत लाओ, मुझे और खाना नहीं चाहिए।" इससे पुरोहित भी डर गया और उसे लगा कि भैंस में किसी बुरी आत्मा का वास हो गया है। यह सोचकर उसने भैंस को मार डालने का आदेश दिया। जैसे ही उसे मारा गया और उसके शव का बँटवारा होने लगा। तभी अँगूठाराम पर एक और विपदा आ पड़ी। भेड़िये ने, जो वहाँ से गुज़र रहा था, भैंस का वह हिस्सा झपट लिया, जिससे अँगूठाराम लिपटा हुआ था। हालाँकि उसने हिम्मत नहीं हारी, लेकिन जैसे ही भेड़िये ने उसे निगला, वह अन्दर से बोल पड़ा, "अरे भेड़िये साहब, मुझे तुम्हारे लिए रखे बेहतरीन खाने का पता है।" भेड़िये ने पूछा, "वह कहाँ है ?" अँगूठाराम अपने पिता के घर का पता बताता हुआ बोला, "घास के मैदान के पास तुम नाली के पार रेंगकर देखना, वहाँ तुम्हें मिठाइयाँ, रसगुल्ले, पूड़ियाँ और भी न जाने क्या-क्या मिलेगा ! वह भी इतना सारा जितना तुम ख़त्म भी न कर पाओगे।"

भेड़िया यह सुनकर ज़रा भी नहीं रुका और सीधे वहाँ पहुँचकर ख़ूब पेट भरकर खाया। जब उसका मन भर गया तो उसने उसी रास्ते से बाहर निकलने की कोशिश की तो नाली का रास्ता उसके लिए छोटा पड़ गया। अँगूठाराम को इसी बात का अन्दाज़ था। उसने बेचारे भेड़िये के भीतर से बेतहाशा शोर मचाना शुरू कर दिया। भेड़िया बोला, "क्या तुम चुप रहोगे ? लोग जाग जाएँगे।" अँगूठाराम चिल्लाया, "तुमने तो अपना पेट भर लिया, अब मेरी बारी है।" यह कहकर वह और भी ज़ोर से चिल्लाया।

आख़िरकार उसके माता-पिता जाग गए और आकर कमरे की दरारों में झाँकने लगे। जैसे ही उन्हें भेड़िये की करतूतों का पता चला, आदमी दौड़कर अपनी कुल्हाड़ी और औरत अपनी दराँती उठा लायी। आदमी ने कमरे में घुसते हुए कहा, "तुम पीछे रुको, यदि वह मेरे वार से बच गया तो तुम उस पर वार करना और यदि हो सके तो उसका सिर ही काट देना।"

जब अँगूठाराम ने अपने पिता की आवाज़ सुनी तो वह चिल्लाकर बोला, "पिताजी, मैं यहाँ पर हूँ, भेड़िये के भीतर।" पिता ने ख़ुश होकर कहा, "ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है, हमारा बेटा फिर मिल गया। उसने अपनी पत्नी को दराँती दूर रखने के लिए कहा, जिससे उसके बेटे को कोई नुक़सान न पहुँचे। उसने फिर कुल्हाड़ी उठायी और भेड़िये पर ऐसा वार किया कि वह ढेर हो गया। उसने फिर चाकू उठाया और उसका पेट काटकर अपने बेटे को बाहर निकाल लिया। पिता

ने कहा, "तुम्हारे बिना हम कितने परेशान रहे !" अँगूठाराम बोला, "पिताजी, मैं दुनिया की सैर करता रहा। ईश्वर की मेहरबानी से मैं दोबारा ताज़ा हवा में साँस ले रहा हूँ।"

पिता ने पूछा, "तुम कहाँ थे बेटे ?"

अँगूठाराम बोला, "एक बार मैं चूहे के बिल में गया, एक बार एक भैंस के पेट के भीतर और आख़िरी बार एक भेड़िये के पेट में। अब मैं आपके पास ही रहूँगा।"

बूढ़े माता-पिता ने कहा, "बहुत अच्छा, तुम्हारे बदले अब हमें कितनी भी सम्पत्ति क्यों न मिले, हम तुम्हें नहीं बेचेंगे।" उन्होंने उसे गले लगाया और ख़ूब प्यार किया। उन्होंने उसे अच्छी-अच्छी चीज़े खाने-पीने को दीं और उसके लिए नये कपड़े बनवाये, क्योंकि उसके पुराने कपड़े तो यात्रा करते हुए फट गए थे।

11

मोचीराम

मोचीराम एक छोटा, और कमज़ोर आदमी था, लेकिन वह बहुत मेहनती आदमी था। वह कभी आराम नहीं करता था। उसके चेहरे की ख़ासियत उसकी तिरछी नाक थी। चेहरा झुर्रियों भरा और एकदम पीला था। उसके बाल सफ़ेद और झबरे थे। उसकी आँखें छोटी थीं, लेकिन तेज़ी से बायें-दायें घूमती थीं। वह सब कुछ ध्यान से देखता था। उसे हर चीज़ में ग़लती पकड़ में आती थी। वह अपने अनुसार हर काम अच्छी तरह करना जानता था। हर किसी से बेहतर करता था। जब वह सड़क पर चलता तो वह अपनी दोनों बाँहें तेज़ी से झुलाता चलता।

एक बार उसका हाथ, पानी की बाल्टी सिर पर रखकर ले जा रही लड़की की बाल्टी से टकरा गया और पानी उसके ऊपर गिर पड़ा। वह चिल्लाया, "भेड़ का सिर ! क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि मैं तुम्हारे पीछे आ रहा हूँ ?" पेशे से वह एक मोची था। जब वह काम करता तो वह धागा इतनी तेज़ी से खींचता कि कोई भी उसकी कुहनी चुभ जाने के डर से उसके पास नहीं जाता था। कोई भी कारीगर या मज़दूर उसके पास एक महीने से ज़्यादा नहीं टिकता था, क्योंकि मोचीराम उसके अच्छे काम में भी कुछ-न-कुछ मीनमेख हमेशा निकालता। कभी वह कहता, टाँके एक जैसे नहीं हैं, कभी कहता, जूता दूसरे से बड़ा है या एक एँड़ी दूसरी से ऊँची है, कभी कहता, "रुको, रुको, मैं तुम्हें बताता हूँ कि चमड़े को कैसे साफ़ करते हैं।" और यह कहकर वह एक पट्टी लेता और उसे अपने साथी के कन्धों पर रख देता। वह हर किसी को आलसी और निकम्मा कहता। लेकिन ख़ुद बहुत ज़्यादा काम नहीं करता क्योंकि वह तो आधा घण्टे भी एक जगह नहीं बैठ पाता था। यदि उसकी पत्नी सुबह उठकर आग जलाती तो वह बिस्तर से उछलकर उठता और नंगे पैरों रसोई में दौड़ जाता और चिल्लाता, "क्या तुम घर को जलाकर राख कर देना चाहती हो ? यह तो इतनी तेज़ आग है कि इस पर कोई बैल भी भून

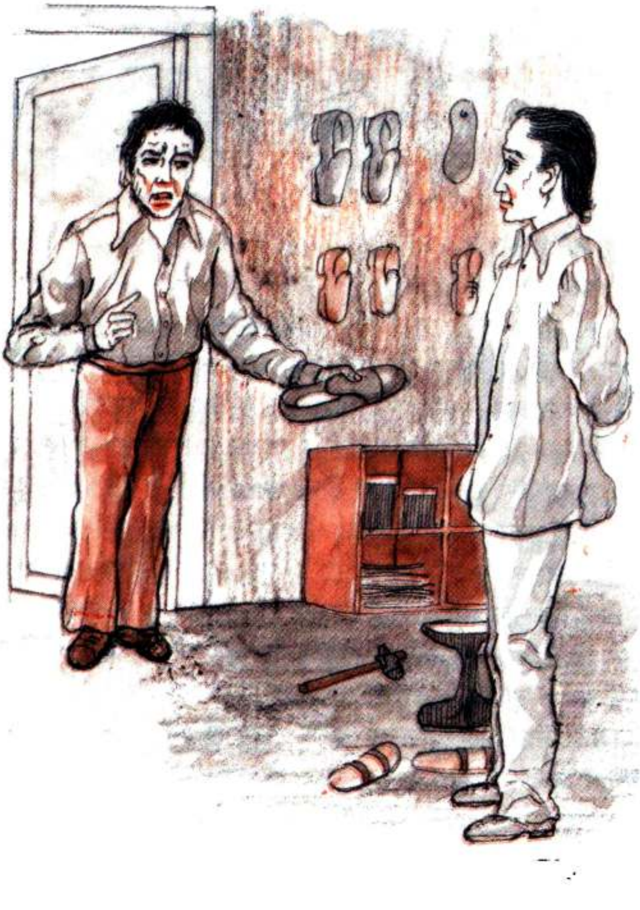
ले। लकड़ी ख़रीदने में पैसा लगता है।''

यदि उसकी पत्नी कपड़े धोते समय उसकी बातें दोहराकर हँसती तो वह उसे डाँटता और कहता, ''वह देखो वहाँ एक हंसिनी खड़ी होकर गप्पे हाँकते हुए अपना काम ही भूल गई है। इसे ताज़ा साबुन का क्या काम है ? क्या बरबादी और क्या गन्दगी है। यह तो बस अपने हाथ बचाना चाहती है, इसीलिए कपड़ों के दाग़ मलकर नहीं निकाल सकती।'' यह कहकर वह उछलकर आता और पूरी बाल्टी पानी उड़ेल देता, जिससे वहाँ पूरा तालाब बन जाता।

एक बार कुछ लोग उसके घर के पास एक मकान बना रहे थे। वह दौड़कर अपनी खिड़की पर गया और बोला, ''वो देखो ! वे फिर से वही लाल रेतीला पत्थर इस्तेमाल कर रहे हैं जो कि कभी सूखता ही नहीं है। उस घर में कोई भी स्वस्थ नहीं रहेगा। देखो, वे कितनी तेज़ी से पत्थर लगा रहे हैं, गिट्टी भी ठीक से नहीं मिला रहे हैं, थोड़ा सीमेंट भी इसमें पड़ना चाहिए और रेत कम होनी चाहिए। मुझे लगता है कि एक दिन यह मकान इसमें रहने वालों के सिर पर ही गिर जाएगा।'' यह कहकर वह फिर बैठ गया और फिर एक-दो टाँके लगाये। लेकिन थोड़ी ही देर में वह फिर उछलकर उठा और अपना कोट उतार दिया, ''मैं जाकर उनसे बात करता हूँ।'' उस समय बढ़ई काम कर रहा था। उसने उससे पूछा, ''ऐसा कैसे कर रहे हो ? तुम लकड़ी सीधी नहीं काट रहे हो। इससे क्या खम्भे सीधे खड़े होंगे ? नहीं, ऐसे तो ये तिरछे ही रहेंगे।'' फिर उसने बढ़ई के हाथ से कुल्हाड़ी खींच ली और उसे लकड़ी काटने का तरीक़ा बताया। ठीक उसी समय मिट्टी से भरी एक गाड़ी में बैठे किसान से चिल्लाकर बोला, ''तुम कितने निर्दयी हो ! इतनी लदी हुई गाड़ी में इतने छोटे घोड़े के बच्चे कौन जोतेगा ? यह तो अभी गिर जाएगा।''

किसान ने कोई उत्तर नहीं दिया तो वह खीझकर अपनी दुकान में वापस चला आया। वह अभी काम शुरू करने ही वाला था कि उसके सहायक ने उसे एक जूता दिया। मोचीराम चिल्लाया, ''ये तुमने क्या किया ? मैंने तुम्हें बताया तो था कि जूता इतना चौड़ा मत सिलना। यह बिना तले का चौड़ा जूता कौन खरीदेगा ? मेरी बात माना करो।''

सहायक ने कहा, ''ठीक है मालिक ! यदि आप कहते हैं कि यह जूता एकदम बेकार है तो आप ठीक ही कहते होंगे, लेकिन यह आपका ही बनाया हुआ जूता है। आप अभी जब दौड़कर बाहर गए थे तो आपने उसे मेज़ के नीचे फेंक दिया था और मैंने अभी इसे उठाया है। आपको तो स्वर्ग का देवदूत भी नहीं कह सकता कि आप ग़लत कह रहे हैं।''



एक-दो रातों बाद मोचीराम ने सपना देखा कि वह मर गया है और स्वर्ग जा रहा है। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने दरवाज़ा खटखटाया ! सन्त पीटर ने दरवाज़ा खोला था और देखा कि कौन आया है। सन्त बोले, "अरे, ये तो तुम हो मोचीराम ! मैं तुम्हें भीतर तो आने दूँगा, लेकिन साथ ही तुम्हें यह चेतावनी भी देता हूँ कि यहाँ जो भी देखना, उसमें बीच में अपनी राय मत देने लगना। नहीं तो तुम्हारे लिए यह ठीक नहीं होगा।"

मोचीराम बोला, "तुमने यह सब कहने की परेशानी क्यों की ? मुझे अच्छी

तरह मालूम है कि कहाँ कैसा व्यवहार करना चाहिए और यहाँ तो सब कुछ पृथ्वी से अलग भी है।" यह कहकर वह भीतर गया और विशाल स्वर्ग में ऊपर-नीचे ख़ूब घूमा, इधर-उधर देखता रहा और थोड़ी-थोड़ी देर में सिर हिलाते हुए अपने-आपसे बात करता रहा। तभी उसे दो देवदूत एक खम्भा लेकर जाते हुए दिखाई दिये। उसे लम्बाई में पकड़ने की बजाय चौड़ाई में पकड़कर ले जा रहे थे।

मोचीराम यह देखकर अपने आपसे बोला, "कभी किसी ने किसी की बेवक़ूफ़ी देखी है ?" इतना कहकर ही वह चुप हो गया, क्योंकि उसने सोचा कि इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि खम्भा सीधा ले जाया जा रहा है या आड़ा ! इससे किसी और के काम में बाधा भी नहीं आ रही। थोड़ी ही देर में उसे दो देवदूत एक झरने से एक छेदवाले बर्तन में पानी उड़ेलते हुए दिखाई दिये। पानी सभी ओर से बह रहा था। धरती पर बरसात का पानी सींच रहे थे। वह ज़ोर से चिल्लाया, "हे भगवान !" लेकिन तुरन्त चुप हो गया और सोचने लगा, "शायद ये समय बिता रहे हैं और केवल खिलवाड़ कर रहे हैं।" वह आगे चल पड़ा। आगे उसे एक गहरे गड्ढे में फँसी गाड़ी दिखाई पड़ी। वह गाड़ीवान से बोला, "इसमें क्या आश्चर्य है ? तुमने इसमें सामान ही इतना सारा भर रखा है। इसमें भरा क्या है ?"

वह बोला, "पवित्र इच्छाएँ ! मैं इनके साथ सीधे रास्ते पर नहीं चल सकता। क़िस्मत से मैं यहाँ तक तो आ गया हूँ। वे मुझे यहाँ से भी निकालेंगे।"

तभी एक देवदूत आया और गाड़ी में घोड़े जोते। मोचीराम ने सोचा, 'ठीक है, लेकिन इस गाड़ी को खींचकर बाहर निकालने के लिए दो घोड़े काफ़ी नहीं हैं। कम-से-कम चार घोड़े होने चाहिए। तभी दूसरा देवदूत दो और घोड़े लेकर आया। लेकिन उसने उन्हें सामने की तरफ़ न जोतकर पीछे की ओर जोता। यह देखकर तो मोचीराम एकदम चकरा गया और चिल्ला उठा, "हद है ! तुम क्या कर रहे हो ? क्या कभी किसी ने इस तरह गाड़ी खींची है ? अपने घमण्ड में डूबकर तुम सोचते हो कि तुम जो कर रहे हो, वही सही है !"

वह अभी आगे और भी कहता, लेकिन स्वर्ग में रहनेवाले एक और व्यक्ति ने उसे गले से पकड़कर ज़ोर का धक्का दिया। वह सीधा स्वर्ग के दरवाज़े से बाहर जा पहुँचा। उसने पीछे मुड़कर देखा तो गाड़ी में जुते चारों घोड़ों के पंख उग आए थे और गाड़ी ऊपर उठ गई थी।

इसी समय उसकी नींद खुल गई। वह अपने आपसे बोला, "वहाँ की चीज़ें धरती से अलग हैं, इसीलिए बहुत कुछ नज़रअन्दाज़ भी किया जा सकता है। लेकिन एक गाड़ी में दो घोड़ों को आगे और दो घोड़ों को पीछे जोते जाते हुए धैर्यपूर्वक

कौन देख सकता है। यह ठीक है कि उनके पंख थे, लेकिन शुरू में तो मुझे वे दिखाई नहीं पड़े। अब यह भी तो अजीब बात है कि जिस घोड़े के चार अच्छे भले पैर हों, उनके पंख भी हों। लेकिन मुझे उठना चाहिए नहीं तो वे सामनेवाले घर को बनाने में ग़लती कर बैठेंगे। सचमुच यह तो क़िस्मत की बात है कि मैं अभी मरा नहीं।''

12

कुत्ता और गौरैया

एक शिकारी कुत्ता था जिसका मालिक बहुत दुष्ट था। वह उसे काम के बदले कभी भरपेट खाना नहीं देता था। एक दिन उसने तय किया कि वह अब और अन्याय नहीं सहेगा और शिकारी का साथ छोड़ दिया। हालाँकि वह इससे ख़ुश नहीं था, फिर भी वह वहाँ से चल पड़ा। रास्ते में उसे एक गौरैया मिली। उसने कहा, "कुत्ते भैया, तुम इतने दुखी क्यों हो ?"

कुत्ता बोला, "मैं भूखा हूँ और मेरे पास कुछ खाने के लिए नहीं है।"

गौरैया बोली, "मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें खाने को दूँगी।" वे साथ-साथ शहर में आ गए। जब वे एक कसाई की दुकान तक पहुँचे तो गौरैया बोली, "थोड़ा रुको, मैं तुम्हारे लिए मांस का एक टुकड़ा लाती हूँ।" यह कहकर वह उड़ी और सबकी नज़रें बचाकर एक मांस का टुकड़ा उठा लायी। उसे उसने कुत्ते के पास गिरा दिया। कुत्ते ने झपटकर उसे उठाया और एक कोने में बैठकर उसका स्वाद लिया। जब वह उसे खा चुका तो चिड़िया उसे दूसरी दुकान में ले गई और इसी तरह उसे दूसरा टुकड़ा लाकर दिया। जब कुत्ता दूसरा टुकड़ा भी खा चुका तो गौरैया ने पूछा, "कुत्ते भैया, क्या तुम्हारी भूख शान्त हो गई ?"

वह बोला, "हाँ, मांस खाकर तो हो गई, लेकिन रोटी का तो एक भी टुकड़ा मैंने नहीं खाया।"

गौरैया बोली, "मेरे साथ आओगे तो वह भी मिलेगा।" और वह उसे एक नानबाई की दुकान तक ले गई। उसी तरह कई रोटियाँ उठाकर कुत्ते को खिलायीं। जब कुत्ते ने रोटियाँ खा लीं तो वह उसे दूसरी दुकान पर ले गई और वहाँ भी और रोटियाँ खिलायीं। जब उसने ये रोटियाँ भी खा लीं तो गौरैया ने उससे पूछा कि वह सन्तुष्ट है या नहीं ? इस पर कुत्ते ने जवाब दिया, "हाँ, अब मैं शहर में थोड़ा घूमूँगा।"

उन्होंने चौड़ी सड़क पर चलना शुरू किया। लेकिन मौसम गर्म होने के कारण ज्यादा नहीं चल पाये। वे एक कोने में रुक गए और कुत्ता बोला, "मैं थक गया हूँ और सोना चाहता हूँ।"

गौरैया बोली, "ठीक है, इस बीच मैं इस डाल पर बैठी हूँ।" कुत्ता बीच सड़क पर लेट गया और सो गया।"

उसी समय वहाँ से तीन घोड़ों की एक गाड़ी गुज़री, जिस पर शराब के दो पीपे लदे थे। जब गौरैया ने देखा कि गाड़ी ज़रा भी किनारे नहीं हो रही है और बीचोंबीच ही चलती जा रही है तो वह चिल्लाई, "सुनो ! ध्यान से गाड़ी चलाओ। नहीं तो मैं तुम्हारा सर्वनाश कर दूँगी।"

लेकिन गाड़ीवान बड़बड़ाता गया, "सर्वनाश कर दो, मेरी बला से !" और चाबुक मारकर गाड़ी तेज़ की और सीधे चलता गया। उसके पहिये कुत्ते के ऊपर से गुज़र गए और वह मर गया।

चिड़िया चिल्लायी, "तुमने मेरे कुत्ते भैया को मार डाला। अब तुम्हें अपने घोड़ों और गाड़ी से हाथ धोना पड़ेगा।"

गाड़ीवान बोला, "मेरे घोड़े और गाड़ी, मेरी बला से ! तुम मेरा कर ही क्या सकती हो ?" और चलता रहा।

गौरैया ने उसके ऊपर उड़कर एक पीपे की डाट निकाल दी, जिससे सारी शराब बह गई और गाड़ीवान ने पीछे मुड़कर देखा तो उसे शराब टपकती दिखाई दी। उसने रुककर पीपे को देखा तो वह ख़ाली था। वह चिल्लाया, "अरे, मैं लुट गया।" गौरैया बोली, "लेकिन अभी भी कुछ क़सर बाक़ी है।" और उसने एक घोड़े के ऊपर उड़ते-उड़ते उसकी एक आँख निकाल ली। जब गाड़ीवान ने यह देखा तो उसने चाबुक उठाया और गौरैया को मारने की कोशिश की। लेकिन वह उड़ गई। चाबुक उसके घोड़े को ही लग गई और वह गिरकर मर गया।

गाड़ीवान चिल्लाया, "अरे मैं तो लुट गया।"

"अभी भी कुछ क़सर बाक़ी है।" गौरैया बोली। लेकिन गाड़ीवान दो घोड़ों से ही अपनी गाड़ी दौड़ाता रहा। गौरैया ने अब दूसरे पीपे की भी डाट निकाल दी, जिससे उसकी भी सारी शराब बह गई। गाड़ीवान यह देखकर फिर चिल्लाया, "अरे मैं तो लुट गया।" लेकिन गौरैया बोली, "अभी भी कुछ क़सर बाक़ी है।" वह दूसरे घोड़े के ऊपर उड़ने लगी और उसकी भी आँखें निकाल लीं। अबकी बार गाड़ीवान ने गौरैया पर कुल्हाड़ी से वार किया। लेकिन उसका वार पहले की ही तरह चूक गया और कुल्हाड़ी उसके घोड़े को ही लग गई। उसने अपने दूसरे घोड़े को भी मार दिया। फिर वह चिल्लाया, "मैं तो सचमुच लुट गया, बरबाद हो गया।



गौरैया फिर बोली, ''नहीं, अभी भी कुछ कसर बाक़ी है।''

और उसने तीसरे घोड़े की आँख निकाल ली। गाड़ीवान ने फिर से कुल्हाड़ी से वार किया। वार फिर चूक गया और तीसरा और आख़िरी घोड़ा भी मर गया।

गाड़ीवान को अपनी गाड़ी बीच राह में छोड़नी पड़ी। गौरैया बोली—''अब

मैं तुम्हारा घर बरबाद करूँगी।" और वह उड़ गई। गाड़ीवान गुस्से और बदले की भावना से भरकर घर पहुँचा। उसने अपनी पत्नी से कहा, "ओह, मेरे साथ कितना बुरा हुआ। मेरी शराब बह गई और मेरे तीनों घोड़े मर गए। मैं कितना अभागा हूँ।"

पत्नी बोली, "देखो हमारे घर में कितनी दुष्ट चिड़िया आई है। यह अपने साथ अनगिनत चिड़ियों को लायी है। ये सभी पक्षी हमारे भुट्टों पर बैठकर सारे दाने खा रहे हैं।"

गाड़ीवान बाहर निकला और उसने पाया कि वहाँ हज़ारों पक्षी बैठे थे और सारा अनाज खा गए थे। उन्हीं के बीच वही गौरैया बैठी थी। वह चिल्लाया, "मैं तो लुट गया !" लेकिन गौरैया बोली, "अभी भी कुछ क़सर बाक़ी है। अब तुम्हारी बारी है गाड़ीवान !" और उड़ गई।

गाड़ीवान की सारी सम्पत्ति नष्ट हो गई थी। वह रसोईघर में जाकर चूल्हे के सामने दुखी मन से बैठा था। गौरैया बाहर खिड़की पर बैठी कह रही थी, "गाड़ीवान अब तुम्हारी बारी है।"

इस पर गाड़ीवान ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और गौरैया पर फेंककर मारी। लेकिन उससे केवल खिड़की दो टुकड़ों में कट गई और गौरैया बच गई। गौरैया उछलकर भीतर आई और चूल्हे पर बैठकर बोली, "गाड़ीवान, अब तुम्हारी बारी है।" गुस्से और बदले की आग में अन्धा होकर उसने फिर कुल्हाड़ी फेंकी, जिससे केवल चूल्हा कट गया और चिड़िया एक जगह से दूसरी जगह फुदकती रही। गाड़ीवान उस पर बार-बार वार करता गया और उसने अपनी सारी कुर्सियाँ, मेज़ें, गिलास, बिस्तर और यहाँ तक कि घर की सारी दीवारें तक काट डालीं। लेकिन चिड़िया को वह छू भी नहीं पाया। आख़िरकार उसने उसे अपने हाथों से पकड़ ही लिया। उसकी पत्नी ने पूछा कि क्या वह उसे मार सकती है तो वह बोला, "नहीं, यह तो बेहद दयापूर्ण होगा। इसे भयानक तरीक़े से मारना चाहिए, क्योंकि मैं इसे खाना चाहता हूँ।" यह कहते हुए उसने चिड़िया को समूचा निगल लिया। चिड़िया उसके पेट में फड़फड़ाने लगी और दोबारा फिर उसके मुँह में वापस आ गई और बोली, "अब तुम्हारी बारी है गाड़ीवान !"

यह सुनकर गाड़ीवान ने अपनी पत्नी को कुल्हाड़ी पकड़ायी और बोला, "इसे मेरे मुँह में ही ख़त्म कर दो।" उसकी पत्नी ने कुल्हाड़ी पकड़ी और निशाना साधा। उसका निशाना चूक गया और कुल्हाड़ी के वार से उसके पति की मृत्यु हो गई। गौरैया वहाँ से दूर उड़ चुकी थी और दोबारा फिर कभी नज़र नहीं आई।

13

भाई लस्टिग

एक बार एक भयानक युद्ध हुआ। जब अन्ततः युद्ध समाप्त हुआ तो सैनिकों को उनकी तनख़्वाह मिली। इन सैनिकों में भाई लस्टिग भी थे, जिन्हें केवल युद्ध के समय खाई जानेवाली रोटी का एक छोटा टुकड़ा और चार सिक्के मिले। एक महात्मा ने भिखारी का वेश धरा और उस रास्ते पर बैठ गया जहाँ से भाई लस्टिग गुज़रे ! उन्होंने भाई लस्टिग से खाने को एक टुकड़ा माँगा। सिपाही ने जवाब दिया, "सुनो, मैं तुम्हें क्या दूँ ? मैं सेना में था और मुझे अभी अपनी तनख़्वाह में एक रोटी का छोटा टुकड़ा और चार सिक्के मिले हैं। जब यह ख़त्म हो जाएगा तो मैं भी भीख माँगने लगूँगा। फिर भी अभी जो कुछ मेरे पास है, वह मैं तुमसे बाँट लेता हूँ।" यह कहते हुए भाई लस्टिग ने रोटी के चार टुकड़े किए और एक सिक्के के साथ उस भिखारी को दिया। सन्त ने उसे आशीर्वाद दिया और थोड़ा आगे जाकर सड़क के किनारे दूसरे भिखारी का वेष धारण करके बैठ गया। जैसे ही सिपाही वहाँ पहुँचा तो उसने पहले की तरह भीख माँगी। भाई लस्टिग ने जवाब दिया और उसे एक टुकड़ा रोटी और एक सिक्का दे दिया। सन्त ने उसे धन्यवाद दिया और फिर थोड़ी दूर जाकर तीसरे भिखारी का रूप धारण करके बैठ गया। उसने फिर से सिपाही से भीख माँगी। भाई लस्टिग ने उसे भी एक टुकड़ा रोटी और एक सिक्का दे दिया। संत ने उसे धन्यवाद दिया और उसे एक टुकड़ा रोटी और एक सिक्के के साथ शान्ति से आगे जाने दिया। भाई लस्टिग एक सराय में गए, अपनी रोटी खाई और उस एक सिक्के से ख़रीदकर थोड़ा शर्बत पिया। खा-पीकर वे फिर चल पड़े। ठीक उसी वक़्त सन्त उसी की तरह एक सेवामुक्त सिपाही का वेष रखकर उसके पास पहुँचे। वह बोले, "नमस्ते दोस्त, क्या तुम मुझे थोड़ी रोटी और शर्बत ख़रीदने के लिए एक सिक्का दे सकते हो ?" लस्टिग बोले, "मैं कहाँ से लाऊँ मुझे सेना से छुट्टी के समय सिर्फ़ रोटी और चार सिक्के मिले थे, जिन्हें मैंने तीन

भिखारियों के साथ बाँट लिया। रोटी का चौथा हिस्सा मैंने खा लिया और चौथे सिक्के से शर्बत पी लिया। अब मेरे पास कुछ नहीं बचा। यदि तुम्हारे पास भी कुछ नहीं है तो हम साथ में भीख माँग सकते हैं।''

सन्त ने उत्तर दिया, ''नहीं इसकी ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मुझे थोड़ा-बहुत इलाज करने की विद्या आती है और इसकी वजह से मैं ज़रूरत के लायक़ पैसा कमा सकता हूँ।''

भाई लस्टिग बोले, ''ओह। तब तो मुझे अकेले ही जाना होगा, क्योंकि मुझे तो इस विद्या की थोड़ी भी जानकारी नहीं है।''

सन्त बोले, ''तुम मेरे साथ आ सकते हो। जो भी मैं कमाऊँगा, वह हम आधा-आधा बाँट लेंगे।''

भाई लस्टिग बोले, ''ठीक है।'' और वे साथ चल पड़े।

थोड़ी ही देर में वे खेतों के बीच बने एक मकान में पहुँचे। उस मकान से उन्हें भीतर से ज़ोर-ज़ोर से रोने और रिरियाने की आवाज़ सुनायी पड़ी। वे भीतर गए। उन्होंने देखा कि उस घर का मालिक मृत्यु शैय्या पर लेटा है।

उसकी पत्नी पास में बैठी ज़ोर-ज़ोर से रो रही है। सन्त ने स्त्री से कहा, ''शान्त हो जाओ, मैं तुम्हारे पति को ठीक कर दूँगा।'' उसने अपनी जेब से एक मरहम निकाला और उसे लगाया। एक क्षण में वह व्यक्ति ठीक होकर खड़ा हो गया। ख़ुशी और आश्चर्य से किसान और उसकी पत्नी ने सन्त से पूछा, ''हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं?'' सन्त को कुछ भी नहीं चाहिए था। जितना ही वे उससे आग्रह करते वह इनकार करता जाता। लेकिन भाई लस्टिग बीच में बोल पड़े, ''कुछ तो ले लीजिये, हमारे काम आएगा।'' आख़िरकार किसान की पत्नी एक भेड़ लायी और सन्त से उसे स्वीकार करने का अनुरोध करने लगी। लेकिन फिर भी उन्होंने मना कर दिया। लस्टिग फिर बीच में बोल पड़े, ''ले लीजिये, हमें सचमुच इसकी ज़रूरत पड़ेगी।'' सन्त ने हामी भर दी, लेकिन बोले, ''मैं यह भेड़ तो लूँगा, लेकिन तुम्हें इसे उठाकर चलना पड़ेगा।'' लस्टिग बोले, ''ठीक है, कोई बात नहीं, मैं आराम से उठा लूँगा।'' उन्होंने एक लकड़ी से उसके पैर बाँधे और उसे कन्धे पर लटका लिया। वे आगे चल पड़े और चलते-चलते एक जंगल तक आ गए। जहाँ लस्टिग को भेड़ भारी लगने लगी। उन्हें भूख भी लगी थी। वे सन्त से बोले, ''यह जगह भेड़ को पकाकर खाने के लिए बढ़िया है।''

उसके साथी ने जवाब दिया, ''ठीक है, लेकिन जब तुम पकाओगे तो उस समय मैं यहाँ नहीं रहूँगा। मैं आसपास घूमकर आता हूँ। मैं सही समय पर लौट

आऊँगा।" लस्टिग ने उत्तर दिया, "यदि आपकी इच्छा है तो आप जा सकते हैं। मुझे खाना बनाना अच्छी तरह आता है। मैं इसे जल्दी ही पका दूँगा। यह कहकर उन्होंने भेड़ को काटा, आग जलायी और बर्तन में मांस चढ़ा दिया।" मांस जल्दी ही अच्छी तरह पक गया। लेकिन सन्त अभी तक नहीं लौटे थे। भाई लस्टिग ने आख़िरकार मांस परोसा और काटकर दिल बाहर निकाल लिया। "यही सबसे बढ़िया हिस्सा है।" वे बोले और उसे खा गए। उसी समय सन्त लौट आए और बोले, "तुम पूरी भेड़ खा सकते हो, लेकिन मुझे दिल दो।" भाई लस्टिग ने छुरी-काँटा निकाला और तेज़ी से मांस के बीच में दिल ढूँढ़ने की तैयारी करने लगे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। वे बोले, "इसका दिल ही नहीं है।" सन्त ने पूछा, "नहीं ! फिर कहाँ चला गया ?" लस्टिग ने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम, हम लोग कितने बेवक़ूफ़ हैं कि जिस भेड़ का दिल ही नहीं था, उसका दिल तलाश कर रहे हैं।"

सन्त बोले, "आह ! यह तो नयी बात है। हर जानवर का दिल होता है तो फिर इस भेड़ का क्यों नहीं है ?"

लस्टिग बोले, "नहीं था दोस्त, भेड़ का दिल नहीं होता, सोचकर देखो, तुम भी जान जाओगे।"

सन्त ने कहा, "ठीक है, जब दिल होता ही नहीं तो फिर मुझे और दूसरा मांस नहीं चाहिए। तुम पूरा मांस खा लो।"

लस्टिग ने कहा, "और जो मैं नहीं खा पाऊँगा वह मैं अपने थैले में रख लूँगा।" और उन्होंने आधी भेड़ का मांस खाकर आधा थैले में रख लिया।

इसके बाद वे आगे चलते गए। थोड़ी देर बाद एक नदी आई, जिसे उन्हें पार करना था। सन्त ने साथी से कहा, "पहले तुम जाओ। लेकिन उसने यह सोचकर मना कर दिया कि यदि सन्त पहले गए तो उसे पता चल जाएगा कि पानी कितना गहरा है। सन्त नदी को पार कर गए और पानी केवल उनके घुटने तक पहुँचा। लेकिन जब भाई लस्टिग नदी पार करने लगे तो पानी और गहरा हो गया और उनकी गर्दन तक पहुँच गया। वे चिल्लाए, "मेरी मदद करो दोस्त !"

लेकिन सन्त बोले, "पहले कहो कि तुमने भेड़ का दिल खाया था।"

वे बोले, "नहीं, मैंने नहीं खाया" और पानी तुरन्त और ऊपर चढ़कर उनके मुँह तक पहुँच गया। भाई लस्टिग फिर चिल्लाये "मुझे बचाओ दोस्त।" लेकिन सन्त ने दोबारा पूछा, "क्या तुम स्वीकार करोगे कि तुमने भेड़ का दिल खाया था ? लस्टिग बोले, "नहीं, मैंने नहीं खाया।" लेकिन फिर भी सन्त ने उनका हाथ पकड़कर

उन्हें बाहर निकाल लिया। वे फिर आगे चल पड़े और एक देश में आ उन्हें पता चला कि राजा की बेटी मृत्यु शैय्या पर है। सिपाही सन्त से बोला, "वा॰ दोस्त ! यह तो हमारे लिए बहुत अच्छी बात है। यदि हम उसकी जान बचा लें तो हमारी ज़िन्दगी बन जाएगी।"

लेकिन सन्त को कोई जल्दी नहीं थी। लस्टिग बोले, "जल्दी चलो दोस्त, जल्दी पैर बढ़ाओ, नहीं तो हम समय पर नहीं पहुँच पाएँगे।" फिर भी सन्त धीरे-धीरे चलते रहे और लस्टिग जल्दी करते रहे। आख़िरकार उन्हें ख़बर मिली कि राजकुमारी मर गई है। लास्टिग बोले, "यही मिला हमें तुम्हारे धीरे चलने से।"

लेकिन सन्त बोले, "शान्त रहो। मैं बीमार का इलाज करने से भी ज़्यादा कुछ कर सकता हूँ। मैं मुर्दे को भी ज़िन्दा कर सकता हूँ।"

भाई लस्टिग बोले, "ठीक है, यदि ऐसा है तब तो तुम्हें इनाम में आधा राज्य माँग लेना चाहिए।" इसके बाद वे महल में गए जहाँ सभी शोक मना रहे थे। सन्त ने राजा से कहा, "मैं आपकी लड़की को जीवित कर सकता हूँ। उन्हें लड़की के पास ले जाया गया। उन्होंने एक बर्तन में पानी माँगा। जैसे ही पानी आया तो उन्होंने सबको बाहर जाने के लिए कह दिया। सिर्फ़ भाई लस्टिग उनके साथ रह गए। इसके बाद उन्होंने राजकुमारी के हाथ-पैर काटकर अलग कर दिये और उन्हें पानी में तब तक उबाला तब तक कि हड्डियाँ अलग नहीं हो गई। फिर उन्होंने साफ़ हड्डियाँ निकाली और उन्हें मेज़ पर अपने स्वाभाविक क्रम में लगा दिया। जब यह हो गया तो वे मेज़ के सामने खड़े हो गए और बोले, "उठो, खड़े हो जाओ।"

उनके तीसरी बार यह कहने पर राजकुमारी एकदम भली-चंगी खड़ी हो गई और राजा बेहद ख़ुश होकर सन्त से बोला, "अपना इनाम माँगो, मैं तुम्हें मुँहमाँगा इनाम दूँगा, भले ही तुम मेरा आधा राज्य ही क्यों न माँग लो।"

लेकिन सन्त बोले, "मुझे कुछ नहीं चाहिए।" सिपाही ने मन-ही-मन सोचा, "अरे भले आदमी।" और अपने साथी को एक कोने में ले जाकर उससे फुसफुसाकर बोला, "इतने बेवक़ूफ़ मत बनो, यदि तुम्हें कुछ नहीं चाहिए तो मेरा ही ख़याल करो।" लेकिन सन्त ने कुछ नहीं माँगा। राजा ने जब देखा कि दूसरे व्यक्ति को इनाम की इच्छा है तो उसने सिपाही का थैला सोने से भर दिया।

इसके बाद वे आगे चलते गए और जैसे ही वे जंगल में पहुँचे। भाई लस्टिग सन्त से बोले, "अब हम सोना बाँट लें।" सन्त ने उत्तर दिया, "ठीक है, यही सही समय है।" और उन्होंने सोना तीन भागों में बाँट दिया। भाई लस्टिग ने सोचा,

"पता नहीं अब इनके दिमाग़ में क्या है। इन्होंने सोने के तीन हिस्से क्यों किए, जबकि हम तो सिर्फ़ दो ही हैं ?"

सन्त बोले, "मैंने इसे बाँट दिया है, एक हिस्सा मेरा, एक तुम्हारा और एक उसका, जिसने भेड़ का दिल खाया था।"

"अरे, वह तो मैंने ही खाया था, मेरा विश्वास करो।" भाई लस्टिग तुरन्त बोल पड़े और उन्होंने तीसरा हिस्सा ले लिया।

सन्त ने पूछा, "यह कैसे हो सकता है ? भेड़ों का तो दिल ही नहीं होता।"

सिपाही ने उत्तर दिया, "क्या ? तुम क्या सोचते हो ? भेड़ का भी वैसे ही दिल होता है, जैसे किसी और जानवर का। भला भेड़ का दिल क्यों नहीं होगा ?"

सन्त बोले, "आह, ठीक है, तुम सारा सोना अपने पास रखो। मैं अब ऐसे आदमी के साथ सफ़र नहीं करूँगा, बल्कि अलग राह पकड़ूँगा।

सिपाही बोला, "जैसा तुम ठीक समझो दोस्त, अलविदा !"

सन्त अपनी राह पर चल पड़े। भाई लस्टिग ने सोचा, "अच्छा हुआ यह चला गया, लेकिन आदमी था अच्छा।"

सिपाही के पास अब काफ़ी सोना था, लेकिन इधर-उधर घूमते-फिरते, उपहार देते, दावतें उड़ाते और इस तरह से कुछ ही महीनों में वह फिर से ग़रीब हो गया। उसी समय एक देश में सुनाई पड़ा कि राजा की बेटी की मृत्यु हो गई है। उसने सोचा, 'यह तो बढ़िया बात है। मैं उसे दोबारा जीवित करके मुँह माँगा इनाम पा सकता हूँ।' यह सोचकर वह राजा के पास गया और उससे कहा कि वह मृत राजकुमारी को जीवित कर सकता है। राजा ने सुन रखा था कि एक सिपाही यात्रा पर निकला है और उसने मृत व्यक्ति को जीवित कर दिया है। राजा को लगा यही वह व्यक्ति है। शुरू में उसे पूरा विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसने अपने सलाहकारों से भी विचार-विमर्श किया। सलाहकारों ने कहा कि राजकुमारी मर ही चुकी है तो कोशिश करके देखने में क्या हर्ज़ है। भाई लस्टिग ने एक बर्तन में पानी मँगाया और उसे उबालने के लिए आग पर चढ़ा दिया। उसके बाद जब हर व्यक्ति कमरे से चला गया तो उन्होंने राजकुमारी के हाथ-पैर काटकर अलग किए और उन्हें उबलते पानी में डाल दिया, जैसा कि उन्होंने सन्त को करते हुए देखा था। अच्छी तरह उबलने के बाद जब हड्डियाँ अलग हो गई तो उन्होंने उन्हें बाहर निकाला और मेज़ पर रख दिया। लेकिन उन्हें हड्डियों को रखने का सही क्रम मालूम नहीं था। इसलिए उन्होंने उन्हें ग़लत क्रम में रख दिया। यह करने के बाद वे खड़े हुए और तीन बार बोले, "उठो, खड़े हो जाओ !" लेकिन हड्डियों में कोई हरक़त

नहीं हुई। वे फिर बोले, "चमकीली बलाओ, उठकर खड़ी हो, नहीं तो मुझसे बुरा कोई न होगा।" उन्होंने यह कहा ही था कि सन्त अपने पुराने वेश में भीतर आ गए और बोले, "अरे चालाक आदमी ! तुम क्या कर रहे हो ? जब तुमने सारे हाथ-पैर ही ग़लत लगा दिये तो मुर्दा जीवित किस तरह होगा ?"

वह बोले, "मैं जैसा कर सकता था, मैंने किया।" सन्त बोले, "इस बार तो मैं तुम्हें मुसीबत से छुटकारा दिला सकता हूँ, लेकिन ऐसी हरकत फिर मत करना, नहीं तो तुम बर्बाद हो जाओगे। इसी के साथ मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम इस काम के बदले राजा से कुछ भी इनाम नहीं लेना।" यह कहकर सन्त ने हड्डियाँ सही क्रम में रखीं और तीन बार ज़ोर से बोले, "उठो, खड़े हो जाओ !" और राजकुमारी पहले जैसी भली-चंगी और सुन्दर खड़ी हो गई। सन्त खिड़की में से चुपचाप बाहर चले गए ओर भाई लस्टिग इस चमत्कार पर बेहद ख़ुश होने लगे। लेकिन वे इस बात पर दुखी भी थे कि वे इनाम में कुछ भी नहीं ले पाएँगे। वे अपने आपसे बोले, "मुझे समझ में नहीं आता कि अब इनके दिमाग़ में क्या फ़ितूर है, क्योंकि जो ये एक हाथ से देते हैं, दूसरे हाथ से ले लेते हैं। मेरी समझ में इनका व्यवहार नहीं आता।" यही सोचकर उसने राजा के इनाम माँगने की बात सुनकर भी कुछ नहीं माँगा। लेकिन थोड़ी चतुराई से अपना थैला सोने से भरवा लिया। इसके बाद जब उन्होंने धन्यवाद देकर विदा ली और दरवाज़े से बाहर निकले ही थे कि उन्हें संत वहाँ खड़े मिले। वे बोले, "तुम कैसे आदमी हो ? मैंने तुम्हें कुछ भी इनाम लेने से मना किया था और तुमने सोने से थैला भरवा लिया।"

भाई लस्टिग बोले, "यदि उन्होंने इसे भर ही दिया तो मैं भला क्या कर सकता था ?"

सन्त बोले, "देखो, मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि यदि तुम इसी तरह से भविष्य में भी रहे तो तुम्हें इसका फल भुगतना होगा।"

भाई लस्टिग ने उत्तर दिया, "अरे दोस्त, क्या फ़र्क़ पड़ता है। अब मेरे पास पैसा है, हड्डियाँ उबालकर अब मुझे क्या करना है ?"

सन्त बोले, "यह सोना तो बहुत दिन तक नहीं चलेगा, लेकिन तुम मेरे रास्ते पर मत चल पड़ो। इसके लिए मैं तुम्हारे थैले को एक शक्ति देता हूँ—तुम जो भी चाहोगे, वह इसके भीतर दिखाई देगा। अलविदा ! अब मैं तुमसे फिर कभी नहीं मिलूँगा।"

भाई लस्टिग ने चैन की साँस ली, "ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि ये

चले गए। अजीब आदमी है। मैं इसकी बात तो कभी नहीं मानूँगा।'' लेकिन अपने थैले की अद्भुत शक्ति के बारे में उन्होंने उस समय नहीं सोचा।

वे फिर चलते गए, चलते गए और पहले की ही तरह अपना सोना ख़र्च करते गए और लुटाते गए। अन्ततः उनके पास सिर्फ़ चार पैसे बचे, जिसे लेकर एक सराय में आए। वहाँ उन्होंने तीन पैसों से दूध और एक पैसे से रोटी ख़रीदी। जैसे ही वे खाने बैठे तो भुने हुए हंस की ख़ुशबू से उनके नथुने फड़क उठे। वे उठे और उन्होंने आसपास देखा तो पाया कि सराय मालिक ने चूल्हे पर दो हंस भूनने के लिए रखे हैं। तभी उन्हें अपने थैले की अद्भुत शक्ति की परीक्षा लेने का विचार आया। वे दरवाज़े तक गए और इच्छा की कि दो भुने हुए हंस उनके थैले के भीतर आ जाएँ। जैसे ही उन्होंने यह कहा और थैला खोलकर देखा तो दो हंसों को भीतर पाया। वे बोल पड़े, ''वाह ! मेरे पास बड़ी ताक़त आ गई है।'' वे एक घास के मैदान में गए और वहाँ बैठकर हंसों को निकालकर खाने लगे। जब वे खा ही रहे थे कि दो आदमी पास आए। वे एक बिना खाये हंस को लालच से देखने लगे।

भाई लस्टिग ने जब उन्हें देखा तो उन्हें लगा कि एक हंस खाकर ही उनका पेट भर गया है। उन्होंने उन दोनों व्यक्तियों को बुलाया और कहा, ''यह हंस ले लो और खाकर मेरी ख़ुशी और सेहत के लिए दुआ करो।'' उन्होंने भाई लस्टिग को धन्यवाद दिया और सराय में जाकर रोटी मंगायी और हंस को निकालकर खाने लगे। सराय की मालकिन ने उन्हें देखा और फिर अपने पति को देखा और बोली, ''वे एक हंस खा रहे हैं। कहीं यह हमारा हंस तो नहीं है।''

सराय मालिक जल्दी से चूल्हे पर अपने हंसों को देखने गया तो उसने पाया कि चूल्हे पर तो कुछ भी नहीं है। वापस लौटते हुए वह चिल्लाया, ''चोर ! तुम इतनी बेशर्मी से बैठकर हमारा हंस खा रहे हो ? इसके पैसे तुरन्त निकालो, नहीं तो मैं मोटे डण्डे से तुम लोगों की पिटाई करूँगा।''

दोनों चिल्लाये, ''हम चोर नहीं हैं। वहाँ घास के मैदान में बैठे एक सिपाही ने हमें यह हंस दिया है।'' सराय-मालिक बोला, ''झूठ मत बोलो, वह सिपाही यहाँ ठहरा तो था, लेकिन वह भले तरीक़े से यहाँ से बाहर निकला है। मुझे उस पर कोई शक़ नहीं है। तुम्हीं लोग चोर हो और तुम्हें ही हर्ज़ाना भरना होगा।'' लेकिन जब उन्होंने हंस के पैसे नहीं दिये तो उसने एक डण्डा लिया और उन्हें सराय से बाहर भगा दिया। इसी बीच भाई लस्टिग चलकर एक गाँव में आ पहुँचे, जिसकी एक तरफ़ एक भव्य महल था और दूसरी तरफ़ एक छोटी-सी सराय थी।

वे सराय में गए और एक रात रहने के बारे में पूछा। लेकिन सराय-मालिक ने मना कर दिया और बोला, "कोई कमरा ख़ाली नहीं है। मेरी सराय में बड़े-बड़े मेहमान ठहरे हैं।" भाई लस्टिग बोले, "आश्चर्य की बात है कि वे उस महल में जाने की बजाय तुम्हारे यहाँ आ गए।"

सराय-मालिक बोला, "ऐसा मत करना, नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे।"

भाई लस्टिग ने जवाब दिया, "देखते हैं। मुझे वहाँ की चाभी और कुछ खाने-पीने का समान दे दो।"

सराय-मालिक ने उसे चाभी, थोड़ा मांस और रोटी दे दी। भाई लस्टिग उन्हें लेकर महल में गए और छक कर खाया। फिर उन्हें नींद आने लगी। वे ज़मीन पर लेट गए, क्योंकि वहाँ कोई बिस्तर नहीं था। जल्दी ही वे सो गए। लेकिन बीच रात में एकदम डरावनी आवाज़ सुनकर उनकी नींद खुल गई। जब वे उठे तो उन्हें नौ बदसूरत बुरी आत्माएँ दिखाई दीं, जो हाथ पकड़कर गोल घेरा बनाए हुए उनके इर्द-गिर्द नाच रही थीं। जब भाई लस्टिग ने उन्हें देखा तो वे बोले, "जितना मन चाहे उतना नाचो, लेकिन ज़्यादा क़रीब मत आना।" लेकिन उन आत्माओं ने उनकी बात नहीं सुनी और क़रीब आते गए। अन्ततः उनके पैर भाई लस्टिग के चेहरे को छूने लगे।

भाई लस्टिग फिर बोले, "शान्त हो जाओ दुष्ट आत्माओ !" लेकिन वे और पास और पास आते गए। वे इतना पास आ गई कि भाई लस्टिग चिल्लाये, "जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगा" और कुर्सी का पैर उठाकर उन पर हमला किया। बुरी आत्माओं की संख्या एक आदमी के मुक़ाबले बहुत अधिक थी। यदि वह एक को मारकर गिराते तो दूसरी आ जाती। वे चिल्लाये, "दुष्ट आत्माओ ! मेरे लिए तुम बहुत परेशानी खड़ी कर रही हो, लेकिन रुको। सारे नौ के नौ मेरे थैले में आ जाओ।" जैसे ही उन्होंने यह कहा, वे सारे उलटकर उनके थैले में बन्द हो गए। उन्होंने थैले को कोने में पटक दिया। सब कुछ शान्त हो गया। भाई लस्टिग लेट गए और सूरज चढ़ने तक सोते रहे। इसी समय सराय-मालिक और महल के मालिक राजा वहाँ आए और जैसे ही उन्होंने उन्हें जीवित और भला-चंगा देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने पूछा, "अरे ! उन आत्माओं ने तुम्हें कुछ नहीं किया ?"

भाई लस्टिग ने जवाब दिया, "नहीं। वे सब मेरे थैले में बन्द हैं। आप अपने महल में फिर से शान्ति से रह सकते हैं। अब से ऐसा कुछ भी नहीं होगा।"



राजा ने उन्हें धन्यवाद दिया और बहुत-सा इनाम दिया। उसने उनसे प्रार्थना भी की कि वे उनके साथ रहकर नौकरी करें और उनका जीवन भर ध्यान रखेंगे। लेकिन सिपाही भाई लस्टिग ने मना कर दिया और कहा कि उन्हें भटकने की आदत है और आगे चल पड़े। इस तरह भाई लस्टिग चलते गए और एक लोहार के पास आए। उन्होंने अपना थैला, जिसमें वे नौ बुरी आत्माएँ थीं, लोहार के सामने रख दिया। लोहार और उसके साथी से उसे पीटने के लिए कहा। उन्होंने अपने भारी हथौड़ों से उसे पीट डाला, जिससे कि बुरी आत्माएँ कुचल गईं और जब उन्होंने थैला खोला तो आठ तो मर गई थीं, लेकिन नौवीं, जो कि एक कोने में दुबक गई थी, अभी जीवित थी। जैसे ही थैला खुला वह सरककर अपनी पुरानी जगह पर पहुँच गई।

जब भाई लस्टिग और आगे बढ़े और पूरी दुनिया की सैर कर चुके तो उनकी यात्राओं के क़िस्से सब जगह फैल गए। वे बूढ़े भी हो गए थे और उन्हें लगने लगा था कि उनका अन्त आ गया है। इसलिए वे एक तीर्थयात्री के पास गए और उससे बाले, "मैं भटकते-भटकते थक गया हूँ और अब धर्म के रास्ते पर चलना चाहता हूँ।"

लेकिन तीर्थयात्री उनसे बोला, "दो रास्ते हैं—एक चौड़ा और साफ़-सुथरा, जो कि बुरी आत्माओं के पास ले जाता है और दूसरा संकरा और ऊबड़ खाबड़ है, जो देवदूतों के पास ले जाता है।" भाई लस्टिग ने सोचा, यदि मैं सँकरे और ऊबड़ खाबड़ रास्ते पर चला तो बेवक़ूफ़ ही बनूँगा। और उठकर चौड़े और साफ-सुथरे रास्ते पर चलने लगे। उस रास्ते पर चलकर वह एक बड़े काले दरवाज़े के पास पहुँचे, जो कि दुष्ट आत्माओं के निवास का द्वार था। उसने वह द्वार खटखटाया। द्वार खोलनेवाले व्यक्ति ने बाहर झाँककर देखा। जैसे ही उसने भाई लस्टिग को देखा तो वो डर गया, क्योंकि यह वही नौवीं बुरी आत्मा थी, जो थैले में जीवित बच गई थी। उसने द्वार कसकर बन्द कर दिया और उसने अपने मुखिया के पास जाकर कहा, "बाहर थैला लिये एक आदमी खड़ा है, जो भीतर आना चाहता है। लेकिन हमें उसे भीतर नहीं आने देना चाहिए, वरना वह इस पूरी जगह को अपने थैले में भर लेगा। जैसा उसने एक बार मेरे साथ किया था।"

भाई लस्टिग को जब वहाँ से जाने के लिए कहा गया तो उन्होंने देवदूतों के देश में जाने की ठानी, क्योंकि उन्हें कहीं तो जाना था। वे वापस मुड़े और

तब तक चलते रहे जब तक वे एक दरवाज़े तक नहीं आ गए। उन्होंने वह दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़े के पास वही सन्त बैठे थे, जिन्होंने उनके साथ सफ़र किया था। लस्टिग ने एकदम उन्हें पहचान लिया और सोचा "यहाँ मुझे पुराना साथी मिल गया है। यह मेरी क़िस्मत के लिए अच्छा होगा।"

सन्त ने उनसे पूछा, "मुझे लगता है कि तुम यहाँ आना चाहते हो ?"

वे बोले, "हाँ दोस्त, मुझे भीतर आने दो।"

सन्त बोले, "नहीं तुम भीतर नहीं आ सकते।"

"ठीक है, यदि तुम मुझे भीतर नहीं आने दोगे तो फिर अपना यह थैला भी ले लो, क्योंकि मैं तुम्हारी कोई चीज़ नहीं रखूँगा।"

सन्त बोले, "दे दो, यहाँ दे दो," और उन्होंने दरवाज़े की सलाखों के बीच से थैला लेकर अपनी कुर्सी के पास लटका दिया। भाई लस्टिग बोले, "अब मैं उस थैले में जाना चाहता हूँ," और एक क्षण में वह थैले के भीतर पहुँच गए। इस तरह उन्होंने सन्त को चक़मा दिया, जिन्हें आख़िरकार भाई लस्टिग को स्वर्ग के भीतर लेना ही पड़ा।

14

राजकुमार और राजकुमारी

एक राजा था। उसका एक बेटा था। उसके बारे में यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह जब सोलह साल का होगा तो एक लम्बे सीगों वाले हिरण द्वारा मार दिया जाएगा। जब लड़का सोलह साल का हुआ तो वह एक दिन राजा के अन्य शिकारियों के साथ शिकार खेलने गया। जंगल में वह रास्ता भटक गया और अपने साथियों से अलग हो गया। अचानक उसे एक सुन्दर हिरण दिखा। उसने उसे मारने का निर्णय किया। काफ़ी देर तक वह उस सुन्दर जानवर का पीछा करता रहा, परन्तु उसे मार नहीं पाया। अन्त में हिरण एक पेड़ की खोखल में घुसा और वहाँ वह एक लम्बे और दुबले आदमी में बदल गया। वह आदमी राजकुमार से बोला, "आख़िर मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया। मैं बहुत दिनों से तुम्हारा पीछा कर रहा था, लेकिन तुम्हें पकड़ नहीं पा रहा था।" इतना कहकर, वह आदमी राजकुमार को अपने साथ लेकर एक बड़े तालाब को पार करता हुआ, एक महल में पहुँचा। वहाँ उन्होंने साथ बैठकर खाना खाया और खाना समाप्त कर राजा ने कहा, "मेरी तीन बेटियाँ हैं। तुम्हें आज रात नौ बजे से मेरी सबसे बड़ी बेटी की रखवाली करनी है। मैं हर घण्टे आकर तुम्हें धीरे-से आवाज़ दूँगा। अगर तुम सो गए और मेरी आवाज़ का उत्तर नहीं दिया तो सुबह होने पर तुम्हें मार डाला जाएगा। इसके विपरीत अगर तुम सारी रात जागते रहे तो तुम्हारी शादी इस लड़की के साथ कर दी जाएगी।"

इसके बाद, राजकुमार को राजकुमारी के कमरे में पहुँचा दिया गया। राजकुमारी के कमरे में पत्थर की एक बड़ी मूर्ति रखी थी। राजकुमार के कमरे में आ जाने के बाद राजकुमारी ने इस मूर्ति से कहा, "मेरे पिता, जब नौ बजे और उसके बाद हर घण्टे आकर राजकुमार को पुकारेंगे तो राजकुमार के बदले तुम इसकी आवाज़ में जवाब देना।" पत्थर की मूर्ति ने हाँ कहने के अन्दाज़ में पहले तेज़ी से और फिर धीरे-धीरे अपना सिर हिलाया। दूसरी सुबह राजा ने राजकुमार से कहा कि

वह उसके काम से काफ़ी प्रसन्न है, लेकिन वह अभी अपनी बड़ी लड़की के साथ उसकी शादी नहीं करेगा। शादी से पहले, उसे आज रात फिर जागकर उसकी दूसरी लड़की की रखवाली करनी होगी। राजा ने उससे कहा, "आज रात फिर हर घण्टे बाद आकर मैं तुम्हें धीमी आवाज़ में पुकारूँगा। अगर तुम जवाब देते रहे तो कल तुम्हारी शादी मेरी सबसे बड़ी लड़की के साथ हो जाएगी, लेकिन अगर तुमने जवाब नहीं दिया तो तुम्हें मार डाला जाएगा।"

राजकुमार अब दूसरी राजकुमारी के कमरे में पहुँचा। इस कमरे में पहलेवाले कमरे से ज़्यादा बड़ी मूर्ति रखी थी। इस राजकुमारी ने भी मूर्ति को राजकुमार की जगह जवाब देते रहने का आदेश दिया। मूर्ति ने पहली मूर्ति की ही तरह पहले ज़ोर-से और फिर धीरे-धीरे सिर हिलाकर उसके आदेश को स्वीकार किया। राजकुमार इसके बाद अपनी एक बाँह पर सिर रखकर सो गया। दूसरी सुबह राजा उससे बोला, "मैं अभी भी तुम्हारी शादी अपनी सबसे बड़ी लड़की से नहीं कर सकता। तुमने अपना काम अच्छी तरह किया है, लेकिन आज रात तुम्हें मेरी सबसे छोटी लड़की की रखवाली करनी होगी। इसके बाद मैं सोचूँगा कि क्या तुम्हारी शादी मेरी दूसरी लड़की के साथ की जा सकती है। मैं फिर हर घण्टे तुम्हें आवाज़ दूँगा। अगर तुम जवाब देते रहे, तब तो ठीक है, वरना तुम्हें मार डाला जाएगा।"

राजकुमार सबसे छोटी राजकुमारी के कमरे में पहुँचा। वहाँ पहले दोनों कमरों से ज़्यादा बड़ी मूर्ति रखी थी। यह मूर्ति पहली दोनों मूर्तियों से दुगुनी ऊँची थी। राजकुमारी ने आदेश दिया, "मेरे पिता के पुकारने पर जवाब देना।" यह मूर्ति आधे घण्टे तक हाँ में अपना सिर हिलाती रही। इसके बाद, राजकुमार सो गया। तीसरी सुबह, राजा ने उससे कहा कि उसने अपना काम अच्छी तरह से किया। उससे वह काफ़ी प्रसन्न है, लेकिन अभी भी उसकी शादी तब तक नहीं होने दी जाएगी, तब तक वह एक बड़े जंगल को काटकर साफ़ नहीं कर देता। वह अगर अपना काम शाम तक पूरा कर लेगा तो वह उसकी शादी के बारे में सोचेगा। उसके बाद राजा ने उसे लकड़ी काटने के लिए काँच की एक कुल्हाड़ी, एक काँच का मुगदर और काँच की ही एक बड़ी खूँटी दी। राजकुमार अपने काम पर जा लगा। परन्तु जैसे ही उसने कुल्हाड़ी का पहला वार एक पेड़ पर किया, कुल्हाड़ी टूट गई। यही हाल खूँटी और मुगदर का भी हुआ। इन चीज़ों के टूट जाने से उसे विश्वास हो चला कि वह अपना काम नहीं कर पायेगा। तब राजा उसे मरवा डालेगा। यह सोचकर वह घबरा गया और वहीं बैठकर रोने लगा। दोपहर होने पर राजा ने अपनी लड़कियों से कहा, "तुममें से एक को राजकुमार के लिए खाना लेकर जाना पड़ेगा।"



यह सुनते ही उसकी दोनों बड़ी लड़कियाँ बोल पड़ीं, ''नहीं, नहीं, हम खाना लेकर नहीं जाएँगे। खाना लेकर उसे जाना चाहिए, जिसकी रखवाली उसने सबसे अन्त में की है।'' इस प्रकार सबसे छोटी लड़की को खाना लेकर जाना पड़ा। जंगल पहुँचकर उसने राजकुमार से पूछा कि उसका काम कैसा चल रहा है ? राजकुमार बोला कि सारा काम ग़लत हो रहा है। राजकुमारी ने उससे कहा कि वह पहले खाना खा ले और उसके बाद उसे सारी बात बताये। लेकिन राजकुमार ने खाना नहीं खाया। वह राजकुमारी से बोला, ''नहीं, मुझे तो मार डाला जाना है। अतः मैंने फ़ैसला किया है कि अब कुछ नहीं खाऊँगा।'' बहुत समझाने पर वह खाना खाने के लिए तैयार हुआ। खाना खाने के बाद, थककर राजकुमार सो गया। इसके बाद राजकुमारी ने अपने रूमाल के एक किनारे पर एक गाँठ लगायी और उसे ज़मीन पर तीन बार पटक कर कहा, ''धरती पुत्रो, बाहर आओ।'' तुरन्त ही ढेर सारे बौने आदमी वहाँ आ गए और उन्होंने राजकुमारी से अपने बुलाए जाने का कारण पूछा। राजकुमारी बोली, ''तुम लोगों को तीन घण्टे में इस जंगल की लकड़ियों को काटकर उन्हें एक जगह इकट्ठा करना है।''

बौने अपनी पूरी शक्ति के साथ काम में लग गए। तीन घण्टे में काम समाप्त कर, उन्होंने राजकुमारी को बुलाया। राजकुमारी ने दोबारा अपने रूमाल से ज़मीन पर चोट की और कहा, ''धरती पुत्रो, वापस जाओ।'' बौने वहाँ से ग़ायब हो गए। जब राजकुमारी ने राजकुमार को जगाया। राजकुमार काम समाप्त हुआ देखकर ख़ुशी से झूम उठा। लेकिन राजकुमारी ने उससे कहा कि वह छह बजे से पहले घर वापस नहीं लौटे। जब वह शाम को वापस लौटा तो राजा ने पूछा कि क्या उसने काम पूरा कर लिया ? राजकुमार बोला, ''हाँ, मैंने जंगल साफ़ कर दिया है।'' इसके बाद वे लोग खाना खाने बैठे। खाते समय राजा ने उससे कहा कि वह अभी भी उसकी शादी अपनी लड़कियों से नहीं करेगा। इसके लिए उसे एक और काम करना होगा। उसे एक गहरे तालाब को साफ़ कर उसे पानी से भरना होगा। तालाब इतना साफ़ होना चाहिए कि उसका पानी शीशे की तरह चमके। इस तालाब में उसे सभी प्रकार की मछलियाँ भी डालनी होंगी। दूसरी सुबह, राजा ने उसे एक काँच का फ़ावड़ा दिया और कहा कि काम छह बजे तक अवश्य हो जाना चाहिए।

राजकुमार तुरन्त अपने काम में लग गया, परन्तु जैसे ही उसने खुदाई करने के लिए फ़ावड़े को ज़मीन पर मारा वह टूट गया। इससे वह काफ़ी चिन्तित हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करे ? दोपहर में, राजकुमारी फिर उसके लिए खाना लेकर आई और उससे पूछा कि उसका काम कैसा चल

रहा है ? राजकुमार दुखी होकर बोला कि आज भी उसका काम ठीक से नहीं हो पा रहा है। राजकुमारी ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा कि वह जब खाना खाकर आराम कर लेगा तो उसका काम आसान हो जाएगा। राजकुमार बड़ी मुश्किल से खाने के लिए तैयार हुआ। जैसे ही खाना ख़त्म किया कि सो गया, क्योंकि वह बहुत थका हुआ था। जब वह गहरी नींद में खर्राटे ले रहा था तो राजकुमारी ने फिर अपना रूमाल निकाला और उसे पहले की तरह तीन बार ज़मीन पर पटकते हुए कहा, "धरती पुत्रो, बाहर आओ।" बौने तुरन्त बाहर निकल आए। राजकुमारी ने उनसे कहा, "तीन घण्टे के अन्दर इस तालाब को अच्छी तरह साफ़ कर पानी से भर दो और इसमें सभी प्रकार की मछलियाँ डाल दो।"

बौने अपनी पूरी शक्ति से काम में लग गए और दो घण्टे में ही काम समाप्त कर दिया। इसके बाद उन्होंने राजकुमारी को बताया कि काम पूरा हो गया है। राजकुमारी ने फिर अपने रूमाल को तीन बार ज़मीन पर पटका और बोली, "धरती पुत्रो, वापस जाओ।" बौने तुरन्त ग़ायब हो गए। अब राजकुमारी ने राजकुमार को जगाया। राजकुमार ने जागने पर पाया कि उसका काम पूरा हो चुका है। राजकुमारी ने फिर उसे छह बजे से पहले घर लौटने से मना किया। शाम को जब राजकुमार वापस लौटा तो राजा ने उससे पूछा कि क्या तालाब तैयार हो गया ? राजकुमार ने कहा, "हाँ।" "यह अच्छा हुआ," राजा बोला। लेकिन रात में खाने पर उसने कहा कि अगर उसे शादी करनी है तो एक काम और करना होगा।

राजकुमार बोला, "आप मुझे काम बताएँ !" राजा बोला, "एक बड़ा पहाड़ है, जिसके पत्थरों को तोड़कर उस जगह को तुम्हें साफ़ करना होगा और वहाँ एक बहुत मज़बूत महल बनाना होगा। यह महल इतना मज़बूत होना चाहिए कि इसकी मज़बूती की कोई कल्पना भी न कर सके। उसमें सभी साज-सम्मान भी होने चाहिए।" दूसरी सुबह, राजा उसे एक काँच की कुल्हाड़ी और एक काँच की छड़ देकर बोला कि काम छह बजे तक पूरा हो जाना चाहिए। पहली बार में ही चट्टान से टकराकर कुल्हाड़ी और छड़ टूट गई और उनके टुकड़े चारों ओर बिखर गए। वह अपने भाग्य को कोसता हुआ निराश होकर बैठ गया। वह यह सोचता हुआ इन्तज़ार करने लगा कि राजकुमारी फिर आकर उसकी मदद करेगी। दोपहर में जब राजकुमारी उसका खाना लेकर आई तो वह दौड़ता हुआ उसके पास गया और उसे सारी बात बतायी। राजकुमारी ने उसे खाना खिलाकर सुला दिया। उसके सो जाने के बाद उसने अपना रूमाल निकाला और उसकी गाँठ को ज़मीन पर तीन बार पटका। इसके बाद वह बोली, "धरती पुत्रो, बाहर आओ।" वे तुरन्त वहाँ आ गए। राजकुमारी

ने उनसे कहा कि तीन घण्टों के अन्दर उन्हें इस पहाड़ी को हटाकर, इसके स्थान पर एक सुन्दर और मज़बूत महल बनाना है। इसके साथ ही उन्हें इस महल को सारे ज़रूरी सामानों से सज़ा देना है। बौने अपने काम में लग गए। अपने काम करने के औज़ारों से उन्होंने तीन घण्टे के अन्दर काम पूरा कर दिया। इसके बाद, उन्होंने राजकुमारी को बताया कि काम पूरा हो गया है। राजकुमारी ने फिर अपने रूमाल की गाँठ को ज़मीन पर पटककर उन्हें वापस भेज दिया। अब उसने राजकुमार को जगाया। दोनों ख़ुशी-ख़ुशी एक साथ जंगल में कुछ देर तक घूमते रहे। छह बजने पर दोनों एक साथ घर वापस लौटे।

राजा ने राजकुमार से पूछा, "क्या महल बनकर तैयार हो गया ?" "हाँ," राजकुमार ने जवाब दिया।

रात में जब सभी लोग एक साथ खाना खाने बैठे तो राजा बोला, "मैं तुम्हारी शादी अपनी छोटी लड़की से तब तक नहीं कर सकता, जब तक तुम उसकी दो बड़ी बहनों से इसकी अनुमति नहीं पा जाते।" यह सुनकर छोटी राजकुमारी और राजकुमार दुखी हो उठे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। रात होने पर राजकुमार छोटी लड़की के पास पहुँचा। दोनों ने निर्णय लिया कि उन्हें वहाँ से भाग जाना चाहिए। जब वे दोनों उस दुष्ट राजा के चंगुल से निकलकर भाग रहे थे तो राजकुमारी ने अचानक पीछे मुड़कर देखा। वह यह देखकर दुखी हो गई कि उसका पिता उन लोगों का पीछा कर रहा है। "आह," वह दुखी होकर चिल्लायी, "हमें कुछ करना चाहिए ? वह दुष्ट राजा हमारे पीछे आ रहा है और थोड़ी देर में हम लोगों को पकड़ लेगा। मैं तुम्हें काँटोंवाली झाड़ी में बदलकर स्वयं को गुलाब के एक फूल में बदल लेती हूँ। इससे मैं हमेशा तुम्हारी सुरक्षा में रहूँगी।"

राजा जब पीछा करता हुआ उस स्थान तक आया तो वहाँ उसे सिर्फ़ काँटों वाली झाड़ी के बीच एक गुलाब का फूल खिला दिखाई दिया। राजा ने फूल तोड़ना चाहा, मगर जैसे ही अपना हाथ आगे बढ़ाया, उसकी अँगुली में काँटा चुभ गया। राजकुमार और राजकुमारी उसे दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहे थे। अतः निराश हो राजा वापस अपने महल की ओर चल दिया। महल वापस पहुँचने पर रानी ने उससे पूछा कि वह उन दोनों को अपने साथ क्यों नहीं लाया। राजा ने उसे बताया कि वे लोग अचानक कहीं ग़ायब हो गए थे। जहाँ उसने उन्हें अन्तिम बार देखा था, वहाँ पहुँचने पर उसे सिर्फ़ एक काँटोंवाली झाड़ी और उसके बीच खिला गुलाब का फूल मिला था। रानी बोली, "तुम्हें उस गुलाब के फूल को तोड़कर

ले आना चाहिए था। काँटोंवाली झाड़ी फूल के पीछे-पीछे ख़ुद यहाँ तक आ जाती।" यह सुनकर राजा फूल को तोड़कर लाने चल दिया। लेकिन इतनी देर में राजकुमार और राजकुमारी भागते हुए कुछ और आगे निकल गए थे। राजा फिर उनका पीछा करने लगा। राजकुमारी भागते हुए पीछे मुड़-मुड़कर देखती जा रही थी। अचानक उसने अपने पीछे अपने पिता को आते देखा। उसे देखकर वह बोली, "आह ! अब वह क्या करे ? राजा से बचने के लिए मैं तुम्हें गिरजाघर बना देती हूँ। अपने आपको मैं पादरी बना लूँगी।" इस प्रकार राजा जब वहाँ पहुँचा तो उसने पाया कि गिरजाघर के अन्दर एक पादरी उपदेश दे रहा है। उसने खड़े होकर उपदेश सुना और घर वापस लौट गया। घर लौटने पर रानी ने उसे पूछा कि क्या वह उन्हें पकड़ लाया है ? राजा ने कहा कि वह उन्हें नहीं पकड़ पाया। उसने बताया कि वह पीछा करता हुआ जब उस जगह तक पहुँचा तो पाया कि वहाँ एक गिरजाघर के अन्दर एक पादरी उपदेश दे रहा है। उन दोनों का कोई पता नहीं चल रहा था। रानी बोली, "तुम्हें पादरी को पकड़कर यहाँ ले आना चाहिए था। गिरजाघर पीछे-पीछे यहाँ आ जाता। अब मैं स्वयं उन्हें पकड़ने जाऊँगी, क्योंकि तुम्हें भेजने से कोई फ़ायदा नहीं होगा।" रानी जब गिरजाघर के समीप पहुँची तो राजकुमारी ने उसे देख लिया। उसे देखकर राजकुमारी बोली, "यह तो बहुत बुरा हुआ। अब मेरी माँ आ रही है। इससे बचने के लिए मैं तुम्हें तालाब और अपने-आपको मछली बना लेती हूँ।" जब रानी वहाँ पहुँची तो पाया कि वहाँ एक बड़ा तालाब है और उसमें एक सुन्दर मछली उछल रही है। रानी ने मछली को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन तुरन्त ही तालााब फिर पानी से भर गया। इस प्रकार, वह मछली को पकड़ नहीं पायी। अन्त में, उसने अपनी लड़की को तीन अखरोट देते हुए कहा, "ज़रूरत होने पर ये अखरोट तुम्हारी मदद करेंगे।" इसके बाद वह वापस घर लौट गई। राज़कुमार और राजकुमारी फिर आगे बढ़ने लगे। कोई एक घण्टे तक चलने के बाद उन्हें वह क़िला दिखाई दिया, जहाँ पहले राजकुमार रहता था। इस महल के पास एक गाँव था। गाँव पहुँचकर राजकुमार ने अपने साथ चल रही राजकुमारी से कहा, "तुम यहाँ रुक जाओ। मैं महल में जाकर तुम्हारे लिए नौकर और घोड़ागाड़ी लेकर आता हूँ।"

राजकुमार को महल में वापस आया देखकर सभी लोग काफी ख़ुश हुए। उसने उन्हें अपनी होनेवाली पत्नी के बारे में बताया और नौकरों को घोड़ागाड़ी तैयार करने का आदेश दिया। घोड़ागाड़ी तैयार कर नौकर राजकुमार का इन्तज़ार करने लगे। महल से बाहर निकलने से पहले राजकुमार ने ख़ुशी से अपनी माँ का चेहरा

चूम लिया। अपनी माँ का चुम्बन लेते ही वह राजकुमारी को बिलकुल भूल गया। रानी के आदेश पर घोड़ागाड़ी को वापस ले जाकर घर में खड़ा कर दिया गया।

राजकुमारी गाँव में राजकुमार के लौटने का इन्तज़ार करती रही। जब महल से कोई भी उसे लेने नहीं आया तो वह निराश हो गई। अन्त में वह एक कारख़ाने के पास पहुँची और वहाँ नौकरी करने लगी। वहाँ वह सारा दिन नदी के किनारे बैठकर कपड़े साफ़ किया करती। एक सुबह रानी नदी के किनारे टहल रही थी कि उसने उस सुन्दर लड़की को देखा। वह अपने-आप से बोली, "कितनी सुन्दर लड़की है।" लेकिन रानी बिना उससे कोई बात किए, वहाँ से गुज़र गई।

राजकुमारी उस कारख़ाने में काफ़ी दिनों तक रही। एक दिन उसे पता चला कि रानी माँ ने अपने लड़के की शादी किसी दूर देश की राजकुमारी के साथ तय कर दी है। राजकुमारी की शादी में शामिल होने के लिए काफ़ी लोग आए। सुन्दर लड़की ने भी उस शादी में शामिल होने का निर्णय लिया। उसने अपनी माँ के द्वारा दिये गए एक अख़रोट को बाहर निकाला। इस अख़रोट को तोड़कर, इसके अन्दर से उसने अपने लिए एक बेहद सुन्दर पोशाक निकाली। इस पोशाक को पहनकर वह शादी में शामिल होने चल पड़ी। जिस गिरजाघर में शादी होनी थी, उसमें लोगों की बहुत भीड़ थी। वह शादी के लिए बने स्थान के बिलकुल पास जाकर बैठ गई। कुछ देर बाद, राजकुमार अपनी होनेवाली पत्नी को लेकर वहाँ पहुँचा। शादी शुरू हो गई। शादी पूरी होनेवाली थी और पादरी उन्हें अपना आशीर्वाद देनेवाला था कि तभी अचानक राजकुमार की पत्नी को वह सुन्दर लड़की और उसकी सुन्दर पोशाक दिखाई दी। पोशाक को देखते ही राजकुमारी का मन इसे हासिल करने के लिए मचल उठा। उसने जिद की कि उसे वह पोशाक दिलवा दी जाए। वह उसी पोशाक को पहनकर शादी करेगी, नहीं तो वह शादी नहीं करेगी। उसकी इस ज़िद की वजह से सारे लोगों को घर वापस लौटना पड़ा। उस सुन्दर लड़की ने पूछा गया कि क्या वह अपनी पोशाक बेचेगी। लड़की ने कहा कि वह अपनी पोशाक पैसों के बदले नहीं देगी। वह अपनी पोशाक सिर्फ़ एक शर्त पर दे सकती है। अगर उसे राजकुमार के कमरे की बगल के कमरे में एक रात रुकने दिया जाएगा तो वह अपनी पोशाक राजकुमारी को दे देगी। उसके रुकने की व्यवस्था कर दी गई, परन्तु नौकरों ने राजकुमार को चुपके से नींद की दवा पिला दी, ताकि रात में उसे जगाया नहीं जा सके। राजकुमारी सारी रात बोल-बोलकर राजकुमार को यह याद दिलाने की कोशिश करती रही कि उसने उसके लिए जंगल को साफ़ किया। तालाब को साफकर पानी से भरा, महल बनवाया, काँटोंवाली झाड़ी, गिरजाघर

और तालाब बनी और इसके बावजूद वह उसे भूल गया। राजकुमारी सारी रात कोशिश करती रही मगर राजकुमार नहीं जागा।

दूसरी सुबह, शादी के लिए चुनी गई लड़की ने उस पोशाक को पहन लिया और सभी लोग गिरजाघर की ओर चल दिये। इसके बाद फिर पहले जैसा ही हुआ और वह सुन्दर लड़की अपनी पोशाक के बदले बग़ल के कमरे में रुकने की अनुमति पा गई। उस रात राजकुमार ने नींद वाली दवा नहीं पी और उस लड़की की सारी बातों को राजकुमार ने सुन लिया। वह परेशान हो उठा। दूसरी सुबह, राजकुमार उस सुन्दर पोशाकवाली लड़की के पास पहुँचा और उससे अपनी भूल की माफ़ी माँगी। अब इस लड़की ने तीसरे अख़रोट को तोड़ा और इससे इतनी सुन्दर पोशाक बाहर निकली कि सभी लोग इसे देखने दौड़ पड़े और उन्होंने दुल्हन की राह में फूल बिछा दिये। इसके बाद, राजकुमार और राजकुमारी की शादी हो गई और दुष्ट रानी माँ और ईर्ष्यालु लड़की को हमेशा के लिए वहाँ से भगा दिया गया।

15

छह नौकर

बहुत समय पहले एक बूढ़ी रानी रहती थी, जो जादूगरनी भी थी। उसकी बेटी इस संसार की सबसे सुन्दर लड़की थी। बूढ़ी रानी हमेशा यही सोचती रहती थी कि कैसे लोगों को अपनी बेटी की सुन्दरता के जाल में फँसाकर मार डाला जाए। उसकी शर्त थी कि जो कोई उसकी बेटी से शादी करना चाहता है उसे उसके प्रश्नों का जवाब देना होगा। जवाब नहीं दे सकने पर उस आदमी को मार डाला जाएगा। इस प्रकार बहुत सारे जवान आदमी उस लड़की की सुन्दरता के जाल में फँसकर उस बूढ़ी रानी के प्रश्नों का उत्तर देने में असफल होकर अपनी जान गँवा चुके थे। इसके बावजूद एक राजकुमार ने यह निश्चय किया कि उस सुन्दर लड़की को पाने के लिए वह इस ख़तरे का सामना करेगा। उसने इस लड़की की सुन्दरता के बारे में सुना था। उसने अपने पिता से आग्रह किया कि उसे उस लड़की को जीतकर लाने की आज्ञा दी जाए। राजा ने जवाब दिया, "नहीं, तुम नहीं जा सकते। अगर तुम वहाँ जाओगे तो मारे जाओगे।"

राजा के इस उत्तर से दुखी होकर राजकुमार बीमार हो गया। उसकी बीमारी सात सालों तक चलती रही और इस दौरान कोई भी डॉक्टर उसकी बीमारी को ठीक नहीं कर पाया। अन्त में, उसकी बीमारी से निराश होकर बूढ़े राजा ने उससे कहा, "जाओ और अपना भाग्य आज़माकर देखो, क्योंकि तुम्हें ठीक करने का दूसरा और कोई उपाय मुझे दिख नहीं रहा।" जैसे ही राजा ने उसे सुन्दर लड़की को जीत लाने की अनुमति दी, वह ख़ुशी से अपने बिस्तर से उछलकर खड़ा हो गया। अब वह अपने अन्दर एक नयी शक्ति महसूस कर रहा था। वह ख़ुशी-ख़ुशी यात्रा की तैयारी करने में लग गया।

वह शीघ्र ही घोड़े पर सवार होकर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। रास्ते में कुछ दूरी पर उसे एक गठरीनुमा चीज़ पड़ी दिखाई दी। नज़दीक जाने पर पता चला

कि वह गठरीनुमा चीज़ एक छोटे पहाड़ जितना बड़ा आदमी था, जो ज़मीन से उठा और बोला, "अगर तुम्हें किसी सहायक की ज़रूरत है तो तुम मुझे अपनी सेवा में रख लो।"

"तुम्हारे जैसे आलसी आदमी को रखकर मैं क्या करूँगा ?" राजकुमार ने प्रश्न किया।

"अगर मैं तुम्हारा काम कर देता हूँ तो तुम्हें इससे क्या मतलब कि मैं आलसी हूँ।" आदमी ने जवाब दिया।

राजकुमार बोला, "ठीक है। तुम मेरे साथ आओ। मुझे शायद तुम्हारी सहायता की ज़रूरत पड़े।" वह मोटा आदमी राजकुमार के साथ हो लिया। उन्हें एक और आदमी मिला जो घास में कान सटाये ज़मीन पर लेटा था। राजकुमार ने उससे पूछा, "तुम ज़मीन में कान लगाये क्या कर रहे हो ?"

"मैं सुन रहा हूँ।" उसने जवाब दिया।

"तुम इतने ध्यान से क्या सुन रहे हो ?" राजकुमार ने फिर सवाल किया।

"संसार में चारों ओर क्या हो रहा है। मैं इसे सुन रहा हूँ। मेरी सुनने की शक्ति इतनी तेज़ है कि मैं सभी कुछ सुन सकता हूँ। मैं घास के बढ़ने तक की आवाज़ को साफ़ सुन सकता हूँ।" उस आदमी ने जवाब दिया।

"राजकुमार ने कहा, "तब तुम मुझे यह बताओ कि उस सुन्दर लड़की की माँ, बूढ़ी रानी के दरबार में क्या हो रहा है ?" आदमी ने कहा, "मैं तलवार के खनकने की आवाज़ सुन रहा हूँ। बुढ़िया के सवालों का जवाब देने में असफल रहे एक आदमी की गर्दन काटी जानेवाली है।"

"तुम मेरे साथ आओ। तुम बड़े काम के आदमी हो।" राजकुमार ने बताया कि उन तीनों ने साथ-साथ यात्रा शुरू की। कुछ दूर आगे जाने पर एक जगह उन्हें दो पाँवों का थोड़ा-सा आगे का भाग दिखा परन्तु कोई आदमी दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ दूर और आगे जाने पर उन्हें शरीर का भाग दिखा और जब वे थोड़ा और आगे बढ़े तो उन्हें सिर दिखलायी दिया। कोई बहुत लम्बा आदमी ज़मीन पर सो रहा था। उसकी लम्बाई देखकर राजकुमार चीख़ पड़ा, "ओह तुम कितने लम्बे हो ?"

लम्बी टाँगोंवाले आदमी ने जवाब दिया, "मैं जितना लम्बा दिख रहा हूँ, उससे ज़्यादा लम्बा हूँ। अगर मैं अपने हाथ-पैरों को सीधा करूँ तो मेरी लम्बाई एक हज़ार गुना ज़्यादा हो जाएगी। मैं संसार के सबसे ऊँचे पहाड़ से भी ज़्यादा लम्बा हूँ। लेकिन तुम अगर मुझे अपने साथ ले लो तो मैं तुम्हारी सेवा करूँगा।"

राजकुमार ने उसे भी अपने साथ ले लिया। कुछ दूर आगे जाने पर उन्हें एक आदमी मिला, जिसकी आँखों पर पट्टी बँधी थी। राजकुमार ने उससे सवाल किया, "क्या तुम्हारी आँखों में कोई ख़राबी है ? तुमने इन्हें क्यों ढँक रखा है ?"

"नहीं, कोई ख़राबी नहीं है।" उस आदमी ने कहा, "लेकिन मैं अपनी आँखों पर से पट्टी नहीं हटा सकता, क्योंकि मेरी दृष्टि इतनी तेज़ है कि मैं जिस किसी चीज़ को देखता हूँ, वह दो टुकड़ों में टूट जाती है। अगर मैं आपके काम आ सकता हूँ तो मैं आपके साथ चलूँगा।"

राजकुमार ने इस आदमी को भी साथ ले लिया। आगे जाकर उन्हें फिर एक आदमी मिला जो धूप की तेज़ गर्मी में ज़मीन पर लेटा होने के बावजूद ठण्ड से काँप रहा था। "तुम इतनी गर्मी में भी ठण्ड से क्यों काँप रहे हो ?" राजकुमार ने उससे प्रश्न किया।

उस आदमी ने कहा, "आह, मेरा स्वभाव दूसरों से अलग है। जितनी ज़्यादा गर्मी होगी, मुझे ठण्ड उतनी ज़्यादा लगेगी। ठण्ड मेरी हड्डियों में समा जाती है। ठीक इसके विपरीत ठण्ड होने पर मुझे गर्मी लगती है। बर्फ़ को छूने से मेरे शरीर को गर्मी मिलती है और आग के सामने जाकर मैं ठण्ड में जमने लगता हूँ।"

"तुम एकदम अनोखे आदमी हो।" राजकुमार ने कहा, "मेरे साथ आओ, शायद मुझे तुम्हारी सहायता की ज़रूरत पड़ेगी।" इस प्रकार वह आदमी भी उन लोगों के साथ हो गया। इसके बाद उन्हें जो आदमी मिला उसने अपनी गर्दन को इतना लम्बा खींच कर रखा था, मानों आसपास के पहाड़ों के ऊपर का दृश्य देख रहा हो। राजकुमार ने उससे पूछा, "तुम इतने ध्यान से क्या देख रहे हो ?"

"मेरी देखने की शक्ति इतनी ज़्यादा है कि जंगलों और पहाड़ों के पार की चीज़ों को भी स्पष्ट देख सकता हूँ। मैं इस पूरे संसार में कहीं का भी दृश्य देख सकता हूँ।" उस आदमी ने कहा।

"तब तो तुम मेरे साथ आओ, क्योंकि मुझे तुम्हारे जैसे एक आदमी की ज़रूरत है।" राजकुमार ने कहा।

राजकुमार अब अपने सेवकों के साथ उस शहर की ओर चला, जहाँ बुढ़िया रानी रहती थी। वहाँ पहुँचकर उसने बूढ़ी रानी को अपना नाम नहीं बताया। उसने उसकी बेटी से शादी करने की इच्छा ज़ाहिर की और कहा कि इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। बुढ़िया उसके जैसे सुन्दर आदमी को अपने चंगुल में फँसा पाकर काफी ख़ुश हुई। उसने कहा कि अगर वह उसके द्वारा दिये गए तीन काम कर लेगा तो राजकुमारी से उसकी शादी कर दी जाएगी।

“पहला काम क्या है ?” राजकुमार ने पूछा।

बुढ़िया बोली, “मेरी एक अँगूठी लाल सागर में गिर गई है। तुम उसे वहाँ से निकाल लाओ।” राजकुमार वापस अपने घर लौटा और अपने साथ आए नौकरों से बोला, “पहला काम आसान नहीं है। एक अँगूठी को लाल सागर से निकालकर लाना है। इस काम को कैसे किया जाए ?”

ज़्यादा देख सकनेवाला सेवक बोला, “मैं उसे पानी के अन्दर देख लूँगा।” इतना कहकर वह पानी के अन्दर देखता हुआ बोला, “वहाँ यह एक नुकीले पत्थर में फँसी है।”

लम्बे हाथोंवाला सेवक बोला, “अगर मैं इसे देख पाता तो वहाँ से निकाल लेता।” “बस इतनी सी बात है ?” पहाड़ जैसे मोटे सेवक ने कहा और किनारे पर लेटकर अपना मुँह पानी से लगा दिया। वह समुद्र का पूरा पानी पी गया। समुद्र अब बिलकुल सूख गया। इसके बाद लम्बे हाथोंवाला थोड़ा-सा झुका और अँगूठी को वहाँ से निकालकर राजकुमार को दे दी। राजकुमार अँगूठी पाकर बहुत ख़ुश हुआ। उसने वह अँगूठी ले जाकर बुढ़िया को दे दी। बुढ़िया आश्चर्यचकित रह गई। लेकिन उसने स्वीकार किया कि यही उसकी अँगूठी है। वह बोली, “तुमने पहला काम तो कर दिखाया। मैं तुमसे बहुत ख़ुश हूँ, मगर अब दूसरा काम सुनो। मेरे महल के सामने वाले मैदान में तीन सौ बैल घास चर रहे होंगे। तुम्हें उन सबको हड्डी और ख़ाल समेत खा जाना है। उनके शरीर का कोई भाग बचना नहीं चाहिए। इसके बाद, तुम्हें महल के तहख़ाने में रखे तीन सौ पीपे शराब को पीना है। अगर तुमने इन पीपों में एक बूँद भी शराब छोड़ी या बैलों का एक बाल भी छोड़ा तो तुम्हें मार डाला जाएगा।”

“क्या मैं अपने साथ खाने पर किसी अतिथि को बुला सकता हूँ, क्योंकि खाने पर साथी के होने से खाने में अधिक आनन्द आता है।” राजकुमार ने कहा। राजकुमार की बात सुनकर बुढ़िया कुटिलता से मुस्कुरायी और बोली कि वह अपने सिर्फ़ एक साथी को इसमें शामिल कर सकता है। इसके बाद राजकुमार फिर अपने सेवकों के पास लौटा और उन्हें काम के बारे में बताया। राजकुमार पहाड़ जैसे मोटे अपने सेवक को साथ लेकर खाना खाने पहुँचा। मोटा सारे बैलों को खाल, हड्डी और सींगों समेत तुरन्त चट कर गया और इतना खाने के बाद वह बोला कि यह तो मेरे लिए अच्छे नाश्ते के समान था। इसके बाद वह सारी शराब पी गया और शराब पीने के लिए उसने प्याले का भी इस्तेमाल नहीं किया। वह इन्हें सीधे पीपे से ही पी गया। जैसे ही खाना-पीना समाप्त हुआ, राजकुमार बूढ़ी रानी

के पास गया और उससे कहा कि उसने दूसरा काम भी पूरा कर लिया है। वह और ज़्यादा आश्चर्यचकित हुई और बोली कि आज तक कोई ऐसा नहीं कर पाया था। लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि राजकुमार उसके चँगुल से निकल नहीं पाएगा क्योंकि अभी तीसरा काम बचा था, जो सबसे कठिन था। वह बोली, ''आज शाम मेरी बेटी तुम्हारे पास आएगी। तुम्हें उसे एक बाँह से पकड़कर सारी रात बैठे रहना है और सोना नहीं है। अगर तुम सो गए और मेरी बेटी तुम्हारी पकड़ से निकलकर बाहर चली गई तो तुम्हें मार डाला जाएगा। मैं ठीक बारह बजे आकर तुम्हें देखूँगी।''
''यह काम तो आसान है।'' राजकुमार ने सोचा और अपने आप से बोला, ''मुझे अपनी आँखें खोलकर रखनी होंगी।'' काम आसान होने पर भी उसने अपने सेवकों को एक जगह इकट्ठा किया और उन्हें काम बताया। वह बोला, ''कौन जानता है इसमें क्या चाल है ? तुम लोग ध्यान रखना कि रात में कोई कमरे से बाहर नहीं निकले।''

रात होने पर बुढ़िया राजकुमारी को राजकुमार के कमरे में लेकर आई। लम्बे हाथों वाले सेवक ने राजकुमारी और राजकुमार को बाँहों से घेर लिया और मोटा सेवक दरवाज़े पर पहरा देने लगा। मोटे सेवक के दरवाज़े पर होते कोई कमरे के अन्दर नहीं जा सकता था। दोनों कमरे में चुपचाप बैठे रहे। खिड़की से होकर चाँद की रोशनी राजकुमारी के चेहरे पर पड़ रही थी। राजकुमार उसकी सुन्दरता को इस रोशनी में स्पष्ट देख रहा था। वह उसे प्रेम से देख रहा था और उसे थकान का कोई अहसास नहीं हो रहा था। यह सिलसिला ग्यारह बजे तक चलता रहा। इसके बाद बुढ़िया ने अपने जादू से सभी को सुला दिया और राजकुमारी को कमरे से निकाल कर चली गई। बारह बजने में पन्द्रह मिनट का समय बाकी था, जब वे जागे। इस समय तक बुढ़िया के जादू का असर समाप्त हो गया था। जागते ही राजकुमार बोला, ''यह कैसा दुर्भाग्य है। मैं हार गया।'' स्वामिभक्त सेवकों में भी खलबली मच गई। उसी समय वह सेवक, जिसकी सुनने की शक्ति काफी तेज़ थी, बोला, ''शान्त रहो। वह कहाँ है, यह मैं सुन लूँगा।'' एक क्षण बाद ही वह सुनकर बोला, ''राजकुमारी यहाँ से तीन सौ मील दूर एक गुफा में बैठी है और अपने भाग्य पर रो रही है। लम्बे हाथों वाला सेवक ही हमारी सहायता कर सकता है, क्योंकि वह वहाँ तक दो क़दम चलकर पहुँच जाएगा।'' लम्बे हाथों वाला बोला, ''ज़रूर मैं यह काम करूँगा मगर तेज़ आँखों वाले को भी हमारे साथ होना चाहिए, ताकि अपनी आँखों से देखकर वह पत्थरों को टुकड़े-टुकड़े कर सके।'' तेज़ आँखों वाले को अपने कन्धे पर बैठा, लम्बा सेवक पलक झपकाते ही उस

पहाड़ी के पास पहुँच गया। तेज़ आँखोंवाले ने अपनी आँखों पर बँधी पट्टी को हटाया और पहाड़ी की ओर देखा। पहाड़ी तुरन्त पत्थर के टुकड़ों में बदल गई। लम्बे हाथोंवाले ने राजकुमारी को इन टूटी चट्टानों के बीच से उठाकर घर पहुँचाया। इसके बाद वह तुरन्त वापस लौटा और अपने साथी को घर ले गया। अब सभी लोग एक साथ बैठकर ख़ुशी मनाने लगे। तभी घड़ी ने बारह बजने का ऐलान किया।

ठीक बारह बजे बुढ़िया ने क्रूर मुस्कुराहट के साथ कमरे में प्रवेश किया, क्योंकि वह सोच रही थी कि अब राजकुमार को उसके हाथों मरना होगा। उसकी बेटी तो गुफा में बन्द है। परन्तु जब उसने अपनी बेटी को राजकुमार की बाँहों में देखा तो घबरा गई। वह बोली, "तुम मुझसे ज़्यादा बुद्धिमान और शक्तिशाली हो।" इसके बाद, राजकुमारी की सगाई राजकुमार के साथ कर दी गई। बुढ़िया ने अब चालाकी से काम लेने का फ़ैसला किया। वह अपनी बेटी के कान में बोली, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि तुम लोगों की बातों में आकर एक साधारण आदमी से शादी करने के लिए तैयार हो। तुम्हें अपनी पसन्द का पति ढूँढ़ना चाहिए।"

यह सुनकर राजकुमारी के हृदय में चोट लगी। उसने बदला लेने की ठानी। उसने अगले दिन लकड़ी के तीन सौ बड़े-बड़े गट्ठरों को एक स्थान पर जमा करवाया और राजकुमार से बोली, "तीनों कठिन कामों को तुमने आसानी से कर दिया, मगर मैं तुमसे तब तक शादी नहीं करूँगी, जब तक वैसे आदमी को ढूँढ़ नहीं लिया जाता, जो इन लकड़ियों की आग पर बैठकर भी जले नहीं।" उसने सोचा कि उसका कोई भी सेवक उसके लिए जलने को तैयार नहीं होगा और अन्त में उसके प्रेम के कारण उसे ही आग पर बैठना होगा। इस प्रकार वह राजकुमार जल जाएगा और वह उससे शादी करने से बच जाएगी। मगर सेवकों ने कहा कि अभी तक कँपकपाने वाले सेवक ने कुछ नहीं किया है, जबकि उन सारे लोगों ने कुछ न कुछ किया है। अतः कँपकँपाने वाले को लकड़ियों के ढेर पर बिठा दिया गया और लकड़ियों में आग लगा दी गई। आग तीन दिन तक जलती रही। आग के बुझने पर लोगों ने देखा कि राख़ के ढेर के बीच वह सेवक सर्दी से काँपता हुआ खड़ा है। काँपने वाले सेवक ने कहा कि इतनी ठण्ड उसे कभी नहीं लगी थी और यदि इससे ज़्यादा सर्दी बढ़ती तो वह मर ही जाता।

इसके बाद और कोई बहाना नहीं बनाया जा सकता था। राजकुमारी को उस अजनबी राजकुमार से शादी करनी पड़ी। मगर जब ये दोनों गिरजाघर जा रहे थे तो बुढ़िया ने कहा कि वह ऐसा नहीं होने देगी। उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उनके पीछे जाकर किसी भी तरह राजकुमारी को वापस लेकर आएँ।



परन्तु सुननेवाला सेवक इन बातों को सुन रहा था। "हमें क्या करना चाहिए ?" उसने मोटे सेवक से पूछा। मोटे ने इससे बचने का उपाय निकाल लिया। उसने समुद्र का जो पानी पीया था, उसमें से थोड़ा पानी बाहर निकाल दिया, जिससे एक बड़ा तालाब बन गया। बुढ़िया के सैनिक इस तालाब में डूबकर मर गए। रानी ने अब अपने घुड़सवार सैनिकों को भेजा। सुननेवाले सेवक को उनके आने की आहट मिल गई। तेज़ आँखों वाले सेवक ने अपनी आँखों पर से पट्टी हटाकर इन सैनिकों की ओर देखा। सारे सैनिक तुरन्त समाप्त हो गए। आगे और कोई दिक़्क़त नहीं आई और गिरजाघर में शादी सम्पन्न हो गई। शादी होते ही राजकुमार के सेवकों ने उससे वापस लौटने की अनुमति माँगी। सेवकों ने कहा, "आपकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं और आपको अब हमारी कोई आवश्यकता नहीं है। अब आप हमें अपने-अपने रास्ते जाने की आज्ञा दें।"

रानी के महल से आधा मील की दूरी पर एक गाँव था, जिसके बाहर एक सुअर चरानेवाला अपने सुअरों को चरा रहा था। वहाँ से गुज़रते हुए राजकुमार ने राजकुमारी से पूछा, "क्या तुम जानती हो कि मैं कौन हूँ ? मैं किसी राजा का बेटा नहीं हूँ, बल्कि एक सुअर चराने वाला हूँ और यह चरवाहा मेरा पिता हैं। हम दोनों को जाकर उसकी मदद करनी चाहिए। इतना कहकर उसने अपनी पत्नी की राजसी पोशाक को ग़ायब करवा दिया। सुबह जागने पर राजकुमारी के पास पहनने के लिए कोई कपड़ा नहीं बचा था। अन्त में, सराय में मालिक ने उसे एक जोड़ी पुराने कपड़े और एक जोड़ी पुरानी चप्पलें दीं और कहा कि वह उसे ये पुरानी चीज़ें भी नहीं देता, अगर उसके पति ने इसके लिए बहुत आग्रह नहीं किया होता।

राजकुमारी को विश्वास होने लगा था कि उसका पति वास्तव में सुअर चराने वाला है। वह सोच रही थी कि यह उसके लिए बहुत बड़ी सज़ा है। आठ दिनों तक सुअर चराने का यह सिलसिला चलता रहा। अन्त में यह राजकुमारी की बर्दाश्त से बाहर हो गया।

सुअर चराने से उसके पाँवों में छाले पड़ गए थे। ऐसे में उसके पास आकर दो आदमियों ने पूछा कि क्या उसे पता है कि उसका पति कौन है। उसने कहा, "हाँ पता है, वह एक सुअर चरानेवाला है और अभी कुछ सामान बेचने शहर गया है।" उन दो अज़नबियों ने राजकुमारी से कहा, "आप हम लोगों के साथ आइये। हम लोग आपको आपके पति के पास पहुँचा देंगे।" इतना कहकर वे उसे राजमहल में ले गए, जहाँ उसका पति राजसी पोशाक पहने राजदरबार में खड़ा था। वह उसे

पहचान नहीं पायी। राजकुमार ने उसे अपने गले से लगाते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे लिए बहुत दुख झेला है। इसलिए यह उचित था कि तुम भी मेरे लिए थोड़ा दुख झेलो।" इतना कहकर राजकुमार ने प्यार से अपनी पत्नी को चूमा। इसके बाद, बहुत धूमधाम से उनकी शादी का महोत्सव मनाया गया। विवाह इतनी धूमधाम से हुआ कि मुझे लग रहा है कि यह कहानी कहने के अलावा अगर मैं खुद भी वहाँ होता तो ज़्यादा अच्छा होता।

16

आलसी जुलाहिन

एक गाँव में एक जुलाहा और उसकी पत्नी रहते थे। जुलाहिन इतनी आलसी थी कि वह कोई भी काम बड़ी कठिनाई से करती थी। जुलाहा उसे जो भी सूत कातने के लिए देता, वह धीरे-धीरे उसे कातती और उसके बाद उसे लपेटने की मेहनत भी नहीं करती थी। सूत ज़मीन पर ही उलझा पड़ा लिथड़ता रहता। जब भी उसका पति उसे डाँटता, वह हमेशा कोई न कोई बहाना तलाश कर लेती और कहती, "बिना तकुए के मैं कहाँ सूत लपेटूँ ? तुम पहले मुझे जंगल से एक तकुआ लाकर दो।" उसके पति ने एक दिन कहा, "अगर यही बात है तो मैं अभी लेकर आता हूँ।" जैसे ही उसने यह कहा तो औरत डर गई कि यदि उसके पति ने लकड़ी का टुकड़ा लाकर उससे तकुआ बना दिया तो उसे ज़मीन पर उलझे पड़े सूत को भी लपेटना पड़ेगा और फिर से काम करना पड़ेगा। उसने थोड़ी देर सोचा कि उसे क्या करना चाहिए। उसने सोचा कि उसे चुपचाप अपने पति के पीछे-पीछे जंगल में जाना चाहिए। वह गई और उसने अपने पति को एक पेड़ की शाखा काटते हुए देखा। वह तुरन्त एक झाड़ी में छिप गई, जहाँ उसका पति उसे नहीं देख सकता था। वह गाने लगी–

"जो काटता है तकुआ, मर जाएगा,
जो लपेटता है सूत, मर जाएगा।"

आदमी ने सुना और अपनी कुल्हाड़ी रख दी। उसे आश्चर्य हुआ कि इस गीत का क्या मतलब है। आख़िरकार वह बोला, "ओह ठीक है। यह क्या हो सकता है ? यह कुछ और नहीं शायद मेरी कल्पना है। मुझे डरना नहीं चाहिए।" यह कहकर उसने कुल्हाड़ी उठाई और फिर काटना शुरू किया, लेकिन फिर आवाज़ आई–

"जो काटता है तकुआ, मर जाएगा,
जो लपेटता है सूत, मर जाएगा।"

आदमी फिर रुक गया और उसे बहुत बेचैनी हुई, वह डर गया। लेकिन

उसने फिर हिम्मत जुटाई और लकड़ी काटने लगा। इसी समय फिर आवाज़ आई—

"जो काटता है तकुआ, मर जाएगा,
जो लपेटता है सूत, मर जाएगा।"

इस बार वह बहुत डर गया और रुक गया। वह पेड़ को छोड़कर घर वापस लौट पड़ा। इसी बीच उसकी पत्नी एक पगडण्डी से तेज़ी से उसके पहले घर पहुँच गई। जब वह घर लौटा तो वह इतनी भोली-भाली बन गई, जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने अपने पति से पूछा कि वह तकुआ लाया है या नहीं। सूत लपेटने से कुछ नहीं होगा। उसने उसे पूरा क़िस्सा कह सुनाया और फिर उसे उसके आलसीपन के लिए डाँटना बन्द कर दिया।

लेकिन थोड़े ही दिनों में अस्त-व्यस्त घर को देखकर वह फिर दुखी रहने लगा। वह बोला, "सुनो, सुनो ! यह तो सचमुच, शर्म की बात है कि तुम अपने धागे इतने उलझे हुए छोड़ती हो।" वह बोली, "तुम्हें क्या लगता है ? क्या करना चाहिए ? हमें तकुआ तो मिला नहीं, अब ऐसा करो कि तुम ज़मीन पर लेट जाओ और मैं तुम्हारे पास खड़ी हो जाती हूँ। फिर तुम सूत को मेरे पास फेंकना और मैं तुम्हारे पास फेकूँगी। इस तरह हम मिलकर लच्छी बना लेंगे।" आदमी बोला, "हाँ, यह ठीक है," और उन्होंने वैसा ही किया। जैसे ही लच्छी बनी आदमी ने उसे उबालने की बात की। इससे औरत फिर नाराज़ हो गई, लेकिन फिर मन में एक नई योजना सोचकर वह सूत उबालने के लिए राज़ी हो गई।

सुबह-सुबह अपनी योजना के अनुसार वह उठी, आग जलाई और बर्तन चढ़ाकर उसमें धागे की जगह 'सन' का गोला डाल दिया और उसे फूलने दिया। यह करके वह अपने पति के पास गई, जो अभी सोकर नहीं उठा था और बोली, 'मुझे बाहर जाना है। क्या तुम उठकर आग पर चढ़े बर्तन में उबल रहे सूत को देखोगे ? उसका ध्यान रखना, क्योंकि तुम्हारे उसे देखने से पहले यदि मुर्ग़ा बोल गया तो सारा सूत 'सन' में बदल जाएगा।"

पति तुरन्त उठा और सीधे रसोई में दौड़कर गया, वहाँ उसने बर्तन में देखा तो डरकर पीला पड़ गया—धागा तो 'सन' में बदल गया था। यह देखकर बेचारा पति सिकुड़कर बैठ गया, क्योंकि उसे लगा कि उसकी ग़लती से ही सूत ख़राब हो गया है। उसने निश्चय किया कि अब वह कभी भी सूत और कताई के बारे में कुछ नहीं कहेगा।

लेकिन मुझे स्वीकार करना ही पड़ेगा कि वास्तव में वह औरत एक आलसी और फूहड़ पत्नी थी।

---

* जूट नामक पौधा, जिसके रेशे से रस्सी आदि बनाते हैं।

17

सयाना चोर

बहुत साल पहले की बात है। एक बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी एक दिन अपनी झोंपड़ी के आगे काम से थककर सुस्ताने बैठे। तभी अचानक एक बहुत सुन्दर बग्घी, जिसे चार घोड़े खींच रहे थे, दरवाज़े के क़रीब आकर रुकी और उससे क़ीमती वस्त्रों में सजा एक आदमी नीचे उतरा। किसान अपनी जगह से उठा और उसने आगे बढ़कर सामन्तों जैसे लगनेवाले उस आदमी से पूछा कि उसे क्या चाहिए ? और वह उसकी क्या सेवा कर सकता है ? अजनबी ने हाथ आगे बढ़ाकर किसान से हाथ मिलाया और बोला, "मैं घरेलू भोजन का आनन्द लेना चाहता हूँ। तुम अपने तरीक़े से कुछ आलू पकाना शुरू करो। मैं तुम्हारे खाने की मेज़ पर बैठकर खाने का आनन्द लूँगा।"

किसान ने हँसकर जवाब दिया, "आप कोई राजकुमार, जागीरदार या राजा प्रतीत होते हैं। इस प्रकार के लोगों की ही ऐसी इच्छा होती है। आपकी इच्छा पूरी की जाएगी।"

इसके बाद किसान की पत्नी वहाँ से उठकर रसोई में चली गई और आलू धोकर छीलने लगी। इसके बाद वह आलुओं को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने लगी, जैसा वह हमेशा किया करती थी। जब वह रसोई में अपना काम कर रही थी, तब किसान ने अपने अतिथि को अपने बग़ीचे में घूमने के लिए आमन्त्रित किया। बग़ीचे में उसने पेड़ लगाने के लिए गड्ढा कर रखा था। "क्या तुम्हारी मदद करने के लिए तुम्हारा कोई बच्चा नहीं है ?" अजनबी ने पूछा।

किसान ने उत्तर दिया, "नहीं, मेरा एक बेटा था, जो बहुत शैतान था और हमेशा कुछ न कुछ शैतानी करता रहता था। जवान होकर वह घर से भाग गया और उसके बाद उसका कुछ पता नहीं चला।"

बातचीत के दौरान उस आदमी ने एक पौधे को तैयार गड्ढे में लगा दिया

और उसके पास एक लकड़ी लगा दी। इसके बाद उसने गड्ढे को मिट्टी से भर दिया और पौधे के नीचे, बीच और ऊपर के भाग को एक धागे के सहारे लकड़ी से बाँध दिया।

अचानक अजनबी ने पूछा, "आप उस कोने वाले पौधे को, जो टेढ़ा-मेढ़ा है, किसी सहारे से क्यों नहीं बाँध देते, ताकि वह सीधा खड़ा रह सके। वह पौधा एकदम झुक गया है।"

किसान ने हँसते हुए जवाब दिया, "आप इस तरह बात करते हैं, मानों आप बाग़वानी के बारे में सब कुछ जानते हों। मगर यह साफ़ दिखाई पड़ता है कि आप इसके बारे में कुछ नहीं जानते। वह पौधा झुका पड़ा है और पुराना है और उसे सीधा करना कठिन है। पौधों को तब सीधा किया जाता है, जब वे छोटे होते हैं।" अजनबी बोला, "तुम्हारे बेटे के साथ भी ऐसा ही हुआ। अगर तुमने उसे बचपन में अच्छी शिक्षा दी होती तो वह घर छोड़कर नहीं भागता। अब वह भी इसी तरह उलझी हुई प्रवृति का होगा।"

बूढ़ा किसान बोला, "आप सच कह रहे हैं। उसे घर से गए एक लम्बा समय गुज़र गया है। शायद अब वह बदल गया हो।"

अजनबी ने अचानक सवाल किया, "अगर वह कभी वापस आए तो क्या आप उसे पहचान लेंगे ?"

किसान बोला, "चेहरे से पहचान पाना तो मुश्किल होगा, लेकिन उसके कन्धे पर एक बड़ा सा काला तिल है, जिससे उसे पहचाना जा सकता है।" इतना सुनकर अजनबी ने अपना कोट उतार दिया और कन्धे से कमीज़ को खिसकाकर उसे कन्धे पर बना काला तिल दिखाया।

बूढ़ा किसान ख़ुशी से बोल पड़ा, "तुम तो सचमुच मेरे बेटे हो, लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है ? तुम तो एक रईस जागीरदार जैसे दिखते हो। तुमने यह सब कैसे पाया ?"

बेटे ने जवाब दिया, "छोटे पौधे को लकड़ी से नहीं बाँधा गया था, इसलिए वह मुड़ गया था और अब वह इतना बड़ा हो गया है कि सीधा नहीं हो पायेगा। आपने पूछा कि मैंने इतना धन कैसे प्राप्त किया। इसका जवाब यह है कि मैं एक कुशल चोर हूँ। लेकिन आप घबराएँ नहीं, क्योंकि मैं साधारण चोर नहीं हूँ। दुनिया मैं ऐसा कोई ताला या तिजोरी नहीं है, जिसे मैं नहीं खोल सकता। अतः मैं जिस वस्तु को हासिल करना चाहता हूँ, वह मेरी हो जाती है। आप मुझे मामूली चोर नहीं समझें, क्योंकि मैं अन्य चोरों की तरह सभी जगह चोरी नहीं करता।

मैं सिर्फ़ रईसों और धनवानों के यहाँ ही चोरी करता हूँ। ग़रीब लोगों को मैं नहीं सताता हूँ और उनसे कुछ लेने की जगह मैं हमेशा उन्हें कुछ न कुछ देता रहता हूँ। इसी तरह मैं ऐसी चीज़ें भी नहीं चुराता, जिन्हें चुराना बहुत आसान हो।"

बूढ़े ने जवाब दिया, "बेटे मैं इससे ख़ुश नहीं हो सकता। चोर आख़िर चोर होता है। वह कुशल चोर हो या साधारण चोर, कोई अन्तर नहीं पड़ता। चोरी का अन्त कभी अच्छा नहीं हो सकता।" इसके बाद वह उसे उसकी माँ के पास ले गया। माँ को जब पता चला कि वह उसका बेटा है तो वह ख़ुशी से रो पड़ी। परन्तु जब उसे पता चला कि उसका बेटा चोरी करता है तो उसकी आँखों से दुख के आँसू बहने लगे। अन्त में वह बोली, "इस सबके बावजूद यह मेरा बेटा है। यह चोर बड़ा सयाना बन गया है, परन्तु फिर भी मेरी आँखें इसे फिर एक बार देख तो पा रही हैं।"

इसके बाद तीनों ने एक साथ मेज़ पर बैठकर खाना ख़ाया। वह काफ़ी समय बाद इस प्रकार का साधारण घरेलू खाना खा रहा था। खाना खाते हुए बूढ़ा किसान बोला, "अगर महल के मालिक हमारे राजा को पता चला कि तुम कौन हो और क्या करते हो तो वह ख़ुशी से तुम्हें गले नहीं लगायेगा, जैसा कि उसने तुम्हारे नामकरण के समय किया था, बल्कि वह तुम्हें फाँसी दे देगा।" "पिताजी, आप बिलकुल नहीं डरें। वह मुझे कुछ नहीं करेगा। मैं अपने काम में बड़ा कुशल हूँ। आज मैं उससे मिलने जाऊँगा।"

शाम को वह सयाना चोर अपनी बग्घी पर सवार होकर राजा के घर पहुँचा। राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया, क्योंकि वह समझा कि वह कोई सभ्य और धनी आदमी है। लेकिन जब अजनबी ने उसे सच बताया तो वह डर गया और शान्त होकर बैठ गया। अन्त में वह बोला, "मैं तुम्हारे साथ न्याय न कर तुम पर दया करूँगा, क्योंकि तुम मेरे धर्मपुत्र हो। लेकिन मैं तुम्हारी कला की परीक्षा लूँगा, क्योंकि तुम अपने आपको एक कुशल चोर बताते हो। अगर तुम इस परीक्षा में सफल नहीं हो पाये तो तुम्हें फाँसी दे दी जाएगी।"

चोर ने जवाब दिया, "आप मुझे सोचकर तीन मुश्किल काम बताएँ और अगर मैं उन्हें नहीं कर पाया तो आप मेरे साथ जैसा चाहें वैसा व्यवहार करें।"

राजा कुछ देर तक सोचता रहा और इसके बाद बोला, "तुम पहला काम यह करो कि अस्तबल से मेरे प्रिय घोड़े को चुराकर दिखाओ। दूसरा काम यह कि जब मैं और मेरी पत्नी सो रहे हों तो बिना हमें पता चले बिस्तर पर पड़ी चादर को चुराकर दिखाओ। इसके साथ ही तुम्हें मेरी पत्नी की अँगुली में पड़ी

अँगूठी भी चुरानी होगी। तीसरा और अन्तिम काम यह है कि तुम्हें गिरजाघर से पादरी और उसके सहायक को चुराना होगा। इन कामों को अच्छी तरह करके दिखाओ, क्योंकि तुम्हारी गर्दन सिर्फ़ इन्हीं कामों के सफल होने से बच सकती है।''

इसके बाद, वह सयाना चोर पास के शहर में गया और उसने वहाँ बाज़ार से देहाती औरत के पहनने के कपड़े खरीद कर पहन लिए। इसके बाद उसने अपने चेहरे को गहरे भूरे रंग से रंगकर उस पर झुर्रियाँ बना ली, जिससे कोई उसे पहचान नहीं पाये। अन्त में, उसने एक छोटे पीपे में शराब भरकर उसमें नींद की दवा घोल दी। इस शराब से भरे बर्तन को एक टोकरी में डालकर, उसने उसे अपने कन्धे पर रख लिया और लड़खड़ाता हुआ राजा के महल की ओर बढ़ा। वह जब महल के पास पहुँचा तो अँधेरा हो चुका था। महल के बाहर, अस्तबल के सामने पड़े एक पत्थर पर बैठकर वह इस प्रकार खाँसने लगा, मानों दमे की मरीज़ कोई बूढ़ी औरत खाँस रही हो। इसके साथ ही वह अपने दोनों हाथों को भी इस तरह रगड़ रहा था, मानों वे ठण्ड से अकड़ गए हों। अस्तबल के दरवाज़े के आगे पहरेदार जलती हुई आग के चारों ओर बैठे थे। अचानक, एक पहरेदार ने बुढ़िया को देखा और उसे आग के पास बुलाया। बूढ़ी औरत लड़खड़ाती हुई पहरेदारों के समीप पहुँची और अपने सिर से टोकरी उतार कर बैठ गई।

पहरेदारों में से एक ने पूछा, ''तुम्हारी इस टोकरी में क्या है ?''

बुढ़िया ने उत्तर दिया, ''इसमें बढ़िया शराब है, जिसे बेचकर मैं अपना गुज़ारा करती हूँ। कुछ पैसों के बदले मैं तुम्हें एक प्याला शराब दे सकती हूँ।'' पहरेदार ने उससे एक प्याला शराब लेकर पीया और पीते ही चिल्ला पड़ा, ''यह शराब तो बहुत मज़ेदार है। मैं एक की जगह दो प्याले पीऊँगा।'' इतना कहकर उसने शराब का दूसरा प्याला भी समाप्त कर डाला। उसे देखकर अन्य पहरेदारों ने भी शराब पीना शुरू कर दिया।

अचानक उनमें से एक पहरेदार ने चिल्लाकर अस्तबल के अन्दर बैठे पहरेदारों को बताया, ''यहाँ एक बूढ़ी औरत शराब बेच रही है। इस शराब में आग से भी ज़्यादा गर्मी है।'' बुढ़िया शराब का बर्तन लिए अस्तबल के अन्दर पहुँची। वहाँ उसे तीन सिपाही दिखाई दिये। उनमें से एक ज़ीन लगे घोड़े की पीठ पर बैठा था, दूसरे के हाथ में घोड़े की लगाम थी और तीसरे ने घोड़े की पूँछ पकड़ रखी थी। बुढ़िया ने उन लोगों को भी शराब पिलायी। अब शराब ने अपना असर दिखाना शुरू किया। जिसकी हाथ में घोड़े की लगाम थी, उसके हाथ से लगाम छूट गई और वह स्वयं ज़मीन पर बैठकर खर्राटे भरने लगा। दूसरे पहरेदार के हाथ से पूँछ

छूट गई और वह भी जल्दी ही सो गया। इस पहरेदार के खर्राटों की आवाज़ पहले पहरेदार के खर्राटों से ज़्यादा तेज़ थी। तीसरा पहरेदार घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे ही सो गया और लुहार की फुकनी से भी ज़्यादा तेज़ आवाज़ में खर्राटे भरने लगा। बाहर के पहरेदार काफ़ी समय पहले ही सो चुके थे और वे आग के चारों ओर दुबके हुए थे। इस तरह सारे पहरेदारों को सोया पाकर चोर बहुत ख़ुश हुआ। लेकिन घोड़े की पीठ पर सो रहे पहरेदार को नीचे उतारना एक मुश्किल काम था। नीचे उतारते समय वह जाग सकता था और मदद के लिए चिल्ला सकता था। इससे बचने के लिए उसने एक तरीक़ा निकाला। उसने घोड़े की ज़ीन खोलकर उसके किनारों को रस्सी से बाँध दिया और इस रस्सी को दीवार में बने छल्लों में फँसा दिया। अब उसने रस्सी को इस तरह खींचा कि जीन सवार समेत हवा में टँग गया और फिर उसने रस्सी के दूसरे सिरे को अस्तबल के खम्भे से बाँध दिया। अब उसने घोड़े को उसके बाँधने के स्थान से खोला और उसके चारों पाँवों के नीचे कपड़ा बाँध दिया, ताकि कोई आवाज़ नहीं हो। आवाज़ सुनकर पहरेदारों के जाग जाने का ख़तरा था। इसके बाद वह घोड़े को लेकर बाहर निकला और उसकी पीठ पर सवार होकर तेज़ी से भाग गया।

जैसे ही सुबह हुई, वह कुशल चोर चोरी किए गए घोड़े की पीठ पर बैठकर महल में वापस लौटा। राजा जाग चुका था और खिड़की से बाहर देख रहा था। चोर ने कहा, "राजा साहब, आपका घोड़ा वापस आ गया है, जिसे मैंने अस्तबल से चुरा लिया था। आप स्वयं जाकर देख लें, आपके पहरेदार अभी तक सो रहे होंगे।"

राजा ने हँसकर कहा, "इस बार तुम सफल हो गए हो, परन्तु दूसरी बार सफल हो पाना मुश्किल होगा और याद रखो, अगर मैंने तुम्हें चोरी करते पकड़ लिया तो तुम्हारे साथ चोरों-जैसा ही व्यवहार किया जाएगा।"

धीरे-धीरे रात हुई और राजा की पत्नी अपनी शादी की अँगूठी को अँगुली में पहने सोने के लिए बिस्तर पर चली गई। राजा ने अपनी पत्नी से कहा, "सारे दरवाज़े अच्छी तरह बन्द हैं। मैं जागता रहूँगा, ताकि चोर अगर खिड़की के रास्ते अन्दर घुसने की कोशिश करे तो उसे गोली मार सकूँ।"

उधर वह कुशल चोर अँधेरा होने के बाद फाँसी दिए जानेवाले स्थान पर पहुँचा। वहाँ रस्सी के सहारे एक अपराधी का मृत शरीर लटका था, जिसे उसी दिन फाँसी दी गई थी। चोर उसे उतारकर महल के अन्दर ले आया। इसके बाद चोर ने राजा के कमरे तक पहुँचती एक सीढ़ी को दीवार के सहारे खड़ा किया

और मृत अपराधी के शरीर को अपने कन्धे पर रखकर ऊपर चढ़ने लगा। जैसे ही मृत आदमी का सिर खिड़की से ऊपर उठा, पर्दे के पीछे छिपे राजा ने गोली चला दी। गोली की आवाज़ सुनते ही चोर ने उस मृत अपराधी को ज़मीन पर पटक दिया और तेज़ी से नीचे उतरकर अँधेरे में छिप गया। चाँदनी रात थी और चारों ओर रोशनी बिखरी थी। चोर ने राजा को सीढ़ी से नीचे उतरते देखा। राजा नीचे आया और मृतक को उठाकर बग़ीचे में ले गया। वहाँ गड्ढा खोदकर उसे दफ़नाने की तैयारी करने लगा। "यही मौक़ा है," चोर ने सोचा और जल्दी से अपने छिपने के स्थान से बाहर निकलकर सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगा। ऊपर कमरे में पहुँचकर वह राजा की आवाज़ की नक़ल करता हुआ बोला, "मेरी प्यारी बीवी, चोर मर गया है, लेकिन वह मेरा धर्मपुत्र था और अपराधी की बजाय ठग था। मैं उसके परिवार को बदनामी से बचाना चाहता हूँ। अतः मैं चाहता हूँ कि सुबह होने से पहले चुपचाप उसे बग़ीचे में दफ़ना दूँ। तुम मुझे यह चादर दे दो। जिसमें लपेटकर मैं उसके शरीर को दफ़ना दूँगा। पत्नी चादर देने लगी तो चोर बोला, "तुम मुझे अपनी अँगूठी भी दे दो। यह अभागा चोर इस अँगूठी की वजह से ही मारा गया है, इसलिए मैं इस अँगूठी को भी उसके साथ ही दफ़ना दूँगा।"

राजा की पत्नी अपने पति को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। इसलिए उसने इच्छा न होने पर भी अपनी अँगुली से अँगूठी उतारकर उसे दे दी। इस प्रकार चोर बिना किसी परेशानी के राजा के आने से पहले ही इन दोनों चीज़ों को साथ लेकर अपने घर चला गया।

तुम कल्पना कर सकते हो कि राजा का चेहरा उस समय कैसा लग रहा होगा, जब दूसरी सुबह चोर ने उसे चादर और अँगूठी वापस की। "क्या तुम जादूगर हो ?" राजा ने उससे कहा, "तुम्हें क़ब्र से किसने निकाला और तुम फिर ज़िन्दा कैसे हो गए ?" चोर बोला, "आपने मुझे नहीं दफ़नाया था। आपने जिसे दफ़नाया वह एक अपराधी था, जिसे फाँसी दी गई थी। इसके बाद उसने राजा को सारी बात बता दी। राजा को विश्वास हो गया कि वह एक अत्यन्त बुद्धिमान आदमी है। राजा बोला, "लेकिन अभी तुम्हारा काम ख़त्म नहीं हुआ है। अभी तीसरा काम बाक़ी है और अगर तुम इसे नहीं कर पाये तो पहले किए गए तुम्हारे दो कामों का कोई महत्त्व नहीं रह जाएगा।"

चोर हँसा। लेकिन बोला कुछ नहीं। जब रात हुई तो अपनी पीठ पर एक बोरी, अपनी बग़ल में एक गट्ठर और हाथ में एक लालटेन लेकर वह गिरजाघर पहुँचा। अपनी बोरी में उसने कुछ केकड़े डाल रखे थे और बग़ल में दबे गट्ठर में



छोटी-छोटी मोमबत्तियाँ थीं। गिरजाघर की चारदीवारी के अन्दर पहुँचकर उसने अपनी बोरी से एक केकड़ा और उसकी पीठ पर एक मोमबत्ती रखकर उसे ज़मीन पर छोड़ दिया। इसी तरह, धीरे-धीरे उसने अपनी बोरी में भरे सारे केकड़ों को निकालकर उनकी पीठ पर मोमबत्तियाँ लगा दी और उन्हें ज़मीन पर छोड़ दिया। अब उसने एक लम्बा काला लबादा पहन लिया और अपने चेहरे पर भूरे रंग की दाढ़ी लगा

ली। इस प्रकार अपना रूप बदलकर, वह बोरी को अपनी बग़ल में दबाये गिरजाघर के अन्दर चल दिया। इसी समय गिरजाघर की घड़ी ने बारह बजाए। घड़ी की आवाज़ सुनकर वह कुशल चोर चिल्लाकर बोलने लगा, "सारे पापियो, सुनो ! संसार का अन्त होने वाला है और अन्तिम दिन अब काफ़ी निकट है। जो कोई मेरे साथ स्वर्ग जाना चाहता है, वह आकर इस बोरी के अन्दर घुस जाए। मैं पीटर हूँ, जो स्वर्ग का दरवाज़ा खोलता और बन्द करता है। देखो, गिरजाघर की चारदीवारी के अन्दर मृत आत्माएँ भटक रही हैं। आओ, आओ, जल्दी से बोरी में घुस जाओ, क्योंकि यह संसार अब समाप्त होनेवाला है।" उसकी आवाज़ सारे गाँव में गूँजने लगी। पादरी और उसका सहायक गिरजाघर के पास ही रहते थे। सबसे पहले उन्हें ही समझ में आया कि वह क्या कह रहा है। जब उन्होंने चारदीवारी के अन्दर मोमबत्तियों को घूमते देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि कोई ग़ैरमामूली बात होनेवाली है। वे गिरजाघर के अन्दर पहुँचे। वे कुछ देर तक उसकी बातों को सुनते रहे। इसके बाद सहायक ने पादरी से कहा, "हमें इस मौक़े का लाभ उठाना चाहिए और संसार की समाप्ति से पहले ही इसके साथ स्वर्ग चले जाना चाहिए।"

पादरी ने कहा, "मैं भी यही सोच रहा था। अगर तुम चाहो तो हम अपनी यात्रा अभी से शुरू कर दें।"

सहायक बोला, "हाँ, हमें ऐसा ही करना चाहिए। आप पहले आगे बढ़ें, क्योंकि आप पादरी हैं। मैं आपके पीछे चलूँगा।"

पादरी आगे बढ़ा और बोरी के अन्दर घुस गया। चोर बोरी का मुँह खोलकर उनके घुसने का इन्तज़ार कर रहा था। पादरी के पीछे-पीछे सहायक भी बोरी में घुस गया। चोर ने बोरी का मुँह कसकर बाँध दिया और उसे फ़र्श पर घसीटता हुआ लेकर चल पड़ा। वह बोरी को इस तरह घसीट रहा था कि बोरी के अन्दर बन्द पादरी और सहायक का सिर कभी-कभी ज़मीन पर टकरा जाता था। चोर बोला, "हम लोग पहाड़ों के ऊपर से गुज़र रहे हैं।" गिरजाघर की चारदीवारी से बाहर निकलकर वह बोरी को घसीटता हुआ गाँव की ओर ले चला। अब उसने बताया कि वे लोग बादलों के बीच से गुज़र रहे हैं।

धीरे-धीरे वह उन्हें लिए महल के फाटक पर पहुँचा और उनसे बोला, "अब मैं स्वर्ग का द्वार खोलूँगा।" इसके बाद वह उन्हें लिए कबूतरों के दड़बे में पहुँचा। आवाज़ सुनकर जब कबूतर पंख फड़फड़ाने लगे तब वह पादरी और सहायक से बोला, "यह परियों के पंख फड़फड़ाने की आवाज़ है।" इसके बाद, वह दरवाज़ा बन्द कर चलता बना।

अगली सुबह वह राजा के दरबार में पहुँचा और उसे बताया कि उसने तीसरा काम भी कर दिया है। वह पादरी और सहायक को गिरजाघर से चुराकर ले आया है। राजा ने सवाल किया, "तब तुमने उन्हें कहाँ छुपा रखा है ?" "वे एक बोरी में बँधे कबूतरों के दड़बे में पड़े हैं और सोच रहे हैं कि स्वर्ग में हैं।" चोर ने जवाब दिया।

राजा खुद उठकर दड़बे तक गया और पाया कि चोर ने सच कहा था। उसने पादरी और सहायक को बोरी से आज़ाद कर दिया। इसके बाद वह चोर से बोला, "तुम एक कुशल चोर हो। मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ, परन्तु तुम मेरे राज्य की सीमा से दूर ही रहना, क्योंकि तुम अगर दुबारा यहाँ दिखाई दोगे तो मैं तुम्हें फाँसी लगवा दूँगा।" चोर राजा से आज्ञा लेकर वहाँ से चल दिया। घर पहुँचकर उसने अपने माता-पिता को अलविदा कहा और दूर एक दूसरे देश में रहने चला गया। इसके बाद कोई भी उसके बारे में कुछ नहीं जान सका।

18

भेड़िया और लोमड़ी

किसी समय की बात है, एक बार एक भेड़िये ने एक लोमड़ी को पकड़ा। एक दिन वे दोनों जंगल से होकर जा रहे थे कि भेड़िया लोमड़ी से कहने लगा, "मेरे लिए जाकर खाना ले आओ, नहीं तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।"

लोमड़ी ने कहा, "मैं खेत में बने एक बाड़े के बारे में जानती हूँ। जहाँ बहुत सारे छोटे मेमने हैं। यदि तुम चाहो तो हम उन्हें वहाँ से ला सकते हैं।"

यह प्रस्ताव सुनकर भेड़िया बहुत प्रसन्न हो गया और वे दोनों चल पड़े। वहाँ पहुँचकर लोमड़ी ने पहले एक मेमने को चुराया और जाकर इसे भेड़िये को दे दिया। इसके बाद वह वहाँ से भाग गई। भेड़िये ने जल्दी-जल्दी उसे खा लिया। लेकिन उसे सन्तोष नहीं हुआ। इसलिए वह ख़ुद एक मेमना चुराने के लिए अन्दर घुसा। लेकिन वह अपने काम में इतना अनाड़ी निकला कि मेमनों की माँ का ध्यान उसकी ओर चला गया। भेड़िये को देखकर वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और मिमियाने लगी। उसका रोना सुनकर किसान दौड़ते हुए आए तो वहाँ उन्होंने भेड़िये को देखा। उन्होंने भेड़िये को निर्दयतापूर्वक मारा। किसी तरह से जान बचाकर कराहता और लंगड़ाता हुआ वह लोमड़ी के पास पहुँचा और बोला, "तुम भी मुझे अच्छी जगह पर ले गई थी ! मैं जैसे ही मेमना चुराने के लिए अन्दर घुसा, किसान वहाँ आ गए और उन्होंने मुझे बहुत मारा।"

लोमड़ी बोली, "आख़िर तुम इतने पेटू क्यों हो ?"

अगले दिन वे लोग दोबारा खेतों में गए तो लालची भेड़िया लोमड़ी से कहने लगा, "अब तुम जाकर मेरे खाने के लिए कुछ लेकर आओ, नहीं तो मैं तुम्हें ही खा जाऊँगा।"

लोमड़ी बोली कि वह गाँव में एक घर जानती है, जहाँ रसोइया शाम को मालपुए बनानेवाला है। वे लोग उधर ही चल दिये। वहाँ पहुँचकर लोमड़ी किसी



तरह अन्दर घुस गई और घर का चक्कर लगाने लगी। जब उसने मालपुओं की थाली का पता लगा लिया तो चुपके से जाकर वह छः मालपुए उठा लायी। उसने ये मालपुए भेड़िये को लाकर दे दिए और बोली, "ये तुम्हारे खाने के लिए हैं।" इसके बाद लोमड़ी वहाँ से भाग गई। भेड़िये ने बहुत जल्दी उन सबको खा लिया। कुछ और मालपुओं के लालच में वह अन्दर घुसा और पुओं की थाली उठा ली। लेकिन वह इतनी जल्दबाज़ी में उसे ले जाने लगा कि थाली गिरकर टूट गई।

आवाज़ सुनकर घर की मालकिन बाहर आई तो उसने भेड़िये को देखा। उसे देखते ही वह सबको बुलाने लगी। लोग दौड़ते हुए आए और उन्होंने जाकर भेड़िये की धुनाई कर दी। वह कराहता और दोनों पाँवों से लँगड़ाता हुआ किसी तरह लोमड़ी के पास पहुँचा और उससे कहने लगा, "कितनी गन्दी जगह इस बार तुम मुझे ले गई। वहाँ किसानों ने मुझे पकड़ लिया और मार-मारकर मेरी चमड़ी उधेड़ दी !"

लोमड़ी बोली, "आख़िर तुम इतने पेटू क्यों हो ?"

अगले दिन जब वे लोग फिर बाहर गए तो भेड़िया थका हुआ और लंगड़ाकर चल रहा था। वह लोमड़ी से कहने लगा, "अब तुम जाकर मेरे खाने के लिए कुछ लेकर आओ, नहीं तो मैं तुम्हें ही खा जाऊँगा।"

लोमड़ी बोली कि वह एक सरकारी आदमी को जानती है, जिसने थोड़ी देर पहले ही एक सुअर को मारा है। अपने तहख़ाने में एक पीपे के अन्दर उसने मांस में नमक लगाकर रख दिया है। वह उन लोगों को खाने को मिल सकता है। भेड़िया बोला कि उसके साथ इसी शर्त पर जाएगा कि यदि वह वहाँ से भाग न सके तो लोमड़ी उसकी सहायता करेगी। लोमड़ी कहने लगी, "ज़रूर ! मैं तुम्हारी सहायता स्वयं को ख़तरे में डालकर भी करूँगी।" लोमड़ी ने भेड़िये को वह सारी चालाकियाँ और विधियाँ बताईं जिनके द्वारा वे लोग तहख़ाने में पहुँच सकते थे। जब वे लोग वहाँ पहुँचे तो वहाँ ढेर सारा मांस रखा हुआ था।

भेड़िया सब कुछ भूलकर खाने में जुट गया। लोमड़ी भी उसका स्वाद लेने लगी, लेकिन खाते समय भी वह चारों ओर देख लेती। वह बार-बार जाकर उस छेद को देख लेती, जिसमें से होकर वे लोग अन्दर आए थे, कि उसका शरीर आसानी से बाहर निकल सकता है या नहीं। अचानक भेड़िये ने पूछा, "लोमड़ी तुम इस तरह से क्यों दौड़ रही हो और बाहर जाकर क्या देख रही हो ?" लोमड़ी ने चालाकी से उत्तर दिया, "मैं यह देखने जाती हूँ कि कहीं कोई आ तो नहीं रहा है, लेकिन तुम ध्यान रखना ! कहीं बहुत अधिक मत खा लेना।"

भेड़िये ने कहा कि वह तब तक नहीं जाएगा, जब तक पीपा पूरा ख़ाली

नहीं हो जाता। इस बीच किसान ने लोमड़ी द्वारा की जा रही आवाज़ को सुन लिया और वह तहख़ाने के अन्दर देखने के लिए आया। लोमड़ी ने जैसे ही उसे देखा, एक छलाँग लगायी और एक पल में छेद से बाहर निकल गई। भेड़िये ने भी वैसा ही करने की कोशिश की लेकिन उसने इतना अधिक खा लिया था कि छेद के लिए उसका शरीर बड़ा हो गया था। इस तरह वह छेद से निकल नहीं पाया और बुरी तरह फँस गया। किसान मोटा-सा एक डण्डा लेकर आया और उसने मारते-मारते भेड़िये की जान ले ली। लेकिन लोमड़ी तो छलांगते हुए जंगल में पहुँच चुकी थी और ख़ुश थी कि उस पुराने पेटू के चंगुल से वह हमेशा के लिए मुक्त हो गई थी।

19

लौह मानव

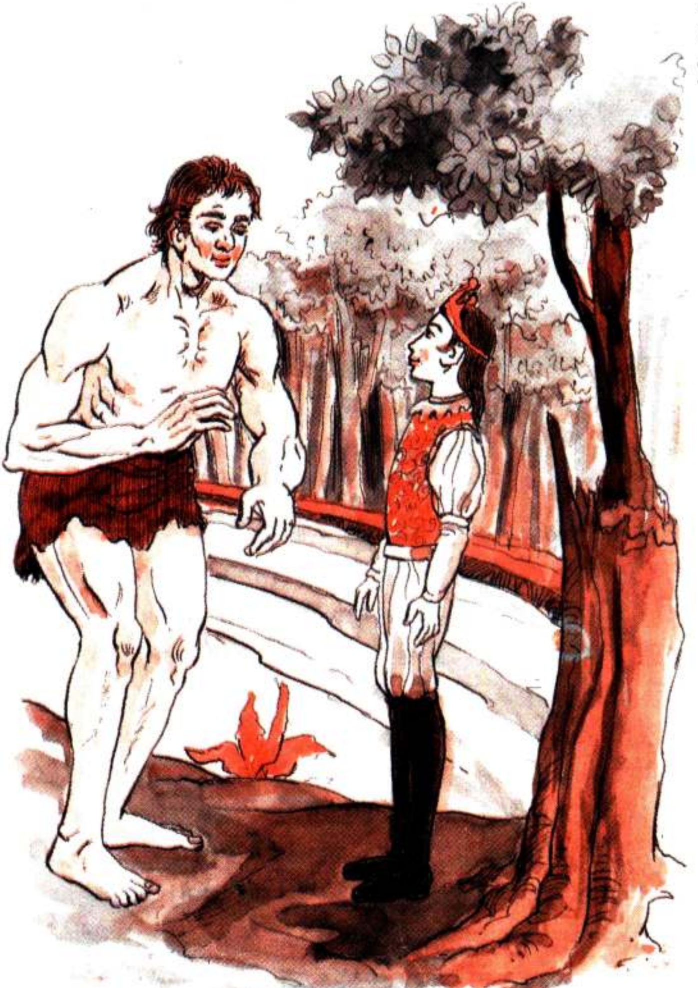
बहुत समय पहले एक राजा था, जिसके महल के पीछे एक जंगल था। इसी में वह शिकार किया करता था। राजा के शिकार में सहयोग करनेवाले आदमियों में से एक आदमी एक दिन सुबह जंगल में गया और वापस नहीं आया। दूसरे दिन राजा ने दो अन्य लोगों को उसकी खोज में भेजा, मगर वे भी ग़ायब हो गए। फिर राजा ने अपने सारे शिकारियों को आदेश दिया कि वे अपने खोये हुए साथियों की तलाश में जाने के लिए तैयार रहें। राजा के आदेश पर सारे शिकारी अपने साथियों की तलाश में जंगल के अन्दर गए, परन्तु उनमें से कोई भी वापस नहीं लौटा। यहाँ तक कि उनके साथ गए शिकारी कुत्तों में से भी कोई नहीं लौटा। इसके बाद राजा ने यह आदेश दिया कि कोई भी जंगल में नहीं जाए। जंगल अब शान्त और वीरान रहने लगा। वहाँ अब सिर्फ़ उल्लू और बाज ही उड़ते हुए दिखाई पड़ते थे। अचानक एक दिन एक अजनबी शिकारी राजा से मिलने आया। उसने राजा से कहा कि वह जंगल में जाने को तैयार है। राजा ने उसे यह कहते हुए मना कर दिया कि तुम भी औरों की तरह जंगल में जाकर वापस नहीं आ पाओगे। लेकिन शिकारी ने कहा, "मैं ख़तरे का सामना करूँगा, क्योंकि मैं ख़तरों से नहीं डरता।" इसके बाद राजा ने उसे जंगल में जाने की अनुमति दे दी।

शिकारी अपने कुत्तों को साथ लेकर जंगल में घुसा। कुछ देर बाद कुत्ता एक जंगली जानवर के पीछे दौड़ने लगा। लेकिन कुछ ही दूर दौड़ने के बाद कुत्ता एक तालाब में गिर गया। इस तालाब से एक हाथ बाहर निकला और कुत्ते को खींच कर पानी के अन्दर ले गया। शिकारी ने जैसे ही यह देखा, वह भागकर जंगल से बाहर आया और अपने साथ तीन लोगों को लेकर फिर जंगल में गया। इन तीनों लोगों के पास पानी निकालने के लिए बाल्टियाँ थी। जब वे पानी निकालते हुए तालाब की तह तक पहुँचे तो उन्हें एक जंगली आदमी मिला, जिसका रंग

ज़ंग लगे लोहे की तरह भूरा था और जिसके बाल घुटने तक आ रहे थे। वे उसे बाँधकर राजा के पास ले आए। उसने उस जंगली आदमी को एक बड़े लोहे के पिंजरे में बन्द करवा दिया और उस पिंजरे को महल के आँगन में रखवा दिया। पिंजरे के ताले की चाभी रानी के पास रख दी गई। सारे लोगों को चेतावनी दे दी गई कि वे पिंजरे को खोलने का प्रयास नहीं करें, नहीं तो वे जान से हाथ धो बैठेंगे। इसके बाद से सभी जंगल में सुरक्षित जा सकते थे।

राजा का एक आठ साल का लड़का था। वह एक दिन आँगन में खेल रहा था। खेलते-खेलते, अचानक उसकी गेंद पिंजरे के अन्दर चली गई। वह दौड़ता हुआ पिंजरे के पास आया और उसमें बन्द आदमी से अपनी गेंद माँगने लगा। उस आदमी ने कहा, "मैं तुम्हें यह तब तक वापस नहीं दूँगा, जब तक तुम इस पिंजरे का दरवाज़ा नहीं खोल दोगे।" बच्चे ने कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे पिता ने मुझे ऐसा करने से मना किया है।" इतना कहकर बच्चा दौड़ता हुआ वहाँ से भाग गया। लेकिन दूसरी सुबह वह फिर वापस आकर अपनी सुनहरी गेंद माँगने लगा। "पहले दरवाज़ा खोलो," जंगली आदमी ने कहा। लेकिन बच्चे ने ऐसा करने से मना कर दिया।

तीसरी सुबह राजा शिकार पर चला गया और बच्चा फिर पिंजरे के पास पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने कहा, "अगर मैं पिंजरा खोलना भी चाहूँ तो मेरे पास इसकी चाभी नहीं है।" जंगली आदमी ने जवाब दिया।" "वह तुम्हारी माँ के तकिये के नीचे रखी हुई है और अगर तुम्हें गेंद चाहिए तो तुम वहाँ से चाभी ला सकते हो।" लड़का अपनी गेंद वापस पाने के लिए इतना बेचैन था कि अपने पिता की चेतावनी को भी भूल गया। वह दौड़ता हुआ गया और चाभी ले आया। पिंजरे का दरवाज़ा भारी था और बच्चे को उसे खोलने में काफ़ी कठिनाई हुई। दरवाज़ा खुलते ही जंगली आदमी पिंजरे से बाहर निकला और बच्चे को उसकी सुनहरी गेंद देकर वहाँ से भागने लगा। उसे भागता देखकर लड़का चिल्लाने लगा और चीख़ता हुआ उस जंगली आदमी से बोला, "तुम भागकर दूर मत जाओ, वरना मुझे बहुत मार पड़ेगी।" जंगली वापस घूमा और बच्चे को उठाकर अपने कन्धे पर बैठा लिया। वह तेज़ी से जंगल में चला गया। जैसे ही राजा वापस लौटा, उसने पिंजरे को ख़ाली देखा और रानी से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था ? रानी ने अपने लड़के को आवाज़ दी, परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। तब राजा ने अपने आदमियों को लड़के को ढूँढ़ने के लिए चारों ओर भेजा, मगर वे ख़ाली हाथ वापस लौट आए। अब राजा समझ गया कि वहाँ क्या हुआ था। इस घटना को जानकर सारा दरबार शोक में डूब गया।



अपनी पुरानी जगह पर पहुँचकर जंगली आदमी ने लड़के को कन्धे से नीचे उतारा और बोला, "तुम अब अपने माता-पिता को कभी नहीं देख पाओगे। लेकिन मैं तुम्हें अपने साथ रखूँगा क्योंकि तुमने मुझे आज़ाद किया है। मैं जैसा कहूँगा

अगर तुम वैसा करोगे तो मैं तुम्हें काफ़ी अच्छी तरह रखूँगा, क्योंकि मेरे पास काफ़ी धन दौलत हे, संसार के किसी भी अन्य व्यक्ति से ज़्यादा।" शाम होने पर उसने लड़के को नरम घास पर सुला दिया। दूसरी सुबह वह लड़के को लेकर तालाब के किनारे पहुँचा और बोला, "देखो, यह सुनहरा पानी कितना चमकीला और साफ़ है। तुम्हें किनारे बैठकर इस बात का ध्यान रखना है कि इसमें कुछ गिरने नहीं पाये। मैं रोज़ शाम को यहाँ आकर देखूँगा कि तुमने अपना काम ठीक ढंग से किया है या नहीं।"

लड़का तालाब के किनारे बैठकर उसकी सुरक्षा करने लगा। पानी को देखते-देखते अचानक उसकी एक अँगुली में काफ़ी तेज़ दर्द होने लगा। दर्द से छुटकारा पाने के लिए उसने इस अँगुली को पानी में डुबो दिया। दूसरे ही क्षण जब उसने इसे बाहर निकाला तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि उसकी अँगुली सुनहरे रंग की हो गई थी। यह सुनहरा रंग अँगुली को काफी रगड़ने पर भी ख़त्म नहीं हुआ। शाम को वह जंगली आदमी वापस लौटा और लड़के से पूछा, "मेरे तालाब को क्या हुआ ?" लड़का अपनी अँगुली को पीछे छिपाता हुआ जल्दी से बोला, "कुछ नहीं, कुछ नहीं।" जंगली आदमी बोला, "तुमने अपनी अँगुली उसमें डुबाई है। लेकिन कोई बात नहीं, इस बार मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ। आगे से इस बात का ध्यान रखना कि ऐसा दुबारा नहीं हो।"

दूसरे दिन सुबह होते ही लड़का अपने काम पर लग गया। परन्तु कुछ समय बाद उसकी अँगुली में फिर दर्द होने लगा। लड़के ने अँगुली को अपने सिर पर रख लिया लेकिन दुर्भाग्य से उसका एक बाल टूटकर पानी में गिर गया। इसे उसने जल्दी से पानी से निकाल लिया, परन्तु वह सुनहरा हो चुका था। शाम को लौह-मानव वापस लौटा और लड़के से बोला, "आज तुमने अपना एक बाल तालाब में गिरा दिया। एक बार फिर मैं तुम्हारी ग़लती को माफ़ करता हूँ, लेकिन अगर यह दुबारा हुआ तो तालाब का अपमान होगा और मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रखूँगा।"

तीसरी सुबह लड़का अपनी जगह पर आकर बैठ गया और अँगुली में दर्द होने के बावजूद उसे स्थिर रखे रहा। समय बहुत धीरे-धीरे गुज़र रहा था। कुछ देर बाद उसकी इच्छा हुई कि वह अपना चेहरा पानी में देखे। ऐसा करने के लिए वह आगे की ओर झुका और आगे झुकने की वजह से उसके लम्बे बाल कन्धे से फिसलकर पानी में जा गिरे। जल्दी में उसने अपने सिर को सीधा कर बालों को पानी से निकाला मगर उसके बाल सुनहरे हो चुके थे और सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। तुम कल्पना कर सकते हो कि वह लड़का कितना डरा हुआ

होगा। उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और उसे अपने सिर पर बाँध लिया। जिससे उसके बाल दिखाई न दें। लौह मानव जैसे ही वापस लौटा उसने लड़के से कहा, "अपना रूमाल हटाओ।" वह जानता था कि लड़के ने क्या किया है। रूमाल के हटते ही सुनहरे बाल लड़के के कन्धे पर बिखर गए। लड़के ने घबराकर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाही। मगर वह आदमी बोला, "तुमने अपना काम ठीक से नहीं किया, इसलिए तुम्हें अब यहाँ नहीं रहने दिया जाएगा। अपनी दुनिया में वापस जाओ, वहाँ पहुँचकर तुम्हें पता चलेगा कि दुनिया में कितनी कठिनाइयाँ हैं। लेकिन तुम्हारा हृदय पवित्र है और मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ, इसलिए मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि जब भी तुम कठिनाई में हो, इस जंगल में चले आना और मेरा नाम पुकारना। मैं आकर तुम्हारी मदद करूँगा। मेरे पास अथाह शक्ति और धन है।"

छोटा राजकुमार अब जंगल को छोड़कर बाहर निकला। कई दिनों की यात्रा के बाद वह एक बड़े शहर में पहुँचा। वहाँ उसने काम ढूँढ़ना शुरू किया, परन्तु उसे कोई काम नहीं मिला, क्योंकि वह किसी काम के बारे में कुछ जानता नहीं था। अन्त में, काम ढूँढ़ता हुआ वह राजमहल पहुँचा। राजदरबार के कर्मचारियों को यह नहीं मालूम था कि दरबार में काम के लिए कोई जगह ख़ाली है या नहीं परन्तु उन लोगों ने उसे देखकर वहाँ रुकने की अनुमति दे दी। रसोइए ने उसे अपने साथ काम करने के लिए रख लिया। लकड़ी और पानी लाना और राख बुहारना उसका काम था। एक दिन जब वहाँ कोई और सेवक नहीं था, तब उसे राजा की मेज पर खाना पहुँचाने के लिए भेजा गया। उसने अपने सिर पर एक टोपी पहन ली क्योंकि वह अपने सुनहरे बाल लोगों को नहीं दिखाना चाहता था। टोपी पहने जैसे ही वह राजा के कमरे में घुसा, राजा ने कहा, "राजा के सामने आने से पहले टोपी उतार लेनी चाहिए।" लड़के ने जवाब दिया, "मान्यवर, मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मेरे सिर में कोई ख़तरनाक बीमारी लग गई है।" राजा ने रसोइए को बुलाया और उसे डाँटा कि उसने क्यों इतने छोटे लड़के को काम पर रख लिया है। राजा ने आदेश दिया कि उसे काम से हटा दिया जाए। लेकिन रसोइया दयालु आदमी था और उसने उसे माली के साथ काम पर रखवा दिया।

अब राजकुमार को मौसम की परवाह किए बिना पौधे लगाने पड़ते थे और उनकी देखभाल करनी पड़ती थी। गर्मी के मौसम में एक दिन जब वह बग़ीचे में काम कर रहा था तो उसने अपने सिर को ठण्डा करने के लिए टोपी उतारी। धूप की रोशनी उसके बालों पर पड़ने लगी और उसके सुनहरे बालों से टकराकर

राजकुमारी के कमरे में रखे दर्पण पर पहुँचने लगी। वह एकदम उछलकर खड़ी हो गई और यह देखने की कोशिश करने लगी कि यह क्या चीज़ है ? जब उसने यह देखा कि वह माली के लड़के के बालों का चमत्कार है तो उसने उसे एक गुलदस्ता लेकर अपने पास आने के लिए कहा। उसने जल्दी से अपनी टोपी पहन ली और फूल तोड़कर इकट्ठा करने लगा। वह जब फूल लेकर राजकुमारी के कमरे की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था तो उसे माली मिला। माली ने कहा, "तुम राजकुमारी को इतने साधारण फूलों का गुलदस्ता कैसे दे सकते हो ?" वापस जाओ और सबसे सुन्दर और अनोखे फूलों का गुलदस्ता लेकर आओ।" लड़के ने कहा, "नहीं, जंगली फूल ज़्यादा देर तक खिले रहते हैं और इन्हें पाकर राजकुमारी ज़्यादा ख़ुश होगी।" इतना कहकर लड़का राजकुमारी के कमरे में चला गया। कमरे में पहुँचते ही राजकुमारी ने उससे कहा, "अपनी टोपी उतारो। यहाँ इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।"

लड़के ने जवाब दिया कि वह ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकता, क्योंकि उसका सिर काफी बदसूरत है। लेकिन राजकुमारी ने ज़बरदस्ती उसके सिर से टोपी उतार दी। उसके सुनहरे बाल कन्धे पर बिखर गए। जो बहुत सुन्दर दिख रहे थे। लड़का वहाँ से भाग जाता, लेकिन राजकुमारी ने उसे रोका और उसे कुछ पैसे देकर वहाँ से विदा किया। लड़के ने वे पैसे माली को दे दिये और उससे कहा कि इसे अपने बच्चों को बाँट दे, क्योंकि वह अपने पास पैसा रखना पसन्द नहीं करता। राजकुमारी ने दूसरे दिन भी उसे जंगली फूल लेकर अपने पास बुलाया। जब वह वहाँ पहुँचा तो राजकुमारी ने फिर से उसकी टोपी उतारने की कोशिश की। लेकिन इस बार उसने अपनी टोपी को दोनों हाथों से पकड़ रखा था और उसे अपने सिर से अलग नहीं होने दिया। राजकुमारी ने उसे फिर कुछ पैसा दिया, जिसे उसने माली के बच्चों में बाँट दिया। तीसरे दिन भी यही हुआ। राजकुमारी उसकी टोपी नहीं उतार पायी और उसने उसके द्वारा दिये गए पैसे को अपने पास नहीं रखा।

इसके बाद युद्ध छिड़ गया। राजा ने अपने सारे आदमियों को युद्ध में भाग लेने के लिए जमा किया, क्योंकि उसका शत्रु काफ़ी शक्तिशाली था और वह नहीं जानता था कि अपने शत्रु के सामने युद्ध में टिक पायेगा या नहीं। लड़के ने अपने लिए एक घोड़े की माँग की और बोला कि वह भी युद्ध में हिस्सा लेगा। यह सुनकर सभी लोग हँसने लगे और बोले, "जब हम लोग युद्ध के लिए जा चुके होंगे तो तुम्हारे लिए एक घोड़ा छोड़ देंगे, मगर तुम अपना ख़याल रखना।" जब सभी लोग चले गए तो राजकुमार अस्तबल में पहुँचा। वहाँ एक मरियल-सा घोड़ा बँधा था।

घोड़ा कमज़ोर होने के बावजूद वह उसकी पीठ पर सवार होकर जंगल में पहुँचा और ज़ोर-ज़ोर से लौह मानव को पुकारने लगा। उसकी तेज़ आवाज़ जंगल में गूँजने लगी। वह जंगली आदमी थोड़े समय में ही उसके सामने प्रकट हुआ और उससे बोला, "तुम्हें क्या चाहिए ?" "मुझे एक शक्तिशाली घोड़ा चाहिए, क्योंकि मैं युद्ध में जा रहा हूँ," लड़के ने जवाब दिया। "मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा और तुम्हें तुम्हारी इच्छा से भी ज़्यादा देकर यहाँ से भेजूँगा।" लौह-मानव ने कहा और यह कहकर झाड़ियों के पीछे चला गया। अचानक पेड़ों के पीछे से एक सेवक एक बहुत सुन्दर और शक्तिशाली घोड़े की लगाम पकड़े बाहर आया। उस घोड़े के पीछे योद्धाओं की पूरी सेना थी। योद्धाओं ने लोहे का कवच पहन रखा था और उनके हाथों में चमचमाती नंगी तलवारें थी। इसके बाद लड़के ने अपने लँगड़े घोड़े को सेवक को दे दिया और ख़ुद नये घोड़े पर बैठकर अपनी सेना का नेतृत्व करता हुआ वहाँ से चल दिया। युद्ध के मैदान में पहुँचकर उसने पाया कि राजा के आधे से ज़्यादा योद्धा मारे जा चुके थे और बाक़ी बचे हार स्वीकार करने की स्थिति में पहुँच चुके थे। अतः लड़का अपनी मज़बूत सेना के साथ तुरन्त युद्ध के मैदान में उतर गया। घमासान युद्ध होने लगा। राजकुमार की सेना अपना कमाल दिखा रही थी और दुश्मनों की सेना का बुरा हाल किए दे रही थी। अन्त में, दुश्मनों की सेना घबराकर भागने लगी, परन्तु राजकुमार ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया और उन्हें पकड़कर मार डाला। इसके बाद वह राजा के सामने जाने की बजाय वापस जंगल की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने फिर लौह-मानव को बुलाया। "अब तुम्हें क्या चाहिए," उसने पूछा। लड़का बोला, "अपनी सेना और अपना घोड़ा वापस ले लो और मेरा लँगड़ा घोड़ा मुझे वापस लौटा दो।" उसकी इच्छा पूरी कर दी गई और वह उस कमज़ोर, तीन टाँगोंवाले घोड़े पर सवार हो, घर की ओर वापस लौटा।

राजा के युद्ध के वापस आने पर राजकुमारी उसे उसकी सफलता पर बधाई देने लगी। राजा ने कहा, "यह बधाई उस अजनबी योद्धा और उसकी सेना को मिलनी चाहिए, जिनकी वज़ह से हमारी ज़ीत हुई है।" राजकुमारी ने पूछा कि वह योद्धा कौन है ? लेकिन राजा बता पाने में असमर्थ था, क्योंकि वह स्वयं नहीं जानता था। राजकुमारी ने माली से लड़के के बारे में पूछा तो उसने हँसकर ज़वाब दिया, "वह अभी-अभी तीन टाँगों वाले घोड़े पर सवार वापस लौटा है।" अन्य लोग भी लड़के का मज़ाक़ उड़ाने लगे। उनमें से किसी ने लड़के से पूछा कि युद्ध के दौरान वह कहाँ छिपा था। लड़के ने जवाब दिया, "मैं जो कुछ कर सकता था, मैंने किया

और मेरे सहयोगियों के बिना आप लोग युद्ध में जीत नहीं पाते।" उसकी यह बात सुनकर उसका और मज़ाक़ उड़ाया जाने लगा।

कुछ दिन बाद राजा अपनी बेटी से बोला, "जीत की ख़ुशी में मैं एक महोत्सव का आयोजन करने वाला हूँ, जो तीन दिनों तक चलेगा। तुम इसमें रोज़ एक सुनहरा सेब उछालोगी, जिसे पकड़ने के लिए शायद वह अनजबी योद्धा सामने आ जाएगा।"

जैसे ही महोत्सव की घोषणा की गई, राजकुमार जंगल में पहुँचा और लौह मानव को पुकारने लगा। "तुम्हें क्या चाहिए।" आदमी ने उसके सामने आकर पूछा। राजकुमार बोला, "मैं उस सेब को पकड़ना चाहता हूँ।"

"तुम उसे पकड़ लोगे, परन्तु तुम वहाँ लाल रंग का कवच पहनकर एक शानदार भूरे रंग के घोड़े पर सवार होकर जाना।" जब वह दिन आया तो लड़का अन्य योद्धाओं के बीच जाकर बैठ गया और उसे कोई पहचान नहीं पाया। राजकुमारी अपनी जगह से उठी उसने सेब को हवा में उछाला, जिसे लाल कवचवाले योद्धा ने लपक लिया। दूसरे दिन लौह मानव ने उसे सफ़ेद कवच पहनाकर एक लाल घोड़े पर वहाँ भेजा। इस बार भी वह सेब को पकड़ने में क़ामयाब रहा। अन्य योद्धा अपनी असफलता पर खीझ रहे थे। योद्धा सेब को लपक कर वहाँ से भाग गया, जिससे राजा काफ़ी ग़ुस्सा हुआ। वह ग़ुस्से में बोला, "यह उचित नहीं है। उसे मेरे सामने आकर अपना नाम बताना चाहिए।" राजा ने आदेश दिया कि कल अगर सेब को लपककर योद्धा सामने नहीं आता है तो उसका पीछा किया जाएगा और अगर वह अपनी इच्छा से वापस नहीं आए तो उसे मार डाला जाए। तीसरे दिन लौह मानव ने उसे काला कवच और एक काला घोड़ा दिया। जब सेब को उछाला गया तो काले कपड़ोंवाले योद्धा ने इसे लपक लिया और अपने घोड़े पर सवार होकर भागने लगा। राजा के आदमी उसका पीछा करने लगे। पीछा करते हुए उनमें से एक आदमी काले योद्धा के काफ़ी समीप पहुँच गया और उसने अपनी तलवार से उसे घायल कर दिया। घायल होने पर भी वह भाग निकला, परन्तु इस दौरान उसका घोड़ा इतने ज़ोर से उछला कि उसके सिर पर पड़ी टोपी नीचे आ गिरी और उसके सुनहरे बाल दिखने लगे। योद्धाओं ने लौटकर यह बात राजा को बतायी।

इस घटना के दूसरे दिन राजकुमारी ने माली से लड़के के बारे में पूछा। माली बोला, "वह बग़ीचे में काम कर रहा है। वह भी महोत्सव में शामिल था और कल शाम घर वापस आकर उसने मेरे बच्चों को तीन सुनहरे सेब दिये, जो उसने महोत्सव में जीते थे।" राजा को जब इस बात का पता चला तो उसने लड़के को अपने

पास बुलाया। लड़का हमेशा की तरह अपने सिर पर टोपी पहनकर राजा के पास पहुँचा। राजकुमारी ने उठकर उसके सिर से टोपी उतार ली, जिससे उसके सुनहरे बाल कन्धे पर लहराने लगे और वह अत्यन्त सुन्दर दिखाई देने लगा। वह इतना सुन्दर दिख रहा था कि वहाँ उपस्थित सारे लोग आश्चर्य से उसे देखते ही रह गए। "क्या तुम ही वह योद्धा हो, जिसने अलग-अलग रंग के कपड़ों में महोत्सव में शामिल होकर तीनों सुनहरे सेब जीते थे ?" राजा ने सवाल किया। "हाँ और ये रहे वे सेब," लड़के ने कहा। "आपको अगर कोई और सबूत चाहिए तो मैं आपको अपना घाव दिखा सकता हूँ, जो भागते समय आपके योद्धाओं के द्वारा घायल कर दिये जाने का प्रमाण है। मैं ही वह योद्धा हूँ, जिसने आपकी युद्ध में मदद की थी।"

"अगर तुम यह सब कर सकते हो तो तुम माली के बेटे नहीं हो सकते। तुम्हारा पिता कौन है ?" राजा ने पूछा।

"मेर पिता एक महान राजा हैं।" लड़के ने कहा।

"मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, इसलिए तुम मुझसे जो भी माँगोगे, तुम्हें मिलेगा।" राजा ने कहा।

"आप अपनी बेटी से मेरी शादी कर दें।" लड़के ने जवाब दिया। राजकुमारी यह सुनकर हँसने लगी और बोली, "यह झूठ नहीं बोल रहा। इसके सुनहरे बालों को देखकर मैं पहले से यह जानती थी कि यह माली का बेटा नहीं है।" इसके साथ ही राजकुमारी उठकर लड़के के पास गई और उसे चूम लिया।

शादी धूमधाम से हुई और इसमें राजकुमार के माता-पिता भी आए। उन्होंने उसे दुबारा देख पाने की आशा बहुत पहले त्याग दी थी, क्योंकि जब वह काफ़ी खोजने पर भी नहीं मिला था तो उन्होंने मान लिया था कि वह जीवित नहीं है।

जब भोज चल रहा था तो अचानक सुरीले संगीत के साथ एक गर्वीले राजा ने प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे ढेर सारे नौकर चल रहे थे। वह चलता हुआ राजकुमार के पास पहुँचा और उसे अपने सीने से लगाकर बोला, "मैं लौह मानव हूँ, जिसके क्रूर स्वभाव को तुमने अपने भोलेपन से बदल दिया। मैंने जो ख़ज़ाना जमा किया था, उसे मैं तुम्हें भेंट करता हूँ।"

20

विश्वासपात्र जॉन

किसी समय में एक बूढ़ा राजा था। वह एक बार बहुत बीमार पड़ गया। यह सोचकर कि वह अपनी मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ है, वह बोला, "विश्वासपात्र जॉन को मेरे पास लाओ।" जॉन उसका प्यारा नौकर था और राजा उसे इस नाम से इसलिए बुलाता था, क्योंकि वह जीवन भर राजा के प्रति सच्चा और ईमानदार बना रहा था। जैसे ही जॉन राजा के पंलग के पास आया राजा उससे बोला, "मेरे विश्वासपात्र जॉन, मुझे लग रहा है कि मेरा अन्त आ गया है। मुझे अपने बेटे के सिवाय किसी और की कोई चिन्ता नहीं है। वह अभी छोटा है और हमेशा सही रास्ते का चुनाव नहीं कर सकता। उसे जो कुछ भी जानना चाहिए, वह सब उसे बताने और उसके अभिभावक बनने का वचन जब तक तुम मुझे नहीं दोगे, मैं शान्ति से मर नहीं सकूँगा।" इस पर जॉन ने कहा, "मैं उसका साथ कभी नहीं छोडूँगा। और हमेशा सच्चे मन से उसकी सेवा करता रहूँगा, चाहे इसमें मेरी जान भी चली जाए।" यह सुनकर राजा को कुछ सांत्वना मिली और वह बोली, "अब मैं शान्ति से मर सकूँगा। मेरी मृत्यु के बाद तुम उसे महल के सारे कमरे, हॉल और तहख़ाने दिखा देना, जहाँ सारा ख़ज़ाना रखा हुआ है। लेकिन भूलकर भी उसे लम्बे गलियारे का आख़िरी कमरा मत दिखाना, क्योंकि उसमें स्वर्ण महल के राजा की बेटी का चित्र लगा हुआ है। यदि वह उसका चित्र देख लेगा तो उसके मन में राजकुमारी के प्रति प्रेम जाग जाएगा। वह बेहोश हो जाएगा। इस प्रेम के कारण उसे गम्भीर संकट का सामना करना पड़ेगा, इसलिए तुम उसे इस कमरे से दूर रखना।" विश्वासपात्र जॉन ने अपने स्वामी को वचन देने के लिए उसका हाथ धीरे-से दबाया। राजा ने आश्वस्त होकर तकिये पर सिर रखा और उसकी मृत्यु हो गई।

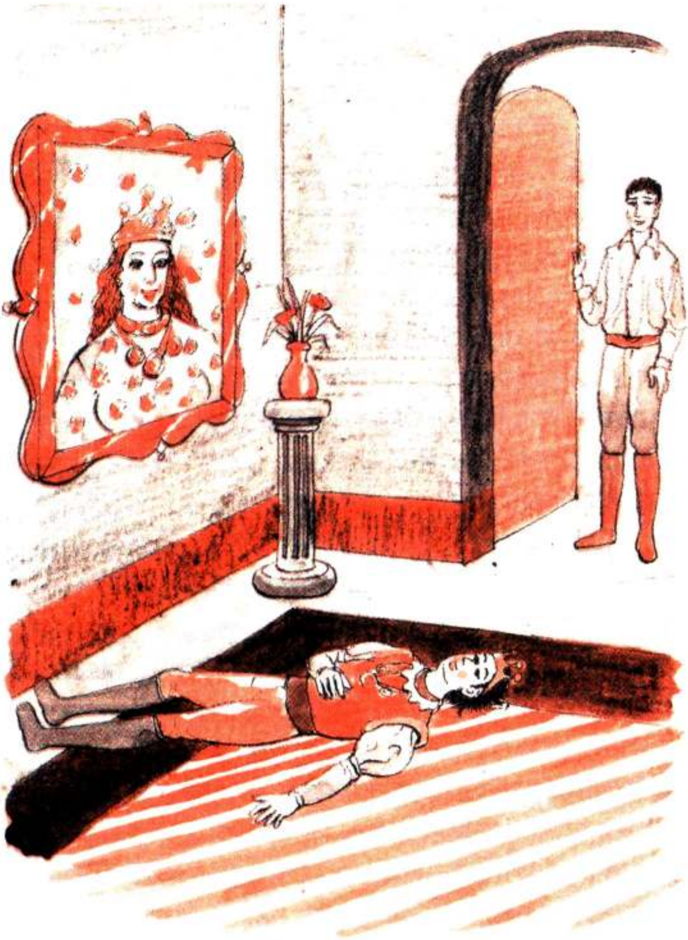
राजा को दफ़ना दिये जाने के बाद विश्वासपात्र जॉन ने वह सब बात नये राजा को बता दी जो मृत्युशय्या पर लेटे राजा ने उससे कही थी। वह बोला, "ये सारी

बातें मैं ज़रूर पूरी करूँगा। मैं आपके प्रति भी उतना ही सच्चा बना रहूँगा, जितना कि मैं पिछले राजा के प्रति था, चाहे इसमें मेरी जान भी चली जाए।" जब शोक की अवधि समाप्त हो गई तो जॉन ने नये राजा से कहा, "अब आपके लिए अपनी विरासत देखने का समय आ गया है। मैं आपको आपका पैतृक महल दिखाता हूँ।" इस तरह वह राजा को सीढ़ियों से ऊपर और नीचे ले जाकर महल की भव्यता और सारे सुसज्जित कमरे दिखाने लगा। लेकिन एक कमरा उसने नये राजा के सामने नहीं खोला। इसी कमरे में मुसीबत लानेवाला वह चित्र रखा हुआ था और वह रखा भी इस प्रकार से था कि दरवाज़ा खोलते ही बिलकुल सामने नज़र आता था। वह चित्र इतना बढ़िया बना हुआ था कि उसमें बनायी गई आकृति साँस लेते हुए और चलती-फिरती सी मालूम होती थी। संसार में शायद ही कोई दूसरी चीज़ इतनी जीवन्त और सुन्दर रही होगी। युवा राजा ने देखा कि विश्वासपात्र जॉन हमेशा एक दरवाज़ा दौड़कर आगे बढ़ जाता था। इसलिए उसने पूछा, "तुम इस दरवाज़े को क्यों नहीं खोलते ?" जॉन बोला, "इसके अन्दर कुछ ऐसा है, जिससे आप भयभीत हो जाएँगे ?"

लेकिन राजा ने कहा, "इसके सिवा मैंने सारा महल देख लिया है और मैं यह जानकर रहूँगा कि इसके अन्दर क्या है।" राजा जाकर इसके दरवाज़ों को बलपूर्वक खोलने लगा। विश्वासपात्र जॉन ने राजा को पीछे खींच लिया और बोला, "आपके पिता को मरने से पहले मैंने वचन दिया था कि इस कमरे के अन्दर रखी चीज़ को मैं आपको देखने नहीं दूँगा, क्योंकि यह आपके और मेरे दोनों के ऊपर भारी मुसीबतें लायेगी।"

युवा राजा ने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यदि मैं अन्दर नहीं जाऊँगा तो मेरा विनाश ज़रूर हो जाएगा। मुझे दिन या रात तब तक चैन नहीं मिलेगा, जब तक मैं इससे अपनी आँखों से न देख लूँ। अब मैं इस जगह से तब तक नहीं हिलूँगा, जब तक कि तुम यह दरवाज़ा नहीं खोल देते।"

जब विश्वासपात्र जॉन ने देखा कि बातों से कुछ भी नहीं होगा तो उसने आहें भरते हुए बड़े भारी दिल से बड़े गुच्छे से एक चाभी निकाली। दरवाज़ा खोलकर वह यह सोचकर जल्दी से अन्दर घुसा कि राजा को देखने से पहले वह चित्र को ढँक देगा। लेकिन उसका ऐसा करना बेकार हो गया, क्योंकि राजा ने अन्दर घुसते ही अपनी एड़ियों पर उचककर चित्र को देख लिया। राजकुमारी का चित्र क़ीमती पत्थरों से जड़ा हुआ इतना सुन्दर लग रहा था कि राजा उसे देखते ही बेहोश होकर गिर पड़ा। विश्वासपात्र जॉन ने तुरन्त राजा को उठाया और बिस्तर पर ले जाकर लिटा दिया। वह बड़ी चिन्ता में डूबा था। वह सोचने लगा, "भगवान, हम पर



दया करो ! आख़िर अनहोनी होकर ही रही। जाने अब क्या होगा ?" उसने राजा को एक दवा पिलायी, जिससे वह थोड़ी देर में होश में आ गया। राजा ने सबसे पहले यही पूछा, "उस चित्र में वह सुन्दर लड़की कौन है ?" जॉन बोला, "वह स्वर्ण महल के राजा की बेटी है।"

राजा बोला, "उसे मैं इतना प्यार करने लगा हूँ कि अगर पेड़ के सारे पत्तों को बोलना आ जाए तो वे सभी मेरे प्यार के विरोध में कुछ नहीं कह पाएँगे। मेरे जीवन का लक्ष्य अब उसकी खोज होगा। तुम मेरे विश्वासपात्र जॉन हो, इसलिए तुम मेरे साथ ही चलोगे।

इस काम को कैसे शुरू किया जाए इस बारे में भरोसेमन्द नौकर ने बहुत देर तक सोच-विचार किया, क्योंकि राजा की बेटी तक पहुँचना बहुत ही मुश्किल था। अन्त में उसे एक उपाय सूझा और वह राजा से बोला, "उसके आसपास जो भी चीज़ें हैं कुर्सियाँ, मेज़ें, प्यालियाँ, कटोरियाँ तथा घरेलू बर्तन—हर चीज़ सोने की बनी है। आपके ख़ज़ाने में पाँच टन सोना रखा हुआ है। आप अपने राज्य के किसी सुनार से हर प्रकार के बर्तन, विभिन्न प्रकार के पक्षी, जंगली और अद्‌भुत जीव तैयार करवा लें, जिन्हें देखकर वह प्रसन्न हो जाए। इसके बाद ये सारी चीज़ें लेकर हम सफ़र पर निकल जाएँगे और अपनी किस्मत आजमाएँगे। राजा ने अपने सभी सुनारों को बुलवाया, जो कि दिन-रात काम में लग गए और उन्होंने ढेर सारी सुन्दर चीज़ें तैयार कर दीं। जब सारा सामान जहाज़ पर रख दिया गया तो विश्वासपात्र जॉन और राजा ने व्यापारी की तरह कपड़े पहन लिये ताकि सफ़र में उन्हें कोई पहचान न सके। इसके बाद उन्होंने विशाल सागर में अपना सफ़र शुरू कर दिया। वे अपने जहाज़ में तब तक बढ़ते रहे जब तक उस शहर में नहीं पहुँच गए, जहाँ पर स्वर्ण महल के राजा की बेटी रहती थी।

विश्वासपात्र जॉन ने राजा को जहाज़ में ही रहकर उसका इन्तज़ार करने के लिए कहा। वह राजा से बोला, "उम्मीद है कि मैं राजा की बेटी को साथ लेकर आऊँगा। इसलिए आप देखियेगा कि यहाँ सब कुछ क़रीने से रखा हो। सोने के सब बर्तन निकालकर जहाज़ को सज़ा लीजियेगा।" जॉन सोने के कुछ प्याले एक तौलिए में लपेटकर ज़मीन पर उतरा और सीधे राजा के महल की ओर चल दिया। जब वह महल के प्रांगण में पहुँचा तो उसने एक सुन्दर लड़की को नाले के पास देखा। उसके हाथ में सोने की दो बाल्टियाँ थीं, जिससे वह पानी भर रही थी। जब वह बाल्टियों में पानी भरकर मुड़ी तो उसने एक अपरिचित व्यक्ति को देखा। जॉन ने उससे कहा, "मैं एक व्यापारी हूँ। फिर अपने तौलिए से सोने की चीज़ें निकालकर उसने उसे दिखलायीं। लड़की ख़ुश होकर बोली, "वाह ! सोने की कितनी सुन्दर चीज़ें हैं।" बाल्टी नीचे रखकर वह प्यालों को एक-एक करके देखने लगी और बोली, "राजा की बेटी को ये सारी चीज़ें ज़रूर दिखानी चाहिए। सोने की बनी चीज़ें देखकर वह बहुत ख़ुश होती है। वह ये सारा सामान अवश्य ख़रीद लेगी।"

और वह उसका हाथ पकड़कर उसे राजकुमारी के पास अन्दर ले जाने लगी। दरअसल वह राजकुमारी की निजी सेविका थी। जब राजकुमारी ने सोने के बने प्याले देखे तो वह बहुत ख़ुश हुई वह बोली, "इनमें इतनी बारीक कारीगरी की गई है कि मैं इन सबको ख़रीद लूँगी।" इस पर विश्वासपात्र जॉन बोला, "मैं तो एक धनी व्यापारी का बस सेवक मात्र हूँ। जहाज़ में मेरे स्वामी के पास जो कुछ भी है, उसकी तुलना में यहाँ मेरे पास कुछ भी नहीं है और जो भी है, उसके जैसा सोने का बारीक और महँगा काम आज तक किया ही नहीं गया है।" राजकुमारी ने इच्छा प्रकट की कि वह सारा सामान उसके सामने लाया जाए। जॉन बोला, "इसमें तो बहुत दिन लग जाएँगे और सामान भी इतना अधिक है कि आपके महल में उन्हें रखने के लिए उतने हॉल नहीं है।" राजकुमारी की जिज्ञासा और देखने की लालसा बलवती हो उठी और अन्त में वह बोली, "मुझे जहाज़ पर ले चलो। तुम्हारे स्वामी के ख़ज़ाने को देखने के लिए मैं ख़ुद जाऊँगी।"

विश्वासपात्र जॉन बहुत ख़ुश होकर राजकुमारी को जहाज़ पर ले आया। राजा ने जब राजकुमारी को देखा तो वह यह देखकर दंग रह गया कि चित्र की सुन्दरता से उसकी असली सुन्दरता बहुत अधिक बढ़कर थी। उसे ऐसा लगा जैसे उसका दिल बड़ी ज़ोर-से उछलकर बाहर आ जाएगा। जहाज़ पर चढ़ने के बाद राजकुमारी को तो राजा नीचे लेकर चला गया, लेकिन विश्वासपात्र जॉन जहाज़ की छत पर जहाज़ चालक के पास ही खड़ा रहा। उसने उसे जहाज़ को खोलने और सभी पाल तैयार करने के लिए कहा, ताकि हवाओं के साथ जहाज़ पूरी तेज़ी से आगे बढ़ सके। इसी बीच राजा ने राजकुमारी को सोने का अपना पूरा ख़ज़ाना प्याले-थालियाँ, कटोरियाँ, पक्षी, जंगली और अद्‍भुत जीव सब कुछ दिखा दिया। इन सभी चीज़ों को देखते हुए राजकुमारी को कई घण्टे बीत गए और अपनी ख़ुशी में वह यह भी न जान पाई कि जहाज़ लगातार बढ़ता चला जा रहा है। उसने अन्तिम चीज़ देखकर व्यापारी को धन्यवाद दिया और जाने के लिए तैयार हो गई। जैसे ही वह जहाज़ की छत पर आई तो उसने देखा कि जहाज़ तट से बहुत दूर खुले समुद्र में तेज़ी से बढ़ रहा है ओर उसके सारे पाल बँधे हुए हैं। वह भयभीत हो गई और बोली, "हे भगवान मुझे धोखा दिया गया है। एक अनजान व्यापारी मुझे भगाकर ले जा रहा है। इससे तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।"

राजा ने तुरन्त उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, "मैं व्यापारी नहीं, बल्कि एक राजा हूँ। जन्म और वंश के अनुसार मैं तुम्हारे बराबर का हूँ। यह सच है कि मैं तुम्हें भगाकर ले जा रहा हूँ, लेकिन मैंने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि मैं

तुम्हें अपने प्राणों से भी बढ़कर प्यार करता हूँ। क्या तुम्हें मालूम है कि जब मैंने तुम्हारा सुन्दर चेहरा देखा तो मैं उसके सामने बेहोश होकर गिर पड़ा था ?" जब राजकुमारी ने यह सुना तो वह आश्वस्त हो गई। वह अपने दिल में राजा के प्रति लगाव महसूस करने लगी और ख़ुशी से उसकी रानी बन गई। गहरे समुद्र में यात्रा करते हुए विश्वासपात्र जॉन एक बार जहाज़ की छत पर बैठा कोई वाद्ययंत्र बजा रहा था कि उसने देखा कि तीन कौए हवा में उड़ते हुए जहाज़ की ओर आ रहे हैं। उसने बजाना बन्द कर दिया और ध्यानपूर्वक सुनने लगा कि वे एक-दूसरे से क्या कह रहे हैं, क्योंकि वह उनकी बोली अच्छी तरह समझ लेता था।

उनमें से पहला कौआ बोला, "देखो, यह स्वर्ण महल के राजा की बेटी को घर लिये जा रहा है।"

दूसरा बोला, "लेकिन अभी वह घर नहीं पहुँचा।"

तीसरा बोला, "लेकिन वह उसकी हो गई है। जहाज़ में वह उसकी बग़ल में बैठी हुई है।" इसके बाद पहला कौआ फिर बोल उठा, "तो क्या हुआ ? जब वे तट पर पहुँचेंगे तो लोमड़ी के रंग का एक घोड़ा उनकी ओर झपटेगा, जिस पर वह चढ़ जाएगा। उसके चढ़ते ही घोड़ा उछलकर हवा में गुम हो जाएगा और फिर वह अपनी दुल्हन को दोबारा नहीं देख पायेगा।"

दूसरे कौए ने पूछा, "क्या इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है ?"

पहले ने जवाब दिया, "रास्ता तो है, यदि तुरन्त कोई दूसरा आदमी घोड़े पर उसके पीछे चढ़कर बन्दूक से घोड़े को मार दे, तभी युवा राजा को बचाया जा सकता है। लेकिन इस बात का किसको पता है ? और यदि कोई इस बात को जानता भी हो और उसे बताये भी तो वह व्यक्ति पाँव से लेकर घुटने तक पत्थर का हो जाएगा।"

दूसरा कौआ फिर बोला, "मुझे और भी कुछ पता है। यदि घोड़े को मार भी डाला जाए तो भी वह रानी के साथ नहीं रह पायेगा, क्योंकि जब वे महल में प्रवेश करेंगे तो वहाँ एक थाल में दूल्हे की शादी की पोशाक रखी होगी। वह देखने में तो सोने और चाँदी की बुनी हुई मालूम देगी, लेकिन वास्तव में वह गन्धक और तारकोल के सिवा कुछ नहीं होगा। यदि वह इसे पहन लेगा तो वह उसकी ख़ाल और हड्डियों तक को जला डालेगी।"

इसके बाद तीसरे कौए ने पूछा, "क्या मुक्ति की कोई राह नहीं है ?"

दूसरा बोला, "रास्ता है, यदि कोई व्यक्ति दस्ताने पहनकर पोशाक को उठाकर आग में फेंक देगा और वह पोशाक जल गई तो युवा राजा को बचाया जा सकता

है। लेकिन इसका क्या लाभ ? जिसे भी इस बात का पता होगा और वह उसे बतायेगा तो वह व्यक्ति घुटने से लेकर दिल तक पत्थर का हो जाएगा।"

इसके बाद तीसरा कौआ बोला, "मुझे कुछ और भी पता है। यदि दूल्हे की विवाह की पोशाक जला भी दी जाए तो भी युवा राजा अपनी रानी के साथ नहीं रह पायेगा। यदि विवाह के बाद नृत्य का आयोजन किया जाता है और रानी उसमें नाचती है तो वह अचानक पीली पड़ जाएगी और बेजान की तरह गिर पड़ेगी। ऐसे में जब कोई उसे उठाकर उसकी दायीं छाती से तीन बूँद रक्त निकालकर वहीं फेंक देगा तो वह बच जाएगी। लेकिन जो कोई भी यह जानता हो और उसे बतायेगा वह व्यक्ति सिर से पाँव तक पत्थर का हो जाएगा।"

इस प्रकार एक-दूसरे से बातचीत करने के बाद कौए वहाँ से उड़कर चले गए, लेकिन उनकी कही हर बात सुन लेने के कारण विश्वासपात्र जॉन उसी पल से मौन और उदास हो गया। उसने जो कुछ भी सुना था, यदि वह अपने स्वामी से छिपाता तो उसके स्वामी पर विपत्ति आती और यदि वह सब कुछ बता देता तो उसे अपना जीवन बलिदान करना पड़ता। लेकिन अन्त में उसने सोचा, "मैं अपने स्वामी को बचाऊँगा, चाहे मुझे इसके लिए ख़ुद को ही क्यों न बर्बाद करना पड़े।"

जब वे लोग किनारे पहुँचे तो वैसा ही हुआ जैसा कौए ने पहले ही कह रखा था। लोमड़ी जैसे लाल रंग का एक बहुत बड़ा घोड़ा उछलकर सामने आ गया। राजा बोला, "वाह ! यह मुझे मेरे महल तक ले जाएगा।" और उस पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। लेकिन विश्वासपात्र जॉन वहाँ तीर की तरह आया और फुर्ती से बन्दूक़ निकालकर उसने घोड़े पर गोली चला दी। राजा के अन्य नौकर, जो जॉन से जलते थे, कहने लगे, "इतना सुन्दर घोड़ा, जो राजा को महल में पहुँचा सकता था, उसे मार डालना कितनी शर्मनाक बात है।" लेकिन राजा बोला, "चुप रहो और उसे जाने दो। वह मेरा अत्यन्त विश्वासपात्र जॉन है—किसे मालूम है, हो सकता है उसने कुछ अच्छा ही किया हो ?" अब वे महल के अन्दर गए। वहाँ एक बड़ा थाल रखा था, जिसमें दूल्हे की एक भव्य पोशाक रखी थी, जो देखने में सिर्फ़ सोने और चाँदी की बनी हुई लग रही थी। राजा उसके पास गया और उसे उठाने ही जा रहा था कि विश्वासपात्र जॉन ने राजा को धक्का दे दिया। हाथों में दस्ताने पहनकर उसने ख़ुद उस पोशाक को उठाकर आग में डाल दिया। पोशाक को जलता देखकर अन्य नौकरों में भी फुसफुसाहट शुरू हो गई और वे कहने लगे, "देखो, अब वह महाराज की शादी की पोशाक जला रहा है।" लेकिन राजा बोला,

''किसे पता है कि उसने क्या अच्छाई की है ? उसे जाने दो—वह मेरा विश्वासपात्र जॉन है।''

शादी हो जाने के बाद एक भव्य नृत्य का आयोजन किया गया। जिसमें दुल्हन ने भी नाचना शुरू कर किया। विश्वासपात्र जॉन अत्यन्त ध्यानपूर्वक दुल्हन की मुखाकृति को देखने लगा। अचानक ही उसका रंग पीला पड़ गया और वह मुर्दे के समान ज़मीन पर गिर पड़ी। वह फुर्ती से उठा और रानी को उठाकर एक कमरे में ले गया। वहाँ उसने उसे लिटा दिया और घुटनों के बल उसके पास बैठ गया। उसकी दायीं छाती से रक्त की तीन बूँदे खींचकर उसने उन्हें फेंक दिया। थोड़ी देर में वह फिर से सांस लेने लगी और उठकर खड़ी हो गई। लेकिन राजा ने सब कुछ देख लिया था। राजा यह नहीं समझ पाया कि विश्वासपात्र जॉन ने ऐसा क्यों किया है, इसलिए वह बहुत ग़ुस्सा हो गया और गरजकर बोला, ''इसे कारागार में डाल दो !'' अगली सुबह उसे कारागार से निकालकर फाँसी के तख़्ते पर लाया गया। उसे फाँसी लगाई ही जा रही थी कि वह बोला, ''मौत की सज़ा पाने वाले हर व्यक्ति को अपनी मौत से पहले एक बार बोलने का अधिकार होता है, क्या मुझे भी वह अधिकार दिया जाएगा ?'' राजा बोला, ''ठीक है, बोलो।'' इसके बाद जॉन बोला, ''मेरा न्याय सच्चे ढंग से नहीं किया गया है, जबकि मैं आपके प्रति हमेशा सच्चा बना रहा हूँ।'' और इसके बाद उसने जहाज़ पर बैठे हुए, कौओं की जो बातचीत सुनी थी, वह पूरा सुना दिया और बोला कि उसने जो कुछ भी किया, वह अपने स्वामी को बचाने के लिए मजबूर होकर किया था। यह सुनकर राजा बोल उठा, ''ओ मेरे विश्वासपात्र जॉन, क्षमा करो। इसे मुक्त कर दो।'' लेकिन अन्तिम शब्द बोलते ही विश्वासपात्र जॉन पत्थर का होकर भूमि पर गिर चुका था।

यह देखकर राजा और रानी दोनों ही गहरे शोक में डूब गए और राजा सोचने लगा, 'हे भगवान ! मैंने उसकी महान स्वामिभक्ति के बदले उसे कितनी दुष्टतापूर्वक पुरस्कृत किया है।' राजा ने उसकी पत्थर की मूर्ति को उठवाकर अपने शयनकक्ष में पलंग के पास रखवा लिया। जब-जब राजा उसकी मूर्ति को देखता, वह रो-रोकर कहता, ''विश्वासपात्र जॉन, काश मैं तुम्हें दुबारा जीवित कर सकता।''

कुछ समय बीतने के बाद रानी ने दो जुड़वाँ बेटों को जन्म दिया, जो उसकी आँख के तारे बन गए। एक बार रानी चर्च गई हुई थी और दोनों बच्चे पिता के पास खेल रहे थे। राजा की दृष्टि पत्थर की मूर्ति पर पड़ी तो आह भरते हुए अत्यन्त दुख के साथ वह बोला, ''मेरे विश्वासपात्र जॉन, काश मैं तुम्हें दुबारा जीवित

कर पाता !" राजा के ऐसा कहते ही मूर्ति बोलने लगी, "तुम मुझे दुबारा ज़िन्दा कर सकते हो, अगर तुम मुझ पर अपनी सबसे प्यारी चीज़ अर्पित कर दो।" राजा बोला, "संसार में मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब मैं तुम्हें दे दूँगा।" मूर्ति दुबारा बोली, "यदि तुम अपने हाथों से अपने दोनों बेटों का सिर काट दो और उसका रक्त मुझ पर छिड़क दो तो मैं दुबारा जीवित हो उठूँगा।" राजा यह सुनकर कि उसे अपने ही हाथों से अपने दोनों प्यारे बेटों का वध करना होगा, अवाक् रह गया। लेकिन फिर राजा को अपने सेवक की महान स्वामिभक्ति और उसका जान की बाज़ी लगा देना याद आ गया। उसने अपनी तलवार निकालकर अपने हाथों से ही अपने दोनों बेटों के सिर काट दिये। जैसे ही उनका रक्त राजा ने मूर्ति के ऊपर छिड़का, उसमें दुबारा जान आ गई। विश्वासपात्र जॉन जीवित होकर सामने आ गया और कहने लगा, "आपका विश्वास यूँ ही बर्बाद नहीं जाएगा।" यह कहते हुए उसने दोनों बच्चों का सिर उनके शरीर पर लगा दिया और घाव के ऊपर उनका ही ख़ून लगा दिया। इसके बाद एक पल में दोनों बच्चे जीवित होकर दुबारा खेलने लगे, मानों कुछ हुआ ही न हो।

बच्चों को जीवित देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो गया और जैसे ही उसने रानी को आते देखा, उसने विश्वासपात्र जॉन और दोनों बच्चों को एक बड़ी अलमारी के अन्दर छिपा दिया। जैसे ही वह अन्दर आई, उसने अपनी रानी से पूछा, "क्या तुमने चर्च में प्रार्थना की थी ?"

रानी बोली, "हाँ, मैंने प्रार्थना की, लेकिन प्रार्थना करते समय भी मैं लगातार विश्वासपात्र जॉन के बारे में ही सोचती रही, जिसे हमारे कारण ऐसी विपत्ति से गुज़रना पड़ा।" इस पर राजा बोला, "प्रिय रानी, हम उसे दुबारा जीवित कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए हमें अपने दोनों बच्चों को गँवाना पड़ेगा, क्योंकि उसे इनकी बलि देनी होगी।"

रानी घबरा गई और भय से पीली पड़ गई लेकिन बोली, "उसकी महान स्वामिभक्ति के बावजूद उसे अपना जीवन गँवाना पड़ा, इसके लिए हम उसके अपराधी हैं।" राजा को यह सोचकर बहुत ख़ुशी हुई कि जैसा वह सोचता है, रानी भी वैसा ही सोचती है। इसलिए उसने अलमारी खोलकर अपने बच्चों और विश्वासपात्र जॉन को बाहर निकाला और बोला, "ईश्वर महान है ! जॉन भी बच गया और हमारे बच्चे भी सुरक्षित हैं।" इसके बाद जो कुछ भी हुआ था, वह सब राजा ने उसे कह सुनाया। उन्होंने जीवन के अन्तिम दिनों तक एक साथ मिलकर सुखपूर्वक जीवन बिताया।

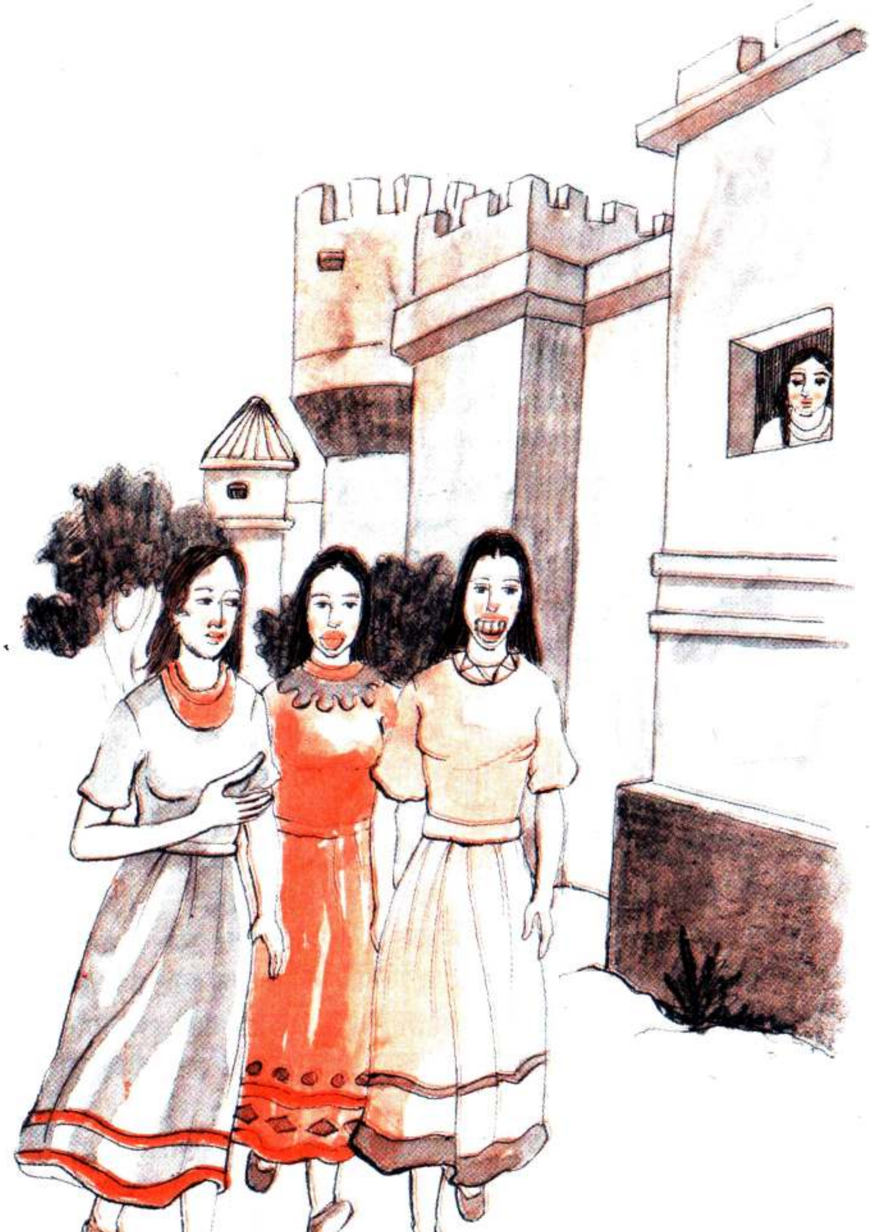
21

तीन औरतें

एक आलसी लड़की थी, जो कभी भी सूत नहीं कातती थी। उसकी माँ चाहे जितना भी डाँट-फटकार करती, लेकिन उससे काम नहीं करवा सकती थी। आख़िरकार तंग आकर एक बार माँ ने ग़ुस्से में आकर अपनी बेटी को ज़ोर से मार दिया। लड़की चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी। उधर से गुज़र रही रानी ने उसकी चिल्लाहट सुन ली। रानी ने अपना रथ रुकवाया।

घर के अन्दर आकर उसने माँ से पूछा कि उसने अपनी बेटी को इस तरह क्यों मारा कि राह से गुज़र रहे राहगीरों को भी उसकी चीख़ें सुनायी पड़ रही हैं। माँ यह सोचकर शर्मिन्दा हुई कि लोगों को बेटी के आलसी होने की बात पता चल जाएगी। इसलिए वह बोली, "मैं कुछ भी करूँ, पर यह सूत कातना छोड़ती ही नहीं; एक बार जो बैठ गई तो फिर कातती ही जाती है। मैं तो इतनी ग़रीब हूँ कि कातने के लिए इतना सूत कहाँ से लाऊँ ?" इस पर रानी बोली, "सूत कातने से अधिक अच्छा मैंने और कुछ भी नहीं सुना। जब कातते समय चरखे के पहिये सन-सन करते हुए घूमते हैं तो उसकी आवाज़ सुनकर मुझे जो ख़ुशी मिलती है, वह और किसी में नहीं मिलती। इसलिए अपनी बेटी को मेरे साथ महल में भेज दो। मेरे पास बहुत सारा सूत पड़ा हुआ है। वह महल में अपनी इच्छानुसार जितना चाहे, सूत कात सकती है।" यह सुनकर माँ दिल ही दिल में बहुत ख़ुश हुई और रानी उसकी लड़की को अपने साथ ले गई।

जैसे ही उन्होंने महल में प्रवेश किया, रानी उसे ऊपर तीन कमरों में ले गई जहाँ ऊपर से नीचे तक अच्छी क़िस्म की रुई भरी हुई थी। रानी ने लड़की से कहा, "उस रुई को तुम मेरे लिए कातो। जब तुम सारा सूत कात लोगी, तब मैं अपने बड़े लड़के के साथ तुम्हारी शादी कर दूँगी। हालाँकि तुम ग़रीब हो, लेकिन इस कारण से मैं तुमसे घृणा नहीं करती। तुम्हारा अथक परिश्रम ही तुम्हारा दहेज



है।" लेकिन लड़की मन ही मन बहुत डर गई थी, क्योंकि सूत इतना अधिक था कि तीन सौ साल की उम्र तक भी यदि वह लगातार सवेरे से रात तक उसे कातती रहती तो भी वह ख़त्म नहीं होता। जब रानी उसे वहाँ छोड़कर चली गईं तो वह रोने लगी। फिर हाथ पर हाथ रखे तीन दिन तक बैठी रही। तीसरे दिन रानी वहाँ आई। उसे यह देखकर कि थोड़ा भी सूत नहीं काता गया है, आश्चर्य करने लगी। माँ का घर छोड़ने के कारण अपने दुख का हवाला देते हुए लड़की ने कहा कि वह अभी काम शुरू ही नहीं कर पायी है। यह सुनकर रानी सन्तुष्ट हो गई, लेकिन जाते समय कह गई, "तुम्हें मेरे लिए कल से काम शुरू कर देना होगा।"

लड़की जब फिर से अकेली रह गई तो वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे और कैसे करे। इसी उधेड़बुन में जाकर खिड़की पर खड़ी हो गई और बाहर देखने लगी। उसने तीन औरतों को वहाँ से गुज़रते हुए देखा। पहली औरत के पाँव चौड़े-चपटे थे। दूसरी औरत का निचला होंठ इतना बड़ा था कि लगभग उसकी ठोढ़ी तक लटक रहा था। तीसरी औरत का अँगूठा बहुत बड़ा था। तीनों औरतें खिड़की के सामने आकर रुक गईं और लड़की से पूछने लगीं कि वह क्या चाहती है। उसने उन्हें अपनी परेशानी बतायी तो वे उसकी मदद करने के लिए तैयार हो गईं। वे बोली, "क्या तुम हमें अपनी शादी में बुलाओगी ? हमारी वजह से शमिन्दा न होकर हमें चाची कहोगी और हमें अपने साथ मेज़ पर बिठाओगी ? अगर तुम यह सब करने के लिए तैयार हो तो हम बहुत कम समय में सारा सूत तुम्हारे लिए कात देंगे।"

इस पर लड़की बोली, "मैं बड़ी ख़ुशी से आपके कहे अनुसार सब कुछ करूँगी। आप लोग अन्दर आइये और तुरन्त काम शुरू कीजिये।" उसने उन्हें अन्दर बुला लिया। तीनों औरतों ने पहले कमरे में थोड़ी-सी जगह ख़ाली की और फिर कातना शुरू कर दिया। उनमें से एक औरत धागा खींचती जाती थी और अपने पाँव से पहिये को चला रही थी, जबकि दूसरी धागे को गीला करती जा रही थी। तीसरी औरत धागे को अपनी उँगलियों से मेज़ पर दबाती जाती थी। जैसे-जैसे वह यह काम कर रही थी, वैसे-वैसे ही धागों का ढेर ज़मीन पर गिर-गिरकर जमा होता जा रहा था। यह धागा सर्वोत्तम क़िस्म का था। लेकिन इन तीनों औरतों को लड़की ने रानी से छिपाकर रखा और वह जब भी आई उसे काता हुआ सूत ही दिखाया। रानी ने उसकी बहुत प्रशंसा भी की। जब पहला कमरा ख़ाली हो गया तो तीनों औरतें दूसरे कमरे में पहुँची और वहाँ का सूत कातकर जल्दी ही तीसरे कमरे में जा पहुँची। इस तरह तीनों कमरों की रुई से उन्होंने बहुत जल्दी सूत तैयार कर

दिया। जाने से पहले वे लड़की से बोलीं, "तुमने जो वचन हमें दिया है, उसे भूल मत जाना। वचन निभाने से तुम्हारा भाग्य चमक उठेगा।"

जब लड़की ने रानी को ख़ाली कमरे और धागों का बड़ा ढेर दिखाया तो रानी ने तुरन्त उसकी शादी कर दी। दूल्हा प्रसन्न था कि उसे इतनी चतुर और परिश्रमी पत्नी मिली और उसने भी लड़की की बहुत प्रशंसा की।

लड़की ने उससे कहा, "मेरी तीन चाचियाँ हैं, जिन्होंने मेरी बहुत सहायता की है। अपने अच्छे दिनों में मैं उन्हें भुलाना नहीं चाहती। इसलिए मुझे उनको शादी में बुलाने और अपने साथ एक ही मेज़ पर बिठाने की अनुमति दीजिये। इस पर रानी और लड़की के दूल्हे ने कहा, "हमें इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ?"

जब दावत शुरू हुई तो तीनों बूढ़ी औरतें ख़ूब सज-धजकर आईं लड़की ने उनका आगे बढ़कर स्वागत किया।

दूल्हा उन्हें देखकर बोला, "अरे ! तुम्हारे इतने कुरूप रिश्तेदार कैसे हो गए ? फिर बड़े पैरों वाली के पास जाकर उसने पूछा, "तुम्हारे पैर इतने चौड़े क्यों हैं ?" वह बोली, "पैरों से पहिये चलाने के कारण !" इसके बाद वह दूसरी औरत के पास गया और उससे पूछा, "तुम्हारे ऐसे लटकते हुए होंठ क्यों हैं ?" वह बोली, "चाटने के कारण !" अब उसने तीसरी औरत से पूछा, "तुम्हारा इतना चौड़ा अँगूठा क्यों है ?" वह बोली, "धागे को दबाने के कारण !" इस पर राजकुमार डर गया और बोला, "तब तो मेरी दुल्हन अब कभी चरखे को नहीं छुएगी।"

और इस प्रकार वह लड़की सूत कातने से हमेशा के लिए आज़ाद हो गई।

22

बारह भाई

एक समय की बात है एक राजा-रानी अपने बारह बेटों के साथ हँसी-ख़ुशी रहते थे। एक दिन राजा ने रानी से कहा, "यदि हमारा होनेवाला तेरहवाँ बच्चा लड़की हो तो उसका वैभव इतना ज़्यादा प्रभावशाली होगा कि ये बारह लड़के मर जाएँगे और यह राज्य उस लड़की का हो जाएगा।" राजा ने तब बारह ताबूत बनवाए और उनमें लकड़ी का बुरादा भरकर एक-एक तकिया रखा और फिर उन ताबूतों को एक कमरे में बन्द कर दिया। उस कमरे की चाभी उसने रानी को दी और उसे किसी से भी इस बारे में कुछ भी बताने के लिए मना कर दिया।

लेकिन माँ पूरे दिन रोती रही। यह देखकर उसका सबसे छोटा बेटा बेंजामिन, जो हमेशा उसके साथ ही रहता था, उससे बोला, "माँ, तुम इतनी दुखी क्यों हो ?" उसने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें नहीं बता सकती मेरे प्यारे बेटे।" लेकिन बेंजामिन तब तक उससे पूछता रहा, जब तक कि उसने उस कमरे का ताला खोलकर—उन बारह ताबूतों को उसे दिखा न दिया। फिर वह बोली, "मेरे प्यारे बेंजामिन, ये ताबूत तुम्हारे पिता ने तुम्हारे और तुम्हारे ग्यारह भाइयों के लिए बनवाये हैं, क्योंकि यदि तुम्हारी बहन पैदा होगी तो तुम सब मारे जाओगे और इनमें दफ़ना दिये जाओगे।" वह बोली, "तो ऐसा करो कि तुम अपने ग्यारह भाइयों के साथ जंगल में चले जाओ। तुममें से एक भाई वहाँ सबसे ऊँचे पेड़ पर चढ़कर महल की मीनार पर नज़र रखे। यदि मेरा तेरहवाँ बच्चा बेटा होता है तो मैं एक सफ़ेद झंडा फहराऊँगी और तुम लोग वापस घर आ सकते हो, लेकिन यदि मेरी बेटी हुई तो मैं लाल झंडा फहराऊँगी, जिसे देखकर तुम जितनी तेजी से भाग सकते हो भाग निकलना। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। हर रात मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगी...जाड़ों में तुम लोगों के लिए सर्दी के लिए और गर्मियों में तुम लोगों को गर्मी से बचाने के लिए।"

उसने सभी बेटों को आर्शीवाद दिया और वे जंगल में निकल पड़े। वे बारी-बारी

से सबसे लम्बे मदार के पेड़ पर चढ़कर महल की मीनार पर नज़र रखने लगे। ग्यारह दिन बीत गए और बारहवें दिन बेंजामिन की बारी आई। उसे एक झंडा दिखाई दिया जो कि सफ़ेद नहीं बल्कि लाल था, ज़िसका मतलब था कि उन्हें अब मरना होगा। जैसे ही बाक़ी भाइयों ने यह सुना, वे बहुत नाराज़ हुए और बोले, "क्या हम एक लड़की के लिए मर जाएँ ? हमें इसका बदला लेना चाहिए और जब भी हमें कोई लड़की मिले, हम उसका ख़ून बहा देंगे।"

फिर वे घने जंगल में चले गए, जहाँ जंगल के बीचोंबीच घने अँधेरे में उन्हें एक छोटी सुन्दर-सी कुटिया ख़ाली दिखाई दी। वे बोले, "हम यहीं रहेंगे। बेंजामिन, तुम सबसे छोटे और सबसे कमज़ोर हो, तुम यहीं रुको। हम खाने के लिए मांस लेकर आते हैं।" वे जंगल में और आगे निकल गए। उन्होंने ख़रगोश, जंगली हिरन के बच्चों, चिड़ियों और कबूतरों का शिकार किया। वहाँ उन्हें इसके अलावा मिल भी क्या सकता था ? इन्हें लेकर वे बेंजामिन के पास आए और उसने उन्हें साफ़ करके पकाया। इस छोटी कुटिया में वे दस साल तक एक साथ रहे और यह समय पलक झपकते ही बीत गया।

रानी की सबसे छोटी-बेटी अब बड़ी हो गई थी। उसका हृदय कोमल था, वह बहुत ही सुन्दर थी और हमेशा अपने माथे पर एक सुनहरा सितारा लगाती थी। एक बार जब बहुत-से कपड़े धोए गए तो उसने बारह भाइयों की क़मीज़ें सूखती देखीं। उसने अपनी माँ से पूछा, "ये बारह क़मीज़ें किसकी हैं, पिताजी के लिए तो ये बहुत छोटी है ?" रानी ने भारी दिल से जवाब दिया, "मेरी बेटी, ये तुम्हारे बारह भाइयों की क़मीज़ें हैं।" राजकुमारी ने पूछा, "मेरे ये बाहर भाई कहाँ हैं ? मैंने तो उनके बारे में कभी सुना भी नहीं।" रानी ने जवाब दिया "ईश्वर ही जानता है कि तुम्हारे भाई कहाँ है। वे इस बड़ी दुनिया में पता नहीं कहाँ भटक रहे हैं।" यह कहते हुए उसने अपनी बेटी को साथ लिया और उस कमरे का ताला खोलकर उसे लकड़ी की छीलन और तकियों वाले बारह ताबूत दिखाये। फिर बोली, "ये ताबूत तुम्हारे भाइयों के लिए बनवाए गए थे, लेकिन वे तुम्हारे पैदा होने से पहले ही चुपचाप दूर चले गए।" फिर उसने अपनी बेटी को सब कुछ बताया। राजकुमारी बोली, "रोओ मत प्यारी माँ, मैं जाकर अपने भाइयों को खोजकर लाऊँगी।" और यह कहकर वह बारह क़मीज़ें लेकर सीधी जंगल में निकल पड़ी। पूरा दिन वह चलती रही और शाम को एक सुन्दर मकान के पास पहुँच गई। वह भीतर गई, जहाँ उसे एक सुन्दर युवक मिला, जिसने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आ रही हो और तुम्हें कहाँ जाना है ?" वह युवक खड़ा होकर उसकी सुन्दरता को, उसके



राजसी कपड़ों को और उसके माथे पर लगे सुनहरे सितारे को देखता रहा। वह बोली, "मैं राजा की बेटी हूँ और अपने बारह भाइयों को खोज रही हूँ। मैं आसमान तक जाकर भी अपने भाइयों को खोज लाऊँगी।" यह कहकर उसने उन्हें भाइयों की बारह क़मीज़ें दिखाईं, जिन्हें देखकर बेंजामिन एक बार में ही समझ गया कि वह उनकी बहन है। वह बोला, "मैं बेंजामिन हूँ, तुम्हारा सबसे छोटा भाई।" यह सुनकर वह ख़ुशी से रोने लगी, बेंजामिन भी रोने लगा। वे प्यार से गले लग गए और उन्होंने एक दूसरे को चूमा। फिर अचानक उसने कहा, "प्यारी बहन, एक बहुत भयानक-सी बात है। हमने तय किया है कि जो भी लड़की हमें मिलेगी, हम उसे मार देंगे, क्योंकि एक लड़की के कारण ही हमें अपना राज्य छोड़ना पड़ा।"

राजकुमारी बोली, "यदि बदले में मेरे भाइयों की जान बच जाए तो मैं ख़ुशी से मर जाऊँगी।"

भाई बोला, "नहीं, तुम नहीं मरोगी। तुम ग्यारह भाइयों के घर आने तक इस टब के नीचे छिप जाओ।" उसने वैसा ही किया। रात होने पर ग्यारह भाई शिकार से लौटे। खाना बना और जैसे ही वे खाने के लिए बैठे उन्होंने पूछा, "क्या ख़बर है ?" बेंजामिन बोला, "क्या तुम्हें नहीं मालूम ?"

वे बोले, "नहीं।" वह फिर बोला, "तुम जंगल में गए थे और मैं घर में ही था, तब भी मुझे तुमसे ज्यादा ख़बर है।"

"सीधे-सीधे कहो।" वे चिल्लाये। उसने फिर कहा "पहले वादा करो कि तुम लोग हमें मिलनेवाली पहली लड़की को नहीं मारोगे।" वे बोले, "ठीक है, हम वादा करते हैं। उसे हम छोड़ देंगे। अब बिना रुके एक साँस में सारी बात बता जाओ।" उसने बताया, "हमारी बहन आई है।" और यह कहकर उसने टब उठा दिया। राजकुमारी उसके नीचे से निकल आई। वह बहुत सुन्दर, नाज़ुक और अपनी राजसी पोशाक और माथे के सुनहरे सितारे की वजह से राजसी लग रही थी। उसे देखकर सभी बहुत ख़ुश हुए और सबने उसे गले लगाकर चूमा।

वह बेंजामिन के साथ घर पर रुककर घर की देख-रेख में उसकी मदद करती और बाक़ी भाई जंगल में जाकर जंगली जानवरों, हिरण, चिड़ियों और कबूतरों का शिकार करके लाते। फिर वह उनको बेंजामिन के साथ मिलकर पकाती। वह जंगल से लकड़ियाँ और सब्ज़ियाँ ढूँढ़कर लाती और सब्ज़ियों को साफ़ करके पकाती और ग्यारह भाइयों के वापस लौटने तक खाना तैयार रहता। वह घर को भी साफ़-सुथरा रखती और बिस्तरों पर सुन्दर और साफ़ चादरें बिछाती। उसके भाई ख़ूब ख़ुश रहते और उनमें एकता भी थी।

एक दिन भाई-बहन ने मिलकर बढ़िया खाना बनाया और बाक़ी भाई लौटकर आए, तब सबने मिलकर खाया-पिया और ख़ुशी मनाई। उस सुन्दर घर से लगे छोटे-से बग़ीचे में बारह लिली के फूल (जिन्हें अफ़्रीकी गेंदा भी कहते हैं) खिले थे। राजकुमारी ने अपने भाइयों को ख़ुश करने के लिए उन्हें देने के लिए बारह फूल तोड़े। लेकिन जैसे ही उसने वे फूल तोड़े, एक-एक करके सारे भाई कौए बन गए और जंगल में उड़ गए और उसी समय घर और बग़ीचा, दोनों ग़ायब हो गए।

और इस तरह बेचारी राजकुमारी घने जंगल में अकेली रह गई। उसने अपने आसपास देखा तो उसे एक बूढ़ी औरत दिखाई दी, जिसने उससे कहा, "मेरी बच्ची, ये क्या किया, तुमने ? तुमने बारह फूलों को क्यों तोड़ लिया ? वे तुम्हारे भाई थे, जो अब कौओं में बदल गए हैं।"

इस पर राजकुमारी ने रोते हुए पूछा, "क्या उन्हें बचाने का कोई रास्ता नहीं ?"

बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "पूरी दुनिया में बस एक ही रास्ता है। लेकिन वह इतना कठिन है कि तुम उन्हें नहीं बचा सकती। तुम्हें सात साल तक गूँगी बने रहना होगा—तुम बोल नहीं सकती, हँस भी नहीं सकोगी और यदि तुमने एक भी शब्द बोला तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी और तुम्हारे बोलते ही तुम्हारे भाई मर जाएँगे।"

राजकुमारी ने मन ही मन कहा, "मुझे पक्का विश्वास है कि मैं अपने भाइयों को ज़रूर बचा लूँगी," वह वहाँ से चली गई और उसने एक लम्बा पेड़ तलाश किया जिस पर बैठकर वह बिना हँसे-बोले सूत कातने लगी।

एक बार एक राजा जंगल में शिकार करने आया, जिसके पास एक बड़ा शिकारी कुत्ता दौड़कर उसी पेड़ के आसपास उछल-उछककर भौंकने लगा, जिस पर राजकुमारी बैठी थी। उसका भौंकना सुनकर राजा वहाँ आया और उसने उस लड़की को देखा। वह उसकी सुन्दरता और उसके माथे पर लगे सुनहरे सितारे से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उस लड़की से शादी करने की इच्छा प्रकट की। इस पर राजकुमारी ने जवाब नहीं दिया। अपना सिर धीरे-से हिलाया। राजा ने पेड़ पर चढ़कर उसे नीचे उतार लिया और उसे घोड़े पर बिठाकर अपने घर ले गया।

शादी बहुत धूमधाम से हुई, लेकिन दुल्हन न तो कुछ बोली और न ही हँसी।

शादी को दो साल बीत गए। अब राजा की माँ ने जो कि एक दुष्ट स्त्री थी, नई रानी को परेशान करना शुरु कर दिया। वह अपने बेटे से कहती, "यह तो एक भिखारी लड़की है, जिसे तुम अपने साथ घर ले आए हो, क्या पता यह हमारे ऊपर क्या जादू-टोना कर रही है ? यदि यह गूंगी है और बोल नहीं सकती, तो कभी हँस भी तो सकती है, लेकिन जो हँसते नहीं उनके दिल में ज़रूर बुराई होती है।" राजा ने पहले इन बातों पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन उसकी बूढ़ी माँ ने उसे यह सब इतनी बार कहा और रानी पर तरह-तरह के आरोप लगाए तो आख़िरकार उसे मानना ही पड़ा और रानी को मृत्युदण्ड की सज़ा सुनाई गई।

अहाते में रानी को जलाने के लिए एक बड़ी-सी चिता बनाई गई। राजा ऊपर खिड़की पर खड़ा आँसू भरी आँखों से यह सब देख रहा था, क्योंकि वह अभी भी अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। अब रानी को उस चिता पर बैठना था। वह बैठी और जैसे ही लाल-लाल लपटें कपड़ों को छूने लगी, उसी समय उन सात सालों के आख़िरी क्षण ख़त्म हो गए। तभी आसमान में फड़फड़ाहट सुनाई दी और बारह कौए उड़ते हुए नीचे उतरे। जैसे ही वे ज़मीन पर उतरे, वैसे ही वे उसके

बारह भाइयों में बदल ग़ए, जिन्होंने उसे बचा लिया था। उन्होंने आग बुझाकर अपनी बहन को बाहर निकाला और उसे गले लगाते हुए चूमने लगे। और अब वह बोल सकती थी, इसलिए उसने राजा को अपने गूँगेपन की और न हँसने की वजह बताई। राजा को जब पता चला कि रानी निर्दोष है तो वह बहुत ख़ुश हुआ और वे हमेशा-हमेशा हँसी-ख़ुशी रहे।

23

पहेली

एक राजकुमार दुनिया देखना चाहता था। इसलिए वह केवल एक वफ़ादार नौकर को साथ लेकर निकल पड़ा। एक दिन वह एक बहुत बड़े जंगल में आ पहुँचा। जब शाम होने लगी और उसे कोई ठहरने की जगह नहीं मिली तो उसे समझ में नहीं आया कि वह रात कहाँ बिताये। ठीक उसी समय उसे एक लड़की दिखाई दी, जो एक छोटी कुटिया की तरफ़ जा रही थी। वह उसके पास गया और देखा कि वह युवा और सुन्दर थी। उसने लड़की से पूछा कि क्या वह और उसका नौकर उसी कुटिया में एक रात काट सकते हैं। लड़की ने दुख से कहा, "हाँ, ज़रूर, लेकिन मैं तुम्हें भीतर जाने की सलाह नहीं दूँगी।" राजकुमार ने कहा, " क्यों नहीं ?" लड़की ने आह भरी और जवाब दिया, "मेरी सौतेली माँ जादू-टोना करती है। वह अजनबियों का ख़याल नहीं करती।"

राजकुमार समझ गया कि वह एक जादूगरनी की कुटिया में आ गया है। लेकिन बाहर बेहद अँधेरा हो गया था और वह अब कहीं और नहीं जा सकता था। वह भीतर चला गया। उसे जरा भी डर नहीं लग रहा था। बूढ़ी औरत एक आराम कुर्सी पर आग के पास बैठी थी और अजनबी को अपनी लाल-लाल आँखों से देख रही थी। वह दोस्ती भरे स्वर में बोली, "नमस्ते, बैठ जाओ और आराम करो।" उसने आग की लपट उकसाई, जिस पर एक छोटे बर्तन में कुछ उबल रहा था। लड़की ने उसे सावधान रहने के लिए और कुछ भी न खाने-पीने के लिए कहा था। वह बूढ़ी औरत एक ख़तरनाक पेय बनाती थी। इसीलिए वे चुपचाप सुबह तक सोते रहे। वे सुबह होने पर चलने के लिए तैयार हुए। राजकुमार घोड़े पर बैठ गया तो बूढ़ी जादूगरनी बोली, "रुको मैं तुम्हें विदाई का पेय लाकर देती हूँ।" जैसे ही वह भीतर गई, राजकुमार चला गया और नौकर, जो अभी जीन ही कस रहा था, पीछे रह गया। वह पेय लेकर वापस आई और बोली, "यह अपने



मालिक के लिए ले जाओ।'' लेकिन उसी क्षण गिलास चटख गया और उसका ज़हर घोड़े पर गिर गया। वह ज़हर इतना तेज़ था कि घोड़ा गिर पड़ा और वहीं मर गया। नौकर अपने मालिक के पीछे दौड़ा और उसे सब कुछ कह सुनाया। लेकिन वह घोड़े की जीन को वहाँ नहीं छोड़ सकता था, इसलिए उसे लेने वापस लौट आया। वहाँ उसने देखा कि मरे घोड़े पर एक कौआ बैठा है और उसे खा रहा है। नौकर ने सोचा, ''क्या पता आज हमें कुछ बेहतर मिलेगा भी या नहीं ?'' और उसने कौए को मारकर उसे साथ में रख लिया। पूरा दिन वे जंगल में चलते रहे, लेकिन जंगल ख़त्म ही न हुआ। रात होने पर उन्हें एक सराय मिली, जिसमें वे चले गए। नौकर ने सराय के मालिक को वह कौआ खाने के लिए पकाने को दिया। लेकिन वे एक चोरों के अड्डे के फँस गए थे। रात में वहाँ बारह डाकू यात्रियों को मारकर उनका सामान लूटने के लिए आए। अपना काम शुरू करने से पहले वे मेज़ पर बैठे और सराय का मालिक और जादूगरनी भी उनके साथ आ बैठे। उन्होंने साथ बैठकर पुलाव खाया, जिसमें उस कौए का मांस भी पड़ा

था। जिस जहर से घोड़ा मरा था, वह थोड़ा-सा कौए के भीतर भी चला गया था। सिवाय सराय-मालिक की लड़की के बाक़ी सब मर गए। वह लड़की ईमानदार थी और इन ख़राब कामों से उसका कोई लेना-देना नहीं था। उसने राजकुमार के लिए दरवाज़ा खोल दिया और उसे ख़ज़ाना दिखाया। लेकिन राजकुमार ने कहा कि वही इसे रख सकती है। राजकुमार अपने नौकर के साथ घोड़े पर बैठकर आगे चल दिया। जब वे दुनिया में बहुत भटक चुके थे तो वे एक शहर में आए। वहाँ एक सुन्दर लेकिन निर्दयी राजकुमारी रहती थी। जिसने घोषणा करवाई हुई थी कि जो भी उसकी पहेली हल कर देगा, वह उससे शादी करेगी। लेकिन यदि राजकुमारी पहेली पहले हल कर लेगी तो उस आदमी का सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। पहेली हल करने के लिए तीन दिन का समय दिया जाता था। लेकिन राजकुमारी इतनी बुद्धिमान थी कि वह हमेशा पहेली पहले हल कर लेती थी। इस तरह नौ उम्मीदवार राजकुमारी के सौन्दर्य से प्रभावित होकर अपनी जान से हाथ धो चुके थे। वह राजकुमारी के पास गया। उसने अपनी पहेली पूछी, "वह क्या है ? एक ने किसी को भी नहीं मारा, फिर भी बारह को मारा।" उसे समझ में नहीं आया, वह सोचती रही और बार-बार सोचती रही, लेकिन समझ नहीं पायी। उसने अपनी पहेली की सारी किताबें भी पढ़ डालीं, लेकिन उनमें भी कुछ न मिला। उसकी बुद्धि उसे जवाब दे रही थी। आख़िरकार उसे एक उपाय सूझा। उसने अपनी नौकरानी को राजकुमार के कमरे में छिपकर उसकी नींद में की जानेवाली बातों के बारे में सुनने के लिए कहा कि शायद वह नींद में बोलकर उस पहेली का भेद खोले। लेकिन राजकुमार का चतुर नौकर उसी जगह पर सोया था। जब राजकुमारी की दासी वहाँ आई तो नौकर ने उसकी लपेटी हुई चादर फाड़ डाली और लकड़ी से हाँककर उसे भगा दिया। दूसरी रात राजकुमारी ने अपनी दूसरी दासी को वहाँ भेजा कि शायद उसे ही कुछ बात सुनाई पड़ जाए, लेकिन नौकर ने उसका शाल खींचकर फेंक दिया और उसे भी लकड़ी से हाँककर वहाँ से भगा दिया। तीसरी रात नौकर ने सोचा कि आज राजकुमार सुरक्षित रहेगा और वह अपने बिस्तर पर ही सोया। उस दिन राजकुमारी ख़ुद आई। उसने काला नक़ाब पहना था। वह उसके पास ही बैठ गई। जब उसने सोचा कि राजकुमार सो रहा है और सपने देख रहा है तो उसकी बातों का जवाब दे देगा। लेकिन राजकुमार जगा हुआ था और वह सब कुछ समझ गया। राजकुमारी ने पूछा, "एक ने किसी को भी नहीं मारा, वह क्या है ?" वह बोला, "एक कौआ जिसने ज़हर वाले मेरे घोड़े को खाया था और उससे मर गया था।" फिर राजकुमारी ने पूछा,

"फिर भी बारह को मारा, वह क्या है ?" "बारह डाकू, जिन्होंने कौए को खाया और उससे मर गए।"

जैसे ही उसे पहेली का हल मालूम पड़ा, वह जाने की कोशिश करने लगी, लेकिन राजकुमार ने उसका शाल इतनी ज़ोर से पकड़ा था कि उसे वह छोड़कर ही जाना पड़ा।

अगली सुबह राजकुमारी ने घोषणा की कि उसे पहेली का हल मिल गया है और हल सुनाने और फ़ैसला देने के लिए बारह निर्णायकों को बुला भेजा। राजकुमार ने पहले उनसे अपनी बात सुनने का अनुरोध किया और बोला, "वह रात में चोरी से मेरे कमरे में आई थी और मुझसे यह हल पूछा था, नहीं तो वह यह हल कभी भी नहीं जान पाती।"

निर्णायक ने पूछा, "इस बात की गवाही कौन देगा ?" तभी नौकर तीन शाल लेकर आया और जब निर्णायकों ने राजकुमारी का काला शाल देखा तो बोल पड़े, "इस शाल को सोने-चाँदी से सजा दो और विवाह की पोशाक तैयार करो।"

24

सफ़ेद साँप

बहुत समय पहले एक राजा था, जिसकी विद्वता की चर्चा पूरी दुनिया में फैली थी। उसे हर बात की जानकारी थी और ऐसा लगता था कि बहुत दबी-छिपी बातों की ख़बर भी हवा उसके पास पहुँचा देती थी। लेकिन उसकी एक बहुत ही अजीब आदत थी–हर दोपहर जब खाने के बाद मेज़ साफ़ कर दी जाती और वहाँ कोई भी न होता, तो उसका विश्वासपात्र नौकर एक ढँकी हुई प्लेट लेकर उसके पास आता। उस नौकर को भी नहीं मालूम होता था कि उस प्लेट में क्या है ? किसी को भी नहीं मालूम होता, क्योंकि राजा कभी भी उस प्लेट को किसी के सामने नहीं खोलता और न ही किसी के सामने उसमें से कुछ खाता। ऐसा बहुत समय तक चला। लेकिन एक दिन नौकर के मन में बहुत उत्सुकता जगी और वह अपने आपको रोक न सका। वह प्लेट अपने कमरे में ले गया। जब उसने सावधानी से अच्छी तरह दरवाज़ा बन्द कर लिया तो उसने प्लेट का ढक्कन खोला और उसे प्लेट में एक सफ़ेद साँप दिखा। उसे देखकर उसके मन में साँप को चखने की इच्छा हुई और उसने एक टुकड़ा काटकर अपने मुँह में डाल दिया। लेकिन अभी अपनी ज़ुबान पर उसने वह टुकड़ा रखा ही था कि उसे खिड़की के पास धीमी-धीमी फुसफुसाहट सुनायी दी। वह पास गया और सुनने लगा और उसने पाया कि दो गौरैया आपस में बातें कर रही थीं। नौकर को साँप का टुकड़ा खाने से पक्षियों और जानवरों की बातें समझने की शक्ति मिल गई थी।

उसी दिन अचानक ऐसा हुआ कि रानी की बेशक़ीमती अँगूठी खो गई। चोरी का शक इसी विश्वासपात्र नौकर पर किया गया। रानी के सारे ज़ेवर यही नौकर सम्भाल कर रखता था। राजा ने उसे अपने सामने बुला भेजा। उसे धमकी दी कि यदि कल तक उसने दोषी व्यक्ति का नाम नहीं बताया तो उसे क़ैद करके उस पर मुक़दमा चलाया जाएगा। नौकर ने अपने बेक़सूर होने की दुहाई दी, लेकिन



कोई लाभ न हुआ। उसकी कोई सुनवाई नहीं हुई। चिन्ता में डूबा, परेशान मन से वह, बचने की कोई तरक़ीब सोचते हुए आँगन की तरफ़ गया। वहाँ पानी की धारा पर बत्तख़ें झुण्ड बनाकर तैर रही थीं और गोपनीय बातें करते हुए अपनी चोंचों से एक-दूसरे को सहला रही थीं। नौकर वहीं खड़ा होकर उनकी बातें सुनने लगा। वे एक-दूसरे को बता रही थीं कि वे कहाँ-कहाँ गईं और उन्होंने क्या-क्या खाया। उनमें से एक बहुत तकलीफ़ से बोली, "मेरे पेट में कुछ कड़ा-कड़ा-सा लग रहा है, क्योंकि जल्दी में मैंने रानी की खिड़की के नीचे पड़ी अँगूठी निगल ली हैं।" नौकर ने तुरन्त उस बत्तख़ की गर्दन पकड़ ली और उसे रसोइए के पास ले जाकर बोला, "इसे तुरन्त काटो, यह ख़ूब मोटी हो गई है।"

रसोइए ने उसे हाथ में उठाकर देखा और बोला, "ठीक है, इसने खूब ठूँस-ठूँसकर खाया है। इसे तो बहुत पहले ही भून देना चाहिए था।" जब रसोइए ने इसको

काटा और उसका पेट खोला तो उसमें 'रानी की अँगूठी' मिली। अब नौकर अपने आपको रानी के सामने बेक़सूर साबित कर सकता था। रानी ने ग़लती से किए जा रहे अन्याय के बदले नौकर को क्षमा कर दिया। साथ ही उसे राजदरबार में सबसे ऊँचे पद पर बिठाने का वादा किया, जिसकी उसे बहुत समय से इच्छा भी थी। लेकिन नौकर ने सब कुछ ठुकराकर केवल एक घोड़े और पैसों की माँग की, क्योंकि वह दुनिया देखना चाहता था। जैसे ही उसकी माँग पूरी हुई, वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। एक दिन वह एक तालाब के पास आया। उसने देखा कि एक सरकण्डे में फँसी तीन मछलियाँ साँस लेने के लिए तड़प रही हैं, हालाँकि यह माना जाता है कि मछलियाँ बोलती नहीं हैं, लेकिन फिर भी वह उनकी तकलीफ़ समझ गया। वे उस तकलीफ़ से जल्दी ही मरने वाली थीं। वह बहुत दयालु था इसलिए वह घोड़े से उतरा और उन्हें छुड़ाकर वापस पानी में डाल दिया। वे ख़ुशी से उछल पड़ीं और पानी से अपने सिर बाहर निकालकर बोलीं, "हम तुम्हारी अहसानमन्द रहेंगी और तुम्हें इसके बदले में कुछ देंगी।" लेकिन वह नौकर घोड़े पर बैठकर आगे चल दिया।

थोड़े समय बाद उसे लगा कि उसे पैरों के नीचे मिट्टी में कुछ सुनाई दे रहा है। उसने सुना तो पाया कि चींटियों का राजा शिकायत करते हुए कह रहा था, "काश ! यह आदमी अपने बड़े-बड़े जानवरों के साथ हमसे दूर रहें। यह देखो, यह भद्दा घोड़ा हमारे लोगों को अपने पैरों के नीचे कितनी निर्दयता से कुचल रहा है।" यह सुनकर वह किनारे की पगडण्डी पर चलने लगा। चींटियों का राजा उससे बोला, "हम तुम्हारे अहसानमन्द रहेंगे और तुम्हें इनाम देंगे।"

वह अब जंगल की ओर चल पड़ा, जहाँ उसे एक कौओं का जोड़ा दिखाई दिया। वे अपने घोंसले के बाहर खड़े अपने बच्चों को बाहर खींच रहे थे। वे चिल्ला रहे थे, "बाहर निकलो मनहूसो ! हम अब तुम लोगों को और नहीं खिला-पिला सकते। अब तुम अपना पेट ख़ुद भरो।" बेचारे बच्चे ज़मीन पर पड़े पंख फड़फड़ाते हुए रो रहे थे, "हम बेचारे बच्चे, हम अपना पेट कैसे पालेंगे, हम तो उड़ भी नहीं सकते। हमारे लिए तो अब भूख से मरना ही बचा है।" नौकर घोड़े से उतरा और उसने अपनी तलवार से अपने घोड़े को मार डाला और उसे नन्हे कौए के बच्चों को खाने के लिए दे दिया। जल्दी ही वे उस पर टूट पड़े और जब उनकी भूख शान्त हुई तो वे चिल्लाए, "हम तुम्हारे अहसानमन्द रहेंगे और ज़रूरत के समय इसका बदला चुकाएँगे।"

अब नौकर को पैदल चलना पड़ रहा था। बहुत दूर चलने के बाद वह एक

बड़े शहर में आ गया, जहाँ सड़कों पर भारी भीड़ और शोर-शराबा था। एक आदमी घोड़े की पीठ पर बैठकर घोषणा करते हुए जा रहा था, "राजकुमारी का विवाह होना है, लेकिन जो भी उनसे विवाह करना चाहता है, उसे एक बहुत कठिन काम करना होगा। यदि वह उसमें सफल नहीं हो पाया तो उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

बहुतों ने इस काम में पहले ही कोशिश की थी, लेकिन कोई सफल नहीं हुआ था और उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया था। लेकिन जब नौकर ने राजकुमारी को देखा तो वह उसकी सुन्दरता से इतना चकाचौंध हो गया कि वह सारे ख़तरों के बारे में भूल गया। वह राजा के सामने आया और राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। उसी समय उसे समुद्र के पास ले जाया गया। उसके सामने समुद्र में एक अँगूठी फेंकी गई। राजा ने उससे कहा कि वह अँगूठी लेकर आए और कहा कि यदि वह बिना अँगूठी लिए बाहर आया तो उसे समुद्र में ही डुबाकर मार दिया जाएगा। सबको उस सुन्दर युवक पर दया आई। उसे समुद्र के किनारे अकेला छोड़ दिया गया। वह किनारे पर खड़ा होकर सोचने लगा कि वह क्या करे तभी उसे अपनी तरफ़ तीन मछलियाँ तैरकर आती हुई दिखाई दीं। ये वही मछलियाँ थीं, जिनकी उसने जान बचाई थी। उनमें से बीच वाली ने अपने मुँह में एक सीपी पकड़ रखी थी, जिसे उसने लाकर किनारे रेत पर युवक के पैरों के पास रख दिया। युवक ने उसे खोला तो सोने की वह अँगूठी उसके भीतर दिखाई दी। ख़ुशी से झूमता हुआ वह अँगूठी लेकर राजा के पास आया। उसे उम्मीद थी कि उसे उसका इनाम मिलेगा। लेकिन घमण्डी राजकुमारी ने जब देखा कि वह उसकी बराबरी के ख़ानदान का युवक नहीं है तो उसे शर्म आई। उसने कहा कि युवक को एक और कठिन काम करना पड़ेगा। वह बग़ीचे में गई और वहाँ घास में दस बोरी ज्वार बिखेर दी और कहा, "उसे यह ज्वार के बीज सुबह सूरज उगने से पहले तक बीनने होंगे। एक दाना भी छूटना नहीं चाहिए।" युवक बग़ीचे में बैठा सोचने लगा कि इतना कठिन काम किस तरह किया जाए। उसे कोई राह नहीं सूझ रही थी। आख़िर वह दुखी होकर वहाँ बैठ गया और सूरज निकलने पर अपनी मौत की राह देखने लगा। लेकिन जैसे ही सूरज की पहली किरणें बग़ीचे में आईं उसे दसों बोरे भरे हुए दिखाई दिये। एक भी दाना नहीं छूटा था। चींटियों का राजा अपनी हज़ारों चींटियों को लेकर रात में आया था और सब अहसानमन्द चींटियों ने मिलकर सारे दानों को बीनकर बोरियों में डाल दिया था। राजकुमारी ख़ुद बग़ीचे में आई और यह सब देखकर उसे घोर आश्चर्य हुआ। लेकिन अभी भी उसका घमण्ड टूटा नहीं था। वह बोली, "हालाँकि इसने दो काम कर दिये हैं,

लेकिन फिर भी यह मेरा पति तब तक नहीं बन सकता, जब तक यह मुझे जीवन के वृक्ष से एक सेब न लाकर दे दे।"

युवक को जीवन के वृक्ष के बारे में नहीं मालूम था। वह उठा, उसके मन में बहुत दूर जाने की इच्छा भी थी लेकिन उसे वह वृक्ष मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। तीन देशों में भटकने के बाद शाम होने पर वह एक जंगल में आ पहुँचा और एक पेड़ की शाख़ों के बीच कुछ सरसराहट सुनाई दी और एक सुनहरा सेब उसके हाथों में गिर पड़ा। उसी समय तीन काले कौए उड़कर नीचे आए और उसके घुटनों पर बैठकर कहने लगे, "हम वही कौए हैं, जिन्हें तुमने भूख से मरने से बचाया था। बड़े होने पर जब हमने सुना कि तुम्हें सुनहरा सेब चाहिए तो हम उड़कर समुद्र के पार गए, दुनिया के दूसरे छोर पर जहाँ जीवन का वृक्ष लगा है, और तुम्हारे लिए सेब ले आए।"

युवक ख़ुशी से महल की ओर चल पड़ा और उसने सुनहरा सेब ले जाकर राजकुमारी को दे दिया। अब उसके पास कोई बहाना नहीं था। उन दोनों ने वह सेब आधा-आधा खा लिया और उसका दिल युवक के प्रति प्रेम से भर उठा। वे सुख-चैन से बहुत समय तक रहे।

25

सात कौए

एक आदमी था जिसके सात बेटे थे, लेकिन कोई बेटी नहीं थी। उसे हमेशा बेटी की इच्छा रहती थी। आख़िरकार जब उसकी पत्नी को अगला बच्चा हुआ तो वह लड़की ही थी। वे बहुत ख़ुश हुए। लेकिन बच्ची बहुत छोटी-सी और कमज़ोर थी। उसकी ख़राब सेहत को देखते हुए, उसका तुरन्त नामकरण करने का निर्णय लिया गया। पिता ने एक लड़के को मटके में पानी लाने के लिए भेजा तो बाक़ी भाई भी उसके साथ-साथ चले गए। वहाँ जाकर वे सभी मटके में पानी भरकर सबसे पहले वापस लौटने की कोशिश करने लगे। इस छीनाझपटी में मटका पानी में गिर गया। वे वहीं खड़े रहे, उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें ? वे घर वापस जाने की हिम्मत कर पा रहे थे।

इधर सब बच्चे वापस नहीं लौटे तो पिता का धीरज जवाब दे गया। उसने कहा, "ये बच्चे ज़रूर अपने खेल में सब कुछ भूल गए हैं। उसे यह भी चिन्ता होने लगी कि कहीं बच्ची बिना नामकरण के ही न मर जाए। इसी चिन्ता में उसके मुँह से निकला, "वे सब कौए बन जाएँ !" उसके मुँह में से यह शब्द निकले ही थे कि उसे अपने सिर के ऊपर फड़फड़ाहट सुनाई दी और ऊपर देखने पर पाया कि सात काले कौए घर के ऊपर मँडरा रहे हैं।

माँ-बाप को अपने शाप की याद नहीं आई और वे अपने खोये हुए बेटों के लिए दुखी होते रहे। लेकिन अपनी बेटी को देखकर उन्हें कुछ शान्ति भी मिलती थी, जो जल्दी ही स्वस्थ हो गई थी और दिनोंदिन और सुन्दर होती जा रही थी। लम्बे समय तक उसे अपने भाइयों के बारे में नहीं पता चला, क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे उनके बारे में नहीं बताया था।

एक दिन संयोग से उसने कुछ लोगों को कहते हुए सुना, "यह बहुत सुन्दर है, लेकिन इसके सातों भाइयों का दोष इसके सिर पर है।" यह सुनकर वह बहुत



ही दुखी हुई और उसने अपने माँ-बाप के पास जाकर अपने भाइयों के बारे में पूछा। बूढ़े बाप उससे अब कुछ छिपा नहीं सके। उन्होंने कहा कि यह सब ईश्वर की इच्छा थी और उसका जन्म ही इस सबका कारण है। अब वह लड़की अपने आपको रोज़ कोसती रहती। सोचती कि किस तरह वह अपने भाइयों को वापस ला सकती है। उसे न चैन था न आराम।

एक दिन वह विशाल दुनिया में अपने भाइयों को खोजते, कहीं से भी किसी भी क़ीमत पर उन्हें आज़ाद कराने निकल गई। वह अपने साथ अपने माता-पिता की याद में एक अँगूठी, खाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा, पीने के लिए थोड़ा पानी और थकान लगने पर बैठने के लिए एक कुर्सी लेकर निकली।

वह आगे और आगे चलती गई और दुनिया के दूसरे छोर पर पहुँच गई। फिर वह सूरज के पास पहुँची, लेकिन वह बहुत गर्म और भयावह था। वह बच्चों को जला रहा था। वह भागकर चाँद के पास पहुँची, लेकिन वह बहुत ही ठण्डा था और दुष्ट लग रहा था। वह बोला, "मनुष्य के मांस की गन्ध ! मनुष्य के मांस की गन्ध।" वह वहाँ से जल्दी से भाग निकली और तारों के पास पहुँची। वे दोस्ताना स्वभाव के थे और उसके प्रति दयावान भी। हरेक तारा अपनी छोटी-सी कुर्सी पर बैठा था। केवल सुबह का तारा खड़ा था। उसने उसे एक टेढ़ी हड्डी दी और बोला, "अगर तुम्हारे पास यह हड्डी नहीं होगी तो तुम वह काँच का महल नहीं खोल सकती जहाँ तुम्हारे भाई हैं।"

लड़की ने हड्डी को लेकर उसे सावधानीपूर्वक रूमाल में लपेट लिया। वह फिर चलने लगी, जब तक कि वह काँच के महल तक नहीं पहुँच गई। उसका दरवाज़ा बन्द था और उसे खोलने के लिए उसने हड्डी निकालने के लिए रूमाल खोला, लेकिन हड्डी वहाँ नहीं थी—तारे की भेंट उससे खो गई थी। वह अब क्या करेगी ?

वह अपने भाइयों को आज़ाद कराना चाहती थी, लेकिन उसके पास काँच के महल की चाभी नहीं थी। प्यारी छोटी बहन ने अपनी छोटी उँगली मोड़ी और उसे ताले में डालकर उसे खोल दिया। वह जैसे ही महल में घुसी, एक छोटा बौना उसके सामने आया और पूछने लगा, "मेरी बच्ची, क्या चाहिए तुम्हें ?"

"मैं अपने भाइयों को खोज रही हूँ, सात कौओं को," वह बोली। बौना बोला, "मेरे मालिक़ कौए अभी घर पर नहीं है। लेकिन यदि तुम उनका इन्तज़ार करना चाहती हो, भीतर आकर बैठ जाओ।"

उसके बाद वह बौना सात प्लेटों और प्यालों में सातों भाइयों के खाने-पीने

का सामान लाया और लड़की ने हरेक प्लेट में से थोड़ा-सा खाया और हर प्याले से थोड़ा-सा पानी पिया। लेकिन आख़िरी प्याले में उसने अपनी अँगूठी डाल दी।

वे आए और अपनी-अपनी प्लेटों और प्यालों में खाना-पीना शुरू करने लगे। तब एक ने दूसरे से कहा, "मेरी प्लेट में से किसने खाया ? मेरे प्याले में से किसने पिया ? यह किसी इनसान ने खाया है !"

जब सातवें भाई ने अपने प्याले का पानी ख़त्म किया तो उसे उसमें नन्हीं-सी अँगूठी दिखाई दी। उसने उसे देखा और पहचान लिया कि यह उसके माता-पिता की अँगूठी थी। वह बोला, "हे ईश्वर, काश हमारी बहन यहाँ हो ! तभी हम बच पाएँगे।"

जैसे ही लड़की ने, जो दरवाज़े के पीछे खड़ी होकर यह सुन रही थी, यह सुना तो वह सामने आ गई और सारे कौए तुरन्त आदमी बन गए। उन्होंने अपनी बहन को गले लगाया और चूमा और सभी साथ-साथ हँसी-ख़ुशी वापस घर लौट आए।

26

देवदार

एक बार एक वनवासी जंगल में जा रहा था। उसे बच्चे की रोने-जैसी आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़ का पीछा करते हुए वह आगे गया तो उसने देखा कि एक देवदार के पेड़ के ऊपर एक छोटा बच्चा बैठा रो रहा है। उसकी माँ बच्चे को गोद में लेकर पेड़ के नीचे सो गई थी। जैसे ही वह सोई तो एक गरुड़पक्षी उसे चोंच से उठाकर ले गया और उस पेड़ की सबसे ऊँची शाख़ पर रख दिया। वनवासी ने पेड़ पर चढ़कर उस बच्चे को नीचे उतारा। उसे वह अपने घर ले गया और उसका पालन-पोषण अपनी बेटी हेलेन के साथ करने लगा।

दोनों साथ-साथ बड़े हुए। वनवासी ने इस लड़के का नाम देवदार रख दिया, जिससे वह उसे हमेशा उस घटना की याद दिलाता रहे। हेलेन और वह लड़का दोनों एक-दूसरे को इतना चाहते थे कि जब भी वे अलग होते, उन्हें बेहद तकलीफ़ होती थी। इस वनवासी के घर पर एक बूढ़ी बावर्चिन भी काम करती थी, जो एक शाम को दो मटके लेकर पानी लेने झरने पर गई। वह वहाँ एक बार नहीं लेने बल्कि कई बार गई। नन्ही हेलेन उसे बार-बार पानी भरते देखकर बोली, "सारा, तुम इतना सारा पानी क्यों ले जा रही हो ?"

"यदि तुम किसी को भी न बताने का वचन दो तो मैं तुम्हें बता सकती हूँ।" वह बोली।

नन्हीं हेलेन ने उससे वादा किया तो सारा बोली, "सुबह-सुबह जब वनवासी शिकार पर जाएगा तो मैं यह पानी उबालूँगी और उसमें देवदार को डालकर पकाऊँगी।"

अगले दिन सूरज चढ़ने पर वनवासी उठा और शिकार पर चला गया, जबकि बच्चे अभी सो रहे थे। हेलेन ने देवदार से कहा, "तुम मुझे मत छोड़ना और मैं भी तुम्हें नहीं छोड़ूँगी।" वह बोला, "आज के बाद मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

हेलेन बोली, "तुम्हें पता है कल बूढ़ी बहुत सारा पानी भरकर लाई है और

जब मैंने उससे इसकी वजह पूछी तो उसने मुझसे कहा कि, "यदि तुम किसी से कुछ नहीं कहो तो ही मैं तुम्हें बताऊँगी। जब मैंने उससे इस बात का वादा किया तो वह मुझसे बोली कि जब आज सुबह पिताजी शिकार पर चले जाएँगे, तब वह एक बड़े बर्तन में तुम्हें पकाने के लिए पानी उबालेगी। जल्दी उठो, हमें यहाँ से भाग निकलना चाहिए।" यह कहते हुए वे दोनो उठे और जल्दी से तैयार होकर अपनी पूरी शक्ति से वहाँ से भाग निकले। जब पानी एकदम गरम होकर उबलने लगा तो बूढ़ी बावर्चिन देवदार को लाने उसके शयनकक्ष में गई। लेकिन अरे ! जैसे ही वह बिस्तरों के पास गई, उसने पाया कि दोनों बच्चे ग़ायब हैं। यह देखकर वह बहुत परेशान हो गई और अपने आपसे बोली, "जब वनवासी घर आएगा और दोनों बच्चों को नहीं पायेगा तो मैं उससे क्या कहूँगी ? मुझे किसी को भेजकर उन्हें पकड़वाना चाहिए।"

यह सोचते हुए उसने तीन नौकरों को उनके पीछे भेजा। लेकिन बच्चों ने अपने पीछे दौड़कर आते नौकरों को देख लिया और हेलेन बोली, "मुझे मत छोड़ना, मैं भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगी।"

"आज के बाद हम हमेशा साथ रहेंगे।" देवदार बोला।

"तब तो तुम गुलाब की शाख़ बन जाओ और मैं कली बन जाऊँगी।" हेलेन बोली।

जब नौकर वहाँ पहुँचे तो बच्चे वहाँ कहीं नहीं थे। वहाँ सिर्फ़ एक गुलाब का पौधा था, जिस पर एक कली लगी थी। तीनों निराश होकर वापस लौट गए। उन्होंने बूढ़ी सारा को पूरा क़िस्सा बताया कि वहाँ तो सिवाय एक कलीवाले गुलाब के पौधे के सिवाय कुछ भी नहीं है। उनकी बात सुनकर बूढ़ी बावर्चिन उन्हें ज़ोर-ज़ोर से डाँटने लगी और बोली, "अरे बेवक़ूफ़ों , तुम्हें गुलाब की झाड़ी काट देनी थी और उसकी कली तोड़कर मेरे पास लानी थी। जल्दी जाओ और कली लेकर आओ।" वे तुरन्त वहाँ गए, लेकिन...?

इस बार भी बच्चों ने उन्हें दूर से ही देख लिया। नन्ही हेलेन ने अपने साथी से वही पहली बार वाला जवाब पूछा और उसने भी वही जवाब दिया। वह बोली, "तब तुम गिरजाघर बन जाओ और मैं उसके भीतर का मुकुट बन जाऊँगी।"

जब तीनों गुलाम वहाँ पहुँचे तो उन्हें वहाँ एक गिरजाघर और उसके भीतर एक मुकुट के सिवाय कुछ नहीं मिला। वे एक-दूसरे से पूछने लगे, "क्या करें ? चलो घर लौट चलते हैं।" जैसे ही वे वापस घर पहुँचे तो बूढ़ी बावर्चिन ने उनसे पूछा कि वे क्या लेकर आए हैं ? जब उन्होंने उसे इस बार का क़िस्सा सुनाया

तो वह बहुत नाराज़ हुई। वह बोली कि तुम्हें वह गिरजाघर गिरा देना था और मुकुट घर लेकर आना था। जब वह थोड़ी शान्त हुई तो वह ख़ुद ही घर से निकल पड़ी और तीनों नौकरों के साथ बच्चों को खोजने लगी। लेकिन इस बार भी बच्चों ने उन्हें दूर से ही देख लिया। इस बार नन्ही हेलेन ने कहा कि वह एक तालाब बन जाती है और देवदार एक बत्तख़ बन जाए और तालाब में तैरता रहे। वे तुरन्त तालाब और बत्तख़ बन गए। जब बूढ़ी औरत वहाँ आई और उसने इन्हें देखा तो वह लेट गई और तालाब को पीने लगी। लेकिन बत्तख़ तेज़ी से उसकी ओर तैर कर आई और बिना उसके जाने चोंच से उसकी टोपी पकड़कर उसे पानी में खींच लायी। वह अपनी जान बचाने की बहुत कोशिश करती रही, लेकिन आख़िरकार तालाब में डूब गई।

बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी घर वापस लौट आए। यदि वे अभी भी जीवित होंगे तो मुझे लगता है कि वे अभी भी साथ-साथ और ख़ुश होंगे।

27

बारह शिकारी

एक राजा के बेटे ने अपने पिता को बताये बिना एक लड़की के साथ सगाई कर ली। वह उस लड़की को बहुत प्यार करता था। एक बार वह लड़की के पास बहुत ख़ुश होकर बैठा हुआ था। तभी उसे समाचार मिला कि उसके पिता बहुत बीमार हैं। वे मरने से पहले उससे मिलना चाहते हैं। राजकुमार अपनी प्रेमिका से बोला, ''तुम्हें छोड़कर मुझे जाना ही पड़ेगा। यादगार के रूप में अपनी अँगूठी तुम्हें देकर जा रहा हूँ। जब मैं राजा बनूँगा तो मैं लौटकर आऊँगा और तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा।''

यह कहता हुआ वह घोड़े पर सवार होकर वहाँ से चला गया। जब वह अपने पिता के पास पहुँचा तो वे अपनी आख़िरी साँसें गिन रहे थे। राजा ने उससे कहा, ''बेटे ! मरने से पहले मैं तुम्हें एक बार देखना चाहता था, ताकि मेरी इच्छानुसार विवाह करने का वचन तुमसे मैं ले सकूँ।'' इसके बाद राजा ने किसी राजकुमारी का नाम लिया, जिससे राजकुमार को शादी करनी थी। राजकुमार उस समय इतना दुखी था कि उसे पता हीं नहीं चला कि वे क्या बोल रहे हैं। उसने अपने पिता को उनकी इच्छा पूरी करने का वचन दे दिया। इसके तुरन्त बाद राजा का स्वर्गवास हो गया।

राजा की मृत्यु के कुछ ही दिनों में शोक की अवधि समाप्त हो गई। राजकुमार अब तक सिंहासन पर बैठकर राजा बन चुका था। उसे अब अपने पिता को दिए गए वचन को पूरा करने की बात याद दिलाई गई। वचन के अनुसार शीघ्र ही उस राजकुमारी के साथ उसकी सगाई भी कर दी गई। संयोग से राजा की प्रेमिका ने इस सगाई की बात सुन ली। वह अपने प्रेमी के विश्वासघात से इतनी दुखी हुई कि हमेशा बुझी-बुझी से रहने लगी। उसका पिता उससे बोला, ''बेटी, तुम उदास क्यों हो ? जो कुछ भी तुम अपने लिए माँगोगी, तुम्हें मिल जाएगा।''

कुछ देर के लिए वह सोच में पड़ गई फिर बोली, "पिताजी, मैं चाहती हूँ कि मेरे पास ग्यारह लड़कियों को लाया जाए जो क़द-काठी में मेरे जैसी हों।"

उसका पिता बोला कि यदि वह सम्भव है तो उसकी इच्छा को ज़रूर पूरा किया जाएगा। उसने पूरे देश में ऐसी लड़कियों को खोजने की आज्ञा दी। इसके परिणाम-स्वरूप ग्यारह ऐसी लड़कियाँ मिल ही गईं, जो कद-काठी में बिलकुल उसकी बेटी के समान थीं। जब उन सबको उसके पास लाया गया तो उसने बिलकुल एक जैसी बारह शिकारियों की पोशाकें तैयार करवाईं। हर लड़की ने एक-एक पोशाक पहन ली और बारहवीं पोशाक उस लड़की ने स्वयं पहनी। इसके बाद अपने पिता से आज्ञा लेकर वह अपने साथियों के साथ घोड़े पर सवार होकर चल दी। वह अपने पूर्व मंगेतर को बहुत अधिक प्यार करती थी और उन साथिनों को लेकर उसके दरबार में जा रही थी। वहाँ जाकर उसने राजा से पूछा कि क्या उसे शिकारियों की आवश्यकता है और क्या वह उन सबको अपनी सेवा में रख सकता है ? राजा ने उसकी ओर देखा, लेकिन वह उसे पहचान नहीं पाया। इतने सुन्दर लोगों को देखकर राजा उन्हें अपने पास रखने के लिए तैयार हो गया और इस प्रकार वे लोग बारह राजकीय शिकारी बन गए।

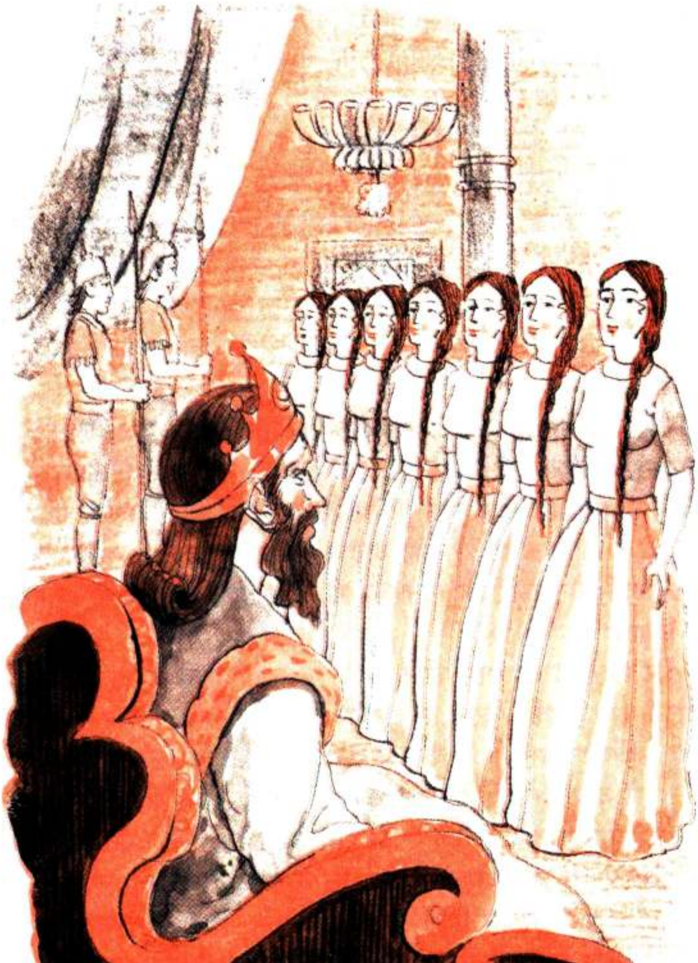
राजा के पास एक शेर था, जो इतना अद्भुत था कि सभी अदृश्य और गुप्त बातों के बारे में जान लेता था। एक शाम को वह शेर राजा से बोला, "क्या आपको यह लगता है कि आपके पास जो बारह शिकारी हैं, वे सचमुच शिकारी ही हैं ?" राजा ने कहा, "हाँ, मेरे पास बारह शिकारी ही हैं।" इस पर शेर बोला, "यही तो आपकी ग़लती है। ये लोग शिकारी नहीं, बल्कि बारह लड़कियाँ हैं।"

राजा अनिश्चय से बोला, "ऐसा कभी नहीं हो सकता। तुम अपनी बात को कैसे साबित करोगे ?"

शेर बोला, "आप अपने दालान में कुछ मटर के दाने बिखेर देने की आज्ञा दें। इसके बाद आपको तुरन्त पता चल जाएगा, क्योंकि मटर के दानों के ऊपर चलते हुए आदमी बहुत सख़्ती के साथ क़दम रखते हैं और बिल्कुल भी नहीं फिसलते, जबकि इन पर चलते हुए लड़कियाँ डगमगा जाती हैं, लड़खड़ाने लगती हैं और दानों को इधर से उधर लुढ़का देती हैं।"

राजा को यह सुझाव बहुत पसन्द आया, उसने मटर के दाने बिखेरने का आदेश दे दिया।

लेकिन राजा का एक नौकर था, जो शिकारियों से सहानूभूति रखता था। जैसे ही उसने सुना कि उनकी परीक्षा ली जाने वाली है, वह उनके पास गया।



उसने उनको सब कुछ बता दिया और यह भी कहा कि शेर राजा को दिखाना चाहता है कि वे सब लड़कियाँ हैं। लड़की ने उसे धन्यवाद दिया और अपने साथिनों

से कहा कि मटर के दानों पर चलते हुए वे सभी प्रयासपूर्वक सख़्ती से क़दम रखते हुए चलें। अगली सुबह राजा ने जब बारह शिकारियों को बुलाया और वे लोग दालान में पहुँचे तो हर कोई इतने भारी क़दमों से दानों के ऊपर चला कि न तो कोई दाना लुढ़का और न ही अपनी जगह से हिला । जब सभी कमरे से बाहर चले गए तो राजा शेर से बोला, "तुमने मुझे धोखा दिया। वे सब तो बिलकुल आदमियों की तरह चलते हैं।"

शेर बोला, "उन्हें पता चल गया था कि उनकी परीक्षा ली जाने वाली है, इसलिए अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ वे तैयार थे। अब आप दालान में बारह चरख़े रख दीजिये। जब ये लोग इधर से निकलेंगे तो चरख़ों को देखकर इतने प्रसन्न हो जाएँगे, जितना कोई आदमी कभी नहीं हो सकता।"

राजा को यह सुझाव भी पसन्द आया और उसने दालान में बारह चरख़े रखवा दिये।

लेकिन शिकारियों के प्रति सहानूभूति रखनेवाले नौकर ने एक बार फिर जाकर इस योजना की जानकारी लड़की को दे दी। लड़की ने चरख़ों के ऊपर थोड़ा-सा भी ध्यान न देने का आदेश अपने सभी साथिनों को दे दिया। अगली सुबह राजा ने शिकारियों को बुलाया। वे सभी दालान से होकर गुज़रे थे, लेकिन किसी ने भी चरख़ों की ओर नहीं देखा। इस बार भी राजा शेर से यही बोला, "तुमने मुझे धोखा दिया।"

शेर पहले ही की तरह कहने लगा, "ये सभी जानते थे कि उनकी परीक्षा ली जाएगी और उसके अनुसार ही वे तैयार होकर आए थे।" लेकिन राजा उसकी बात पर विश्वास करने के लिए अब बिलकुल भी तैयार नहीं था।

इसके बाद सभी बारह शिकारी राजा के साथ पहले की तरह शिकार पर जाने लगे। राजा जितना अधिक उनके साथ रहता, वह उनको उतना ही अधिक पसन्द करने लगा। एक बार ऐसा हुआ कि वे सभी शिकार के लिए निकल रहे थे, तभी उन्हें यह समाचार मिला कि राजा के साथ जिस राजकुमारी की सगाई हुई थी, वह राजा के दरबार में आने के लिए चल पड़ी है। जैसे ही राजा की प्रेमिका ने यह सुना, वह इतना अधिक विकल हो गई कि उसकी सारी हिम्मत चली गई और वह अधीर होकर ज़मीन पर गिर गई। राजा ने तुरन्त समझ लिया कि उसके सर्वश्रेष्ठ शिकारी को कुछ हो गया है। वह दौड़कर उसकी मदद करने के लिए आया। उसके दस्ताने उतारे गए तो राजा ने उसकी उँगली में वहीं अँगूठी देखी, जो उसने अपनी प्रेमिका को दी थी। जब उसने मुख को ध्यान से देखा तो वह

अपनी प्रेमिका को तुरन्त पहचान गया। उसे इस दशा में देखकर राजा द्रवित हो गया और उसने उसे चूम लिया। जब उसने अपनी आँखें खोली तो राजा उससे बोला, "तुम मेरी हो, मैं तुम्हारा हूँ। दुनिया की कोई ताक़त हमें एक-दूसरे से अलग नही कर सकती।"

इसके बाद राजा ने अपना एक दूत सगाईवाली राजकुमारी के पास यह सन्देश देकर भेजा कि वह अपने देश वापस लौट जाए, क्योंकि राजा की एक रानी पहले से है।

जल्दी ही बहुत धूमधाम से उनकी शादी हो गई। एक बार फिर से शेर राजा का चहेता बन गया, क्योंकि उसने जो भी कहा था, सच ही कहा था।

28

भेड़िया और सात छोटी बकरियाँ

एक समय की बात है एक जगह एक बूढ़ी बकरी अपने सात बच्चों के साथ रहती थी, जिन्हें वह बेहद प्यार करती थी। एक दिन वह जंगल में भोजन की तलाश में जाने लगी तो उसने अपने सातों बच्चों को बुलाया और उनसे बोली, "प्यारे बच्चो, मैं जंगल में जा रही हूँ। भेड़िये से सम्भलकर रहना, क्योंकि यदि वह यहाँ आ गया तो वह तुम सबको खा जाएगा। पूरा का पूरा। वह अक्सर अपना वेश बदलकर रहता है। लेकिन तुम उसे उसकी मोटी आवाज़ और काले पैरों से पहचान लेना।" बच्चे बोले, "माँ, हम तुम्हारी बात का अच्छी तरह ध्यान रखेंगे। तुम निश्चिंत रहो।" यह सुनकर माँ मिमियाते हुए ख़ुश होकर दौड़ गई।

थोड़ी ही देर बाद किसी ने झोंपड़ी का दरवाज़ा खटखटाया और कहने लगा, "खोलो बच्चो, तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाई है।" लेकिन छोटी बकरियों ने उसकी मोटी आवाज़ सुनकर ही पहचान लिया कि यह तो भेड़िया है। वे बोले, "हम दरवाज़ा नहीं खोलेंगे, तुम हमारी माँ नहीं हो। उसकी आवाज़ तो मीठी है, लेकिन तुम तो मोटी आवाज़ में बोल रहे हो। तुम ज़रूर भेड़िया हो।" भेड़िया एक दूकान में गया और उसने खड़िया का टुकड़ा लेकर खाया, इससे उसकी आवाज़ मीठी हो गई। उसने वापस आकर झोपड़ी का दरवाज़ा खटखटाते हुए पुकारा, "खोलो प्यारे बच्चो, तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए खाने को कुछ लाई है।" लेकिन यह कहते हुए भेड़िये ने अपना पंजा खिड़की पर रख दिया था। उसे देखकर बच्चे बोले, "नहीं हम दरवाज़ा नहीं खोलेंगे। हमारी माँ के पैर काले नहीं हैं, तुम भेड़िया हो।" भेड़िया इस पर एक नानबाई के पास गया और बोला, "मेरे पैर में चोट लग गई है, इस पर आटा लगा दो।" और जब नानबाई ने आटा लगा दिया तो वह फिर चक्की वाले के पास गया और बोला, "मेरे पैर पर सूखा आटा मल दो।" लेकिन चक्कीवाले ने सोचा कि वह आटा मलवाकर किसी को चकमा देना चाहता है तो वह हिचकिचाया।



तब भेड़िया बोला, "अगर तुम तुरन्त आटा नहीं मलोगे तो मैं तुम्हें खा जाऊँगा।" इससे चक्कीवाला डर गया और उसके पैर पर आटा मल दिया। वाह रे आदमी की जात !

अब भेड़िया तीसरी बार झोंपड़ी में आया और दरवाज़ा खटखटाकर पुकारने लगा, "दरवाज़ा खोलो मेरे बच्चो, तुम्हारी माँ तुम लोगों के लिए जंगल से कुछ लेकर आई है।" छोटे बच्चे बोले, "पहले अपना पैर दिखाओ, जिससे हमें पता चले कि तुम हमारी माँ हो या नहीं। भेड़िये ने अपना पैर खिड़की पर रखा और जब उन्होंने उसके सफ़ेद पैर को देखा तो उन्होंने सोचा कि वह उनकी माँ है। उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। लेकिन भीतर कौन आया ? भेड़िया ! वे बेहद डर गए और छिपने की कोशिश करने लगे। एक मेज़ के नीचे छिप गया दूसरा बिस्तर में, तीसरा अलमारी में, चौथा रसोई में, पाँचवाँ भट्ठी में, छठा पानी की टंकी में और सातवाँ घड़ी के बक्से में घुस गया। लेकिन भेड़िये ने उन्हें तलाश कर ही लिया और देर न करते हुए सबसे छोटे बच्चे को छोड़कर बाक़ी सबको खा लिया, जो घड़ी के बक्से में छिपा था। जब भेड़िये की भूख शान्त हो गई तो वह घिसटता हुआ बाहर आया और एक पेड़ के नीचे हरी घास पर लेट गया और गहरी नींद में सो गया।

थोड़ी ही देर में बूढ़ी बकरी जंगल से लौट आई। क्या दृश्य था उसके सामने। झोंपड़ी का दरवाज़ा एकदम खुला पड़ा था—मेज़, स्टूल और तिपाइयाँ उल्टी पड़ी थीं, कपड़े धोने का टब टुकड़े-टुकड़े था और बिस्तर के तकिये और चादरें नीचे पड़े हुए थे। उसने अपने बच्चों को तलाश किया। लेकिन उसे कोई भी न मिला। उसने सबको पुकारा लेकिन कोई भी न आया। आख़िरकार जब उसने छोटे बेटे को पुकारा तो आवाज़ आई, "माँ मैं यहाँ हूँ, घड़ी के बक्से में।" उसने उसे बाहर निकाला और उससे सुना कि भेड़िये ने बाक़ी सबको किस तरह खाया। वह अपने प्यारे बच्चों के लिए इस तरह रोई कि तुम अन्दाज़ा नहीं लगा सकते।

सब कुछ सुनने के बाद वह अपने शोक में डूबी बाहर आई। उसका सबसे छोटा बेटा उसके साथ-साथ चल रहा था। जब वे घास के मैदान तक आए तो उन्होंने वहाँ पेड़ के नीचे भेड़िये को गहरी नींद में सोते देखा। वह इतनी ज़ोर-ज़ोर से ख़र्राटे भर रहा था कि पेड़ की शाख़ें भी काँप रही थीं। उसने उसे चारों ओर से घूमकर देखा और पाया कि उसके शरीर के भीतर कुछ हिला। उसने सोचा, "हे ईश्वर ! काश मेरे बच्चे जिन्हें उसने खा लिया है, ज़िन्दा हों।" यह सोचते हुए वह अपने घर को और दौड़ी और एक कैंची, सुई और धागा लेकर आई। उसने भेड़िये की बालों वाली ख़ाल काटी और जैसे ही एक चीरा लगाया, एक छोटे बकरी के बच्चे ने अपना सिर बाहर निकाला। थोड़ा और काटने पर वे एक-एक करके बाहर आ गए। छह के छह। सारे ज़िन्दा। उन्हें कोई चोट नहीं पहुँची थी। भेड़िये

ने जल्दी में उन्हें पूरा ही निगल लिया था। वह बहुत ख़ुश हुई। बच्चे अपनी माँ के गले लग गए और ख़ुशी से उछलने-कूदने लगे। लेकिन बूढ़ी माँ बोली, "जल्दी से जाकर कुछ बड़े पत्थर ले आओ। उन्हें हम भेड़िये के जागने से पहले पेट में भर देंगे।" सातों नन्हीं बकरियों ने जल्दी से पत्थरों का ढेर लगा दिया और फिर जितने पत्थर वे भेड़िये के पेट में भर सकते थे, उन्होंने भर दिये। फिर बूढ़ी बकरी ने आकर उसके जागने से पहले उसके पेट को सिल दिया।

जब भेड़िया जागा और खड़ा हुआ तो पेट में भरे पत्थरों की वजह से उसे बेहद प्यास लगी। वह एक छोटी-सी नदी के पास पानी पीने गया। लेकिन जैसे ही वह चला तो उसके पेट में पत्थर लुढ़कने लगे। वह चिल्लाया—

"क्या करता है खड़-खड़-खड़-खड़
मेरे कमज़ोर अंजर-पंजर में
बकरियाँ नहीं हैं ये
मुझे तो लगते हैं ये पत्थर।"

जब भेड़िया छोटी नदी के पास आया और पानी पीने झुका तो पत्थरों के वज़न से वह अपने आपको सम्भाल नहीं पाया और पानी में गिरकर डूब गया।

जैसे ही सातों बकरी के बच्चों ने यह देखा तो वे ज़ोर से गाते हुए तेज़ी से दौड़ते आए। 'भेड़िया मर गया। भेड़िया मर गया।' यह गाते-गाते वे नदी के पास अपनी माँ के चारों ओर घेरा बनाकर नाचने लगे।

29

लोमड़ी और घोड़ा

एक समय में एक किसान था, जिसके पास एक घोड़ा था। उस घोड़े ने उसकी बुढ़ापे तक बहुत सेवा की। लेकिन बूढ़ा होने के बाद उससे काम नहीं होता था। उसके मालिक ने उसे खाना देना बन्द कर दिया और बोला, "तुम अब मेरे किसी काम के नहीं रहे। लेकिन फिर भी मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ। यदि तुम अपनी ताक़त जुटाकर एक शेर घर में ले आओ तो मैं तुम्हें रख लूँगा। अभी तो तुम अस्तबल से बाहर निकल जाओ।" यह कहकर किसान ने बेचारे घोड़े को बाहर निकाल दिया। घोड़ा सिर झुकाकर जंगल में शरण लेने चल पड़ा। पेड़ों के बीचोंबीच उसे एक लोमड़ी मिली, जिसने उससे पूछा कि वह इतना परेशान क्यों हैं और इतना झुककर क्यों चल रहा है ?

घोड़ा बोला, "आह ! वफ़ादारी और उसका पुरस्कार एक साथ नहीं रहते; मेरे मालिक मेरी सारी सेवाएँ भूल गए हैं, क्योंकि अब मैं बेकार हो गया हूँ। वे मुझे अब चारा भी नहीं देते और उन्होंने मुझे अस्तबल से निकाल भी दिया है।"

लोमड़ी ने पूछा, "अब कोई चारा नहीं ?"

घोड़ा बोला, "थोड़ी उम्मीद है। उसने कहा है कि यदि मैं उसे एक शेर पकड़कर ला दूँ तो वह मुझे रख लेगा। लेकिन उसे अच्छी तरह मालूम है कि मैं यह नहीं कर सकता।"

लोमड़ी बोली, " मैं तुम्हारी मदद करूँगी। अब लेट जाओ और आराम करो। हिलना मत—ऐसा लगे जैसे कि तुम मरे हुए हो।"

घोड़े ने वैसा ही किया है। लोमड़ी शेर के पास गई, जिसकी मांद पास ही थी। वह शेर से बोली, "पास ही एक घोड़ा मरा पड़ा है। मेरे साथ आओ और अपना पेट भरकर खाओ।" शेर लोमड़ी के साथ आया और जब वह घोड़े के पास आया तो लोमड़ी बोली, "हिस्स ! सुनो जो मैं कह रही हूँ ! तुम इसका मांस आराम

से खाओ, मैं इसे तुम्हारी पूँछ से बाँध देती हूँ—तुम इसे अपनी माँद में ले जाओ, वहाँ इसे फ़ुरसत में खाना।" यह सलाह सुनकर शेर ख़ुश हो गया और अपनी पूँछ से घोड़े को बँधवाने के लिए उसकी तरफ़ अपनी पीठ करके खड़ा हो गया। लोमड़ी ने चालाकी से शेर के पैर आपस में घोड़े की पूँछ के बालों की सहायता से कसकर बाँध दिये। जैसे ही उसने यह किया, उसने घोड़े का कंधा थपथपाया और चिल्लाई, "खींचो, दोस्त, खींचो !"

घोड़ा उछला और शेर को अपने साथ खींच ले गया। शेर चीख़ने लगा और जंगल के सभी पक्षी डरकर चीख़ने लगे। लेकिन घोड़े ने परवाह नहीं की और अपने मालिक के घर पर ही रुका। किसान ने अपने घोड़े की वफ़ादारी का प्रमाण देखा। उसने अपने निर्णय पर दोबारा विचार किया और बोला, "अब तुम मेरे साथ रहोगे। आराम से रहो।" और इस तरह अच्छे घोड़े को अच्छा खाना मिला और उसकी अच्छी देखभाल हुई, जब तक वह ज़िन्दा रहा।

30

दो यात्री

यह सच है कि पहाड़ और घाटी आपस में कभी नहीं मिलते, लेकिन इस दुनिया में अच्छे और बुरे आदमी का आपस में टकराव अक्सर होता रहता है। एक बार एक मज़ाक़िया दर्ज़ी कहीं जा रहा था। रास्ते में अचानक उसका सामना एक दुष्ट मोची से हुआ। दर्ज़ी को हँसने-हँसाने की आदत थी। मोची का पंखा देखकर वह उसके बारे में जान गया और उससे मज़ाक करते हुए गाने लगा—

"सिलो, सिलो, अपनी सुई तोड़ो
खींचो, खींचो, खींचो, अपना धागा
लगाओ, लगाओ, मोम लगाओ,
और फिर सिर पर मारो हथौड़ा।"

मोची उसके मज़ाक से नाराज़ हो गया और ऐसा चेहरा बना लिया, मानों करेले का रस पी लिया हो। ऐसा लगा मानो वह दर्ज़ी की पिटाई कर देगा। दर्ज़ी उसके ग़ुस्से को शान्त करने के लिए हँसकर उसे अपनी पानी की बोतल देता हुआ बोला, "मैं तो सिर्फ मज़ाक़ कर रहा था। मेरे बोलने का कोई ग़लत मतलब नहीं था। लो, पानी पिओ और अपना ग़ुस्सा ठंडा करो।" मोची ने पानी का एक बड़ा घूँट पिया और बोतल वापस कर दी। पानी पीते ही उसका ग़ुस्सा शान्त हो गया। वह दर्ज़ी से बोला, "मैं तुम्हें बुरा-भला कहता, लेकिन अब मैंने पानी पी लिया है और अब मैं तुमसे अच्छी-अच्छी बातें कर सकता हूँ। क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ ?" दर्ज़ी बोला, "हाँ, ठीक है, लेकिन मैं दूर एक बड़े शहर में काम ढूँढ़ने जा रहा हूँ।" मोची बोला, "मुझे भी ऐसी ही जगह की तलाश है। छोटी जगहों में आमदनी कम होती है, क्योंकि लोग ग़रीबी के कारण जूते ख़रीदने की बजाय नंगे पैर चलना ही पसन्द करते हैं।" दोनों एक साथ शहर को चल दिए।

कुछ दिनों बाद दोनों एक शहर में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने काम खोजना

शुरू किया। दर्ज़ी को ख़ूब काम मिलने लगा, क्योंकि लोग उसके मज़ाक़िया स्वभाव से काफ़ी ख़ुश होते थे। वह देखने में भी सुन्दर था। उसकी सुन्दरता और स्वभाव से उसके मालिक की बेटी उसे बहुत प्यार करती थी। कभी-कभी दरवाज़े के पीछे जाकर वह उसे प्यार भरा चुम्बन भी दिया करती थी। इस प्रकार दर्ज़ी वहाँ काफ़ी ख़ुश था। कुछ दिनों बाद दर्ज़ी और मोची आपस में मिले। दर्ज़ी के सामान का थैला, मोची के थैले से काफ़ी भारी दिख रहा था। उसके भारी थैले को देखकर मोची ने बुरा-सा मुँह बना लिया। मोची ने सोचा, "जो जितना दुष्ट है, उसका भाग्य उतना ही अच्छा है।" दर्ज़ी उससे मिलकर काफी ख़ुश था और ख़ुशी से हँस और गा रहा था। उसने अपना सारा सामान भी अपने साथी के साथ बाँट लिया। उसे पैसों की कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि पैसा ख़र्च करने के लिए ही कमाया जाता है।

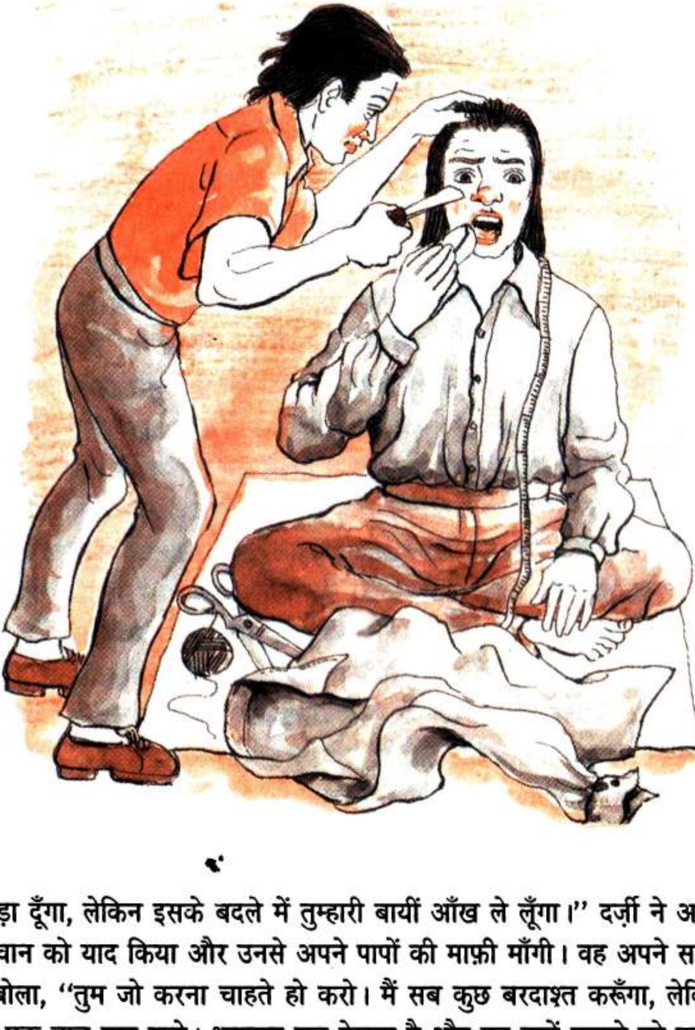
अब दोनों फिर एक साथ दूसरे शहर की ओर चल पड़े। कुछ दिनों बाद वे बड़े जंगल के पास पहुँचे। राजधानी में पहुँचने के लिए रास्ता इस जंगल के बीच से जाता था। इस जंगल से होकर दो रास्ते राजधानी की तरफ़ जाते थे। एक रास्ते से जाने पर सात दिनों का समय लगता था और दूसरे से जाने पर सिर्फ़ दो दिनों का। मगर, उनमें से किसी को यह पता नहीं था कि कौन-सा रास्ता छोटा है। अतः वे दोनों एक शाहबलूत के पेड़ के नीचे विचार करने लगे कि यह कैसे पता किया जाए कि कौन-सा रास्ता छोटा है ? रास्ते की लम्बाई के हिसाब से उन्हें अपने लिए खाने-पीने के सामान का भी प्रबन्ध करना था। अन्त में मोची बोला, "आदमी को अपने साथ हमेशा ज़रूरत से ज़्यादा खाना रखना चाहिए। हम सात दिनों का खाना अपने साथ लेकर चलेंगे।"

"क्या ?" दर्ज़ी आश्चर्य से चिल्लाया, "हम सात दिनों के खाने का बोझ गधे की तरह ढोते रहेंगे। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं अपने आपको भगवान के सहारे छोड़ता हूँ। मैं खाने की और चिन्ता नहीं कर सकता। जेब में रखा पैसा गर्मी और सर्दी में भी पैसा ही रहेगा, लेकिन खाने का सामान इस गर्मी में ख़राब हो जाएगा। हम सही रास्ता क्यों नहीं तलाश कर सकते ? मैं सिर्फ़ दो दिनों का खाना लेकर चलूँगा, बाक़ी सब ऊपर वाले के हाथ।" उसके बाद दोनों ने अपने लिए अलग-अलग खाना ख़रीदा और अपना भाग्य आज़माने जंगल में घुस गए।

जंगल बिलकुल गिरजाघर की तरह शान्त था। न तो हवा चलने की आवाज़ हो रही थी और न ही पत्तियाँ के खड़कने की। चिड़ियों की चहचहाहट भी कहीं

सुनाई नहीं दे रही थी। जंगल इतना घना था कि सूर्य की रोशनी भी अन्दर नहीं पहुँच पा रही थी। मोची अपना खाना पीठ पर लादे चुपचाप चल रहा था, क्योंकि खाने के वजन से वह परेशान था। थोड़ी दूर चलने में ही वह पसीने से भीग गया। जबकि दर्ज़ी एक पक्षी की तरह मस्ती से उछलता-कूदता-फुदकता और गाता चल रहा था। इस प्रकार दो दिन गुज़र गए। तीसरे दिन भी जब रास्ता ख़त्म होता नहीं दिखा तो दर्ज़ी थोड़ा उदास हो गया, क्योंकि उसने अपना पूरा खाना खा लिया था। उसे भगवान और अपने भाग्य पर पूरा भरोसा था, इसीलिए वह निराश नहीं हुआ। तीसरी रात, उसे भूखे ही एक पेड़ के नीचे सोना पड़ा। चौथे दिन भी वह भूखा चलता रहा। दोपहर में जब मोची एक पेड़ के पास बैठकर खाना खा रहा था तो उसे खाता देखते रहने के अलावा उसके पास कोई और चारा नहीं था। भूख से जब वह बेहाल हो गया तो उसने मोची से थोड़ा खाना माँगा। लेकिन मोची ने हँसते हुए मना कर दिया और बोला, "तुम हमेशा काफ़ी ख़ुश रहते हो। अब एक बार यह महसूस करके देखो कि उदास होने पर आदमी को कैसा लगता है। जो पक्षी बहुत सुबह उठकर चहचहाते हैं, उन्हें शाम होने पर गिद्ध खा लेता है।" इस प्रकार मोची ने अपने साथी की सहायता करने से इनकार कर दिया। पाँचवीं सुबह बेचारा दर्ज़ी बड़ी मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था और उसे बोलने में भी काफ़ी तकलीफ़ हो रही थी। उसके गालों का गुलाबी रंग सफ़ेद हो गया था और उसकी आँखें नींद न आने से लाल हो गई थीं। उसकी ऐसी स्थिति को देखकर मोची बोला, "आज मैं तुम्हें थोड़ा-सा खाना दूँगा, मगर इसके बदले तुम्हें अपनी दायीं आँख देनी होगी।" दर्ज़ी के पास उसकी बात मानने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। वह खाना खाकर किसी तरह अपनी ज़िन्दगी बचाना चाहता था। इसके बाद उस पत्थरदिल मोची ने एक चाकू से उसकी दायीं आँख निकाल ली। दर्ज़ी अपनी आँख के बदले ख़रीदी गई रोटी खाते हुए अपनी माँ की कही बात याद करने लगा। उसने कहा था, "कोई बहुत सारा खा तो सकता है, लेकिन उसके बदले उसे कुछ देना भी पड़ता है।"

रोटी खाते ही वह फिर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और हमेशा की तरह फिर ख़ुश हो गया। वह यह सोचकर ख़ुश था कि अभी भी उसके पास एक आँख है, जिससे वह दुनिया को देख सकता है। लेकिन छठे दिन वह फिर भूख से परेशान होने लगा। शाम होने पर किसी तरह वह एक पेड़ के नीचे पहुँचा और गिर गया और सातवें दिन उठ ही नहीं सका। उसे ऐसा लग रहा था कि वह भूख से मर जाएगा। मोची बोला, "मैं तुम पर दया कर आज फिर तुम्हें एक रोटी का एक



टुकड़ा दूँगा, लेकिन इसके बदले में तुम्हारी बायीं आँख ले लूँगा।'' दर्ज़ी ने अपने भगवान को याद किया और उनसे अपने पापों की माफ़ी माँगी। वह अपने साथी से बोला, ''तुम जो करना चाहते हो करो। मैं सब कुछ बरदाश्त करूँगा, लेकिन तुम एक बात याद रखो। भगवान सब देखता है और वह तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों की सज़ा अवश्य देगा। अपने अच्छे दिनों में मैंने तुम्हारे साथ अपना सब कुछ बाँटा है, लेकिन तुम मेरे साथ ऐसा बुरा व्यवहार कर रहे हो। मेरा काम सिलाई करना है और अगर मैं अंधा हो जाऊँगा तो अपना काम नहीं कर पाऊँगा। मुझे

भीख माँगनी पड़ेगी। अन्धा होने के बाद मुझे यहाँ अकेला मत छोड़ देना, नहीं तो मैं मर जाऊँगा।

मोची पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। उसने एक चाकू से अपने साथी की बायीं आँख भी निकाल ली। इसके बाद उसने उसे रोटी का टुकड़ा खाने के लिए दिया और एक छड़ी देकर अपने पीछे आने के लिए कहा।

शाम को वे जंगल से बाहर आए। उनके ठीक सामने एक बड़ा मैदान था, जिसके बीच फाँसी देने के लिए एक चबूतरा बना था। मोची, दर्ज़ी को उस चबूतरे पर छोड़कर आगे बढ़ गया। दर्ज़ी का थकान, दर्द और भूख से बुरा हाल था। पर वह तुरन्त सो गया और वहाँ सारी रात सोता रहा। सुबह होने पर वह जागा, लेकिन उसे होश ही नहीं था कि वह कहाँ है। फाँसी के फंदे से दो अपराधियों के शरीर लटक रहे थे। उन दोनों के सिर पर दो कौए बैठे थे। एक कौए ने दूसरे से पूछा, "क्या तुम जागे हुए हो ?" दूसरा बोला, "हाँ.मैं जाग रहा हूँ।" पहला बोला, "तो मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। कल रात जो ओस गिरी है, वह अगर कोई अन्धा अपनी आँखों पर लगायेगा तो वह फिर से देखने लग जाएगा। उसकी आँखें ठीक हो जाएँगी। अगर अन्धों को यह पता होता तो कितना अच्छा होता।"

दर्ज़ी यह बात सुन रहा था। उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और उसे घास पर फैला दिया। रूमाल जब ओस से भीग गया तो वह इससे अपनी आँखों को साफ़ करने लगा। आँखों के साफ़ होते ही उसे सब कुछ दिखाई देने लगा। थोड़ी देर में सूरज उगा और उसे सामने एक राजा का राज्य दिखाई पड़ा, जिसमें विशाल द्वार और सैकड़ों मीनारें थी। वह अपनी आँखों को वापस पाकर बेहद ख़ुश था। हर पक्षी, हर फूल-पत्ते और हर पतंगे तक को देख रहा था। उसने अपनी जेब से सुई निकाली और उसमें धागा डालने लगा और जब वह उसमें सफल हो गया तो ख़ुशी से झूम उठा। उसने अपने घुटनों के बल बैठकर भगवान को धन्यवाद दिया। सुबह की प्रार्थना करते समय वह फाँसी के फंदे से घड़ी के पेंडुलम की तरह लटके दोनों अपराधियों के लिए प्रार्थना करना भी नहीं भूला। इसके बाद उसने अपना सामान पीठ पर लादा और ख़ुशी से उछलता-गाता वहाँ से चल दिया।

सबसे पहले उसे एक भूरा घोड़े का बच्चा दिखाई दिया, जो मैदान में दौड़ रहा था। दर्ज़ी ने उसकी लगाम पकड़ी और उसकी पीठ पर सवार होकर शहर की ओर जाने ही वाला था कि घोड़े का बच्चा उससे दया की भीख माँगने लगा और बोला, "अभी मैं बहुत छोटा हूँ और मैं आपके जैसे हल्के दर्ज़ी का बोझ भी नहीं उठा सकता। अतः आप मुझे छोड़ दें। किसी दिन शायद मैं आपके कोई काम

आ सकूँगा।'' दर्ज़ी ने उसे छोड़ दिया। वह ख़ुशी से उछलता हुआ फिर मैदान में दौड़ने लगा। अब दर्ज़ी को फिर भूख सताने लगी, क्योंकि कल से उसने कुछ भी नहीं खाया था। उसने सोचा, ''मुझे दिखाई दे रहा है, लेकिन मेरा पेट ख़ाली है। अब जो भी खाने लायक़ चीज़ मिलेगी, मैं उसे खा जाऊँगा।'' तभी एक बड़ा पक्षी मैदान में घूमता दिखाई दिया, वह दौड़कर उसके पास पहुँचा और उसके पैरों को पकड़ लिया। वह बोला, ''मुझे पता नहीं कि तुम्हें खाया जा सकता है या नहीं लेकिन मैं इतना भूखा हूँ कि यह सब नहीं सोच सकता। मैं तुम्हें मारकर आग में पकाऊँगा और खा जाऊँगा।'' पक्षी बोला, ''तुम ऐसा मत करो। मैं ऐसा पक्षी हूँ, जो आदमी को फ़ायदा पहुँचाता हैं, इसीलिए मुझे कोई नहीं मारता। तुम भी मुझे छोड़ दो। शायद कभी मैं तुम्हारे काम आ सकूँ।'' फिर मैं तुम्हें छोड़ता हूँ, दर्ज़ी बोला और उसने पक्षी को आज़ाद कर दिया। पक्षी उड़कर दूर चला गया। दर्ज़ी ने अपने आपसे कहा, ''अब क्या होगा ? मेरी भूख और तेज़ होती जा रही है ओर मेरा पेट अब और ख़ाली हो गया है। अब आगे मेरे रास्ते में जो कुछ भी आएगा उसे मैं मारकर खा जाऊँगा।'' ऐसा सोचकर जैसे ही वह आगे बढ़ा। उसे बत्तख़ों का एक जोड़ा तालाब में तैरता दिखाई दिया। वह चिल्ला पड़ा, ''तुम मुझे सही समय पर मिले हो।'' इतना कहकर उसने एक बत्तख़ की गरदन पकड़ ली और उसे मरोड़ने ही वाला था कि तभी बत्तख़ की माँ, जो पानी में उगी घास के पीछे छिपी थी, तेज़ आवाज़ करती हुई उसकी ओर आई। उसने अपना मुँह खोल रखा था और वह दर्ज़ी से अपने बच्चे को छोड़ देने के लिए प्रार्थना कर रही थी। ''तुम सोचकर देखो कि तुम्हारी माँ को कैसा महसूस होगा, अगर तुम्हें कोई उससे अलग करके मार डाले ?'' अच्छे स्वभाववाले दर्ज़ी ने कहा, ''शान्त हो जाओ। मैं तुम्हारे बच्चे को छोड़ दूँगा।'' इतना कहकर उसने बत्तख़ को फिर से पानी में डाल दिया।

यहाँ से आगे बढ़ने के लिए वह जैसे ही मुड़ा, उसे एक खोखला पेड़ दिखा, जिसके अन्दर मधुमक्खियाँ आ-जा रही थीं। इन्हें देखकर वह काफ़ी ख़ुश हुआ और सोचने लगा, ''अन्त में मुझे अपने अच्छे कामों का इनाम मिल ही गया।''

''शहद खाकर मेरी भूख शान्त हो जाएगी और मैं बिलकुल तरोताज़ा हो जाऊँगा।'' वह ऐसा सोच ही रहा था कि रानी मक्खी बाहर निकली और उससे बोली, ''अगर तुम मेरी साथी मक्खियों या मेरे छत्ते को तंग करोगे तो हमारे डंक तुम्हारे शरीर में इस प्रकार घुसेंगे, मानों दस हज़ार गर्म सुइयाँ चुभ रही हों। हमें शान्ति से रहने दो और अपने रास्ते जाओ। शायद कभी तुम्हें इसका इनाम मिल जाएगा।''

दर्ज़ी समझ गया कि यहाँ से भी उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिलेगा। उसने सोचा, "तीन ख़ाली थालियों के बाद अगर चौथी थाली में भी कुछ नहीं हो तब तो मेरी क़िस्मत ही ख़राब है। वह अपने पैरों को घसीटता शहर में पहुँचा। चूँकि यह दोपहर का समय था इसलिए उसे एक सराय में तैयार खाना खाने को मिल गया। वह ख़ुशी-ख़ुशी खाने की मेज़ पर बैठकर खाना खाने लगा। खाना समाप्त कर वह काम की खोज में शहर में निकला। कुछ देर शहर में घूमने के बाद उसे एक जगह काम मिल गया। वह अपना काम अच्छी तरह जानता था, इसलिए जल्दी ही वह काफ़ी मशहूर हो गया। हर आदमी अपना कपड़ा उसी से सिलवाना चाहता था। इस प्रकार उसका काम काफ़ी बढ़ने लगा। दर्ज़ी अपने आप से बोला, "मैं अब इससे बेहतर सिलाई नहीं कर सकता, फिर भी मेरा काम बढ़ता ही जा रहा है।" कुछ समय बाद उसे राजा का दर्ज़ी बना दिया गया।

लेकिन क्या संयोग था ! इसी दिन उसके पुराने साथी दुष्ट मोची को भी राजा का मोची बनाया गया। मोची ने जब दर्ज़ी को दरबार में देखा और पाया कि उसकी आँखें ठीक हो गई हैं तो वह सतर्क हो गया। वह सोचने लगा कि यह मुझसे बदला ले, इसके पहले मुझे कोई चाल चलकर उसे फँसाना चाहिए। लेकिन जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदते हैं, वे ही अक्सर उसी गड्ढे में गिरते हैं। शाम को अपना काम ख़त्म कर मोची चुपके से राजा के पास पहुँचा और उससे धीमी आवाज़ में बोला, "क्या आपको पता है मेरे मालिक कि यह दर्ज़ी काफ़ी घमण्डी है और कहता है कि यह बहुत पहले खोए राजमुकुट को ढूँढ़कर वापस ला सकता है।"

राजा बोला, "यह तो काफ़ी अच्छी बात है। दर्ज़ी को कल यहाँ आने दो, मैं उससे बात करूँगा।" कल जब दर्ज़ी आया तो राजा ने उससे कहा कि वह या तो राजमुकुट को ढूँढ़कर वापस लाए या फिर इस शहर को छोड़कर हमेशा के लिए कहीं और चला जाए। दर्ज़ी राजा के आदेश को सुनकर सोचने लगा, "यह दुष्ट राजा मुझसे वह चीज़ लाने के लिए कह रहा है, जो कोई नहीं ला सकता। इसलिए कल सुबह तक इन्तज़ार करना बेकार है। मुझे आज ही इस शहर से भाग जाना चाहिए।" ऐसा सोचकर उसने अपना सामान बाँधा और शहर से बाहर निकल गया। परन्तु उसे अपना काम और वह शहर छोड़ते हुए काफ़ी दुख हो रहा था, जो उसके लिए इतना भाग्यशाली साबित हुआ था। जल्दी ही वह उस तालाब के किनारे पहुँचकर बैठ गया, जहाँ की बत्तख़ों से उसकी दोस्ती थी। वह बूढ़ी बत्तख़ जिसके बच्चे को उसने छोड़ दिया था, उसके पास आई। उसे पहचानकर उसने

उससे पूछा कि वह क्यों उदास है ? "जब तुम मेरी कहानी सुनोगी तो तुम्हें आश्चर्य होगा।" इतना कहकर उसने उसे सारी बात बता दी। बत्तख़ बोली, बस इतनी-सी बात है। हम तुम्हारी सहायता करेंगे। वह मुकुट पानी में गिर गया था और वह अभी भी पानी के नीचे पड़ा है। मैं अभी उसे वहाँ से निकालकर बाहर लाती हूँ। तब तक तुम अपना रूमाल किनारे पर फैलाकर तैयार रहो।" इतना कहकर वह बत्तख़ अपने बारह बच्चों के साथ पानी के अन्दर घुस गई। पाँच मिनट बाद वे मुकुट को साथ लेकर वापस आ गए। वह मुकुट बूढ़ी बत्तख़ के पंख पर रखा था और बारह बच्चों ने उसे अपनी चोंच से सहारा दिया हुआ था। वे किनारे पर पहुँचे और उन्होंने मुकुट को रूमाल पर रख दिया। तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि यह कितना सुन्दर था। सूर्य के प्रकाश में यह इस प्रकार चमक रहा था, मानों सैकड़ों हीरे चमक रहे हों। दर्ज़ी ने उसें अपने रूमाल में बाँधा और वहाँ से वापस शहर की ओर लौट चला। राजा मुकुट को वापस पाकर काफ़ी ख़ुश हुआ और उसने इनाम में दर्ज़ी को एक सोने की जंज़ीर दी।

जब मोची को पता चला कि उसकी पहली चाल बेकार हो गई तो उसने दूसरी चाल सोची। वह राजा के पास पहुँचा और उससे बोला, "क्या आप जानते हैं कि दर्ज़ी इतना घमण्डी हो गया है कि वह कहता है कि इस महल के जैसा दूसरा महल वह मोम से तैयार कर सकता है। वह उसमें यहाँ की सारी चीज़ों जैसा मोम का सामान भी बनाकर रखने का दावा करता है।" यह सुनकर राजा ने दर्ज़ी को अपने पास बुलवाया और उसे आदेश दिया कि वह इस महल जैसा एक मोम का महल बनाकर रखे। अगर वह यह महल नहीं बना पाया या इसमें किसी चीज की कमी रह गई तो उसे सारी ज़िन्दगी क़ैद में गुज़ारनी पड़ेगी। दर्ज़ी सोचने लगा, "मेरे लिए कठिनाई ही कठिनाई है। इस काम को कोई नहीं कर सकता। "इसके बाद उसने अपने सामान के गट्ठर को अपने कन्धे पर डाला और शहर से बाहर निकल गया। जब वह खोखले पेड़ के पास पहुँचा तो वहाँ दुखी होकर बैठ गया। उसने अपना सिर नीचे झुका रखा था। मधुमक्खियाँ बाहर निकलीं और रानी ने उससे पूछा कि क्या उसकी गर्दन में दर्द है, जो उसने अपना सिर इस तरह झुका रखा है। दर्ज़ी बोला, "नहीं ऐसा नहीं है। मैं किसी और बात से दुखी हूँ।" इतना कहकर उसने रानी को सारी बात बता दी। मधुमक्खियाँ सारी बात सुनकर आपस में विचार करने लगीं। कुछ देर बाद रानी मक्खी दर्ज़ी से बोली, "तुम घर जाओ। कल सुबह अपने साथ एक बड़ा तौलिया लेकर वापस आना। इस समय तक सब कुछ बनकर तैयार हो जाएगा।" वह घर वापस लौट गया। मक्खियाँ उड़कर राजमहल

में पहुँची और वहाँ रखी हर वस्तु को ध्यान से देखने लगी। उसके बाद वापस लौटकर वे तेज़ी से मोम का महल तैयार करने लगीं। शाम तक वह बनकर तैयार हो गया। अगली सुबह दर्ज़ी वहाँ पहुँचा और उस सुन्दर मोम के महल को देखकर काफ़ी ख़ुश हुआ। वह बिलकुल राजमहल-जैसा था और कहीं किसी चीज़ की कमी नहीं थी। अन्तर सिर्फ़ इतना था कि यह उजले रंग का था और मीठा था। दर्जी ने इसे सावधानी से कपड़े में लपेटा और इसे लेकर राजमहल की ओर चल दिया। राजा इसे देखकर काफ़ी ख़ुश हुआ और एक पत्थर का बना सुन्दर घर उसे इनाम में दिया।

मोची को अभी भी सन्तोष नहीं हुआ था। वह फिर राजा के पास गया और बोला, "मालिक, मैंने सुना है कि दर्ज़ी कहता फिर रहा है कि महल के आगे वह साफ़ पानी का झरना ला सकता है।" राजा ने दर्ज़ी को फिर अपने पास बुलवाया और उससे बोला कि अगर कल सुबह वहाँ पानी का एक झरना बहता हुआ नहीं दिखा तो उसे फाँसी पर लटका दिया जाएगा। दर्ज़ी ने अपना ज़्यादा समय सोचने में नहीं लगाया और तुरन्त महल से बाहर निकल गया। अपने ज़िन्दगी में आए इस ख़तरे से वह घबरा गया और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

एक बार वह जब दुखी होकर एक जगह पर बैठा था तो घोड़े का वह बच्चा, जिसे उसने एक बार पकड़कर छोड़ दिया था, उसके पास आया। वह अब बड़ा होकर एक सुन्दर भूरा घोड़ा बन गया था। वह घोड़ा बोला, "अब समय आ गया है कि तुम्हारे जैसे दो आदमियों का बोझ उठा सकता हूँ।" उसकी बातों को सुनकर दर्ज़ी की उदासी दूर हो गई। वह उछलकर घोड़े की पीठ पर बैठ गया। घोड़ा उसे लेकर तेज़ी से दौड़ता हुआ महल के आँगन में पहुँचा। वहाँ उसने तीन बार ज़मीन पर बिजली की तेज़ी से अपना पैर पटका। तीसरी बार पाँव पटककर वह जमीन पर गिर गया। तभी ज़ोर का एक धमाका हुआ और एक जगह की मिट्टी हवा में उछलकर दूर तक चली गई। इस ख़ाली स्थान से पानी की तेज़ धारा निकलने लगी। इसका पानी बिलकुल साफ़ था और धारा की ऊँचाई घोड़े पर बैठे दर्ज़ी की ऊँचाई के बराबर थी। साफ़ पानी हवा में इस प्रकार ऊपर उठ रहा था, मानों पानी का फ़व्वारा चल रहा हो। और सूरज की किरणें पानी पर नाच रही थीं। राजा इसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वह अपने स्थान से उठकर दर्ज़ी के पास गया और सभी लोगों के सामने उसे अपने गले से लगा लिया। दर्ज़ी इससे काफ़ी ख़ुश हुआ, लेकिन उसकी ख़ुशी ज़्यादा दिनों तक नहीं चली। राजा की कई बेटियाँ थी। सभी बहुत सुन्दर थीं। लेकिन राजा का कोई बेटा नहीं था।

वह दुष्ट मोची चौथी बार राजा के पास पहुँचा और उससे बोला, "क्या आपको पता है मालिक कि दर्ज़ी अब यह कहता घूम रहा है कि वह हवा से आपके लिए बेटा ला सकता है।" राजा ने फिर दर्ज़ी को बुलवाया और उससे बोला, "अगर तुम नौ दिनों के अन्दर मेरे लिए एक बेटा ला दोगे तो मैं तुम्हारी शादी अपनी सबसे बड़ी लड़की के साथ कर दूँगा।" दर्ज़ी ने सोचा, "इनाम तो काफ़ी अच्छा है। इसे पाकर कोई भी ख़ुश होगा, लेकिन मेरे लिए ये अंगूर बहुत ऊँचाई पर हैं। अगर मैं पेड़ पर चढ़कर इसे तोड़ने की कोशिश करूँगा तो इसकी कमज़ोर डालें टूट जाएँगी और मैं ज़मीन पर गिर जाऊँगा।" ऐसा सोचता हुआ वह अपने घर पहुँचा। वह अपने काम करने की मेज़ पर अपने पैरों को समेटकर बैठ गया और सोचने लगा कि क्या करना चाहिए। अन्त में निराश होकर वह चिल्लाया, "कोई फ़ायदा नहीं है। मुझे इस शहर को छोड़कर चले जाना चाहिए, क्योंकि यहाँ मैं शान्ति से नहीं रह सकता।" वह अपने सामान को समेटकर दरवाज़े से बाहर निकल गया। जब वह मैदान के पास पहुँचा तो उसने उस लम्बे पैरों वाले पक्षी को देखा। वह आगे-पीछे होकर एक स्थान पर स्थिर हुआ और जब मेंढक उसके समीप आ गया तो झपटकर उसे पकड़ लिया। इसके बाद वह पक्षी उसके पास आया और उसका स्वागत करते हुए बोला, "तुम अपना सामान अपने साथ लेकर कहाँ जा रहे हो ? तुमने शहर क्यों छोड़ दिया ?" दर्ज़ी ने उसे बताया कि राजा उससे क्या चाहता है और अगर वह वैसा नहीं कर पाया तो उसे मार डाला जाएगा। "तुम यह सोच-सोचकर परेशान मत हो।" पक्षी बोला, "मैं तुम्हें इस मुसीबत से बाहर निकालूँगा। मैं शहर में कभी-कभी लोगों को बच्चा देता रहा हूँ। तुम्हारे लिए मैं हवा से राजकुमार लाऊँगा। घर जाओ और आराम करो। नौवे दिन महल पहुँच जाना। मैं भी वहाँ आऊँगा।"

इसके बाद दर्ज़ी घर चला गया। नौवें दिन वह राजमहल पहुँचा। कुछ देर बाद वह पक्षी हवा मैं उड़ता हुआ आया और खिड़की पर आवाज़ करने लगा। दर्ज़ी ने खिड़की खोल दी। लम्बे पैरों वाला पक्षी अन्दर आ गया। वह अपनी चोंच में एक बच्चा दबाए फर्श पर आराम से चलने लगा। वह बच्चा देखने में काफ़ी सुन्दर था और रानी की ओर अपना हाथ बढ़ा रहा था। चिड़िया ने उस बच्चे को ले जाकर रानी की गोद में डाल दिया। रानी ने उस बच्चे को ख़ुशी से उठाकर अपने गले से लगा लिया और उसे चूमने लगी। उड़कर बाहर जाने के पहले चिड़िया ने अपने कन्धे से एक थैला उतारा और उसे रानी को दे दिया। उस थैले में खजूर और मिठाई रखी थी, जिसे राजकुमारियों के बीच बाँट दिया गया। लेकिन सबसे बड़ी

राजकुमारी को इसमें से कुछ नहीं मिला। उसे वह अच्छा और सुन्दर दर्ज़ी पति के रूप में मिल गया था। दर्ज़ी बोला, "मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं एक बहुत बड़ा खेल जीत गया हूँ। मेरी माँ ठीक कहा करती थी कि जिसे भगवान और भाग्य पर विश्वास होता है, वह कभी नहीं हारता।"

मोची को अभी भी जूते बनाने पड़ते थे। उसे दर्ज़ी के लिए भी जूता बनाना पड़ा, जिसे पहनकर दर्ज़ी अपनी शादी में नाचा। इसके बाद मोची को उस शहर के बाहर निकाल दिया गया। वह जंगल की ओर जानेवाले रास्ते पर बढ़ता उस फाँसी देनेवाले स्थान पर पहुँचा। वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते वह निराशा और गर्मी से बुरी तरह थक गया और ज़मीन पर सो गया। जैसे ही उसने अपनी आँखें बन्द कर ली और सोने की कोशिश की, वे कौए उन दो अपराधियों के सिर से उड़कर नीचे आए और उन्होंने ज़ोर की आवाज़ करते हुए अपनी चोंचों को मोची की आँखों में घुसा दिया। गुस्से और दर्द से पागल मोची दौड़ता हुआ जंगल के अन्दर घुस गया और जंगल से फिर कभी वापस ज़िन्दा नहीं आ पाया। इसके बाद उस दुष्ट मोची को किसी ने नहीं देखा।

31

छोटे भाई-बहन

एक बार एक छोटे-से लड़के ने अपनी बहन का हाथ पकड़ा और कहा, "अपनी प्रिय माँ की मृत्यु के बाद से हमने एक घण्टा भी हँसी-ख़ुशी नहीं बिताया। हमारी सौतेली माँ हमें रोज़ मारती है और पास जाने पर हमें लात मारती है। हमें खाने को सूखी रोटी के टुकड़े मिलते हैं। ज़मीन पर पड़ा कुत्ता भी हमसे बेहतर है, क्योंकि उसको भी कभी-कभी अच्छा खाना मिल जाता है। आओ, हम लोग यहाँ से कहीं और चलें।" वे निकल पड़े और पूरे दिनभर घास के मैदानों, खेतों और पथरीली सड़कों पर भटकते रहे। जब बरसात होने लगी तो बहन बोली, "आसमान भी हमारे दुख में रो रहा है।" शाम तक वे एक घने जंगल में आ गए। वे दुख से, भूख-प्यास से और चलते-चलते इतना थक गए थे कि वे एक पेड़ की कोटर में सो गए। अगली सुबह जब उनकी नींद खुली तो सूरज ऊपर चढ़ आया था और उसकी किरणों से पेड़ बेहद गर्म हो गए थे। लड़का अपनी बहन से बोला, "मुझे बेहद प्यास लगी है, यदि मुझे आसपास पानी के सोते का पता होता तो मैं पानी लाकर पीता। ओह, लेकिन मुझे तो पानी की आवाज़ सुनाई दे रही है।" यह कहते हुए वह उठा और अपनी बहन का हाथ पकड़कर पानी की तलाश में निकल पड़ा।

दुष्ट सौतेली माँ वास्तव में जादूगरनी थी। उसने अपने बच्चों को निकलते हुए देख लिया था। इसलिए वह चुपके से उनके पीछे जा रही थी। वह जादूगरनी तो थी ही, उसने पानी के सभी सोतों पर जादू कर दिया था।

उन बच्चों को एक पानी का सोता मिला, जो पत्थरों के ऊपर बह रहा था। भाई उसका पानी पीने ही वाला था कि बहन को उसमें से आवाज़ सुनाई दी, "जो भी मेरा पानी पियेगा वह शेर बन जाएगा।" बहन चिल्लाई, " ओ भैया, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ, यह पानी मत पियो, नहीं तो तुम शेर बन जाओगे और मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दोगे।" भाई ने पानी नहीं पिया। हालाँकि उसे बेहद प्यास लगी थी, फिर भी

वह बोला, "मैं अगले पानी के सोते तक इन्तज़ार करूँगा।" जैसे ही वे दूसरे झरने के पास पहुँचे तो बहन को सुनाई दिया, "जो मेरा पानी पियेगा वह भेड़िया बन जाएगा।" बहन दौड़ती हुई पुकारने लगी, "भैया यह पानी नहीं पियो, नहीं तो तुम भेड़िया बनकर मुझे खा जाओगे।" भाई ने उसका पानी भी नहीं पिया और बोला, "मैं अगले झरने का इन्तज़ार करता हूँ। लेकिन तब तो मैं पानी ज़रूर ही पिऊँगा, तुम्हें जो कहना है कहती रहना, क्योंकि मुझे बेहद प्यास लगी है।" जैसे ही वे तीसरे झरने के पास पहुँचे, बहन को सुनाई दिया, "जो भी मुझसे पानी पियेगा वह मुर्ग़ा बन जाएगा—जो भी मुझसे पानी पियेगा, वह मुर्ग़ा बन जाएगा !" यह सुनकर बहन बोली, "ओ भैया, यह पानी मत पियो, नहीं तो तुम मुर्ग़ा बन जाओगे और मुझसे दूर भाग जाओगे।" लेकिन तब तक तो वह पानी पीने लगा था। जैसे ही पानी की पहली बूँद उसके गले के नीचे उतरी, वह मुर्ग़ा बन गया।

पहले-पहल तो बहन अपने मुर्ग़ा बन गए भाई के लिए ख़ूब रोई। भाई भी रोया और दुखी होकर उसके पास बैठा रहा। आख़िरकार लड़की बोली, "शान्त हो जाओ प्यारे मुर्ग़े, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगी।" और अपनी सोने की जंज़ीर उतारकर उसके गले में पहना दी। फिर उसने सरकंडे से बुनकर एक डोरी बनाई और मुर्ग़े के गले में डाल दी। रस्सी का दूसरा सिरा उसने अपने हाथ में ले लिया और उसे वहाँ से लेकर घने जंगल में चली गई। जब वे बहुत दूर आ गए तो उन्हें एक छोटी-सी झोंपड़ी दिखाई दी। लड़की ने भीतर झाँका तो उसे वह ख़ाली दिखाई दी। उसने सोचा, "हम यहाँ रह सकते हैं।" वह फिर मुर्ग़े का नर्म बिस्तर बनाने के लिए पत्तियों और घास तोड़कर लाई। हर सुबह वह बाहर से अपने लिए फल-फूल और कन्द मूल और मुर्ग़े के लिए मुलायम घास लेकर आती, जिसे वह उसके हाथों से खाता और उसके आसपास ख़ुशी से खेलता रहता। शाम को जब बहन थक जाती और अपनी प्रार्थना ख़त्म कर लेती, तब वह अपना सिर मुर्ग़े की पीठ पर रख देती, जो तकिये का काम देता और सो जाती। यदि उसका भाई अपने असली रूप में होता तब उनका जीवन वास्तव में सुखी होता।

वे उसी तरह जंगल में भटकते रहे। और थोड़ा समय बीत गया। एक दिन उस देश का राजा जंगल में शिकार के लिए आया। पेड़ों के पीछे से तुरही की आवाज़, कुत्तों के भोंकने की आवाज़ और शिकारियों की आवाज़ें सुनाई दीं। नन्हे मुर्ग़े ने भी उन्हें सुना तो उसे वहाँ जाने की इच्छा हुई। वह अपनी बहन से बोला, "मुझे शिकार पर जाने दो, मैं अब और नहीं रुक सकता; और उसने इतनी बार ज़िद की कि आख़िरकार बहन ने उसे जाने की अनुमति दे दी। वह बोली, "लेकिन



शाम तक ज़रूर वापस आ जाना। मैं जंगली शिकारियों से बचने के लिए दरवाज़ा बन्द रखूँगी। अपनी पहचान बताने के लिए तुम दरवाज़ा खटखटाना और कहना,

लेकिन उसके पहले उन्होंने चूल्हे की आँच तेज़ कर दी, जिस पर पानी गर्म हो रहा था, जिससे रानी का दम घुट जाए और वह मर जाए।

इसके बाद सौतेली माँ ने अपनी बेटी को एक टोपी पहनाकर उसे रानी की जगह पर लिटा दिया। उसने उसे कोशिश करके जितना हो सके उतना रानी जैसा रूप भी दे दिया। सिर्फ़ उसकी एक आँख वह नहीं बदल सकी। इसके लिए उसने उसे इस तरह लिटा दिया। जिससे उसकी अच्छी आँख ही राजा को नज़र आए। जब राजा शाम को घर लौटा और उसे पता चला कि उसका बेटा पैदा हुआ है तो वह बेहद ख़ुश हुआ। वह रानी के पास जाने लगा, तभी सौतेली माँ ने ज़ल्दी से उसे आवाज़ दी, "अपनी पत्नी के लिए कृपया पर्दे नहीं हटायें। रानी को अभी रोशनी में नहीं आना चाहिए और उन्हें बात भी नहीं करनी चाहिए।" यह सुनकर राजा चला गया और उसे पता भी नहीं चला कि एक नक़ली रानी वहाँ बिस्तर पर लेटी है।

जब आधी रात बीत गई और सब सो गए तो दासी ने जो वहीं पालने के पास बैठी जाग रही थी, असल रानी को भीतर आते देखा। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठाया और थोड़ी देर झुलाया और फिर उसका तकिया हिलाकर फिर उसे पालने में सुलाकर ढँक दिया। वह मुर्ग़े को भी नहीं भूली। जिस कोने में वह था, वहाँ जाकर उसने उसकी पीठ थपथपाई और फिर चुपचाप दरवाज़े से बाहर निकल गई।

दासी ने सुबह चौकीदारों से पूछा कि रात में महल में कोई आया था या नहीं, लेकिन उन्होंने मना ही किया। उसके बाद रानी बहुत रातों तक लगातार आई, लेकिन एक भी शब्द नहीं बोली। दासी उसे हमेशा देखती, लेकिन उसे अपने आप पर ही इतना विश्वास नहीं था कि वह इसके बारे में किसी और को कुछ बता सके।

जब कुछ समय बीत गया तो एक रात को रानी बोल पड़ी—

"मेरा बच्चा कैसा है ?
मेरा मुर्ग़ा कैसा है ?
दो बार बस मैं आऊँगी
फिर कभी नहीं, फिर कभी नहीं।"

दासी ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन जब वह ग़ायब हो गई तो दासी राजा के पास गई और उसे सब कह सुनाया। राजा चिल्ला पड़ा, "हे ईश्वर ! इसका क्या अर्थ है ?—कल मैं ख़ुद बच्चे के पास बैठूँगा।" शाम को वह बच्चे के पास बैठ गया।

आधी रात में रानी आई और बोली–

"मेरा बच्चा कैसा है ?
मेरा मुर्ग़ा कैसा है ?
एक बार बस मैं आऊँगी फिर
फिर कभी नहीं, फिर कभी नहीं।"

उसने यह कहकर हमेशा की तरह बच्चे को प्यार किया और फिर ग़ायब हो गई। राजा कुछ बोल नहीं पाया, लेकिन अगली रात भी वह वहीं बैठा। वह आई और बोली–

"मेरा बच्चा कैसा है ?
मेरा मुर्ग़ा कैसा है ?
इसी बार मैं आई हूँ बस,
अब कभी नहीं, अब कभी नहीं।"

ये शब्द सुनकर राजा चुप न रह सका और एकदम उठकर बोला, "तुम मेरी प्रिय पत्नी के अलावा और कोई नहीं हो सकती।" इस पर वह बोली, "हाँ, मैं तुम्हारी प्रिय पत्नी हूँ।" और उसी क्षण उसका जीवन ईश्वर की दया से वापस आ गया और वह फिर से पहले जैसी सुन्दर और मोहक हो गई। उसने राजा को दुष्ट औरत और उसकी लड़की की चालों के बारे में बताया। राजा ने उन्हें पकड़वाकर सज़ा सुनाई। लड़की को जंगल में ले जाया गया जहाँ जानवरों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये, लेकिन बूढ़ी जादूगरनी को आग में जलाया गया। जैसे ही वह जलकर राख बनी, मुर्ग़े पर से जादू उतर गया और वह फिर से आदमी बन गया। भाई-बहन अन्तिम समय तक हँसी-ख़ुशी साथ-साथ रहे।

32

डाकू

एक समय में एक मिल का मालिक था, जिसकी एक सुन्दर लड़की थी। उसका वह बड़ी धूमधाम से विवाह करना चाहता था। थोड़े ही दिन बाद वहाँ एक व्यक्ति आया, जो देखने में बहुत अमीर लगता था। मिल मालिक ने उसके बारे में बिना कुछ भला-बुरा जाने-बूझे अपनी लड़की का रिश्ता उससे तय कर दिया। लड़की को अपना होनेवाला पति ज़्यादा पसन्द नहीं आया। न ही वह भावी वर के रूप में सुन्दर कल्पनाएँ करती थी। कारण यह था कि उसे उस पर विश्वास नहीं था और जब-जब वह उसकी तरफ़ देखती या जब भी उसके बारे में सोचती तो उसका दिल डूबने लगता। एक दिन वह उस लड़की से बोला, "तुम मेरी मंगेतर हो, तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आतीं ?" लड़की बोली, "मुझे तुम्हारा घर नहीं मालूम।" वह बोला "वह घने जंगल के बीच है।" इस पर लड़की ने यह बहाना बनाया कि वह घर नहीं ढूँढ़ पायेगी। उसके मंगेतर ने कहा, "अगले रविवार तुम मुझसे मिलने ज़रूर आना। मैंने कुछ मेहमानों को भी बुलाया हैं। तुम्हें रास्ता आसानी से मिल जाएगा। इसके लिए मैं रास्ते में राख बिछवा दूँगा।"

जब रविवार आया तो लड़की तैयार हुई, लेकिन उसे पता नहीं किस वजह से बेहद चिन्ता हो रही थी। उसने अपना रास्ता वापस खोजने के लिए अपनी जेबों में सेम के बीज और मटर के दाने भर लिए। जंगल जाते समय वह उन्हें दायें-बायें फेंकती गई। आख़िरकार वह घने जंगल के बीच पहुँच गई। वहाँ उसे एक अकेला घर दिखा, जो सुनसान-सा लग रहा था। उसे देखकर वह और भी चिन्तित हो गई। वह भीतर गई, लेकिन वहाँ कोई नहीं था और चारों तरफ़ रहस्यभरा सन्नाटा फैला था। अचानक एक आवाज़ आई—

"लौट जा ऐ प्यारी लड़की,
तुरन्त यहाँ से लौट जा,

ग़लती से तुम आज यहाँ,
आई हो ख़ूनी की गुफ़ा।"

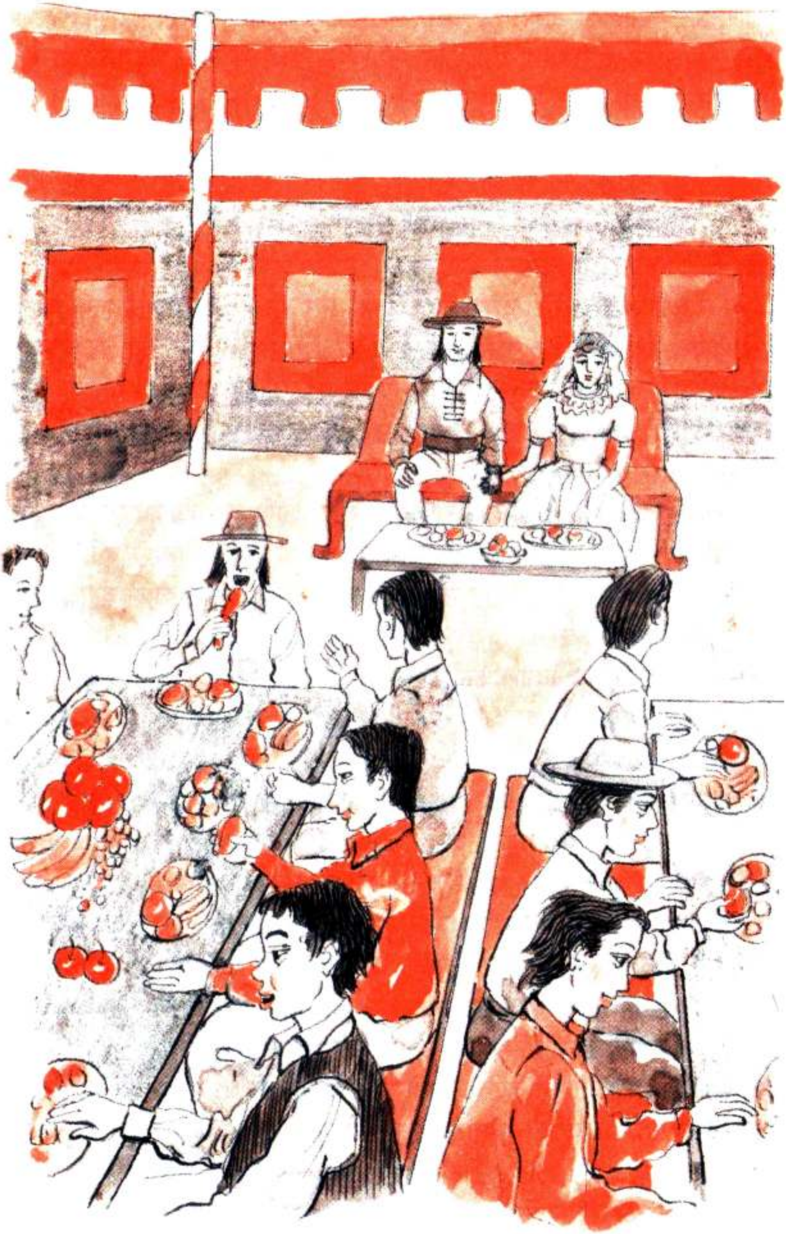
लड़की ने चारों ओर देखा और पाया कि पिंजरे में बन्द एक चिड़िया यह गाना गा रही थी। एक बार फिर उसने गाया—

"लौट जा ऐ प्यारी लड़की,
तुरन्त यहाँ से लौट जा,
ग़लती से तुम आज यहाँ,
आई हो ख़ूनी की गुफ़ा।"

लड़की एक कमरे से दूसरे कमरे में गई और पूरे घर का चक्कर लगा चुकी, लेकिन पूरा घर ख़ाली था। पूरे घर में कोई भी आदमी नहीं था। आख़िरकार वह एक छोटी-सी कोठरी में गई जहाँ एक कमज़ोर बूढ़ी औरत बैठी थी। जिसका सिर हिल रहा था। लड़की ने पूछा, "क्या तुम बता सकती हो कि मेरा मंगेतर इसी घर में रहता है ?"

बूढ़ी बोली, "ओह, बेचारी लड़की, तुम्हारी शादी कब होने वाली है ? तुम तो एक ख़ूनी के घर पर आ गई हो। तुम सोचती हो कि तुम दुल्हन बनोगी और धूमधाम से तुम्हारी शादी होगी। लेकिन वास्तव में तो तुम्हारी शादी केवल मौत से ही होगी। देखो, यहाँ पानी से भरा एक बड़ा बर्तन है। यदि तुम उनके प्रभाव में आ गईं तो वे तुम्हें बिना किसी हिचक के मारकर इस बर्तन में पकाएँगे और खा जाएँगे, क्योंकि वे मानव-भक्षी हैं। यदि मैं दया करके तुम्हें बचा न लूँ तो तुम तो ख़त्म ही हो जाओगी।"

यह कहती हुई बूढ़ी औरत उसे शराब के एक बड़े पीपे के पीछे ले गई, जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था। वह बोली, "एकदम चूहे की तरह दुबककर बैठी रहो। ज़रा भी हाथ-पैर मत हिलाना, नहीं तो सब कुछ ख़त्म हो जाएगा। जब रात में सब डाकू सो जाएँगे तो हम यहाँ से भाग निकलेंगे। मैं बहुत समय से मौक़े की तलाश में थी।" उसने अपनी बात ख़त्म भी नहीं की थी कि तभी वे लोग एक लड़की को घसीटते हुए आए। वह चीख़-पुकार रही थी, लेकिन उसकी चीख़ों पर किसी का ध्यान नहीं था। उन्होंने उसे तीन गिलासों में थोड़ी-थोड़ी शराब पिलाई—पहले सफ़ेद, फिर लाल और फिर पीली। तीसरी शराब पीते ही वह बेहोश होकर गिर पड़ी। डाकू की मंगेतर यह सब छिपकर देखती हुई अपने भविष्य के बारे में सोचकर डरती रही। इसी बीच एक डाकू को बेहोश लड़की की उँगली में एक सोने की अँगूठी दिखाई दी। जब वह उसे आसानी से नहीं उतार पाया तो



उसने एक कुल्हाड़ी उठाई और उसने इतना तेज़ वार करके उँगली काट दी कि उँगली उछलकर शराब के पीपे के पीछे ठीक डाकू की मंगेतर की गोद में गिर पड़ी। डाकू दीया लेकर उस उँगली को ढूँढ़ने लगा, लेकिन उसे वह नहीं मिली। तभी एक दूसरे डाकू ने उससे कहा, "तुमने वहाँ पीपे के पीछे देखा ?"

बूढ़ी औरत डरकर चिल्लाई, "अरे, जल्दी आकर खाना खा लो, सुबह उठकर खोजना; उँगली कहीं भाग नहीं जाएगी।"

डाकू बोले, "बूढ़ी ठीक कहती है," और वे उँगली की तलाश छोड़कर खाना खाने बैठ गए। बूढ़ी औरत ने उनकी शराब में नींद की दवा मिला दी, जिसे पीकर वे तुरन्त सो गए और खर्राटे भरने लगे। जैसे ही डाकू की मंगेतर को उनके खर्राटों की आवाज़ सुनाई दी, वह शराब के पीपे के पीछे से बाहर निकल आई। सावधानी से अपनी चप्पलें पहनीं। सौभाग्य से कोई भी नहीं जागा। बूढ़ी भी तैयार थी और उसने दरवाज़ा खोल दिया था। वह तुरन्त उस घर से बाहर निकल गई। हवा से रास्ते की पूरी राख उड़ गई थी, लेकिन उस लड़की ने जो सेम के बीज और मटर के दाने डाले थे, वे अंकुरित हो गए थे चाँदनी में उन्हें रास्ता पहचान में आ रहा था। पूरी रात वे चलती रहीं और सुबह वे लड़की के घर पहुँच गईं। बेचारी लड़की ने पूरा क़िस्सा मिल के मालिक अपने पिता को कह सुनाया।

शादी का दिन आया और डाकू दूल्हा बनकर आया। मिल मालिक ने अपने सभी रिश्तेदारों और दोस्तों को बुलाया था। वे खाना खाने मेज़ पर बैठे तो सभी कुछ न कुछ बातें कर रहे थे। लेकिन दुल्हन चुपचाप सुन रही थी। दूल्हा राजा बोला, "क्या तुम कुछ नहीं बोलोगी प्रिय ?"

वह बोली, "हाँ, मैं तुम्हें अपना सपना बताती हूँ। मैंने देखा मैं एक जंगल से गुज़र रही हूँ। थोड़ी देर बाद मैं एक घर में पहुँचती हूँ, जहाँ कोई भी आदमी नहीं था, बल्कि दीवार पर पिंजरे में एक चिड़िया लटकी थी, जो गा रही थी–

"लौट जा ऐ प्यारी लड़की,
तुरन्त यहाँ से लौट जा,
ग़लती से तुम आज यहाँ,
आई हो खूनी की गुफ़ा।"

और उसने यह गीत दो बार गाया–प्रिय, यही देखा मैंने। फिर मैं सभी कमरों में गई, लेकिन सभी कमरे ख़ाली और सुनसान थे। आख़िरकार मैं एक कोठरी में गई जहाँ एक बूढ़ी औरत बैठी थी, जिसका सिर इधर-उधर हिल रहा था। मैंने उससे पूछा, 'क्या मेरा मंगेतर इस घर में रहता है ?' उसने जवाब दिया, 'ओह, प्यारी

बच्ची, तुम तो एक ख़ूनी के घर में आ गई हो। तुम्हारा मंगेतर यही रहता है, लेकिन वह तुम्हें मार डालेगा।' प्रिय, यही देखा मैंने। फिर मैंने देखा कि बूढ़ी औरत ने मुझे एक बड़े पीपे के पीछे छिपा दिया है और जैसे ही मैं छिपती हूँ, डाकू एक लड़की को घसीटते हुए लाते हैं। उस लड़की को वे तीन गिलास शराब पिलाते हैं—एक सफ़ेद, एक लाल और एक पीली—और तीसरी शराब पीते ही वह बेहोश हो जाती है—प्रिय, यही देखा मैंने—एक डाकू ने उस लड़की की उँगली में सोने की अँगूठी देखी और वह उसे निकाल नहीं पाया तो उसने एक कुल्हाड़ी से उसकी उँगली काट दी। उँगली उड़ गई और मेरी गोद में आ गिरी। यही है वह उँगली और अँगूठी।'' यह कहते हुए उसने उँगली उसके सामने फेंक दी और सबको दिखाई।

डाकू उसकी बात सुनते-सुनते पीला पड़ता जा रहा था। वह अचानक उठ खड़ा हुआ और भागने ही वाला था कि मेहमानों ने उसे पकड़ लिया और उसे क़ानून के हवाले कर दिया।

जल्दी ही उसके पूरे दल को पकड़ लिया गया और उनकी काली करतूतों के लिए मौत की सज़ा दे दी गई।

33

लोमड़ी और हंस

एक लोमड़ी एक दिन एक घास के मैदान में आई। वहाँ मोटे-ताज़े हंसों का एक झुंड दाने चुग रहा था। वह मुस्कुराकर बोली, "मुझे ऐसा लगा कि जैसे मुझे यहाँ बुलाया गया है। तुम लोग साथ में बैठे कितने सुन्दर लग रहे हो। मैं तुम्हें एक-एक करके खा जाऊँगी।" हंस घबरा गए और उचककर अपने पैरों पर खड़े होकर गिड़गिड़ाते हुए अपने प्राणों की भीख माँगने लगे। लेकिन लोमड़ी ने कुछ भी न सुना और बोली, "दया करने का कोई सवाल ही नहीं उठता—तुम्हें मरना ही होगा।" आख़िरकार उनमें से एक ने हिम्मत की और वह बोला, "यदि हम बेचारे हंसों को मरना ही है तो हम पर एक मेहरबानी करो और हमें मरने से पहले प्रार्थना करने दो। हम अपने पापों का बोझ लेकर मरना नहीं चाहते। उसके बाद हम एक क़तार में खड़े हो जाएँगे और तुम सबसे मोटे हंस को छाँट लेना।"

लोमड़ी बोली, "ठीक है, यह तो बहुत भली-सी बात है। जल्दी से प्रार्थना करो। मैं तुम्हारा इन्तज़ार करती हूँ।"

इस तरह पहले हंस ने लम्बी प्रार्थना शुरु की। इस प्रार्थना को बीच में नहीं रोकना था, इसलिए दूसरे ने भी थोड़ी देर बाद ही साथ देना शुरू किया और चिल्लाया, "गा ! गा ! गा !" तीसरे और चौथे ने भी जल्दी ही साथ दिया और कुछ ही समय में वे सभी अपनी प्रार्थना कर रहे थे।

जब उनकी प्रार्थना ख़त्म होगी, तभी तो कहानी आगे बढ़ेगी; लेकिन उनकी प्रार्थना तो अभी तक चल ही रही है।

34

नन्हे देवदूत

पहली कहानी

एक मोची था, जो बेचारा बहुत ही ग़रीब हो गया था। उसके पास कुछ भी नहीं था, सिवाय एक जोड़ी जूते बनाने लायक़ चमड़े के थे। शाम को उसने यह सोचकर चमड़ा काटकर रखा कि सुबह वह जूते बनायेगा और ईश्वर को याद करके निश्चिन्त होकर सो गया। सुबह उठकर उसने प्रार्थना की और काम करने बैठ गया। लेकिन यह क्या ? जूते तो पहले ही बनकर तैयार थे और उसके तख़्ते पर रखे थे। ग़रीब मोची बेहद ख़ुश हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या करे। उसने जूते उठाये और उन्हें ध्यान से देखने लगा। जूते बेहद सफ़ाई से बने थे और उनमें एक भी टाँका ग़लत नहीं लगा था। ऐसा लगता था कि जैसे उन्हें किसी प्रतियोगिता में इनाम पाने के लिए बनाया गया हो। तभी एक ग्राहक आया, उसे वे जूते बेहद पसन्द आए। उसने उनका तय से भी ज़्यादा दाम चुकाया। मोची को इतने पैसे मिले कि वह अब दो जोड़ी जूतों के लिए चमड़ा ख़रीद सकता था। शाम को उसने चमड़ा काटकर रखा और अगली सुबह फिर जब नई उमंग से काम करने बैठा तो उसने देखा कि अब तो जूते बनाने की कोई ज़रूरत नहीं थी–जूते तो पहले से ही तैयार थे। उसे ग्राहक ढूँढ़ने की भी जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि दो ग्राहक आए, जिन्होंने उसे इतने पैसे दिये कि वह चार जोड़ी जूतों के लिए चमड़ा ले आया। इन्हें भी उसे बनाने की ज़रूरत नहीं पड़ी और इसी तरह यह चलता रहा–रात को वह जो भी चमड़ा काटकर रखता, सुबह उसके बेहतरीन जूते तैयार मिलते। यह ऐसे ही चलता रहा और वह फिर से अमीर हो गया।

क्रिसमस के कुछ दिन पहले एक शाम उसने थोड़ा चमड़ा काटकर रखा और सोने से पहले अपनी पत्नी से बोला, "क्यों न हम रात में जागकर देखें कि हमारी

मदद करने के लिए जूते कौन बना जाता है ? उसकी पत्नी तैयार हो गई और वे रोशनी बन्द करके एक कोने में छिप गए, जहाँ कुछ कपड़े टँगे थे। जैसे ही आधी रात बीती दो बौने आए और तख़्ते पर बैठ गए। उन्होंने कटा हुआ चमड़ा उठाया और उसे अपनी नन्ही उँगलियों से सिलने लगे और हल्के हाथों से ठोकने लगे। मोची इतना आश्चर्यचकित था कि उन पर से अपनी आँखें ही नहीं हटा पा रहा था। वे पूरा काम ख़त्म करके ही रुके। उन्होंने जूते मेज़ पर रखे और जल्दी से उछलकर भाग गए।

अगली सुबह पत्नी बोली, "इन देवदूतों ने हमें अमीर बना दिया है। हमें इनके लिए कुछ करना चाहिए। इन्हें ठंड भी लगी होगी, क्योंकि कुछ पहना भी नहीं था। मैं इनके लिए एक-एक क़मीज़, कोट, ज़ैकेट, पतलून और मोजे बना दूँगी और तुम उनके लिए एक-एक जोड़ी जूते बना देना।"

पति की भी यही राय थी। जब सारा सामान तैयार हो गया तो उन्होंने तख़्ते पर कटे हुए चमड़े की बजाय वह सामान रख दिया और छिप गए।

आधी रात में वे देवदूत कूदते हुए आए और काम करने की तैयारी करने लगे। जब उन्हें चमड़े की जगह सुन्दर नन्हे-नन्हे कपड़े मिले तो पहले-पहल तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन फिर वे बेहद ख़ुश हुए। उन्होंने अपने कोट उठाए और उनको पहनते हुए गाने लगे—

"नन्हें और प्यारे बच्चे हैं हम,
जूते नहीं सिलेंगे अब हम !"

और यह कहते हुए वे मेज़ों-कुर्सियों पर उछलते-कूदते दरवाज़े से बाहर निकल गए। उस दिन के बाद वे फिर नहीं लौटे, लेकिन उसके बाद मोची ने जो भी काम किया, उससे ही वह समृद्ध हुआ और उम्रभर उसने ज़िन्दगी हँसी-ख़ुशी से बिताई।

दूसरी कहानी

एक समय में एक ग़रीब नौकरानी लड़की थी, जो कि मेहनती भी थी और सफ़ाई भी रखती थी। लेकिन रोज़ वह घर का कचरा झाड़कर दरवाज़े के सामने ढेर लगा देती थी। एक सुबह जब वह लड़की कचरा फेंकने ही जा रही थी तो उसे उसमें एक चिट्ठी दिखाई दी। वह पढ़ तो सकती नहीं थी, इसलिए उसने झाड़ू किनारे रखी और चिट्ठी लेकर अपने मालिक के पास गई। उसमें देवदूतों की तरफ़ से लड़की को अपने एक बच्चे की धाय बनने का निमन्त्रण था। लड़की की समझ में नहीं



आया कि वह क्या करे। लेकिन बहुत सोच-विचार के बाद उसने हामी भर दी, क्योंकि देवदूतों को इनकार पसन्द नहीं होता। तीन देवदूत आए और उसे एक

खोखले पहाड़ में ले गए जहाँ वे रहते थे। वहाँ की हर चीज़ नन्हीं थी, लेकिन सब कुछ इतना साफ़ और सुन्दर था कि बताया नहीं जा सकता। माँ हाथीदाँत के बिस्तर पर लेटी थीं, जिसमें मोती जड़े थे और चादरें सोने की थीं। पालना भी हाथीदाँत का था। लड़की ने धाय का काम किया और बाद में घर जाने लगी। लेकिन देवदूतों ने उसे तीन दिन और रुकने के लिए कहा। वह रुक गई और उसका समय हँसी-ख़ुशी बीतने लगा, क्योंकि देवदूत उससे बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। तीन दिन बीतने के बाद वह वापस घर लौटने की तैयारी करने लगा तो उन्होंने उसकी जेबों में सोना भर दिया और उसे पहाड़ से बाहर निकलने की राह दिखाई। जैसे ही वह मालिक के घर पहुँची, उसने अपनी झाड़ू उठाई, जो अभी भी वहीं कोने में रखी थी और झाड़ू लगाने लगी। उसी समय कुछ अजनबी घर से बाहर निकले। उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन है और यहाँ क्या कर रही है। तभी यह भी पता चला कि इस बीच तीन दिन नहीं, बल्कि सात साल बीत गए थे और इस बीच उसका मालिक मर गया था।

तीसरी कहानी

एक बार नन्हें देवदूतों ने एक पालने में से एक बच्चे को उठा लिया और उसकी जगह एक दूसरे बच्चे को रख दिया, जिसकी आँखें लाल थीं। वह बेहद बदसूरत था। वह न तो खाता था न पीता था। बेचारी माँ परेशान होकर पड़ोसन के पास गई और उससे राय ली। पड़ोसन ने उससे कहा कि वह उसे बच्चे को रसोई में ले जाए और उसे भट्ठी के पास रखकर दो अण्डे के छिलकों में पानी उबाले। यदि वह हँसेगा तो उसके भाग्य का निर्णय हो जाएगा। माँ ने वैसा ही किया। जैसे ही उसने अण्डे के छिलकों को आग पर रखा तो वह गा उठा–

"हूँ तो मैं बहुत ही बूढ़ा,
देखा मैंने सब कुछ देखा,
अण्डे के छिलकों को पकते,
लेकिन मैंने कभी न देखा।"

यह गाकर वह बेतहाशा हँसने लगा। वह हँस ही रहा था कि कुछ देवदूत अपने साथ बच्चे को लेकर भीतर आए और उसे भट्ठी के पास रखकर उस बदसूरत बच्चे को अपने साथ ले गए।

35

सोने की चाभी

सर्दियों में एक बार जब भारी बर्फ़ गिरी हुई थी, एक ग़रीब लड़के को बर्फ़गाड़ी में लकड़ी लेने के लिए बाहर निकलना पड़ा। जब उसने काफ़ी लकड़ी इकट्ठा कर ली तो उसने सोचा कि क्यों न वापस चलने से पहले आग जलाकर अपने हाथ-पैरों को गर्म कर लिया जाए। उसके हाथ-पैर ठण्ड से एकदम जम गए थे। उसने बर्फ़ को झाड़कर जगह साफ़ की। अचानक उसे वहाँ एक छोटी सोने की चाभी मिली। जैसे ही उसने उसे उठाया तो उसे ख़याल आया कि जब यहाँ यह चाभी पड़ी है तो इसका कोई ताला भी ज़रूर होगा। यह सोचते हुए उसने ज़मीन खोदी तो उसे एक छोटी-सी लोहे की तिजोरी मिली। उसने सोचा, ''यह चाभी ज़रूर इसकी ही होगी। इसमें ज़रूर बड़ा ख़जाना बन्द है।'' उसने तिजोरी को चारों तरफ़ से उलट-पुलटकर देखा, लेकिन उसे कहीं भी चाभी लगाने का छेद नहीं मिला। बहुत देर बाद उसे एक बहुत छोटा छेद दिखा जो मुश्किल से ही दिखाई पड़ता था। उसने उसमें चाभी लगाई और आश्चर्य ! चाभी तो उसकी ही थी। उसने चाभी को एक बार घुमाया। अब हम इन्तज़ार करेंगे और देखेंगे कि जब उसने उस तिजोरी को खोला, उसका ढक्कन ऊपर उठाया, तब उसमें से क्या आश्चर्यजनक ख़ज़ाना निकला ?

36

चतुर एलिस

एक समय में एक आदमी था, जिसकी एक बेटी थी। 'चतुर एलिस' के नाम से उसे पुकारा जाता था। जब वह बड़ी हुई तो उसके पिता ने उसकी माँ से कहा, "हमें अब इसकी शादी कर देनी चाहिए।" माँ बोली, "हाँ, लेकिन जब उसके लिए कोई योग्य वर मिले तब।"

आख़िरकार हैंस नाम का एक युवक काफ़ी दूर से एलिस के लिए विवाह का प्रस्ताव लेकर आया। लेकिन उसकी एक शर्त थी कि चतुर एलिस को बुद्धिमान होना चाहिए। पिता बोला, "ओह, वह बहुत बुद्धिमान है।" और माँ ने सहमति दी, "अरे वह तो सड़क पर बहती हवा को देख सकती है और मक्खियों को खाँसते हुए सुन सकती है।"

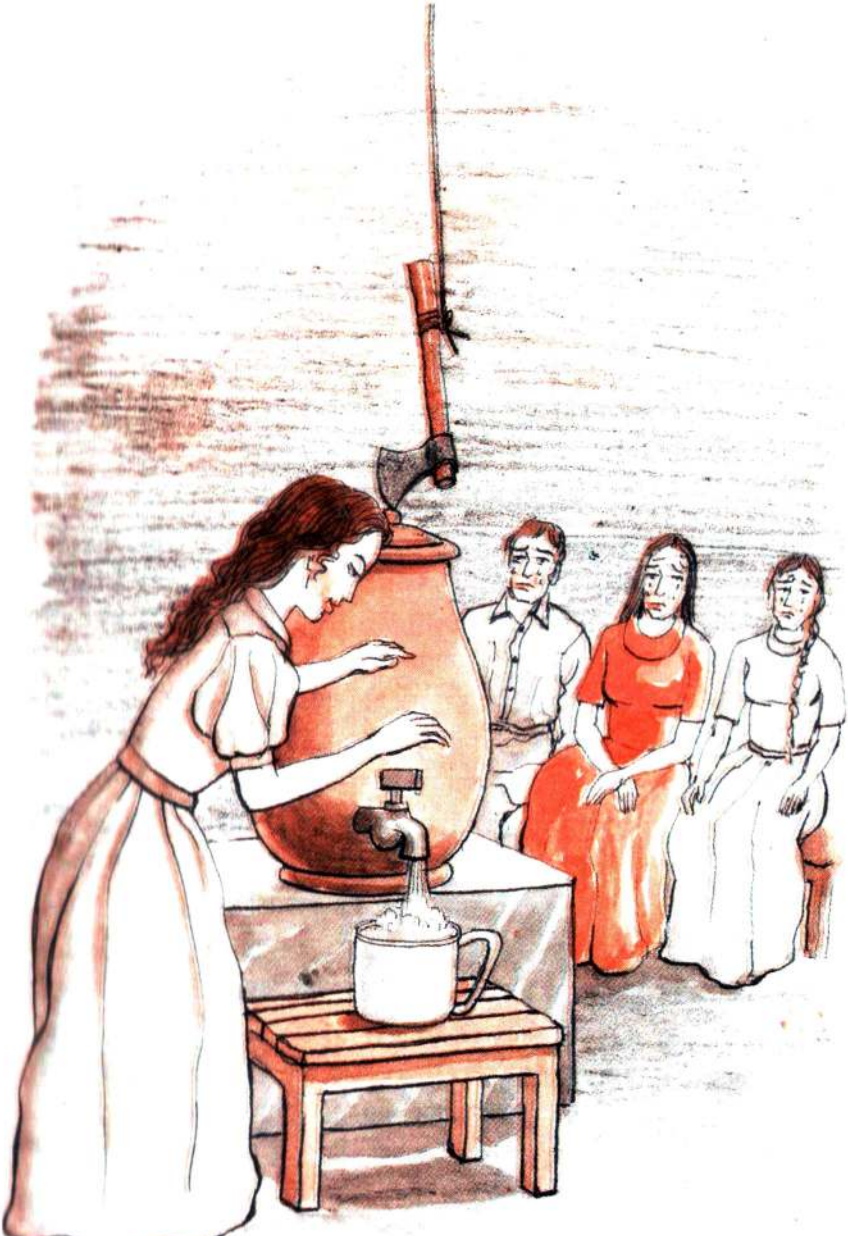
हैंस बोला, "अच्छी बात है, लेकिन यदि वह बुद्धिमान नहीं हुई तो मैं उससे विवाह नहीं करूँगा।" इसके बाद वे लोग खाना खाने बैठ गए और उसकी माँ एलिस से बोली, "नीचे जाकर थोड़ी शराब लेकर आओ।"

चतुर एलिस जग लेकर समय काटने के लिए जग का ढक्कन ऊपर-नीचे करते हुए नीचे गयी। नीचे पहुँचकर उसने एक स्टूल लिया और उसे शराब के मटके के सामने रखा, जिससे उसे झुकना न पड़े और उसकी कमर टेढ़ी न हो जाए। उसने मटके का नल खोल दिया और जग में शराब भरने लगी। उसके पास थोड़ा-सा ख़ाली समय था, इसलिए वह अपने आसपास, ऊपर-नीचे देखने लगी। बहुत देर कोनों मे देखने के बाद उसे ठीक अपने सिर के ऊपर ईंटों से बाहर निकली हुई एक कुल्हाड़ी दिखाई दी। उसे देखते ही चतुर एलिस रोने लगी और बोली, "ओह, यदि मैं हैंस से विवाह करूँगी, हमारा बच्चा होगा और जब वह बड़ा होगा और नीचे शराब लेने आएगा तो यह कुल्हाड़ी तो उसके ऊपर गिर जाएगी और वह मर जाएगा।" यह कहती हुई वह बैठी-बैठी भविष्य की आशंका से रोती रही।

उधर ऊपर बैठे लोग शराब का इन्तज़ार कर रहे थे। चतुर एलिस जब नहीं लौटी तो उसकी माँ ने नौकरानी को जाकर उसे देखने के लिए कहा। नौकरानी नीचे आई और एलिस को मटके के सामने बैठकर बुरी तरह रोते हुए देखा। उसने पूछा, "एलिस, तुम क्यों रो रही हो।" वह बोली, "आह, क्या मेरे पास रोने की वजह नहीं है ? यदि मैं हैंस से शादी करूँगी, मेरा बच्चा होगा, वह बड़ा होगा और जब हम उसे शराब लेने नीचे भेजेंगे तो उसके सिर पर यह कुल्हाड़ी गिर जाएगी और वह मर जाएगा।" नौकरानी बोली, "ओह, हमारी एलिस कितनी चतुर है !" और वह भी वहीं बैठकर भविष्य की आशंका से रोने लगी।

थोड़ी देर बाद जब नौकरानी भी नहीं लौटी और ऊपर बैठे लोगों को बेहद प्यास लगने लगी तो पति ने लड़के को एलिस और नौकरानी को देखने के लिए नीचे भेजा। लड़का नीचे आया और उसने देखा कि एलिस और नौकरानी दोनों बैठी रो रही हैं। उसने कारण पूछा तो एलिस ने उसे कुल्हाड़ी के बारे में बताया जो उसके बच्चे पर गिरनेवाली थी। जब वह अपनी बात कह चुकी तो लड़के ने कहा, "हमारी एलिस कितनी चतुर है।" और उन दोनों के साथ बैठकर रोने लगा।

ऊपर बैठे वे लोग इन्तज़ार कर रहे थे। जब लड़का भी नहीं लौटा तो पति ने अपनी पत्नी से कहा, "तुम नीचे जाकर देखो कि एलिस वापस क्यों नहीं लौटी।" उसने नीचे जाकर तीनों को बैठे रोते हुए देखा और कारण पूछा तो एलिस ने उसे भी उस कुल्हाड़ी के बारे में बताया जो उसके बेटे के सिर पर गिर सकती थी। माँ भी उसी तरह बोली, "ओह, हमारी एलिस कितनी चतुर है।" और वह भी बाक़ी लोगों के साथ नीचे बैठकर रोने लगी। पति भी अपनी पत्नी की राह देखता रहा। लेकिन आख़िरकार उसे इतनी प्यास लगी कि उसने सोचा, "मुझे ख़ुद ही नीचे जाकर देखना चाहिए कि एलिस क्यों नहीं लौटी।" जैसे ही वह नीचे आया, उसने चारों को बैठकर रोते देखा। जब उसे उनके रोने की वजह पता चली तो वह भी बोल पड़ा, "ओह, हमारी एलिस कितनी चतुर है।" और बैठकर रोने लगा। काफ़ी समय हैंस ऊपर बैठकर राह देखता रहा। लेकिन जब कोई भी नहीं लौटा तो उसे लगा कि वे उसी की राह देख रहे होंगे। यह सोचकर वह उन्हें देखने नीचे आया। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि वे पाँचों वहाँ बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रो रहे हैं और हर एक दूसरे से ज़्यादा ज़ोर से रोने की कोशिश कर रहा है। "क्या अनर्थ हो गया ?" उसने पूछा। एलिस बोली, "अरे प्यारे हैंस, यदि हमारी शादी होगी और हमारा बेटा होगा। जब वह बड़ा होगा तो हम उसे शराब लेने नीचे भेजेंगे



तो ऊपर लटकी वह कुल्हाड़ी उसके सिर पर गिर जाएगी और वह मर जाएगा। क्या यह दुख की बात नहीं है.?"

हैंस बोला, "घर सम्भालने के लिए इतनी चतुराई काफ़ी है। तुम चतुर हो इसीलिए मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।" और यह कहते हुए वह एलिस का हाथ पकड़कर घर ले गया और उससे विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद हैंस एक सुबह बोला, "मैं बाहर जाकर कुछ कमाता हूँ, तुम खेतों पर जाकर रोटियाँ बनाने के लिए कुछ भुट्टे ले आओ।"

वह बोली, "ठीक है।" और जब हैंस चला गया तो उसने अपने साथ खेतों पर ले जाने के लिए थोड़ा दलिया बनाया। जब वह खेतों में आई तो उसने सोचा, 'मैं क्या करूँ ? पहले मैं भुट्टे काटूँ या थोड़ी झपकी ले लूँ ? ठीक है, मैं पहले सो ही लेती हूँ।' यह सोचकर वह लेट गई और सो गई। इसी बीच हैंस घर लौट आया, लेकिन एलिस नहीं आई। वह बोला, "ओह, हमारी एलिस कितनी चतुर है, वह इतनी मेहनती है कि खाना खाने भी घर नहीं लौटी।" दिन ढल गया, शाम हो गई, लेकिन एलिस नहीं लौटी। हैंस यह देखने खेत पर गया कि एलिस ने कितने भुट्टे तोड़े लिए हैं। लेकिन वहाँ तो एलिस खेत में गहरी नींद सो रही थी। वह तुरन्त घर गया और एक जाली लेकर वापस आया जिसमें छोटी-छोटी घंटियाँ लगी थी। यह जाली उसने एलिस के सिर पर डाल दी। वह अभी भी सो रही थी। इसके बाद हैंस फिर वापस घर जाकर एक स्टूल पर बैठ गया और अपना काम करने लगा।

आख़िरकार जब अँधेरा हो गया तो चतुर एलिस जागी। जैसे ही वह खड़ी हुई तो उसके चलने से जाली की घंटियाँ बजने लगीं। उससे वह बेहद डर गई और उसे लगा कि वह चतुर एलिस ही है या कोई और। वह अपने आपसे बोली, "मैं वही हूँ या नहीं ?" अंत में उसने सोचा कि उसे घर जाकर पूछना चाहिए कि वह कौन है। उसने सोचा कि वे उसे बता देंगे। जब वह घर आई तो दरवाज़ा बन्द था। उसने दरवाज़ा खटखटाया और पूछा, "हैंस, क्या एलिस भीतर है ?"

वह बोला, "हाँ वह भीतर ही है।"

यह सुनकर वह बहुत डर गई और चिल्लाई, "हे ईश्वर, तो मैं एलिस नहीं हूँ।" वह दौड़कर दूसरे घर में गई लेकिन भीतर के लोगों को घंटियों की रुनझुन सुनाई दे गई और उन्होंने दरवाज़ा नहीं खोला। किसी ने भी उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला। वह सीधे दौड़कर गाँव से बाहर निकल गई, फिर उसे दोबारा किसी ने नहीं देखा।

37

डाकू और उसके बेटे

एक घने जंगल में एक डाकू अपने दल के अन्य सदस्यों के साथ रहता था। वे गुफ़ाओं और नुकीली चट्टानों में छिपकर रहते थे। जब कोई राजा, ज़मींदार या धनी व्यापारी इस पहाड़ी की बग़ल से गुज़रता तो वे अपने छिपने के स्थान से बाहर निकल आते और उनका सारा क़ीमती सामान छीनकर वापस छिप जाते। लेकिन समय बीतने के साथ डाकुओं का सरदार बूढ़ा हो चला। बूढ़े होने पर उसे अपने द्वारा किए गए बुरे कामों पर पश्चाताप होने लगा। उसने निश्चय किया कि वह अच्छा और ईमानदार आदमी बनेगा और ज़रूरतमन्दों की मदद करेगा। लोग उसे बदला हुआ पाकर आश्चर्य करते मगर साथ ही साथ ख़ुश भी होते। उसके तीन बेटे थे। जब बच्चे जवान हो गए तो उसने एक दिन उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे पूछा कि वे अपने जीवन-यापन के लिए क्या पसन्द करेंगे। बेटों ने आपस में विचार-विमर्श कर उसे जवाब दिया, "सेब टूटकर अपने पेड़ से ज़्यादा दूरी पर नहीं गिरता। इसलिए हम भी वैसा ही करेंगे जैसा आपने किया है। हम लोग डाकू बनेंगे। दूसरे किसी काम में सुबह से शाम तक मेहनत करने पर भी आमदनी कम होगी, जिससे हम सन्तुष्ट नहीं हो पायेंगे।"

पिता ने जवाब दिया, "तुम लोग थोड़ी आमदनी में शान्तिपूर्वक रहकर सन्तुष्ट क्यों नहीं हो सकते ? ईमानदारी से कमाया गया थोड़ा धन भी काफ़ी दिनों तक चलता है। डाका डालना एक गन्दा काम है, जिससे अर्जित धन से आदमी को कभी शान्ति नहीं मिलती। यह मैं अपने अनुभव से जानता हूँ। इसका अन्त हमेशा बुरा होता है और तुमलोग भी अन्त में पकड़े जाओगे और फाँसी पर चढ़ा दिए जाओगे।"

उसके बेटे इस उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने निश्चय किया कि वे एक बार प्रयास करेंगे। उन्हें पता था कि रानी के पास एक बहुत सुन्दर और क़ीमती

घोड़ा है। उन्होंने इस घोड़े को चुराने का निश्चय किया। उन्हें पता था कि यह घोड़ा एक खास क़िस्म की नरम घास.को छोड़कर और कुछ नहीं खाता। यह घास एक ख़ास जगह की नरम मिट्टी में पैदा होती है। वे उस जगह पर गए और वहाँ से घास काटकर उसका एक बड़ा गट्ठर बनाया। इस गट्ठर के बीच में उन्होंने अपने छोटे भाई को अच्छी तरह छुपा दिया। गट्ठर को उठाकर वे बाज़ार ले गए और उसे रानी के घोड़ों की देखभाल करनेवाले नौकरों को बेच दिया। नौकरों ने इस गट्ठर को ले जाकर घोड़ों के अस्तबल में रख दिया। आधी रात के क़रीब जब सभी लोग सो गए तो छोटा भाई इस गट्ठर से बाहर निकला और उस घोड़े को उसके बाँधने के स्थान से खोला। उसकी सुनहरी लगाम खोलकर उसने पीठ पर सोने-चाँदी से सजे जीन को कसा और लगाम में लगे घुँघुरुओं में मोम भर दिया, ताकि आवाज़ नहीं हो। इसके बाद उसने अस्तबल का दरवाज़ा खोला और घोड़े की पीठ पर बैठकर अपने भाइयों के छिपने के स्थान की ओर चल दिया। लेकिन शहर में पहरेदार पहरा दे रहे थे। उन्होंने इस चोर को उसके भाइयों सहित पकड़ लिया। तीनों को क़ैद में डाल दिया गया।

दूसरी सुबह उन्हें रानी के सामने पेश किया गया। उनकी कम उम्र को देखते हुए, रानी ने उनसे उनके माता-पिता के बारे में पूछा। उसे पता चला कि वे तीनों एक पुराने डाकू के बेटे हैं, जो अब सभ्य नागरिक की तरह रह रहा है। रानी ने तीनों को वापस क़ैद में भेज दिया। उनके पिता से पूछा कि क्या वह उन्हें आज़ाद करवाना चाहता है। बूढ़े पिता ने जवाब दिया, ''मेरे बेटे इस योग्य नहीं है कि उनकी आज़ादी के लिए एक पैसा भी ख़र्च किया जाए।''

रानी ने कहा, ''तुम एक मशहूर डाकू रहे हो। तुम मुझे अपने डाकू जीवन की कोई रोचक घटना सुनाओ। तो मैं तुम्हारे बेटे को आजाद कर दूँगी।'' इतना सुनकर डाकू ने जवाब दिया, ''रानी साहिबा, मैं आपको एक ऐसी घटना सुनाता हूँ जिसने मुझे आग और पानी ज़्यादा डराया है। एक दिन जब मैं कहीं जा रहा था तो सुनने में आया कि दो पहाड़ियों के बीचवाले घने जंगल में एक राक्षस रहता है। उसके पास सोने और चाँदी के हज़ारों सिक्के हैं। वह जगह बीस मील दूर थी। मैंने अपने साथियों में से क़रीब सौ ताक़तवर और फुर्तीले साथियों को चुना और उन्हें लेकर उस जगह की ओर चल पड़ा। रास्ता पथरीला और थका देने वाला था। जब हमलोग उस जगह पर पहुँचे, जहाँ राक्षस रहता था तो काफ़ी ख़ुश हुए, क्योंकि राक्षस उस समय घर पर नहीं था। हम लोगों ने सोना और चाँदी इकट्ठा करना शुरू किया। हमलोग जितना सोना-चाँदी अपने साथ ला सकते थे, उतना

लेकर वापस लौटने के लिए तैयार हो गए। जब हम लोग घर की ओर वापस लौटने लगे और यह सोचने लगे कि अब हमलोग सुरक्षित अपने घर पहुँच जाएँगे, तभी अचानक कहीं से राक्षस आया और हमें बन्दी बना लिया। उसके साथ नौ और राक्षस थे। इन राक्षसों ने हमें दस-दस के दल में बाँटकर आपस में बाँट लिया। मैं अपने नौ अन्य साथियों के साथ उसी राक्षस के हिस्से में आया। जिसका ख़ज़ाना लूटकर हम भाग रहे थे। उसने हमारे हाथों को पीछे की ओर बाँध दिया और हमें भेड़ों की तरह हाँकता हुआ एक पथरीली गुफ़ा के अन्दर ले गया। हमलोगों ने जब उससे कहा कि हमलोग अपनी आज़ादी के बदले उसे ढेर सारा धन दे सकते हैं तो उसने कहा, "मुझे धन नहीं चाहिए। मैं तुम लोगों को बन्दी बनाकर रखूँगा और एक-एक कर मारकर खाऊँगा। इतना कहकर उसने हमलोगों को अपने हाथ से टटोलकर देखा और हममें से एक को अलग छाँट लिया। उसने कहा, "यह तुम लोगों में सबसे मोटा है और मैं इससे अपनी शुरुआत करूँगा।" उसने उसे ज़मीन पर पटक दिया और उसके मांस के टुकड़े करके एक पानी से भरे बर्तन में रखने लगा। इसके बाद इस बर्तन को आग पर रखकर उसके मांस को पकाया और उसे खा गया। इस तरह वह हममें से एक-एक को प्रतिदिन खाने लगा। चूँकि मैं सबसे दुबला था, इसलिए मेरी बारी सबसे अन्त में आनेवाली थी। जब उसने मेरे सारे साथियों को मारकर खा लिया, तब मैंने अपने आपको बचाने के लिए एक तरक़ीब सोची। मैंने राक्षस से कहा, "मुझे लगता है कि तुम्हारी आँख ख़राब है और तुम्हारे चेहरे में दर्द रहता है। मैं एक चिकित्सक हूँ और तुम अगर मुझे नहीं मारोगे तो मैं तुम्हारी आँखें ठीक कर दूँगा।"

उसने वादा किया कि अगर मैं उसकी आँखें ठीक कर दूँगा तो वह मुझे नहीं मारेगा। मैंने इलाज के लिए जिन चीज़ों की माँग की उसने वे चीज़ें मुझे दे दी। उसके बाद मैंने एक बड़े बर्तन को तेल से भर दिया और उसमें नमक, गंधक, सुहागा, नौसादर आदि—जैसी आँखों को नुक़सान पहुँचानेवाली अनेक चीज़ें डाल दीं। फिर उसे आग पर चढ़ा दिया जैसे कि मैं उसकी आँखों के लिए पट्टी तैयार कर रहा होऊँ। जब तेल गर्म होकर खौलने लगा तब मैंने राक्षस को ज़मीन पर लेट जाने के लिए कहा और सारा तेल उसकी आँखों, सिर और बदन पर डाल दिया, ताकि वह बिलकुल अन्धा हो जाए और उसका सारा बदन जल जाए। तेल पड़ते ही वह चीख़ने लगा और ज़मीन से उठकर खड़ा हो गया। लेकिन फिर तुरन्त ही जमीन पर लेटकर छटपटाने लगा। छटपटाता हुआ वह इतनी भंयकर आवाज़ अपने गले से निकाल रहा था, मानों शेर दहाड़ रहा हो। इसके बाद वह फिर गुस्से



से चिल्लाता हुआ खड़ा हुआ और ज़मीन पर पड़े एक मोटे डण्डे को उठाकर फ़र्श पर यहाँ-वहाँ पटकने लगा। इसके बाद वह दीवार पर डण्डा मारने लगा। वह सोच रहा था कि वह मुझे मार रहा है। मैं बाहर नहीं भाग सकता था, क्योंकि गुफ़ा के चारों और ऊँची दीवारें थी और दरवाज़े पर लगा लोहे का फाटक बन्द था। मैं अपने आपको डण्डे से बचाने के लिए यहाँ-वहाँ भागता रहा और अन्त में एक सीढ़ी के सहारे ऊपर पहुँचकर दोनों हाथों से छत से लटक गया। एक दिन और एक रात मैं वैसे ही छत से लटका रहा, परन्तु जब और ज़्यादा देर तक लटक पाने की शक्ति समाप्त हो गई तो चुपके से नीचे उतर आया और भेड़ों के झुण्ड में जाकर शामिल हो गया। राक्षस का ध्यान मेरी ओर आकर्षित नहीं हो, इसलिए मैं हमेशा भेड़ों के साथ दौड़ता रहता था और राक्षस के दोनों पाँवों के बीच से अन्य भेड़ों की तरह निकलता रहता था। एक दिन मुझे एक भेड़ की ख़ाल एक कोने में पड़ी हुई मिली। उसे मैंने अपने शरीर पर इस प्रकार लपेटा कि सींगवाला हिस्सा मेरे सिर पर आ गया। राक्षस भेड़ों की गिनती उन्हें अपने दोनों पाँवों को बीच से गुज़ारकर किया करता था। उनमें से किसी मोटी भेड़ को पकड़कर वह मार डालता था और पकाकर खा जाता था। मैं सोच रहा था कि ख़ाल ओढ़कर मैं उसके पाँवों के बीच से निकलकर भाग जाऊँगा, परन्तु मैं जैसे ही उसके नीचे से निकलने लगा, उसने मुझे पकड़ लिया और बोला, "तुम मोटे हो। आज तुम्हें खाकर मैं अपना पेट भरूँगा।"

मैं उछला और उसके हाथ से छूट गया, परन्तु उसने मुझे फिर पकड़ लिया। मैं उसके हाथ से अपने को छुड़ाकर दुबारा भागा, परन्तु उसने मुझे फिर पकड़ लिया। मैंने सात बार प्रयास किया, परन्तु सातों बार उसने मुझे पकड़ लिया। सातवीं बार वह गुस्से में बोला, "तुम यहाँ से भले भाग जाओ, मगर बाहर निकलते ही भेड़िये तुम्हें मारकर खा जाएँगे।" मैं उससे छूटते ही गुफ़ा से बाहर भागा और बाहर आकर भेड़ की ख़ाल को उतार फेंका। इसके बाद मैंने अपने मुँह से आवाज़ निकालकर उसे यह संकेत दिया कि उसके सारे प्रयासों के बावजूद मैं भागने में सफल हो गया था। उसने चिल्लाकर मुझे रोका और अपने हाथ से एक अँगूठी उतारकर मुझसे बोला, "इसे मेरी तरफ़ से भेंट के रूप में लेते जाओ। तुम्हारे जैसे चालाक और बुद्धिमान आदमी को पुरस्कार मिलना चाहिए।" मैंने उससे सोने की यह अँगूठी ले ली और उसे अँगुली में पहन लिया। अँगूठी के पहनते ही, नहीं चाहते हुए भी मेरे मुँह से आवाज़ निकलने लगी, "मैं यहाँ हूँ, मैं यहाँ हूँ।" इस आवाज़ को सुनकर राक्षस को पता चलने लगा कि मैं कहाँ हूँ और उसने जंगल में मेरा पीछा

करना शुरू कर दिया। अन्धा होने की वजह से वह बार-बार पेड़ों से टकराकर या झाड़ियाँ में उलझकर ज़मीन पर गिर जाता। लेकिन गिरते ही वह फिर खड़ा हो जाता और आगे बढ़ने लगता। वह शीघ्र ही मेरे पास पहुँच गया, क्योंकि वह काफ़ी लम्बे-लम्बे डग बढ़ाता था। उसके नजदीक़ पहुँच जाने पर भी मैं बिना रुके चिल्लाता रहा। "मैं यहाँ हूँ, मैं यहाँ हूँ।" मैं जानता था कि मैं अँगूठी की वजह से चिल्ला रहा था, परन्तु प्रयास करने पर भी अँगूठी अँगुली से बाहर नहीं आ रही थी। अन्त में मैंने अपनी अँगूठीवाली अँगुली को दाँतों से काटकर अलग कर दिया। अँगुली के कटकर अलग होते ही मेरा चिल्लाना रुक गया। इस प्रकार मैं राक्षस से तो बच गया, मगर एक अँगुली को मैंने हमेशा के लिए खो दिया।"

इतनी कहानी सुनाने के बाद डाकू ने रानी से कहा, "अगर आपको यह कहानी अच्छी लग रही हो तो कहानी के इतने हिस्से के बदले मेरे एक बेटे को आज़ाद कर दीजिए। इसके बाद मुझे क्या हुआ, यह मैं अपने दूसरे बेटे की आज़ादी के लिए आपको सुनाता हूँ।

"जब मैं राक्षस से बचकर भाग रहा था तो जंगल में खो गया। रास्ता ढूँढ़ने के लिए मैं ऊँचे पेड़ों और ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ा। लेकिन जहाँ तक मेरी नज़र जाती, वहाँ आदमी का कोई चिह्न, कोई खेत या घर नहीं दिखता था। आकाश छूती पहाड़ियों से उतरकर मैं बहुत बड़ी घाटी में पहुँचा। रास्ते में मेरा सामना, शेर, भालू, जंगली भैंसे, ज़ेब्रा, जहरीले साँपों और रेंगने वाले जीवों आदि से हुआ। मैंने दो जंगली आदमियों को भी देखा, जिनकी चोंच और सींग थे। वे इतने डरावने थे कि उन्हें याद करके आज मैं डर से काँप जाता हूँ। मैं भूख और प्यास से परेशान जल्दी-जल्दी चलता रहा। अन्त में, जब शाम होनेवाली थी तो मैं एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर आया। वहाँ से एक घाटी में मुझे चूल्हे के धुएँ की तरह धुआँ उठता दिखाई दिया। मैं दौड़ता हुआ पहाड़ से नीचे उतरा और धुएँ की दिशा में दौड़ने लगा। जब मैं पास पहुँचा तो मैंने तीन आदमियों को पेड़ की शाख़ा से मरा हुआ लटकते पाया। यह दृश्य देखकर मैं डर गया, क्योंकि मुझे लगा कि मैं फिर किसी राक्षस के चँगुल में फँसनेवाला हूँ। हिम्मतकर मैं आगे बढ़ा तो एक झोंपड़ी दिखाई दी। इस झोंपड़ी का दरवाज़ा खुला था। आग के पास एक औरत अपने बच्चे के साथ बैठी थी। अन्दर पहुँचकर मैंने उसका अभिवादन किया और उससे पूछा कि वह वहाँ अकेली क्यों बैठी है। उसका पति कहाँ है और वह और लोगों से अलग इतनी दूर पर क्यों रहती है। उसने रोते हुए जवाब दिया कि उसे और उसके बच्चे को जंगली आदमी ज़बरदस्ती यहाँ उठा लाये हैं। उसे औरत ने आगे बताया कि सुबह

बाहर जाते समय उन जंगली आदमियों ने उसे अपने बच्चे को मारकर और पकाकर रखने के लिए कहा है। वे लोग लौटकर उसे खायेंगे। यह सुनकर मुझे उस बच्चे पर दया आने लगी और मैंने उन्हें बचाने का निश्चय किया। मैं बाहर गया और पेड़ पर टँगे एक चोर की लाश को लाकर उसके टुकड़े करने लगा। इन टुकड़ों को मैंने उस औरत को दे दिया और उससे कहा कि जब डाकू वापस आए तो उन्हें यह खाने के लिए दे दे। उसकी बच्चे को मैंने एक खोखले पेड़ के कोने में छिपा दिया और मैं भी घर के पीछे जाकर छिप गया। यहाँ से मैं उन जंगली आदमियों को वापस आता हुआ देख सकता था और ज़रूरत पड़ने पर औरत की मदद करने के लिए ठीक समय पर घर के अन्दर पहुँच सकता था। शाम होते ही तीनों राक्षस वापस लौटे। वे बेहद डरावने दिख रहे थे। वे अपने साथ एक मृत शरीर को घसीटते हुए ले जा रहे थे, परन्तु मैं देख नहीं पाया कि वह शरीर किसका था। घर के अन्दर घुसकर उन्होंने आग जलाई और उस मृत शरीर को कच्चा ही अपने दाँतों से नोच-नोचकर खाने लगे। उसके बाद उन्होंने औरत के द्वारा पकने के लिए रखे मांस को आग से नीचे उतारा और आपस में बाँटकर खाने लगे। खाना समाप्तकर उन्होंने औरत से पूछा कि क्या वह मांस उसके बच्चे का था। औरत ने कहा, "हाँ" तब उनमें से एक राक्षस, जो उनका नेता मालूम होता था, बोला, "मुझे लगता है कि तुमने अपने बच्चे को कहीं छुपा दिया है और यह मांस उन तीनों चोरों में से किसी एक का है।" इतना कहकर उसने अपने एक साथी से कहा कि वह दौड़कर बाहर जाए और पेड़ से टँगे तीनों चोरों के शरीर से मांस का एक-एक टुकड़ा नोचकर ले आए ताकि वह आश्वस्त हो सके कि वे तीनों अभी तक वहीं टँगे हैं। जैसे ही मैंने यह सुना, "मैं दौड़कर दोनों चोरों के बीच वाले ख़ाली पेड़ की शाखा को हाथ से पकड़कर लटक गया। दानव बाहर आकर तीनों शरीरों से एक-एक टुकड़ा नोंचकर ले गया। मुझे काफ़ी दर्द हुआ, परन्तु मैंने अपने मुँह से आवाज़ नहीं निकलने दी। मेरे शरीर पर अभी तक उस कटे का निशान है, जो मेरी कहानी की सत्यता को प्रमाणित करता है।" इतना बताकर डाकू ने कहानी को रोक दिया और रानी से बोला कि कहानी का इतना भाग उसके दूसरे बेटे की आज़ादी के लिए था। अब कहानी का जो बचा हुआ भाग वह सुनाएगा, वह उसके तीसरे बेटे की आज़ादी के लिए होगा। इतना कहकर उसने फिर कहानी सुनाना प्रारम्भ किया—

"जैसे ही वह जंगली आदमी मांस का टुकड़ा लेकर वापस लौटा, मैं पेड़ से नीचे उतरा और अपनी क़मीज़ को पकड़कर अपने घाव को कसकर बाँध दिया।

बाँधने के बाद भी ख़ून का निकलना बन्द नहीं हुआ। लेकिन मैंने इस ओर ध्यान देना बन्द कर दिया और सोचने लगा कि उस औरत और उसकी बच्ची को कैसे बचाया जा सकता है। मैं छिपकर झोंपड़ी के अन्दर होनेवाली बातों को सुनने लगा। लेकिन भूख-प्यास और घाव में होने वाले दर्द की वजह से मेरे लिए ध्यान से उनकी बातों को सुन पाना काफ़ी कठिन हो गया। इसके बावजूद मुझे लगा कि वह राक्षस झोंपड़ी के अन्दर माँस के तीनों टुकड़ों को चखा तो उसने चिल्लाकर अपने साथियों से कहा, "अभी तुरन्त दौड़ते हुए बाहर जाओ और बीच में टँगे चोर के शरीर को उतारकर लाओ, क्योंकि इसके माँस का स्वाद काफ़ी अच्छा है।" जैसे ही मैंने यह सुना, मैं दौड़कर पुनः पेड़ से लटक गया। राक्षसों ने मुझे पेड़ से नीचे उतारा पत्थरों और काँटों पर घसीटते हुए झोपड़ी के अन्दर ले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होने मुझे फ़र्श पर पटक दिया। इसके बाद उन्होंने अपने चाकुओं को तेज़ करना शुरु किया, ताकि मेरे शरीर को काटकर खाया जा सके। वे ऐसा करने वाले ही थे कि तभी अचानक इतनी तेज़ आवाज़ में बिजली कड़की कि वे राक्षस भी सहम गए। बिजली इसी प्रकार कड़कती रही और तेज़ वर्षा होने लगी। हवा की रफ़्तार इतनी तेज़ थी कि लगता था झोपड़ी उड़ जाएगी। तेज़ आवाज़ और मौसम में अचानक आए ऐसे बदलाव से घबराकर राक्षस बाहर भाग गए और मैं ज़मीन पर अकेला पड़ा रह गया। तूफ़ान तीन घण्टे तक चला और इसके बाद सुबह हो गई। इसके बाद मैं अपनी जगह से उठा और उस औरत और बच्चे को अपने साथ लेकर वहाँ से चल दिया। चौदह दिनों तक हम ऐसे ही जंगल में यहाँ-वहाँ भटकते रहे। रास्ते में मिलनेवाले जंगली फलों और बेरों को खाकर हम गुज़ारा करते रहे। इसके बाद हम एक सभ्य समाज में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर मैंने उस औरत को उसके पति के हवाले कर दिया। उसका पति अपनी पत्नी और बच्चों को वापस लौटा पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।"

इतना कहकर डाकू ने कहानी का अन्त किया और जैसे ही उसने कहानी ख़त्म की रानी बोली, "उस औरत को उसके पति से मिलवाकर तुमने अपने सारे बुरे कर्मों को धो डाला। मैं तुम्हारे तीनों बेटों को आज़ाद करती हूँ।"

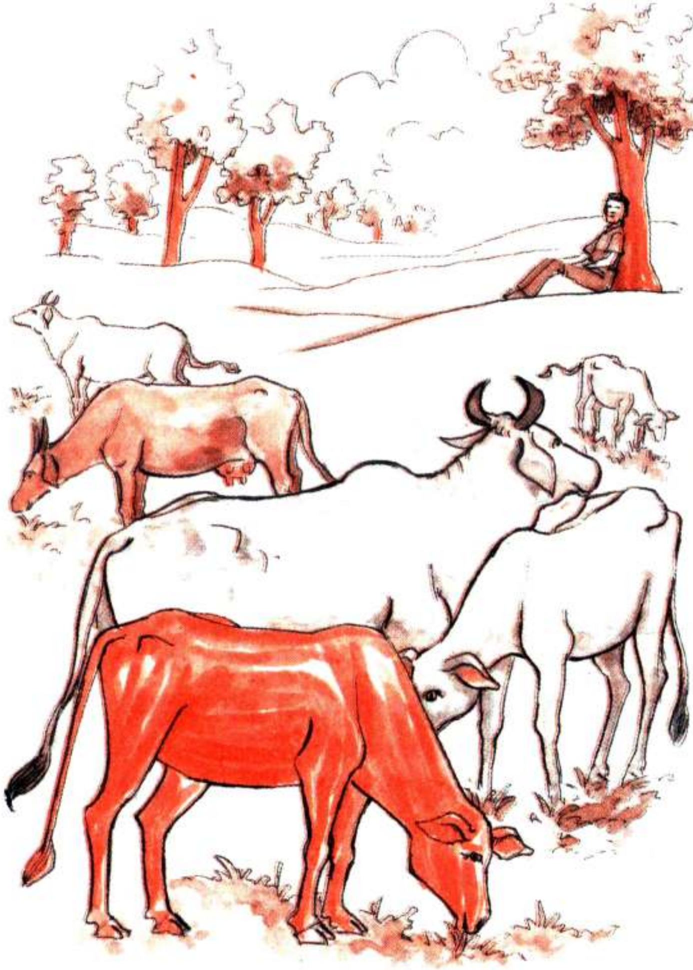
38

छोटा किसान

एक गाँव में बहुत सारे अमीर किसानों के साथ एक ग़रीब किसान भी रहता था। इसी कारण से उसे 'छोटा किसान' कहा जाता था। उसके पास न तो गाय थी और न ही गाय ख़रीदने के लिए पैसे। लेकिन उसकी और उसकी पत्नी की एक गाय ख़रीदने की बेहद इच्छा थी। एक दिन वह अपनी पत्नी से बोला, "मुझे एक विचार आया है; मेरे ससुर, जो कि बढ़ई हैं, हमें लकड़ी से एक बछिया बनाकर और उसे भूरे रंग में रंगकर दे सकते हैं। वह दूसरी बछियों जैसी ही दिखाई देगी और हो सकता है। कि कुछ दिनों बाद वह बड़ी होकर गाय बन जाए।" पत्नी यह सुनकर ख़ुश हो गई उसने पिता को बछिया बनाने के लिए कह दिया। बढ़ई ने बछिया बनाया और उसे रंगा। उसका सिर इस तरह से झुका था जैसे कि वह कुछ खा रही हो।

अगली सुबह जब गौएँ चरागाह में चरने गईं तो किसान ने चरवाहे को बुलाया। वह बोला, "देखो, मेरे पास एक बछिया है। लेकिन यह इतनी छोटी है कि अभी इसे गोद में ही उठाना पड़ता है।" चरवाहे ने कहा, "ठीक है।" और बछिया को अपनी बाँहों में उठाकर उसे घास के मैदान में ले गया। उसे वहाँ उसने रख दिया। पूरे दिन बछिया वहाँ खड़ी रही जैसे कि घास खा रही हो। किसान बोला, "थोड़े दिन में यह बड़ी हो जाएगी और अपने आप चलने लगेगी; अभी तो सिर्फ़ यह देखो कि यह खाती कैसे है।" शाम को जब चरवाहा अपने मवेशियों को वापस ले जाने लगा तो उसने बछिया से कहा, "तुम जब वहाँ खड़े होकर खा सकती हो तो तुम चलकर घर भी जा सकती हो। मैं तुम्हें उठाकर घर नहीं पहुँचाऊँगा।"

छोटा किसान अपने घर के सामने खड़ा होकर अपनी बछिया की राह देख रहा था कि तभी चरवाहा अपने मवेशियों के साथ वहाँ से गुज़रा। उसने चरवाहे से अपनी बछिया के बारे में पूछा। चरवाहा बोला, "वह अभी भी वहीं खड़ी है।



उसने मेरी बात नहीं सुनी और मेरे साथ नहीं आयी।'' किसान बोला, ''अरे, मुझे तो मेरी बछिया चाहिए।'' फिर दोनों साथ-साथ घास के मैदान तक गए। लेकिन तब तक कोई बछिया को चुरा ले गया था और वह वहाँ नहीं थी। चरवाहा बोला,

"शायद वह अपने आप चली गयी है।" लेकिन किसान बोला, "नहीं मेरे साथ यह बहाना नहीं चलेगा, "और यह कहते हुए वह उसे नगर-पिता के पास पकड़कर ले गया। चरवाहे को खोई हुई बछिया के बदले किसान को एक गाय देने का दण्ड सुनाया गया।

किसान और उसकी पत्नी को उनकी मनचाही गाय मिल गई थी। वे बेहद ख़ुश थे। लेकिन उनके पास चारा नहीं था, इसलिए वे उसे कुछ खाने को नहीं दे सकते थे। इसी वजह से कुछ दिनों में गाय मर गई। किसान गाय की खाल निकालकर पास के शहर में बेचने निकल पड़ा। वह उन पैसों से दूसरी बछिया ख़रीदना चाहता था। रास्ते में वह एक चक्की के पास से गुज़रा जहाँ एक टूटे पंखवाला कौआ बैठा हुआ था। उसने तुरन्त उस कौए को उठाया और खाल में लपेट लिया। मौसम ख़राब हो गया था और बरसात के साथ तेज़ आँधी आ रही थी। वह आगे नहीं बढ़ पाया और चक्कीवाले के घर में शरण माँगी। चक्कीवाले की पत्नी घर पर अकेली थी। उसने किसान से कहा, "पुआल पर लेट जाओ।" और उसे रोटी और पनीर टुकड़ा दे दिया। किसान ने रोटी खाई और खाल को पास में रखकर लेट गया। चक्कीवाले की पत्नी को लगा कि वह सो गया है। तभी वहाँ एक आदमी आया, जिसका उस स्त्री ने जोर-शोर से स्वागत किया। फिर वह उसके साथ खाना खाने बैठी। लेकिन किसान ने जब इस दावत की बात सुनी तो उसे बहुत दुख हुआ कि उसे केवल रोटी और पनीर ही दिया गया। उस स्त्री ने अलमारी खोली और चार तश्तरियाँ, भुना मांस, सलाद, उबला माँस और शराब निकाली। जैसे ही वे खाने बैठे कि तभी दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई। औरत चिल्लाई, "हे भगवान यह तो मेरा पति ही है।" उसने तेज़ी से शराब तकिये के नीचे, भुना मांस चूल्हे के भीतर, सलाद बिस्तर पर और उबला मांस बिस्तर के नीचे रख दिया। अपने मेहमान को कपड़ों की अलमारी में छिपा दिया। यह करके उसने अपने पति के लिए दरवाज़ा खोला और बोली, "ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि तुम सही-सलामत घर वापस आ गए। कैसा मौसम है जैसे कि प्रलय आनेवाली है?"

चक्कीवाले ने किसान को पुआल पर सोया देखा तो उसके बारे में पूछा। उसकी पत्नी ने कहा, "यह बेचारा आदमी तो ख़राब मौसम से बचने के लिए यहाँ रुक गया था। इसे मैंने खाने की रोटी और पनीर और सोने को पुआल दे दी है।"

पति ने कहा कि इस पर उसे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उसे तुरन्त कुछ

खाने को चाहिए। पत्नी बोली, "मेरे पास सिवाय रोटी और पनीर के और कुछ नहीं है।" इस पर पति ने कहा कि इससे तो उसे अच्छा ही लगेगा। उसने किसान को भी अपने साथ खाना खाने का निमन्त्रण दिया। किसान ने दोबारा नहीं सोचा और तुरन्त खाने के लिए उठ बैठा। चक्कीवाले का ध्यान उस खाल की ओर गया जिसमें कौआ लिपटा था और उसने पूछा, "इसमें क्या है ?" किसान बोला, "इसमें सच बोलने वाला जीव है।" चक्कीवाले ने पूछा, "क्या यह मुझे भी सच बतायेगा ?"

किसान बोला, "क्यों नहीं ? लेकिन वह केवल चार बातें ही बतायेगा और पाँचवी अपने मन में ही रखेगा।" चक्कीवाले के मन में जिज्ञासा पैदा हुई और उसने कौए की बात सुननी चाही। किसान ने कौए की गर्दन थोड़ी दबाई, जिससे वह चिल्लाने लगा। चक्कीवाले ने पूछा, "यह क्या कहता है ?" किसान ने कहा, "पहली बात तो यह कि तकिये के नीचे शराब रखी है।" चक्कीवाला चिल्लाया, "यह क्या अनोखा क़िस्सा है।" लेकिन उसे शराब मिल मिल गयी। चक्कीवाले ने आगे पूछा तो किसान ने कौए की गर्दन फिर से दबाई और वह चिल्लाया। किसान बोला, "अब यह बता रहा है कि चूल्हे के भीतर भुना मांस रखा है।" चक्कीवाला फिर बोला, "यह तो अच्छा क़िस्सा है।" और चूल्हे के भीतर से भुना मांस निकाला। किसान ने फिर से कौए की गर्दन दबाई और वह चिल्लाया। किसान बोला, "तीसरी बात यह बताता है कि सलाद बिस्तर पर रखा है।"

चक्कीवाला बोला, "यह तो अच्छा क़िस्सा है।" और सलाद ढूँढ़ निकाली। किसान ने एक बार फिर कौए की गर्दन दबाई और वह बोला, "चौथी बात बताता है कि उबला हुआ मांस बिस्तर के नीचे रखा है।"

"यह तो सबसे अज़ीब क़िस्सा है।" चक्कीवाला उठकर गया और उसे उबला मांस भी मिल गया।

वे दोनों तो मेज़ पर बैठ गए, लेकिन चक्कीवाले की पत्नी बेहद चिन्तित हो गई और सारी चाभियाँ लेकर बिस्तर पर लेट गई। चक्कीवाला पाँचवीं बात जानने के लिए बेहद उत्सुक था, लेकिन किसान बोला, "पहले तो हम ये चारों चीज़ें खा लें, क्योंकि पाँचवी बात कुछ ख़राब-सी लगती है।"

जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया तो चक्कीवाला पाँचवीं बात जानने की क़ीमत लगाने लगा और आख़िरकार बात तीन सौ रुपयों पर तय हुई। किसान ने फिर कौए की गर्दन दबाई और वह बोल पड़ा। किसान बोला, "यह कहता है कि कपड़ों की अलमारी में कोई बुरी आत्मा छिपी है।"

चक्कीवाला बोला, "बुरी आत्मा को बाहर निकलना चाहिए।" और दरवाज़ा

खोलने की कोशिश की, लेकिन उसमें ताला बन्द था। उसकी पत्नी को चाभियाँ देनी पड़ीं। जब किसान ने अलमारी खोली तो वह मेहमान बाहर निकल आया और भाग गया। चक्कीवाला बोला, "आहा, मैंने उस काले आदमी को देखा। यह सही बात थी।" जल्दी ही वे सोने चले गए। सुबह किसान ने तीन सौ रुपये लिए और वहाँ से चल पड़ा।

किसान अब बहुत अमीर हो गया था। उसने अपना एक बढ़िया घर बनवाया। उसके साथी कहने लगे, "इस छोटे किसान के हाथ ज़रूर कोई सोने की ख़ान लगी है।" उन्होंने उसे नगरपिता के सामने बुलवाया, जिससे कि वह अपने धनी होने का राज़ बता सके। किसान ने जवाब दिया, "मैंने अपनी गाय की ख़ाल शहर में तीन सौ रुपये में बेच दी।" जैसे ही बाक़ी सबने यह सुना तो वे भी शहर में जाकर इस तरह से पैसे कमाने का विचार बनाने लगे। सभी किसान घर गए और अपने मवेशियों को मारकर उनकी ख़ालें निकालीं और उन्हें लेकर शहर चले गए। नगर-पिता ने कहा, "मेरी नौकरानी पहले जाएगी," और जब वह शहर पहुँची और दुकानदार के पास गई तो उसने उसे खाल के केवल तीन रुपये ही दिए। जब बाक़ी लोग भी ख़ालें लेकर आए तो उसने उन्हें इतने रुपये भी नहीं दिए और बोले, "मैं इतनी सारी ख़ालों का क्या करूँगा।"

किसान अपने ग़रीब पड़ोसी द्वारा बेवक़ूफ़ बनाये जाने से बेहद अपमानित महसूस करने लगे। उन्होंने उससे बदला लेने की ठानी। उन्होंने नगरपिता से उसकी शिकायत की। बेचारे ग़रीब किसान को एक मत से मौत की सज़ा सुनाई गई। उसे छेदोंवाले एक पीपे में बन्द करके समुद्र में फेंका जाना था। उसे ले जाया गया और उसके पास प्रार्थना के लिए एक पंडित भेजा गया। सब लोगों को दूर हटा दिया गया। जब किसान ने पंडित को देखा तो उसे उस मेहमान की याद आ गई, जो उसे चक्की में मिला था। उसने पंडित से कहा, "मैंने तुम्हें अलमारी से बाहर निकाला है, अब तुम मुझे इस पीपे से बाहर निकालो।" इसी समय चरवाहा वहाँ से अपने मवेशियों के साथ गुज़रा। किसान को पता था कि लम्बे समय से वह नगरपिता बनना चाह रहा है। वह अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाया, "नहीं, नहीं। मैं यह नहीं करूँगा। यदि पूरी दुनिया भी मुझे मिल जाए तो भी मैं वह नहीं करूँगा। नहीं, मैं नहीं करूँगा।"

जब चरवाहे ने यह सुना तो वह आया और बोला, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? तुम क्या नहीं करोगे।" किसान बोला, "यदि मैं इस पीपे में बन्द हो जाऊँ तो वे मुझे नगरपिता बना देंगे। लेकिन नहीं, मैं यह नहीं करूँगा।"

चरवाहा बोला, "ओह, यदि इसके लिए और कुछ नहीं चाहिए तो मैं ज़रूर इस पीपे में बन्द होने के लिए तैयार हूँ।"

किसान बोला, "हाँ यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम नगरपिता बन सकते हो।" और पीपे से बाहर निकलते हुए उसे पीपे में बिठा दिया। किसान ने पीपे के ढक्कन को कीलों से ठोंक दिया। उसने चरवाहे के मवेशियों को लिया और उन्हें लेकर दूर निकल गया। इसी बीच पंडित न्यायाधीश के पास गया और उन्हें बताया कि उसने प्रार्थना कर दी है। उन्होंने पीपे को लुढ़काकर समुद्र में धकेल दिया।

चरवाहा चिल्लाता जा रहा था, "हाँ, मुझे नगरपिता बनना है।" उन्होंने सोचा कि भीतर से छोटा किसान चिल्ला रहा है, वे बोले, "हाँ तुम ही वहाँ पहुँचोगे।" इसके बाद सब किसान वापस घर लौट आए। जैसे ही उन्होंने गाँव में प्रवेश किया, उन्हें छोटा किसान दिखाई पड़ा, जो ख़ुशी-ख़ुशी मवेशियों को चरा रहा था। सभी भौंचक्के रह गए और उन्होंने पूछा, "तुम कहाँ से आ गए ? क्या तुम पानी से बाहर आ गए ?"

उसने जवाब दिया, "हाँ, मैं गहरे पानी में डूबता गया, जब तक कि मैं तली में नहीं पहुँच गया। वहाँ मैंने पीपे का ढक्कन उठाया और बाहर निकल आया। वहाँ सुन्दर घास के मैदान हैं और बहुत सारी भेड़ें हैं। मैं अपने साथ ये मवेशी भी बाहर ले आया।"

किसानों ने पूछा, "क्या वहाँ और भी मवेशी हैं।" उसने जवाब दिया, "बिलकुल, तुम्हारी ज़रूरत से कहीं ज़्यादा।"

किसानों ने तय किया कि वे सभी मवेशी लेने पानी में जाएँगे। लेकिन नगरपिता बोले, "सबसे पहले मैं जाऊँगा।" वे सभी साथ-साथ समुद्र तक गए, जहाँ आसमान नीला था और ढेर से बादल थे। इन बादलों की छाया पानी में दिखाई दे रही थी और वे भेड़ों जैसे दिखाई दे रहे थे। किसानों ने एक-दूसरे से कहा, "वहाँ देखो। यहाँ से पानी के नीचे भेड़ें दिखाई दे रही हैं।" नगरपिता सबसे आगे आकर बोले, "मैं पहले जाऊँगा और वहाँ देखूँगा। यदि वहाँ अच्छी जगह होगी, तब मैं तुम लोगों को बुलाऊँगा।"

यह कहते हुए वे पानी में कूद गए और जैसे ही पानी ऊपर उछला तो किसानों को लगा कि वे कह रहे हैं, "आ जाओ।" और एक-एक करके सभी पानी में जल्दी-जल्दी कूद गए। पूरा गाँव ख़त्म हो गया और 'छोटा किसान' सबसे अमीर आदमी बन गया।

39

मेंढकों के तीन क़िस्से

पहला

एक छोटी-सी लड़की थी। उसकी माँ उसे दोपहर में रोटी और दूध देती थी, जिसे वह घर के बाहर आँगन में बैठकर खाती थी। एक दिन जब उसने खाना शुरू किया तो वहाँ एक नन्हा मेंढक दीवार की दरार से आया। उसने थोड़ा-सा दूध पी लिया। लड़की यह देखकर ख़ुश हुई और अगले दिन जब वह अपना प्याला लेकर वहाँ बैठी और मेंढक नहीं आया तो वह उसे गाकर बुलाने लगी—

"मेंढक, मेंढक, जल्दी आओ
जल्दी आओ प्यारे;
आओ आकर दूध पियो
और रोटी खाओ प्यारे।"

यह सुनकर मेंढक दौड़कर आता और बैठकर दूध पीता। वह लड़की का आभार भी व्यक्त करता था। वह गुप्त ख़ज़ाने से तरह-तरह की चीज़ें—चमकीले रत्न, मोती या सोने की मूर्तियाँ लेकर आता। लेकिन वह केवल दूध पीता, रोटी कभी नहीं खाता था। एक दिन लड़की ने एक चम्मच लेकर मेंढक के सिर पर छुआ और बोली "थोड़ी रोटी भी तो खाओ !" लड़की की माँ ने जो रसोईघर में खड़ी थी, लड़की को किसी से बात करते हुए सुना। जब उसने सामने एक मेंढक को देखा तो वह एक जलती हुई लकड़ी उठाकर लाई और उससे उसे मार डाला।

तब से लड़की बदल गई। जब तक वह मेंढक के साथ खेलती थी, वह तन्दुरुस्त और ख़ुशमिज़ाज़ थी। लेकिन अब उसके गाल पीले पड़ गए थे और वह दुबली हो गई थी। कुछ ही दिन में मृत्यु की चिड़िया जंगल में चीख़ने लगी और लाल गर्दनवाली चिड़िया मृत्यु का ताज बनाने के लिए डालें और पत्तियाँ जमा करने लगीं। इसी के साथ बेचारी बच्ची की अर्थी तैयार हुई।

दूसरा

शहर में दीवार पर बैठी एक अनाथ बच्ची सूत कात रही थी। तभी उसे दीवार के नीचे एक छेद में बैठा मेंढक दिखाई दिया। बच्ची ने तुरन्त अपना नीला रूमाल उसके पास बिछा दिया, जिससे कि मेंढक उस पर आराम से चल सके और उस पर आराम से बैठ सके। जैसे ही मेंढक ने रूमाल बिछाये जाते हुए देखा तो वह वापस गया और एक नन्हा-सा सोने का मुकुट लेकर लौटा। उसे रूमाल पर रख कर फिर वापस छेद में चला गया। लड़की ने मुकुट उठाया, जिसे सोने के नाज़ुक तारों से बुना गया था। उसे दूर रख दिया, जिससे मेंढक उसे नहीं देख सके।

बेचारा मेंढक रेंगकर दीवार पर चढ़ गया। वह अपना नन्हा-सा सिर दीवार पर पटकने लगा, जब तक कि उसकी पूरी शक्ति ख़त्म न हो गई। आख़िर वह गिरकर मर गया। यदि बच्ची ने मुकुट वहीं रहने दिया होता तो मेंढक छेद के भीतर के अपने ख़ज़ाने से और भी बहुमूल्य वस्तुएँ ले आता।

तीसरा

एक मेंढक चिल्लाया, "हू हू, हू हू !"

एक बच्चा उससे बोला, "यहाँ आओ।" और जब वह आया तो बच्चे ने उससे पूछा, "क्या तुमने आज सुबह मेरी बहन को देखा ? उसने लाल मोज़े पहने थे।"

मेंढक टर्राया, "नहीं, नहीं, मैंने नहीं ! मैं कैसे देखूँगा ? हूहू, हूहू" और उछलकर दूर भाग गया।

40

किसान की चतुर लड़की

एक ग़रीब किसान था। उसके पास कोई ज़मीन नहीं थी, केवल एक झोंपड़ी थी। उसकी केवल एक बेटी थी। बेटी ने एक दिन कहा, "राजा से हमें किसी दिन बंजर ज़मीन का एक टुकड़ा ज़रूर माँगना चाहिए।"

जब राजा ने उनकी ग़रीबी के बारे में सुना तो उन्होंने उन्हें खेत का एक कोना दे दिया। उस आदमी और उसकी बेटी ने उसे जोता और उसे बीज बोने के लिए तैयार किया। जब उन्होंने खेत की मिट्टी उलटी-पलटी तो उन्हें सोने का एक खरल मिला। किसान ने अपनी बेटी से कहा, "राजा ने हमें यह ज़मीन दी है, इसलिए हमें उन्हें ही यह सोना देना चाहिए।"

लेकिन इस बात पर बेटी सहमत नहीं हुई और बोली, "यदि हमारे पास खरल है तो हमारे पास इसका बट्टा भी होना चाहिए, जो कि नहीं है। इसलिए चुपचाप रहिए।"

लेकिन पिता ने उसकी बात नहीं मानी। खरल राजा के पास ले गया और उसे बताया कि यह उसे जुताई में मिला था। उसने राजा से कहा कि वह भेंट स्वीकार करे। राजा ने वह ले लिया और उससे पूछा कि उसे और कुछ मिला या नहीं। किसान ने जवाब दिया, "नहीं।" "राजा ने पूछा, "फिर, तुम्हें इसके लिए बट्टा भी ढूँढ़ना चाहिए।" किसान ने कहा कि उसे वह नहीं मिला है। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। ऐसा लगा जैसे उसने हवा से कुछ कहा हो। राजा ने उसे बट्टा तलाश करने तक क़ैद में डाल दिया। जब आदमी उसके लिए रोटी और पानी लेकर आते तो वे उसे अफ़सोस करते हुए सुनते, "काश, मैंने अपनी बेटी की बात मानी होती।"

वे राजा के पास गए और बताया कि किस तरह वह आदमी हमेशा रोता रहता है और कहता रहता है, "काश ! मैंने अपनी बेटी की बात मानी होती।"

राजा ने उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया और फिर उससे इस तरह रोने की वजह पूछी। यह भी पूछा कि उसकी बेटी क्या कहती थी।

उस आदमी ने कहा, ''मेरी बेटी ने कहा था कि यह खरल आपके पास नहीं लेकर आऊँ, जब तक कि मुझे बट्टा न मिल जाए।''

राजा बोल पड़ा, ''वाह, तुम्हारी बेटी कितनी चतुर है। उसे यहाँ एक बार लेकर आओ।'' राजा ने उससे कहा कि यदि वह उतनी ही चतुर है, जितना उसे बताया गया है तो उसे एक पहेली हल करनी पड़ेगी। यदि वह यह पहेली हल कर लेगी तो राजा उससे शादी कर लेगा। वह क्या है, जो कपड़े नहीं पहनता, फिर भी नंगा नहीं है; जो चलता है, लेकिन न तो घोड़े पर है और न ही पैदल और वह जो न तो सड़क पर चलता है और न उससे बाहर ?

लड़की ने कहा कि वह पूरी कोशिश करेगी। वह घर गई और उसने अपने सारे कपड़े उतार दिये और एक मछली पकड़ने का जाल लपेट लिया, जिससे न तो उसने कपड़े पहने थे और न ही वह बिना कपड़ों के थी। उसने फिर एक गधा ख़रीदा और जाल को उसकी पूँछ से बाँध दिया, जिससे वह उसके पीछे घिसटती गई। इस तरह न तो वह घोड़े पर सवार थी और न ही पैदल चल रही थी। गधा भी उसके इधर-उधर उछल रहा था। इस तरह से वह न तो सड़क पर थी और न ही सड़क के बाहर थी केवल उसके अँगूठे ज़मीन को छू रहे थे। जब राजा ने उसे अपनी ओर आते देखा तो उसने कहा कि लड़की ने पहेली सुलझा ली है और शर्त पूरी कर ली है। उसने लड़की के पिता को क़ैद से मुक्त कर दिया। उसने लड़की से शादी कर ली और उसे सभी राजसी सम्मान दिये।

कई साल बीत गए। एक बार जब राजा सलामी ले रहा रहा था, तभी कुछ किसान आए, जो लकड़ी बेचकर आए थे। उन्होंने महल के सामने अपनी गाड़ियाँ खड़ी कीं। उनमें से कुछ के पास बैल थे और कुछ के पास घोड़े। एक किसान के पास तीन घोड़े थे, उनमें से एक छोटा था, जो भागकर गाड़ी के सामने खड़े दो बैलों के बीच में खड़ा हो गया। किसान जल्दी ही वापस आ गए। वे झगड़ने लगे कि बैलोंवाला किसान ही घोड़े को रखेगा, क्योंकि वह उसी का है। जबकि घोड़ोंवाला किसान इसका विरोध कर रहा था। वह कह रहा था कि छोटा घोड़ा उसी का है। यह विवाद राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। उन्होंने निर्णय दिया कि घोड़ा जहाँ है, उसे वहीं रहने दिया जाए। घोड़ा बैलोंवाले किसान को मिल गया, जिसका वास्तव में वह था नहीं। दूसरा किसान अपने घोड़े के लिए रोने लगा। उसे पता चला कि रानी बहुत दयालु स्त्री है, क्योंकि वह स्वयं किसान-परिवार में

पैदा हुई थी। वह रानी के पास गया और उससे प्रार्थना की कि उसे उसका घोड़ा वापस दिला दिया जाए। रानी ने उसे मदद करने का वादा किया और कहा कि यदि वह किसी को नहीं बतायेगा तो वह उसे घोड़ा वापस पाने की राह बता सकती है। सुबह जब राजा सलामी ले रहा था तो किसान को राजा के रास्ते के बीचोंबीच चलते हुए मछली पकड़ने का अभिनय करना था और जाल को छत के पास इस तरह से हिलाना था जैसे कि जाल मछलियों से भरा हो। रानी ने उसे यह भी बता दिया था कि राजा के कुछ पूछे जाने पर वह क्या जवाब दे। अगले दिन योजना के अनुसार वह वहाँ खड़े होकर सूखे में मछली पकड़ने का अभिनय करने लगा। जब राजा वहाँ आए और उसे देखा तो उन्होंने अपने नौकर को यह देखने के लिए भेजा कि यह बेवक़ूफ़ कौन है और क्या कर रहा है। किसान ने सिर्फ़ यह जवाब दिया, "मैं मछली पकड़ रहा हूँ।"

नौकर ने पूछा कि वह सूखे में मछली कैसे पकड़ रहा है? उस आदमी ने जवाब दिया, जिस तरह से दो बैल एक घोड़े को जन्म दे सकते हैं। यह जवाब सुनकर नौकर चला गया। उसने जवाब राजा को बताया। राजा ने किसान को बुलवा भेजा और उससे पूछा कि यह जवाब उसे किसने सिखाया, क्योंकि यह जवाब उसका अपना तो हो नहीं सकता। आदमी ने बताने से मना किया और हर बात के जवाब में यही कहता रहा, "ईश्वर की सौगन्ध। यह जवाब मेरा ही है।" उन्होंने उसे पुआल पर लिटाकर बुरी तरह मारा और उसे इतनी तकलीफ़ पहुँचाते रहे कि उसने स्वीकार कर ही लिया कि उसे यह जवाब रानी ने सिखाया था। जैसे ही राजा घर वापस लौटा, उसने अपनी पत्नी से कहा, "तुम मुझसे झूठ क्यों बोलती हो ? अब तुम मेरे साथ नहीं रह सकती, तुम्हारा समय ख़त्म हो चुका है। जहाँ से आई थी, वहीं वापस जाओ—अपनी किसान की झोंपड़ी में।"

उसने उसे अपनी पसन्द की चीज़ें साथ में ले जाने की अनुमति दे दी। रानी बोली, "ठीक है प्रिय, मैं वैसा ही करूँगी जैसा आप कहेंगे।" और वह उसके सीने से लग गई और उसे चूमकर जाने की अनुमति माँगी। लेकिन जाने से पहले उसने राजा को एक पेय में मिलाकर नींद की दवा पिला दी और राजा गहरी नींद में सो गया। जब रानी ने यह देखा तो उसने एक नौकर को बुलवाया। राजा के मुँह पर एक बारीक रूमाल बाँधकर उन्हें बग्घी में चढ़वा दिया। इस तरह बग्घी में राजा को वह अपने घर ले गई। वहाँ उसने राजा को बिस्तर पर लिटाया और जहाँ वे पूरे दिन और एक पूरी रात सोते रहे। जब वह उठे तो उन्होंने भौंचक्का होकर चारों ओर देखा और नौकर को आवाज़ दी। लेकिन कोई नहीं आया। अंत

में उनकी पत्नी आई और बोली, "प्रिय, आपने मुझे महल से अपनी सबसे प्यारी चीज़ ले आने के लिए कहा था। मुझे आपसे प्रिय कुछ नहीं है, इसीलिए मैं आपको यहाँ ले आई।"

ये शब्द सुनकर राजा का आँखों में आँसू आ गए और वे बोले, "प्रिय, मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरी हो।" और वे उसे वापस महल में ले गए, जहाँ वे अभी भी हँसी-ख़ुशी रह रहे हैं।

● ●

हिन्दी बाल साहित्य पर कार्य करने वाले विद्वानों में महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर **डॉ. हरिकृष्ण देवसरे** (1940-2013) ने *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ* (दो भागों में) प्रस्तुत की है। जबलपुर विश्वविद्यालय से बाल साहित्य पर पी–एच.डी. प्राप्त कर डॉ. देवसरे 1960 में आकाशवाणी की सेवा में आए। उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य से जुड़ी समस्याओं पर अनगिनत लेख लिखे हैं और इस दिशा में मार्गदर्शन भी किया है। आकाशवाणी से स्वैच्छिक अवकाश प्राप्त कर वे टाइम्स ऑफ़ इण्डिया की श्रेष्ठ हिन्दी बाल-पत्रिका *पराग* के संपादक बने। 1991 में इस दायित्व से मुक्त होकर उन्होंने स्वतंत्र लेखन के रूप में दो सौ पचास से अधिक पुस्तकों की रचना की।

दूरदर्शन के लिए उन्होंने कई धारावाहिकों का लेखन किया और कई वृत्तचित्रों के लेखन-निर्देशन से जुड़े रहे। अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष (1979) में *बच्चों की सौ कविताएँ, बच्चों के सौ नाटक* और *बच्चों की सौ कहानियाँ* प्रकाशित कर उन्होंने हिन्दी बाल साहित्य प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उनकी पाँच टेलिफिल्में प्रसारित हो चुकी हैं। वे भारत की उन संस्थाओं से संबद्ध हैं, जो बाल साहित्य लेखन तथा बालकों के समग्र विकास से जुड़ी परियोजनाएँ कार्यान्वित करती हैं। उनकी कई कृतियों के अनुवाद भारतीय भाषाओं में हो चुके हैं। वे कई संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत हैं, जिनमे हिन्दी अकादमी, दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद्, दिल्ली, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ प्रमुख हैं। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कई कृतियों के अनुवाद किए हैं, जिनमें *हैंस एण्डरसन की कहानियाँ* (दो भागों में) तथा प्रस्तुत संकलन *ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ* (दो भागों में) सम्मिलित हैं। प्रस्तुत कृति न केवल बाल पाठकों को, बल्कि कहानियों में रुचि रखनेवाले हर पाठक को रुचिकर लगेगी।

साहित्य अकादेमी द्वारा विश्व की कालजयी कृतियों को हिन्दी पाठकों के सम्मुख लाने की दिशा में प्रस्तुत संकलन एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बनेगा—ऐसी आशा है।



ISBN 81-260-2041-5
9 788126 020416

साहित्य अकादेमी

www.sahitya-akademi.gov.in
मूल्य: 125 रुपये (प्रति भाग)